विजयेश्वर पञ्चाङ्ग

कृष्णं वन्दे जगत्गुरुम्

TM

वन्दे मातरम्

शारदा
गुरुमुखी
कन्नड़
886
ओड़िया
प्रणवे च दृढ़ा मतिः
सिन्धी
गुजराती
असमिया
स वै "हिन्दू"
मराठी
बांगला
तमिल
मलयालम्
तेलुगु

ॐ

पञ्चाङ्ग प्रवर्तक

ज्यो. आफ्ताब शर्मा

संस्थापक

® पं॰ प्रेम नाथ शास्त्री

विजयेश्वर पञ्चाङ्ग

ई॰ सम्वत्
2002 - 2003

वि॰ पंचांग सम्वत्
318

सप्तर्षि सम्वत्
5078

विक्रमी सम्वत्
2059

काश्मीरी पण्डितों का
विस्थापन सम्वत्
12

विजयेश्वर पंचांग कार्यालय
के कार्यकर्ता:
ओंकार नाथ शास्त्री
भूषण लाल ज्योतिषी
(एम.ए., साहित्यचार्य)
अवतार कृण ज्योतिषी
विमर्श ज्योतिषी, सुमन ज्योतिषी

Price Rs. 30.00

विषय सूची

दो शब्द	3
याद रखिये	4
विजेयश्वर पंचांग	5
मुख प्रक्षालण विधि	8
नित्य नियम विधि	9
शंकर पूजन	11
शिव स्तुति	14
शिव संकल्प	18
कृष्णं वन्दे	21
अष्टादश श्लोकी गीता	25
सप्तश्लाकी गीता	31
सप्तश्लोकी दुर्गा	34
वन्दे महापुरुष	38
स्तोत्र	47
देवी प्रार्थना	55
शंकर प्रार्थना	58
लिंगाष्टक	61
शिवोह	63
विष्णु स्तुति	64
नारायण स्तुति	65
गुरु स्तुति	67
विष्णु प्रार्थना	68
शिव चामर	69
गायत्री चालीसा	70
गणेश स्तुति	73
शिवाय नमः	75
दुर्गा स्तोत्र	77
शिवाष्टकं	79
अच्युताष्टकं	83
शिव स्तोत्र	84
रुद्राष्टकं	86
दुर्गा स्तुति	88
सरस्वती वन्दना	89
भज गोविन्दं	90
गणेश स्तुति	94
आरती	95
तेरे पूजन को	96
आरती गणेश	97
शिव आरती	98
आरती लक्ष्मी जी	100
आरती गंगा जी	102
आरती	103
भवसर कुस तरि	104
गौरी स्तुति	106
ब्राह्मी विद्या	111
काश्मीर के तीर्थ	112
प्रश्नोत्तरी	114
इनको मत भूलिये	118
प्रस्थान	119
देवगौण	120
लग्न चीर	120
अनमोल वचन	121
भोजन खाने के नियम	122
नवग्रहों की उपासना	123
मांस खाना पाप है	125
श्रीमद् भगवत् गीता	126
स्वामी परमानन्द	128
लल्लवाक्य	131
श्राद्ध कब	134
यज्ञोपवीत कब और महत्व	135
धर्म शास्त्र	143
श्राद्ध संकल्प विधि	151
प्रेप्युन	160
इन्द्राक्षी	165
जातक मिलाप	167
यात्रा प्रकरण	176
आमदनी खर्च	178
व्रतों की सूची	182
पंचक	184
गण्डान्त	185
ग्रह संचार	186
हमारे पर्व	187
निषेध समय	188
श्राद्ध, जयन्तियाँ	189
आश्लेषा चक्र	191
मूल चक्र	192
ग्रहण विवरण	193
भविष्यवाणी	193
पञ्चांग	199
मुहूर्त	223
राशिफल	274
लग्न सारणी	314
हमारे प्रकाशन	326
जरा सुनिये	328

दो शब्द

नये वर्ष का 'विजयेश्वर पञ्चाङ्ग' आप के लिये तथा आप के समस्त परिवार के लिये मंगलमय रहे यही हमारी शुभ कामना है इस पंचांग में जो कोई भी मुहूर्त्त, पर्व, त्यौहार, व्रत, श्राद्ध इत्यादि लिखे गये हैं वह बिल्कुल शास्त्र सम्मत तथा शुध्द हैं कई महानुभाव 'विजयेश्वर पंचांग' की लोक प्रियता को बरदाशत न करते हुये समाचार पत्रों द्वारा जनता को द्विविधा में डालने का प्रयत्न करते हैं, जनता को भ्रम में डालने वाला सबसे बड़ा पापी होता है।

सम्पादक

आपका सहयोग - हमारी सेवा

याद रखिये

1. यज्ञोपवीत, विवाह, किसी धार्मिक पर्व तथा यज्ञ इत्यादि पर खड़े होकर भोजन न करें, यह हमारी सभ्यता का अपमान है।
2. यदि आप को लड़के अथवा लड़की का विवाह संस्कार है तो नियत समय पर कन्यादान लें तथा कन्यादान करें।
3. सामूहिक यज्ञोपवीत में सम्मिलित न होंवे यह हमारी परम्परा नहीं है।
4. जय माला को लग्न से अलग मत मानिये इस कारण "व्यूग" पर ही जय माला डाला करें।
5. अपनी सभ्यता को बचाने के लिये घर पर काश्मीरी भाषा में हर एक के साथ बात करें।
6. अपने से बड़ों को हाथ जोड़ कर, सर झुका कर अथवा पांव स्पर्श करते हुए प्रणाम करें।
7. अपने जीवन को सफल बनाने का आसान तरीका "माता-पिता की सेवा"।
8. नींद से जागते ही "ॐ" शब्द का उच्चारण करें।

सम्पादक

विजयेश्वर पंचांग देखने की विधि

प्रत्येक काश्मीरी पण्डित के घर में **विजयेश्वर पंचांग** है परिवार का प्रत्येक व्यक्ति, बच्चा, बूढ़ा, मां, बहिन इस पंचांग से किसी न किसी रूप से सम्बन्ध रखे हुये है। इस पंचांग में हम आमतौर पर सांक्रेतिक शब्द प्रयोग करते हैं कई महानुभाव, मातायें तथा बहनें उन सांकेतिक शब्दों को समझते नहीं है इस कारण पंचांग को अच्छी प्रकार समझने के लिये थोड़ी बहुत जानकारी दे रहा हूँ और आशा करता हूँ कि जनता को इस से लाभ ही होगा और इसको पसन्द भी करेंगे।

पंचांग इसीलिये इस को कहते हैं क्योंकि इस के पांच अंग है '**वार, तिथि, नक्षत्र, योग, करण**। आप के पास जो पंचांग है उसमें केवल **वार**, **तिथि** तथा **नक्षत्र** होता है इस तीनों चीजों को सांकेतिक शब्दों में लिखते हैं उन को समझने के लिये उस का पूरा विवरण दे रहा हूँ।

वार	सांकेतिक शब्द	वार	सांकेतिक शब्द
सोमवार - चन्द्रवार	= सोम. चन्द्र.	शुक्रवार	= शुक्र.
मंगलवार - भौमवार	= मंगल. भौम.	शनिवार	= शनि.
बुधवार	= बुध.	रविवार - ऐतवार	= रवि, ऐत.
गुरुवार, वीरवार, बृहस्पतिवार	= गुरु. वीर. बृह.		

ग्रह किस राशि में है तथा राशि कब बदल रहा है इस का पूरा विवरण अलग से लिखा होता है परन्तु तो थोड़ा बहुत

यहां पर भी दे रहा हूँ।

सूर्यः- लगभग एक मास के पश्चात् राशि बदलता है जिस दिन सूर्य राशि बदलता है उसी दिन या दूसरे दिन संक्रान्ति होती है।

चन्द्रमाः- लगभग सवा दो दिन एक राशि में रहता है पंचांग के हर मास के डिटेल में लिखा होता है कि चन्द्रमा किस समय पर राशि बदलता है।

भौमः- मंगल लगभग डेढ मास के पश्चात् राशि बदलता है।

बुध-शुक्रः- लगभग एक मास के पश्चात् राशि बदलता है।

गुरु या बृहस्पतिः- लगभग एक वर्ष के पश्चात् राशि बदलता है।

शनि देवः- लगभग ढाई वर्षो के पश्चात् राशि बदलता है।

राहु-केतुः- डेढ वर्ष के पश्चात् राशि बदलता है।

कभी-कभी सूर्य तथा चन्द्रमा को छोड़ कर ग्रह वक्री भी होता है, वक्री ग्रह का प्रभाव भी उलटा ही होता है।

तिथि	सांकेतिक शब्द	तिथि	सांकेतिक शब्द	तिथि	सांकेतिक शब्द	तिथि	सांकेतिक शब्द
प्रतिपदा	प्रति.	षष्ठी	षष्ठ.	एकादशी	एका.	पूर्णिमा।	पूर्णि.।
द्वितीया	द्विती.	सप्तमी	सप्त.	द्वादशी	द्वाद.	प्रति दि : 3-05 अर्थात् प्रतिपदा तिथि दिन के 3 वजे 5 मिनट तक है। पंच प्र : 2-13 अर्थात् पंचमी तिथि रात के 2 वजे 13 मिनट तक है।	
तृतीया	तृती.	अष्टमी	अष्ट.	त्रयोदशी	त्रयो.		
चतुर्थी	चतु.	नवमी	नव.	चतुर्दशी	चर्तु.		
पंचमी	पंच.	दशमी	दश.	अमावसी	अमा.		

नक्षत्र	सांकेतिक शब्द	नक्षत्र	सांकेतिक शब्द	नक्षत्र	सांकेतिक शब्द	नक्षत्र	सांकेतिक शब्द
अश्विनी	अश्वि	तिष्य	तिष्य	स्वाती	स्वा	श्रवण	श्रव
भरणी	भर	आश्लेषा	आश्ले	विशाखा	विशा	धनिष्ठा	धनि
कृत्तिका	कृत्ति	मघा	मघा,	अनुराधा	अनु	शतभिषा	शत
रोहिणी	रोहि	पूर्वाफाल्गुनी	पूर्वा,	ज्येष्ठा	ज्ये	पूर्वाभाद्रपदा	पूभा
मृगशिरा	मृग	उत्तराफाल्गुनी	उत्तरा,	मूल	मूल	उत्तराभाद्रपदा	उभा
आर्द्रा	आर्द्र	हस्त	हस्त,	पूर्वाषाढा	पूर्वा	रेवती।	रेव।
पुनर्वसु	पुर्न	चित्रा	चित्रा,	उत्तराषाढा	उषा		

इसके अतिरिक्त हम हर तिथि तथा नक्षत्र के साथ 'दि' या 'प्र' लिखते है। 'दि' का अर्थ है कि दिन तक, 'प्र' का अर्थ है रात तक। जैसे तृती, प्र 3.16 अर्थात् तृतीया तिथि रात के 3 बजे 16 मिनट तक है, अश्वि दि 4.15 अर्थात् अश्विन नक्षत्र दिन के 4 बजे 15 मिनट तक है।

आलोचक ज़रा ध्यान दें।

त्र्यहः जिस दिन तिथि का क्षय होता है उस दिन त्र्यहः लिखते हैं।

त्रिस्पृक्: जव एक तिथि दो दिन हो तो उस को त्रिस्पृक (दिन अधिक) लिखते हैं।

भौमार्क शनिवारेषु त्र्यहस्पक दिवसो यदि कार्यं निष्फलतां याति शुभं शोभनमादिशेत।

यह श्लोक काश्मीरीक ज्योतिष संग्रह से उद्धृत किया हुआ है।

अर्थातः- यदि त्र्यहः और त्रिस्पृक् के दिन क्रूरवार रविवार, मंगलवार, शनिवार हो तो कोई भी शुभ कार्य नहीं करना चाहिये परन्तु यदि शुभवार (सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार) हो तो प्रत्येक शुभ कार्य करना चाहिए। इस कारण हम त्र्यहः तथा त्रिस्पृक् के शुभवार पर मुहूर्त रखते हैं जो धर्म शास्त्र के अनुसार शुद्ध है।

मुखप्रक्षालण विधि

शौच आदि से निवृत होकर वायां पैर धोते हुए पढ़ें:- **नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षि-शिरोरु वाहवे। सहस्र-नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्रकोटी-युगधारिणे नमः।।**

दायां पैर धोते हुए पढें:-**ॐ नमः कमलनाभाय-नमस्ते जल शायिने। नमस्ते केशवानन्त-वासुदेव नमोस्तुते।**

मुख धोते हुए पढें:- **गंगा, प्रयाग, गयनैमिषपुष्करादि-तीर्थानि, यानि भुविसन्ति-हरिप्रसादात् आयान्तु तानि करपद्मपुटे मदीये प्रक्षालयन्तु वदनस्य निशाकलंकम्। तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति मा नः शंस्यो अररुषो धूर्ति प्राणङ् मर्त्यस्यरक्षाणो ब्रह्मणस्पते।।**

मुंह धोकर यज्ञोपवीत धोते हुए तीन वार पढें:- **ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्-वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।**

यज्ञोपवीत् गलें में फिर से धारण करते हुये पढें:- **यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्-आयुष्यम्-अग्र्रं प्रतिमुंच शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलम्-अस्तु तेजः। यज्ञोपवीतम्-असि यज्ञस्यत्वा-उपवीतेन-उपनह्यामि।।**

मुखप्रक्षालण करके स्नान करके विधि पूर्वक अपने इष्ट देव का ध्यान कीजिये।

नित्य प्रार्थना विधिः

पूर्व दिशा की ओर मुख करके धूपदीप जला कर शुद्ध आसन पर पद्मासन से बैठकर आदिदेव-भगवान् गणेश का ध्यान करते हुये पढ़ें:-

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतु-र्भुजम्, प्रसन्न वदनं ध्याये, सर्वविघ्नो-प्रशान्तये।
अभिप्रीतार्थ-सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैर्-अपि, सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै, गणा-धिपतये नमः।
बिभ्रत्-दक्षिण-हस्तपद्म-युगले, दन्ताक्षसूत्रे शुभे,
वामे मोदक-पूर्णपात्र, परशु नागो-पवीती त्रिदृक्।
श्रीमान्-सिंहयुगासनः श्रुतियुगे, शंखौ वहन् मौलिमान्,
दिश्यात्-ईश्वरपुत्र-ईश भगवान्, लम्बोदरः-शर्म-नः।।
सिन्दूर-कुंकुम-हुताशन-विद्रुमार्क, रक्ताब्ज-दाडिम-निभाय-चतु-र्भुजाय।
हेरम्ब-भैरव गणेश्वर-नायकाय, सर्वार्थसिद्धि-फलदाय गणेश्वराय।।

मुख्यं द्वादश-नामानि गणेशस्य महात्मनः। यः पठेत्-तु शिवोक्तानि स लभेत्-सिद्धिम्-उत्तमाम्। प्रथमं वक्रतुण्डं तु, चैकदन्तं द्वितीयकम्, तृतीयं कृष्णपिंगं

तु, चतुर्थं च कपर्दिनम्, लम्बोदरं पंचमं तु, षष्ठं विकटम्-एवच, सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं, धूम्रवर्णं तथाष्टमं, नवमं भालचन्द्रं तु, दशमं तु विनायकम्, एकादशं गणपतिं, द्वादशं मन्त्र-नायकम्, पठते श्रृणुते यस्तु, गणेश-स्तवम्-उत्तमं, भार्यार्थी लभते भार्या, धनार्थी विपुलं धनम्, पुत्रार्थी लभते पुत्रम्, मोक्षार्थी परमं पदम्, इच्छाकामं तु कामार्थी, धर्मार्थी धर्मम्-अक्षयम्।। सुमुखैश्चैक-दन्तश्च, कपिलो गजकर्णकः, लम्बोदरश्च विकटो, विघ्नराजो गणाधिपः। धूम्र-केतु-गणाध्यक्षो, भालचन्द्रो गजाननः, द्वादशै-स्तानि-नामानि, गणेशस्य महात्मनः, य पठेत्-श्रृणुयात्-वापि स लभेत् सिद्धिम्-उत्तमाम्। विद्यारम्भे विवाहे च, प्रवेशे निर्गमे तथा संग्रामे संकटे चैव, विघ्नस्तस्य न जायते।।

गीता प्रवचन

(अर्थ व्याख्या सहित काश्मीरी भाषा में)

प्रेम नाथ शास्त्री के जबान से

शंकर पूजन

आप प्रायः मन्दिर में जाकर भगवान् शंकर पर जल चढ़ाते हैं और चन्द मिनटों में ही अपनी श्रद्धा की लहरें भगवान् शिव को भेंट करते हैं, श्रद्धा को उत्पन्न करने का साधन विधि अनुसार पूजा करना है। शंकर पूजा का विधान वहुत लम्बा चौड़ा है परन्तु यह पूजन उनके लिय लिखता हूँ जो शिव पूजन से विल्कुल अनभिज्ञ हैः

भगवान् शंकर पर जल चढ़ाते हुए पढ़ेंः- **असंख्याताः सहस्राणि ये रुद्रा अधि-भूम्याम्। तेषां सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि ।1। यो रुद्रो अग्नौ य अप्सु य औषधीषु यो वनस्पतिषु। यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः ।2। भवायदेवाय शर्वायदेवाय रुद्रायदेवाय पशुपतयेदेवाय उग्रायदेवाय महादेवाय भीमायदेवाय ईशानायदेवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय जलं समर्पयामि नमः।**

नेत्र स्पर्श करते हुए पढेंः- **तेजोरूप ! महेशान ! सोमसूर्याग्निलोचन प्रकाशय परंतेजो नेत्रस्पर्शेन शंकर ! भवायदेवाय उमा-सहिताय शिवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय नेत्रस्पर्श परिगृहणामि नमः।**

तिलक लगाते हुये पढेंः- **सर्वेश्वर जगद्वन्द्यं दिव्यासनसुसंस्थित। गन्धं गृहाण देवेश दिव्यगन्धोपशोभितम्। भवाय देवाय उमा-सहिताय शिवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय समालभनं गन्धो नमः।**

फूल चढ़ाते हुए पढें:- सदाशिव शिवानन्द प्रधान करणेश्वर। पुष्पाणि बिल्वपत्राणि गृहाण मे। भवाय देवाय उमा सहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय पुष्पं समर्पयामि नमः।

रत्नदीप कपूर चढ़ाते हुए पढें:- हिरण्यबाहो सेनानी-रौषधीनां पते शिव। दीपं गृहाण कर्पूर कपिलाज्य त्रिवर्तिकम्। भवाय देवाय उमा-सहिताय शिवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय रत्नदीपं कर्पूरं परिकल्पयामि नमः।

दोनों हाथों में पुष्पांजलि पकड़ते हुए निम्नलिखित तीन श्लोक पढ़कर फूल चढ़ावें-

आत्मा त्वं गिरिजामतिः सहचराः प्राणः शरीरं गृहं,
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधि स्थितिः।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो,
यत् यत् कर्म करोति तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ।।1।।

अर्थ:- इस श्लोक में भक्त स्थूल पूजा के माध्यम से उत्तम पूजा पर पहुँचना चाहता है। ज्ञानियों के समाज में उत्तम पूजा का लक्षण क्या है इस स्तुति में उसका वर्णन किया है:-

हे शम्भो ! मेरी आत्मा तुम ही हो, मेरी बुद्धि तुम्हारी शक्तिरूपिणी पार्वती है, मेरे प्राण (अपान समान आदि) तुम्हारे साथी है, मेरा शरीर तुम्हारा घर या मन्दिर है, विषय भोग के लिये जो मेरे व्यापार होते हैं वही तुम्हारी पूजा है, मेरी जो निद्रा है वही तुम्हारी समाधि की स्थिति है, मेरे पाँवों का चलना तुम्हारी प्रदक्षिणा है, मैं जो

कुछ बोलता हूँ सब तुम्हारा स्तोत्र है, सारांश यह है कि मैं कोई कर्म करता हूँ सभी तुम्हारी आराधना है।

पुष्पाणि सन्तु तब देव ममेन्द्रियाणि, धूपोगुरुर्वपुरिदं हृदयं प्रदीपः।
प्राणान् हविषि करणानि नवाक्षतानि, पूजाफलं व्रजतु साम्प्रतमेष जीवः ।।2।।

अर्थः- हे शम्भो ! मेरे सभी ज्ञानेन्द्रिय आपके पूजा के फूल बनें, यह मेरा शरीर धूप का काम दे, मेरा हृदय तुम्हारी पूजा में दीप का स्थान ले, मेरे प्राण तुम्हारे पूजा रूपी यज्ञ में आहुति का काम दें, मेरे कर्मन्द्रिय अक्षत (पूजा के लिये विना किसी जखम के चावल) का काम दें, हे भगवन् ! मेरा यह जीवात्मा अभी उत्तम पूजा के फल को प्राप्त हो।

जन्मानि सन्तु मम देव शताधिकानि, माया च मे विशतु चित्तमऽबोध हेतु।
किन्तु क्षणार्धमपि त्वच्चरणारबिन्दात्, मा पैतु मे हृदयमीश नमो नमस्ते ।।3।।

इस स्तुति में भक्त भगवान् शंकर से पूजा का फल यह नहीं माँगता है कि मेरा आवामगन छूट जाये, अपितु वार-बार जन्म लेने की मुझे परवाह नहीं, मेरे सैकड़ों जन्म होने दीजिये, मैं यह नहीं माँगता हूँ तेरे चित्त से अज्ञान के कारण वना हुआ माया का पर्दा छिन्न-भिन्न हो जाये, वल्कि वह माया विना किसी रोक-टोक के मेरे चित्त में प्रवेश करे, केवल आपसे प्रार्थना है आपके चरण कमल आधे क्षण के लिये भी मेरे चित्त से न निकले, हे भगवान् शंकर ! आपको वार-वार नमस्कार हो।

ऊपरलिखित इन तीन श्लोकों से फूल अर्पण करके नतमस्तक होकर पढ़ें-"**उमाभ्यां जानुम्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा मनसा वचसा नमस्कारं करोमि नमः।**

अभिनवगुप्त कृत शिवस्तुतिः

इस स्तुति के बारे में जनश्रुति चलती आई है, "जब अभिनवगुप्त स्वेच्छा से अपना पंचभौतिक शरीर छोड़ने के लिये किसी रम्य एकान्त भूमि की तलाश में जन्मभूमि काश्मीर के घने जंगलों में घूम रहे थे, उस समय उनकी शिष्य मण्डली उन के साथ थी, उसी समय शैवशास्त्रों के रचयिता अभिनवगुप्त ने इस स्तुति की रचना की है शिष्यमण्डली के साथ इस शिवस्तुति के गूँज में ही मनोवाँछित स्थान पर पहुँच कर अभिनवगुप्त पञ्चभौतिक शरीर छोडकर ब्रह्मलीन हुये।

ॐ व्याप्त-चराचर-भाव-विशेषं, चिन्मयम्-एकम्-अनन्तम्-अनादिम्।
भैरव-नाथम्-अनाथ-शरण्यम्, तन्मय-चित्ततया-हृदि वन्दे।। 11

भावार्थः मैं अभिनवगुप्त मन की एकाग्रता से उस शंकर की हृदय में वन्दना करता हूँ, जो शंकर अखिल चराचर सृष्टि में ओत प्रोत है। जो ज्ञान रूप है, अनन्त है। भैरवों का स्वामी है और अनाथों को शरण देने वाला है।

त्वन्मयम्-एतत्-अशेषम्-इदानीं, भाति मम त्वत्-अनुग्रह शक्त्या
त्वं च महेश सदैव ममात्मा, स्वात्ममयं मम तेन समस्तम्।। 2 ।।

अर्थ: यह चराचर सृष्टि आप का ही रूप है, ऐसा मुझे आप की अनुग्रहशक्ति से प्रतीत होता है, परन्तु हे शंकर मेरी आत्मा ही आप हैं, अत: यह सारा जगत् मेरा ही रूप है, ऐसा भी मैं अनुभव करता हूँ।

स्वात्मनि-विश्वगते त्वयि नाथे, तेन न संसृति-भीतेः कथास्ति
सत्-स्वपि दुर्धर-दुःख विमोह, त्रास-विधायिषु कर्म-गणेषु।। 3 ।।

अर्थ: हे नाथ ! भयंकर दु:ख मोह उत्पन्न करने वाले कर्मो के जाल में फंसे हुये, आप के भक्त इस भावना कि विश्व आप का ही रूप है अत: वे संसार के क्षणिक दु:खों से डरते नहीं हैं, क्योंकि डर अथवा भय तब होता है जब दूसरा हो, जब आप के बिना कोई दूसरा है ही नहीं तो डर कहाँ "भयं द्वितीयात्"

अन्तक ! मां प्रति मा दृशम्-एनां, क्रोध-कराल-तमां विदधीहि
शंकर-सेवन-चिन्तन-धीरो, भीषण-भैरव-शक्ति-मयोस्मि ।। 4 ।।

अर्थ: हे यमराज ! क्रोध से कराल भयंकर दृष्टि से मेरी ओर न देख, जबकि मैं हर समय शंकर सेवन

के चिन्तन में लगा रहता हूँ, जिस सेवा चिन्तन से मैं भैरवशक्ति का पुंज बना हूँ अतः आप की यह कराल क्रोधभरी दृष्टि मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकती है।

इत्थम्-उपोढ-भवन्मय-संवित्, दीधिति-दारित-भूरि-तमिस्रः
मृत्यु-यमान्तक कर्म-पिशाचै, र्नाथ ! नमोस्तु न जातु बिभेमि ।।5।।

अर्थः हे शंकर सब कुछ आप का ही रूप है ऐसी संवित् के जागृत होने से मेरा अज्ञानरूपी अन्धकार नष्ट हो चुका है, अतः मैं यमराज के परिवारभूत पिशाच आदि से डरता नहीं हूँ, हे नाथ मेरा आप को बार-बार नमस्कार हो।

प्रोदित-सत्य-विबोध-मरीचि-प्रोक्षित-विश्व-पदार्थ-सतत्वः
भाव-परामृत-निर्भरपूर्णे, त्वय्यहम्-आत्मनि निर्वृतिम्-एमि।। 6।।

अर्थः हे शंकर ! आप के सत्यज्ञानरूप किरणों से विश्व के पदार्थ तथा सभी तत्व सिंचित अथवा हरकत में है। ऐसे ही इस ज्ञान के प्रकट होने पर मैं श्रद्धा के अमृत से परिपूर्ण आप के ही स्वरूप भूत अपने ही आत्मा में परमानन्द का अनुभव करने लगता हूँ।

मानस-गोचरम्-एति, यदैव-क्लेश-तनु-ताप-विधात्री
नाथ ! तदैव मम-त्वत्-अभेद, स्तोत्र-परामृत-वृष्टिर्-उदेति ।। 7 ।।

अर्थः शरीर के ताप को उत्पन्न करने वाली कष्ट की दशा को जब मैं मन से महसूस करने लगता हूँ, उसी समय मेरे अन्दर आप के अनुग्रह से प्राप्त अभेद वृष्टि का उदय होता है, जिस के प्रभाव से मैं किसी प्रकार का कष्ट अनुभव नहीं करता हूँ।

शंकर ! सत्यम्-इदं व्रत, दान-स्नान-तपो-भव-ताप-विनाशि
तावक-शास्त्र-परामृत, चिन्ता-सिध्यति चेतसि-निर्वृति-धारा ।। 8 ।।

अर्थः हे शंकर ! यद्यपि व्रत-दान-तप से संसार के दुःखों का नाश होता है, शैवशास्त्र के चिन्तनमात्र से ही मन में अमृत की धारायें प्रवाहित होने लगती हैं।

नृत्यति गायति हृष्यति गाढं, संवित्-इयं मम भैरवनाथ।
त्वां प्रियं आप्य सुदर्शनम्-एकं, दुर्लभम्-अन्यजनैः समयज्ञम् ।। 9 ।।

अर्थः हे मेरे भैरवनाथ ! मेरी दृढ़ संवित् यज्ञादिकों से अप्राप्य आप के अलौकिक दर्शन प्राप्त करके कभी नाचती है कभी गायन करती है कभी हर्ष का अभिनय करती है।

वसु-रस-पौषे कृष्ण-दशम्यां, अभिनव-गुप्तः स्तवम्-इमम्-अकरोत्
येन विभु-भव-मरु-सन्तापं, शमयति झटिति जनस्य दयालुः ।। 10 ।।

भावार्थः भक्तों पर दयालु आध्यात्मिक बलवाले अभिनवगुप्त ने सम्वत् 68 पौषकृष्णदशमी को यह शंकरस्तुति की है जिस के उच्चारण श्रवण मनन से क्षणमात्र में दयालु शंकर संसार रूपी मरुस्थल के दुःखों का नाश करता है। प्रत्यभिज्ञाहृदय, स्पन्द सन्दोह, बोधविलास पराप्रवेशिका आदि शैवशास्त्रों के रचयिता आचार्य क्षेमराज के गुरु, अद्वैतसिद्धान्त के सर्वश्रेष्ठ व्याख्याता "तन्त्रालोक" जैसे महान् शैवग्रन्थ के निर्माता **अभिनवगुप्त** की उपरिलिखित स्तुति संक्षिप्तभावार्थ सहित पाठको को अर्पित है, यह स्तुति विशेषतया हर एक काश्मीरी पण्डित को कण्ठस्थ करनी चाहिये ताकि हमारी आगामी सन्तति अपने आदरणीय पूर्वज काश्मीर के गौरवभूत आचार्य अभिनवगुप्त को भूल न जायें।

शिवसंकल्प (यजुर्वेद से)

यत्-जाग्रतो-दूरम्-उदेति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरं-गमं ज्योतिषां ज्योतिर्-एकं- तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु ।। 1 ।।

अर्थः जो मन जागते हुये मनुष्य का दूर चला जाता है, और सोते हुये का निकट आ जात है, जो परमात्मा के साक्षात्कार का एकमात्र साधन है, जो ज्ञानेन्द्रियों का प्रकाशक और प्रवर्तक है, मेरा वह मन शिव, (कल्याणकारी) संकल्प वाला हो।

येन कर्मा-ण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यत्-अपूर्वं यक्षम्-अन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिव संकल्पम्-अस्तु।। 2 ।।

अर्थः कर्मयोगी विद्वान् जिस मन के द्वारा हर एक कर्म को यज्ञ के ढाँचे में डालते हैं, जो इन्द्रियों का अध्यक्ष है, जो समस्त प्रजा के हृदय में निवास करता है, वह मेरा मन शिव संकल्प वाला हो।

यत्-प्रज्ञानम्-उत चेतो धृतिश्च यत्-ज्योतिर्-अन्तर्-अमृतं प्रजासु।
यस्मात्-न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पम्-अस्तु।। 3 ।।

अर्थः-जो मन ज्ञान का करण है जो धैर्यरूप है, जो समस्त प्रजा के हृदय में रह कर उन की इन्द्रियों को प्रकाशित करता है, जो मृत्यु होने पर भी अमर रहता है, जिस के बिना कोई भी कर्म किया नहीं जाता है वह मेरा मन शिवसंकल्प वाला हो।

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतम्-अमृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु।। 4 ।।

जिस अमृतरूप मन के द्वारा भूत-भविष्य वर्तमान की सभी वस्तुयें जानी जाती हैं, जिस के द्वारा सात होता वाला शरीर रूपी यज्ञ सम्पन्न होता है मेरा वह मन शिवसंकल्प वाला हो (सात होताः-पांच ज्ञानेन्द्रिय मन और बुद्धि)

यस्मिन्-ऋचः साम यजूँषि, यस्मिन् प्रतिष्ठिता-रथनाभौ-इवाराः।
यस्मिन्-चितं सर्वम्-ओतं प्रजानां तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु।। 5 ।।

अर्थः जिस मन में रथचक्र की नाभि में अरियों के समान वेद प्रतिष्ठित है, जिस में सब पदार्थों से सम्बन्ध रखने वाला सम्पूर्ण ज्ञान ओत प्रोत है, मेरा वह मन शिवसंकल्प वाला हो।

सुषा-रथिर्-अश्वान्-इव, यन्मनुष्यान् नेनीयते-अभीशुभिर्-वाजिनःइव।
हृत्प्रतिष्ठं यत्-अजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु।। 6 ।।

अर्थः योग्य सारथि जैसे घोड़ों का संचालन करता है और लगाम के द्वारा घोडों का नियन्त्रण करता है, वैसे ही प्राणियों का संचालन तथा नियन्त्रण करने वाला हृदय में रहने वाला कभी बूढा-न होने वाला, अधिक तेज भागने वाला मेरा मन शिव संकल्प वाला हो।

"कृष्णं वन्देजगत्-गुरुम्"

भगवत् गीता के आरम्भ में भगवान् कृष्ण ने यद्यपि कोई मंगल श्लोक कहा नहीं है परन्तु निम्नलिखित 9 श्लोक किसी कृष्ण भक्त ने बनाए हैं। किसी-किसी भगवद्गीता में यह 9 श्लोक छपे हुए मिलते हैं परन्तु कश्मीरी पण्डित परम्परा से प्राय: यह श्लोक गीता के आरम्भ में पढ़ते हैं इसी कारण से इस वर्ष हमने यह श्लोक अर्थ सहित जन्त्री के पाठ प्रकरण में जोड़े हैं।

ॐ पार्थाय प्रतिबोधितां भगवता नारायणेन स्वयं
व्यासेन ग्रथितां पुराण-मुनिना मध्ये महाभारतम्।
अद्वैतामृत-वर्षिणीं भगवतीम्-अष्टादशा-ध्यायिनीम्
अम्बत्वाम्-अनुसन्दधामि भगवत्-गीते भव-द्वेषिणीम्।। 1।।

अर्थ—भगवान् कृष्ण से अर्जुन को समझाई गई, वेदव्यास से महाभारत में ग्रथित की गई, अद्वैत-अमृत की वर्षा करनेवाली, अठारह अध्याय वाली, ऐसी ही माता भगवद्गीते, तुम्हारा मैं मन से ध्यान करता हूं।

नमोस्तु ते व्यास विशालबुद्धे फुल्लारविंदा-यतपत्र-नेत्र।
येन त्वया भारत-तैल-पूर्ण: प्रज्वालितो ज्ञानमय: प्रदीप:।। 2।।

अर्थ—हे विशाल बुद्धि वाले, हे प्रफुल्लित कमल नेत्र वाले वेदव्यास जी ! आप ने महाभारतरूप तैल से पूर्ण ज्ञानमय दीपक जलाया, ऐसे आपको नमस्कार हो।

प्रपन्न-पारिजाताय तोत्र-वेत्रैक-पाणये।
ज्ञानमुद्राय कृष्णाय गीतामृत-दुहे नमः।। 3।।

अर्थ—शरणागत के कल्पवृक्ष, हाथ में चाबुक लिए हुए, ज्ञान मुद्रा युक्त (ज्ञानरूप) गीता अमृत के दुहने वाले भगवान् कृष्ण को नमस्कार हो।

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्।। 4।।

अर्थ—सभी उपनिषद् मानिए गौ हैं, इस उपनिषद रूपी गौवों को दुहने वाला गोपाल नन्दन भगवान् कृष्ण हैं, अर्जुन बछड़ा है, जो स्वयं दूध गाय के स्तनों से पीकर अपना पेट भरता है और दूसरों के लिए भी निकलवाता है, जिन गौओं से दूध निकलवाता है वही गीता अमृत है, जिस अमृत को पीने वाले बुद्धिमान पुरुष हैं।

वसुदेव सुतं देवं कंसचाणूर-मर्दनम्।
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगत्-गुरुम्।। 5।।

अर्थ—वसुदेव के पुत्र, कंस और चाणूर को मारने वाले, देवकी को परमानन्द देने वाले, जगत् गुरु भगवान् कृष्ण को मैं प्रणाम करता हूं।

भीष्मद्रोणतटा जयत्रथ-जला गान्धार-नीलोत्पला
शल्य-ग्राहवती कृपेण वहनी कर्णेन वेलाकुला।
अश्वत्थाम-विकर्ण-घोर-मकरा दुर्योधना-वर्तिनी
सोत्तीर्णा खलुपाण्डवैः रणनदी कैवर्तके केशवः।। 6।।

अर्थ—जिस युद्धरूपी नदी के भीष्म और द्रोण दोनों तट हैं, जिसमें जयत् रथ जल हैं, गान्धार नील कमल हैं, शल्य ग्रह (ग्रसने वाला) जलचर है, कृप प्रवाह है, कर्ण लहरे हैं, अश्वत्थामा और विकर्ण घोरमकर हैं, दुर्योधन भंवर है, ऐसी युद्धरूपी नदी निश्चय करके पाण्डवों से मल्लाह भगवान् कृष्ण द्वारा उत्तीर्ण की गई है।

पाराशर्यवचः सरोजं-अमलं, गीतार्थ-गन्धोत्कटं
नानाख्यानक-केशरं-हरिकथा, सम्बोधना बोधितम्।
लोके सज्जन-षट्पदैर्-अहर्-अहः पेपीयमानं मुदा
भूयात्-भारत-पंकजं, कलिमल-प्रध्वंसिनः श्रेयसे।। 7।।

अर्थ—पाराशर्य (वेदव्यास) के वचनरूपी सर में उत्पन्न हुए निर्मल गीता-अर्थ रूप उत्कट गन्धवाला, नाना प्रकार के प्रसंगरूप सुगन्धित फूलवाला, हरिकथा (ज्ञान की कथाओं) से जो प्रफुलित है, संसार में सतपुरुषरूप भ्रमरों से आनन्दपूर्वक प्रतिदिन पिया जाने वाला, कलियुग के पापों का नाश करने वाला ऐसा यह महाभारत रूप कमल हमारा कल्याण करे।

मूकं करोति वाचालं पंड्गुं लङ्घयते गिरिं।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द-माधवम्।। 8।।

अर्थ—मैं उस परमानन्द लक्ष्मीपति को नमस्कार करता हूं, जिनकी कृपा गूंगे को वाचाल और लंगडे को पर्वत उलंघन करनेवाला बना देता हैं।

यं ब्रह्मा-वरुणेन्द्र-रुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै,
वेंदैः सांग, पद, क्रमो-पनिषदै-र्गायन्ति यं सामगाः।
ध्याना-वस्थित तत्-गतेन मनसा, पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः।। 9।।

अर्थ—ब्रह्मा, इन्द्र, रुद्र और वायु देवता जिस परमात्मा की दिव्य स्तोत्रों से स्तुति करते हैं, सामवेद के गाने वाले (उद्गाता) अङ्ग; पद, क्रम, उपनिषदों सहित वेदों से जिसको गाते हैं, योगी लोग ध्यान में स्थित तद्गत हुए मन से जिनका दर्शन करते हैं, देवता और असुरगण (कोई भी) जिनके अन्त को नहीं जानते उन परमदेव भगवान् कृष्ण को मेरा नमस्कार हो।

अष्टादशश्लोकी गीता

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
वेंदैः साँगपद-क्रमोप-निषदै-र्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरा-सुर-गणा देवाय तस्मै नमः।।

अर्थ-जिनका ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र, और मरुद्गण दिव्य स्तोत्रों द्वारा स्तुति करते हैं, सामवेदके गानेवाले अंग, पद, क्रम और उपनिषदों के सहित वेदों द्वारा जिनका गान करते हैं, योगीजन ध्यान में स्थित तद्गत हुए मनसे जिनका दर्शन करते हैं, देवता और असुरगण (कोई भी) जिनके अन्तको नहीं जानते, उन (परमपुरुष नारायण) देव के लिए मेरा नमस्कार है।

निमित्तानि च पश्यामि-विपरीतानि केशव
न च श्रेयो-नुपश्यामि हत्वा स्वजनम्-आहवे।। 1 ।।

अर्थ- अर्जुन भगवान् से कहता है, कि अब मुझे सब लक्षण उल्टे दिखाई देते हैं, ऐसे मुझे प्रतीत नहीं होता है कि अपने सम्बन्धियों को युद्ध में मारकर कुछ कल्याण हो सकेगा।अध्याय 1 श्लोक 31

योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय।
सिद्ध्य-सिद्ध-योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।। 2 ।।

अर्थ-फल की आशा छोड़ कर सिद्धि हो या न हो फिर भी अपने मन की वृत्ति समान रखनी चाहिये, इस प्रकार की चित्त की समवृत्ति को योग कहते हैं, इस योग से युक्त होकर मनुष्य अपने सब कर्म करे।

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।
इद्रियार्थान्-विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते।। 3 ।।

अर्थ-जो हठ से कर्मेन्द्रियों को रोकता है परन्तु अन्दर ही अन्दर मन से विषयों का चिन्तन करता है उस मूर्ख को मिथ्याचारी कहते हैं।

अध्याय 3 श्लोक 6

श्रद्धावान्-लभते ज्ञानं तत्-परः संयतेन्द्रियः
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिम्-अचिरेणाधिगच्छति।। 4 ।।

अर्थ-ईश्वर गुरु और धर्म शास्त्रों में श्रद्धा रखने वाला मनुष्य ज्ञान को प्राप्त करता है और ज्ञान होने

पर उसको शान्ति प्राप्त होती है। अध्याय 4 श्लोक 39

यतेन्द्रिय मनो बुद्धि-र्मुनि-मोक्ष-परायणः
विगतेच्छा-भय क्रोधो-यः सदा मुक्त एव सः।। 5 ।।

अर्थ-जो मनुष्य इन्द्रियों, मन और बुद्धि को वश में रखता है और केवल ब्रह्मशान्ति प्राप्त करने में लगा रहता है वह सदा मुक्त है। अध्याय 5 श्लोक 28

युक्ताहार-विहारस्य युक्त-चेष्टस्य कुर्मसु
युक्त-स्वप्ना-व बोधस्य योगो भवति दुःखहा।। 6 ।।

अर्थ- यथायोग्य आहार विहार करने वाला कर्मो को यथायोग्य ढंग से करने वाला यथायोग्य निद्रा करने और योग्य समय पर उठने वाले साधक का योग दुःख को दूर करने वाला होता है।
अध्याय 6श्लोक 17

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया,
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायाम्-एतां-तरन्ति-ते।। 7 ।।

अर्थ-परमात्मा की सत्वरज तमोगुणमयी माया को पार करना कठिन है जो मुझ ईश्वर को प्राप्त करते

हैं वह इस माया से पार हो जाते हैं।

अध्याय 7 श्लोक 14

अग्निर्-ज्योतिर्-अहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्

तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः।। 8 ।।

अर्थ-उत्तरायण काल के छः मास के शुक्ल पक्ष में दिन के प्रकाश में प्रदीप्त अग्नि के समय जो ब्रह्मज्ञानी इस शरीर को छोड़कर चले जाते हैं वे ब्रह्म को प्राप्त होते हैं।

अध्याय 8 श्लेक 24

अपि चेत्-सुदुराचारो भजते माम्-अनन्यभाक्

साधुर्-एव स मन्तव्यः सम्यक्-व्यव-सितोहि-सः।

अर्थ- बड़े से बड़ा दुराचारी यदि अनन्यभाव से मेरा भजन करेगा तो यह समझ लेना चाहिये कि वह साधु हो जायेगा।

अध्याय 9 श्लोक 30

यो माम्-अजम्-अनादिम्-च वेत्ति-लोक-महेश्वरम्

असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते।।

अर्थ-जो मुझे जन्म रहित, आदि रहित सब लोकों का स्वामी समझता है वह संसार में अज्ञान से छूटकर यानी ज्ञानी बनकर सब पापों से मुक्त होता है।

अध्याय 10 श्लोक 3

मत्कर्म कृत्-मत्परमो मत्-भक्तः संघ-वर्जितः
निर्वैरः, सर्व-भूतेषु यः स मामेति पाण्डव।।

अर्थ-हे अर्जुन जो मेरे लिये कर्म करता है, जो मुझे परमश्रेष्ठ मानता है जो भोगों का संग छोड़ता है और सब प्राणियों के विषय में वैर रहित होता है मेरा वही भक्त मुझे प्राप्त करता है।

अध्याय 11 श्लोक 55

श्रेयो हि ज्ञानम्-अभ्यासात्, ज्ञानात्-ध्यानं विशिष्यते,
ध्यानात्-कर्म-पलत्याग, स्त्यागात्-शान्तिर्-अनन्तरम्।।

अर्थ-अभ्यास योग से ज्ञान योग श्रेष्ठ है, ज्ञान योग से ध्यान योग की विशेषता अधिक है, ध्यान योग से कर्मफल का त्याग उत्तम है, कर्मफल का त्याग करने से शीघ्र ही शान्ति मिलती है।

अध्याय 12 श्लोक 12

क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्व-क्षेत्रेषु भारत
क्षेत्र-क्षेत्र ज्ञयोर्ज्ञानं-तत्-यत्-ज्ञानं मतं मम।।

अर्थ-हे भारत! सब क्षेत्र में रहने वाले मुझे तू क्षेत्रज्ञ समझ जो क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का ज्ञान है वही मेरा ज्ञान है।

अध्याय 13 श्लोक 2

मां च यो -व्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते,

स गुणान्-सम्-अतीत्य-तान्-ब्रह्म्-भूयाय कल्पते।।

अर्थ-जो एक निष्ठ भक्ति भाव से मेरी सेवा करता है वह इन गुणों को लांघ कर ब्रह्म के महत्व को प्राप्त करने योग्य बन जाता है। अध्याय 14 श्लोक 26

निर्मान-मोहा जितसंग-दोषा अध्यात्म-नित्या विनि-वृत्तकामाः

द्वन्द्वै-र्विमुक्ता सुख दुःख संज्ञैर्गच्छन्त्य मूढाःपदम्-अव्ययं-तत्।।

अर्थ-जो अभिमान रहित, मोह रहित, अनासक्त आत्मनिष्ठ भोगवासना रहित, द्वन्द्वभाव से दूर और ज्ञानी है, वह उस अविनाशी परम पद को प्राप्त होते हैं। अध्याय 15 श्लोक 5

यः शास्त्र-विधिम्-उत्सृज्य वर्तते काम-कारतः।

न स सिद्धिम्-अवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।।

अर्थ- जो शास्त्र विधि को त्याग कर मनमाना आचरण करता है उसे न सिद्धि मिलती है न सुख मिलता है और न श्रेष्ठ गति ही प्राप्त होती है। अध्याय 16 श्लोक 23

मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनम्-आत्म-विनिग्रहः।
भाव-संशुद्धिर्-इत्येतत्-तपो मानसम् उच्यते।।

अर्थ- मन को प्रसन्न रखना, शान्ति का अवलम्बन करना, मौन धारण करना, संयम करना और आत्मशुद्धि करना मानसिक तप है। अध्याय 17 श्लोक 16

सर्व-धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्व-पापेभ्यो मोक्ष-यिष्यामि मा-शुचः।।

अर्थ-सब धर्मों को छोड़कर मुझ अकेले (ईश्वर) की शरण आये मैं तुम्हें सब पापों से मुक्त करूँगा, तू शोक मत कर। अध्याय 18 श्लोक 66

सप्तश्लोकी गीता

ॐ इत्येकाक्षंर ब्रह्म, व्याहरन्-माम्-अनुस्मरन्
यः प्रयाति त्यजन् देहं, स याति परमां गतिम्।.

अर्थ- योग धारण में स्थित ओंकार रूपी एकाक्षर ब्रह्म का उच्चारण करता हुआ और मेरा (परमेश्वर) का चिन्तन्र करता हुआ जो साधक देह त्यागता है वह निःसनदेह श्रेष्ठगति को प्राप्त होता है।

अध्याय 8 श्लोक 13

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या। जगत्-प्रहृष्य-त्यनुरज्यते च।।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति। सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः 1. 2।।

अर्थ-हे हृषीकेश यह ठीक ही है आपका कीर्तन करने से जगत् प्रसन्न होता है और उसमें उसको प्रीति होती है, राक्षस तुम से डर कर दिशाओं में भाग जाते हैं और सभी पुरुषों के समुदाय आपको प्रणाम करते हैं।

अध्याय 11 श्लोक 36

सर्वतः पाणिपादं तत्-सर्वतोक्षि-शिरोमुखम्।
सर्वतः श्रुतिमत्-लोके सर्वम्-आवृत्य-तिष्ठति।। 3 ।।

अर्थ-इस लोक में उसके सर्वत्र हाथ, पांव सब ओर आँख, सिर और मुख और सब ओर कान हैं वह सर्वत्र व्याप कर रह रहा है।

अध्याय 13 श्लोक 13

कविं पुराणम्-अनुशासितारम्। अणोरणीयांसम्-अनु-स्मरेत्-यः।।
सर्वस्य धातारम्-अचिन्त्यरूपम्। आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्।। 4 ।।

अर्थ- जो अन्तकाल में सर्वज्ञ पुरातन नियन्ता अणु से भी सूक्ष्म, सब के धारण कर्ता अचिन्त्य स्वरूप अन्धकार से परे रहने वाले सूर्य के समान तेजस्वी ईश्वर का स्मरण करता है-वह उसी दिव्य परमात्मा को प्राप्त होता है। अध्याय 8 श्लोक 9

उर्ध्वमूलम्-अधः-शाखम्-अश्व-त्थं प्राहुर्-अव्ययम्।
छन्दांसि-यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्।। 5 ।।

अर्थ- संसार का वृक्ष अनादि अनन्त चारों ओर फैला है, इसके ज्ञान रूपी पत्ते सबको शीतल छाया देने वाले हैं, शाखायें ऊपर नीचे फैली है, इनमें सत्त्व-रज तम गुणों का रस भरपूर भरा है, शब्द स्पर्श रूप रस गंध विषयों के सुखदायी कोमल अंकुर लगे हैं और इनकी कर्मों से सम्बन्ध जोड़ने वाली जड़े चारों ओर फैली हुई है। अध्याय 15 श्लोक 1

सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो मत्तः स्मृतिर्-ज्ञानम्-अपोहनं च।
वेदैश्च सर्वैर्-अहमेव वेद्यो वेदान्त-कृत्-वेद विदेव-चाहम्।। 6।।

अर्थ– मैं ईश्वर सबके हृदयों में रहता हूँ, मुझसे ही सब को स्मरण, ज्ञान विस्मरण और अज्ञान होता है मैं ही सब वेदों के द्वारा जानने योग्य हूं और मैं ही वेदान्त शास्त्र का निर्माण करने वाला और वेद का ज्ञाता हूं।
अध्याय 15 श्लोक 15

मन्मना-भव-मत्-भक्तो मत्-याजी मां नमस्कुरु।
मामे-वैष्यसि युक्त्वैवम्-आत्मानं मत्-परायणः।। 7 ।।

अर्थ– मुझमें मन लगा, मेरा भक्त बन, मेरे निमित्त भजन कर, मुझे नमस्कार कर, इस तरह मुझमें परायण होकर मेरे साथ आत्मा का योग करने से तू मुझे प्राप्त कर लेगा।
अध्याय 9 श्लोक 34

सप्तश्लोकी दुर्गा

ज्ञानि-नाम्-अपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलात्-आकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।। 1 ।।

अर्थः भगवती माहमाया देवी ज्ञानियों के भी चित को बलपूर्वक खींच कर मोह में डाल देती है।।1।।
अध्याय 1 श्लोक 55

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-अशेष-जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिम्-अतीव शुभां ददासि।
दारि-द्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वत्-अन्या
सर्वोप-कार-करणाय दयार्द्र-चित्ता।। 2 ।।

अर्थः माँ दुर्गे! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय हर लेती है, और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें परम कल्याण रूपी बुद्धि देती है, दुःख दरिद्रता हरनेवाली देवी आप के बिना कौन है जिस का चित्त सब का उपकार करने के लिये सदा ही दयार्द्र रहता है।।2।। अध्याय 4 श्लोक 17

सर्व-मंगल-मंगल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके,
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते।। 3 ।।

अर्थः हे माँ! तुम सब प्रकार का मंगल करने वाली मंगलमयी हो, कल्याण करने वाली शिवा हो, सब पुरुषार्थो को सिद्ध करने वाली, शरणागत-वत्सला, तीन नेत्रों वाली तथा सब की पीड़ा दूर करने वाली, नारायणी देवी, तुम्हें नमस्कार है। अध्याय 11 श्लोक 10

शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे
सर्वस्यार्ति-हरे देवि नारायणि नमोस्तु ते।। 4 ।।

अर्थः शरण में आये हुये, दीनों एवं पीड़ितों की रक्षा में लगी रहने वाली, तथा सब की पीड़ा दूर करने वाली, नारायणी देवी तुम्हें नमस्कार है। अध्याय 11 श्लोक 12

सर्व-स्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते,
भयेभ्यस्त्राहि-नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते।। 5 ।।

अर्थः सर्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न, दिव्यरूपा दुर्गे सब भयों से हमारी रक्षा करो, तुम्हें नमस्कार है। अध्याय 11 श्लोक 24

रोगान्-अशेषान्-अपहंसि तुष्टा
रुष्टा-तु कामान् सकलान्-अभीष्टान्
त्वाम्-आश्रितानां न विपत्-नराणां
त्वाम्-आश्रिता ह्या श्रयतां प्रयान्ति।। 6 ।।

अर्थः हे देवी ! तुम प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट करने वाली, और कुपित होने पर मनोवांछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके हैं, उन पर विपत्ति आती ही नहीं है, तुम्हारी शरण में गये हुये मनुष्य दूसरों को शरण देने वाले हो जाते है।।6।।

अध्याय 11 श्लोक 29

सर्वा-बाधा-प्रशमनं त्रैलोक्य-स्याखिलेश्वरि
एवम्-एव त्वया कार्यम्-अस्मत्-वैरि-विनाशनम्।। 7 ।।

अर्थः हे सर्वेश्वरि ! जिस प्रकार तुम ने मधुकैटभ का नाश किया तुम उसी प्रकार तीनों लोकों की सभी बाधाओं को शान्त करो और हमारे शत्रुओं का नाश करती रहो। अध्याय 11 श्लोक 29

इति सप्तश्लोकी दुर्गा समाप्ता

* *

भगवान् कृष्ण कहते हैं

जो व्यक्ति श्रद्धा से गीता संवाद (गीता प्रवचन) सिर्फ सुनेगा ही, वह मुक्त होकर, पुण्यात्मा जहां पहुंचते हैं उन शुभलोकों को वह भी पावेगा।

अध्याय 18 श्लोक71

वन्दे महापुरुष ते चरणारबिन्दम्

ध्येयं सदा परिभवघ्नं-अभीष्टदोहं
तीर्थास्पदं शिव-विरिञ्चि-नुतं शरण्यम्।
भृत्यार्तिहं प्रणतपाल ! भवाब्धिपोतं
वन्दे-महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।। 1।।

अन्वय-शब्दार्थ

महापुरुष = हे भगवान् कृष्ण, **प्रणतपाल !** = प्रणाम करने वालों की रक्षा करने वाले, **ते** = आपके, **चरणारबिन्दं** = चरण कमल को, **ध्येयं** = जो ध्यान करने के योग है, **सदा** = हर समय, **परिभवघ्नं** = अपमानादि दु:खों का नाश करने वाला, **अभीष्ट दोहं** = इछित पदार्थों का देने वाला, **तीर्थास्पदं** = तीर्थों का स्थान, **शिवविरिञ्चिनुतं** = शंकर और ब्रह्मा जिस को झुकते हैं, **शरण्यं** = रक्षा करने वाला, **भृत्यार्तिहं** = दासों अथवा भक्तों के दु:खों का नाश करने वाला, भवाब्धिपोतं= संसार सागर से पार करने वाला जहाज़।।

अर्थ :–हे महापुरुष-हे प्रणतपाल भगवान कृष्ण! मैं आपके उस चरण कमल को प्रणाम करता हूँ, जो चरण कमल ध्यान करने योग्य हैं, जो दुःखों का नाश करने वाला है, जो इच्छित पदार्थों का देने वाला है, जिस में सभी तीर्थ टिके हुये हैं, शंकर और ब्रह्मा जिस को झुकते हैं, जो रक्षा करने वाला हैं, जो भक्तों के दुःखों का नाश करने वाला है, जो भवसागर से पार करने के लिए जहाज़ है।

त्यक्त्वा सुदुस्त्यज–सुरेप्सित–राज्यलक्ष्मीं
धर्मिष्ठ–आर्य–वचसा यत्–अगात्–अरण्यम्।
मायामृगं दयित–येप्सितं–अनुधावत्
वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।।2।।

__धर्मिष्ट__ = धर्मात्मा, __आर्य__ = श्रेष्ठ राजा दशरथ के कहने से, __सुदुस्त्यज__ = जिस का त्याग करना बहुत ही कठिन है, __सुरेप्सित__ = देवता जिस को चाहते हैं, __ऐसी राज्यलक्ष्मीं__ = राज्यपाठ को, __त्यक्त्वा__ = छोड कर, __यत्__ = जो (चरणकमल) __अरण्यं__ = जंगल को, __अगात्__ = गया, __मायामृगं__ = माया शरीरधारी, __मृगं__ = हिरण को, __दयितयेप्सितं__ = सीता से चाहा हुआ, __अनुधावत्__ = पीछे दौड़ पड़ा।

अर्थ–धर्मात्मा राजा दशरथ के कहने से (ऐसी राज्य लक्ष्मी) ऐसा राजपाठ जिस का त्याग करना बहुत ही कठिन

है, जिस को देवता चाहते हैं–ऐसे राज्यपाठ को छोडकर (ठुकराकर) जो चरणार-बिन्द जंगल में गया, सीता से चाहे हुये, माया शरीरधारी मृग के पीछे जो चरण कमल दौड पडा, ऐसे ही प्रशंसनीय कार्य रामावतार में जिस चरणकमल ने किया था उसको मैं नमस्कार करता हूँ।

श्रीमत्–सरोरुह–यवाँकुश–चक्रचाप
मत्स्या–ङ्कितं नव–विल्लोहित–पल्लवाभम्
लक्ष्म्यालयं परममंगलं–आत्मरूपं
वन्दे महापुरुष! ते–चरणारबिन्दम्।। 3।।

अन्वय-शब्दार्थ

श्रीमत् = शोभायमान, **सरोरुह** = कमल, **यव** = जव, **अंकुश** = लोहे की वह छड़ी जिस से हाथी हाँका जाता है (काश्मीरी में टोंग) **चक्र** = गोलाकार चिह्न, **चाप**= धनुष, **मत्स्य** = मछली (इन सामुद्रिक चिह्नों से) **अंकितं** = निशानवाला, **नव** = नये, **विल्लोहित** = लाल, **पल्लव** = बाल पत्र की, **आभम्** = शोभावाला, **लक्ष्म्यालयं** = लक्ष्मी का घर, **परमंगलं** = अधिक मंगलदायक, **आत्मरूपं** = परमात्मा का ही प्रत्यक्षरूप, **ते** = आपके, **चरणारबिन्दं** = चरण कमल को, **वन्दे** = प्रणाम करता हूँ।

अर्थ–मैं आप के उस चरण कमल को प्रंणाम करता हूँ, जो शोभायुक्त है, जो चरणारबिन्द कमल, जव, अंकुश, चक्र, धनु, मछली इन सामुद्रिक राज योग वाले चिह्नों से युक्त हैं जो लाल बालपत्र की जैसा शोभावाला है जो लक्ष्मी का घर है, जो परम-मंगलदायक है, जो परमात्मा का ही प्रत्यक्षरूप है।

वृन्दावनान्तरं–अगात्–अनुगोकुलानां
संचार्य सर्वपशुभिः स्वविवृद्ध–कामी।
संचिन्तयत्–अगगुरो–मृगपक्षिणां यत्
वन्दे महापुरुष! ते चरणार बिन्दम्।।4।।

अन्वय-शब्दार्थ

***स्वविंवृद्धकामी** = अपने गोकुल की वृद्धि का इच्छुक (भगवान् कृष्ण) **गोकुलानां-अनु** = गोकुल के पश्चात्, **वृन्दावनान्तंर** = वृन्दावन में, **अगात्** = गया, **सर्वपशुभिः** = सभी गोकुल के पशुओं के साथ, **संचार्य** = दौड़धूप करके अथवा (घूमघाम कर) **यत्** = जिस चरणकमल ने, **मृगपक्षिणां** = मृगपक्षी गोओं को, **अगगुरोः** = गोर्वधन पर्वत के नीचे, **संचिन्तयत्** = एकत्रित किया, **ते** = आप के, **तत् चरणारबिन्दं** = उस चरणकमल को **वन्दे** = मैं नमस्कार करता हूँ।*

अर्थ–जो भगवान् कृष्ण अपने कुल की वृद्धि का इच्छुक था, गोकुल के सभी पशुओं के साथ दोड़धूप करके जो चरण कमल वृन्दावन में गया, जिस चरणारबिन्द ने सभी मृगपक्षी गोओं को गोवर्धन पर्वत के नीचे एकत्रित किया था, हे महापुरुष भगवान् आप के उसी चरणारबिन्द को मैं प्रणाम करता हूँ।

यत्–गोपिका–विरह–जाग्नि परीतदेहाः
तप्तस्तनेषु विजहुः परिरभ्य तापम्।
रासे तदीय कुच–कुँकुम–पङ्कलिप्तं
वन्दे महापुरुष! ते चरणार–बिन्दम्।।5।।

अन्वय शब्दार्थ

गोपिका = गोपिकाओं के, **विरहजा** = विरह से उत्पन्न हुये, **अग्निपरीत** = अग्नि से घेरे हुये, **देहाः** = शरीरवाली, **तपस्तनेषु** = जलन से पीडित स्तनों में, **यत्** = जिस चरणबिन्द को, **परिरभ्य** = स्पर्श करके, **तापं** = जलन, **विजहुः** = समाप्त हुई, **रासे** = रास लीला में, **तदीय** = उन गोपिकाओं के, **कुच** = स्तनों पर जो, **कुँकुम** = **पङ्कलिप्तं** = केसर का लेप था उस से लिप्त, **ते-चरणार-बिन्दम्** = आप के चरणाकमल को **वन्दे** = प्रणाम करता हूँ।।

अर्थ–रासलीला में गोपिकाओं के स्तनों के केसरलेप से लिप्त जिस चरणारबिन्द को (आलिंगन) स्पर्श करके, विरह

की अग्नि से घेरे हुये गोपिकाओं के जलन से पीडित स्तनों का ताप दूर हुआ था हे महा पुरुष कृष्ण! मैं उस चरणारबिन्द को प्रणाम करता हूँ।।

कालीय-मस्तक-विघटन-दक्षम्-अस्य
मोक्षेप्सुभि-र्विरहदीन-मुखाभिर्-आरात्।
तत्-पत्निभिः स्तुतम्-शेष-निकामरूपं
वन्दे महापुरुष! ते चरणार-बिन्दम्।।6।।

अन्वय शब्दार्थ

कालीय *= कालीनाग के,* ***मस्तक*** *= सिर के,* ***विघटन*** *= नष्ट करने में (फोडने में)* दक्षं *= निपुण, तत्* - ***पत्निभिः*** *= उस कालीनाग की पत्नियों ने,* ***मोक्षेप्सुभिः*** *= मोक्ष की इच्छावाली,* ***विरह-दीन-मुखाभिः*** *= कालीनाग के विरह से दीन मुखवाली,* ***आरात्*** *= समीप में बैठी हुई,* ***अशेष-निकाम-रूपं*** *= अत्यन्तश्रद्धासे,* ***स्तुतम्*** *= स्तुति किया हुआ,* ***ते*** *= आपके* ***चरणारबिन्दं*** *= चरण कमल को,* ***वन्दे*** *= नमस्कार करता हूँ।*

अर्थ—पति के विरह से दुःखित, पति के मुक्ति की इच्छावाली, कालीनाग की स्त्रियों ने, कालीनाग के समीप बैठकर जिस चरणारबिन्द की-अनन्य भक्ति से स्तुति की थी, जो चरणारबिन्द कालीनाग के मस्तक फोडने में (नष्ट करने

में) निपुण था, हे महापुरुष, मैं आप के उस चरणारबिन्द को नमस्कार करता हूँ।

ज्ञानालयं श्रुतिविमृग्यं-अनादिम्-अर्च्यम्
ब्रह्मादिभि र्हृदि-विचन्त्यं-अगाध-बोधैः।
संसार-कूप-पतितो-त्तरणाव-लम्बम्
वन्दे महापुरुष! ते चरणारबिन्दम्।। 7।।

अन्वय-शब्दार्थ

ज्ञानालयं *= जो ज्ञान का घर है,* ***श्रुति-विमृग्यं*** *= वेद जिस को ढूँढते हैं,* ***अनादिम्*** *= जिस का आद्य नहीं है,* ***अर्च्यं*** *=जो पूजा के योग्य है,* ***ब्रह्मादिभिः*** *= ब्रह्मादि देवता,* ***हृदि*** *= हृदय में,* ***विचन्त्यम्*** *= जिस का चिन्तन करते हैं,* ***अगाध बोधैः*** *= अधिक ज्ञानी (ज्ञान के भण्डार)* ***संसार कूप*** *= संसार के कुयें में,* ***पतितं*** *= घिरे हुओं को,* ***उत्तरण*** *= पारलेने में,* ***अवलम्बं*** *= सहारा बने हुये।*

अर्थ–जो ज्ञान का घर है, वेद जिस को ढूँढते हैं, जो आद्यन्त रहित है, जो पूजा के योग्य है, जो ज्ञान का भण्डार है। ब्रह्मादि देवता हृदय में जिस का चिन्तन करते हैं, संसाररूपी कुएँ में गिरे हुओं को पार करने में जो सहारा बना है-हे महापुरुष कृष्ण मैं आपके उस चरणारबिन्द को नमस्कार करता हूँ।

येनाङ्क-बालवपुषः स्तनपान-बुद्धेः
त्वत्-अँघ्रिणा-हृतमऽनो विपरीत चक्रम्।
विध्वस्त-भाण्डम्-अपतत् भुवि गोपमूर्तेः
वन्दे महापुरुष! ते चरणारबिन्दम्।।7।।

अन्वय-शब्दार्थ

येन *= जिस कृष्ण ने,* ***अङ्कबालवुपुषः*** *= गोद में उठाने योग्य छोटे शरीर वाले,* ***स्तन पानबुद्धेः*** *= दूध पीने की इच्छा वाले,* ***त्वत्*** *= आप के,* ***अंघ्रिणा*** *= पावों से,* ***हृतम्*** *= लात मारा हुआ,* ***विध्वस्तभाण्डम्*** *= तोडे हुये बर्तनों से युक्त,* ***विपरीतचक्रम्*** *= उल्टा दिया हुआ,* ***अनः*** *= छकडा,* ***गोपमूर्तेः भुवि*** *= नन्दगोप के अँगान में,* ***अपतत्*** *= जिस चरणारबिन्द से गिरा, उस,* ***ते*** *= आपके,* ***चरणारबिन्दं*** *= चरण कमल को,* ***वन्दे*** *= नमस्कार करता हूँ।*

अर्थ–गोद में उठाने योग्य छोटे शरीरवाले, दूध पीने के इच्छुक श्रीकृष्ण के पाँवों से लात मारा हुआ, तोडे हुये दूध के बर्तनों से भरा हुआ उल्टा दिया हुआ छकडा नन्दगोप के आँगन में जिस चरणारबिन्द ने गिराया उस आपके चरण कमल को हे महापुरुष मैं नमस्कार करता हूँ।

इत्यष्टकं पठति यः परमस्य पुंसो
नारायणस्य निरयार्णव-तारणस्य
सर्वाप्तिमाशु-हृदये कुरुते मनुष्यः
संप्राप्य-देहविलयं लभते च मोक्षम्।।8।।

अन्वय-शब्दार्थ

नारायणस्य = *सृष्टि का बनाने वाला तथा लय करने वाला,* ***निरयार्णव*** = *कष्ठों से भरे सागर से-****तारणस्य*** = *पार करने वाले,* ***परमस्य पुंसः*** = *भगवान कृष्ण के,* ***इति*** = *ऐसे ही,* ***अष्टकं*** = *यह आठ श्लोक,* ***यः मनुष्यः*** = *जो मनुष्य,* ***आशु*** = *विना विलम्ब के,* ***हृदये*** = *हृदय में,* ***कुरुते*** = *धारण करता है,* ***सर्वाप्तिम्-संप्राप्य*** = *सभी सुख ऐश्वर्य प्राप्त करके,* ***देह विलयं लभते*** = *आवागवन से मुक्त हो जाता है*

अर्थ—सृष्टि के बनाने तथा लय करने वाले, कष्टों से भरे सागर से पार करने वाले, भगवान कृष्ण के यह आठ श्लोक जो मनुष्य हृदय में धारण करता है, भक्ति से पढता है, वह मनुष्य सभी ऐश्वर्य प्राप्त करके, आवागमन के चक्र से मुक्त हो जाता है।

प्रातः स्मरण मंगलस्तोत्रम्

उत्तिष्ठो-त्तिष्ठ गोविन्द, उत्तिष्ठ गरुड़-ध्वज,
उत्तिष्ठ-कमलाकान्त, त्रैलोक्ये मंगलं कुरु।। 1 ।।
मंगलं भगवान् विष्णुः, मंगलं गरुड-ध्वजः,
मंगलं पुण्डरीकाक्षः मंगलायतनं हरिः।। 2 ।।
मूकं करोति वाचालं, पंगुं लंघयते गिरिम्
यत् कृपा तम्-अहं वन्दे, परमानन्द-माधवम्।। 3 ।।
नमो ब्रह्मण्य-देवाय, ग्रोब्रह्मण-हिताय च
जगत्-हिताय कृष्णाय, गोविन्दाय नमोनमः।। 4 ।।

कृष्णाय वासुदेवाय, देवकी-नन्दनाय च
नन्द-गोपकुमाराय, गोविन्दाय नमो नमः।। 5 ।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वम्-एव,
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।। 6 ।।

एक-श्लोकी-नवग्रहस्तोत्रम्

ब्रह्मा-मुरारिः-त्रिपुरान्त-कारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च,
गुरुश्च शुक्रःशनि-राहु केतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

इस एकश्लोकी नवग्रह स्तोत्र के नित्यपाठ से नवग्रहों की शान्ति होती है।

एकश्लोकी रामायण

आदौ राम-तपोवनादि-गमनं, हत्वा मृगं कांचनं
वैदेही-हरणं जटायु-मरणं, सुग्रीव सम्भाषणम्।
वाली निर्दलनं समुद्र तरणं, लंकापुरी-दाहनं
पश्चात् रावण कुम्भकर्ण-हननं, चैतत्-हि-रामायणम्।।1।।

श्रीरामस्तुतिः

श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि
सुग्रीवमित्रं परमं पवित्रं, सीताकलत्रं नवमेघ-गात्रम्।

कारुण्य-पात्रं शतपत्र-नेत्रं, श्रीराम-चन्द्रं सततं नमामि। 1 ।

अर्थः- सुग्रीव के मित्र, परमपावन, सीता के पति नवीन मेघ के समान शरीर वाले। करुणा के सिन्धु, कमल के समान नेत्रवाले श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

संसार-सारं निगम-प्रचारं-धर्मावतारं हृतभूमि-भारम्।
सदाविकारं सुखसिन्धु-सारं-श्रीराम-चन्द्रं सततंनमामि।। 2 ।।

अर्थः- असार संसार का सारवस्तु, वेदों का प्रचार करने वाले, धर्म के अवतार, भू-भार हरण करने वाले, सदा विकार रहित, आनन्द सिन्धु के सारभूत, श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।।

लक्ष्मी-विलासं जगतां निवासं-लंकाविनाशं भुवन-प्रकाशम्।
भू-देव-वासं शरत्-इन्दुहासं-श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।। 3 ।।

अर्थः- लक्ष्मी से विलास करने वाला, जगत् का निवास, लंकानाश करने वाला, भुवनों को प्रकाशित करने वाला, ब्राह्मणों को शरण देने वाला, शरत् चन्द्र हास्यवाला, श्रीरामचन्द्र का मैं निरन्तर नमन करता हूँ।

मन्दार-मालं-वचने रसालं - गुणैर्विशालं हत-सप्त-तालम्
क्रव्याद-कालं सुर-लोकपालं- श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।। 4 ।।

अर्थ:-मन्दारपुष्प माला वाले, रसीले वचन बोलने वाले, गुणों में महान्, सातताल वृक्ष भेदने वाले, राक्षसों के काल, देवलोक पालक, श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।।

वेदान्त-गानं सकलैः समानं - हतारि-मानं-त्रिदश-प्रधानम्।
गजेन्द्र-यानं विगतावसानं - श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।। 5 ।।

अर्थ:-वेदान्त द्वारा गेय, सबके साथ एक जैसा, शत्रुओं का नाम मर्दन करने वाला, देवताओं में गजेन्द्र सवारी करने वाले, अन्त-रहित-श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

श्यामाभि-रामं नयना-भिरामं, गुणाभिरामं, वचनाभिरामम्।
विश्व-प्रणामं कृतभक्तकामं, श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।। 6 ।।

अर्थ:- श्याम सुन्दर, नेत्रों को आनन्द देने वाला, गुणों से मनोहर, मधुर वचन बोलने वाले विश्व वन्दनीय, भक्तजनों की कामनायें पूर्ण करने वाले, श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

लीलाशरीरं रणरंगधीरं, विश्वैकसारं रघुवंश-हारम्।
गम्भीरनादं जितसर्व-वादं, श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।। 7 ।।

अर्थः- लीला के लिये शरीर धारण करने बाले रणस्थली में धीर, विश्व के सार, रघुवंश में श्रेष्ठ, गम्भीरवाणी बोलने वाले, समस्तवादों को जीतने वाले, श्रीरामचन्द्र को मैं प्रतिक्षण प्रणाम करता हूँ।

खले कृतान्तं स्वजने विनीतं - सामोपगीतं मनसाऽप्रीततम्।
रागेणगीतं वचनात्-अतीतं - श्रीराम चन्द्रं सततं नमामि।। 8 ।।

अर्थः- दुष्टों के लिये मृत्युरूप, अपने भक्तों के लिये नम्रभाव वाले, सामवेद के द्वारा स्तुत, मन के अगोचर प्रेम से गान करने वाले योग्य, वचनों से अग्राह्य, श्रीरामचन्द्र को मैं सर्वदा नमस्कार करता हूँ।

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।

।।कलिसन्तरणोपनिषद्"

नवग्रहपीडाहरस्तोत्रम्

सूर्य ग्रहाणाम्–आदिर्–आदित्यो–लोकरक्षण–कारकः
विषमस्थान–सम्भूतां–पीडां–हरतु–मे रविः। 1 ।

चन्द्र रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः
विषम–स्थान सम्भूतां पीडां हरतु मे विधुः। 2 ।

भौम भूमिपुत्रो महातेजो जगतां भयकृत् सदा
वृष्टिकृद्–वृष्टि–हर्ता च पीडां हरतु मे कुजः। 3 ।

बुध उत्पातरूपो जगतां चन्द्र पुत्रो महाद्युतिः
सूर्यप्रिय करो विद्वान्, पीडां हरतु मे बुधः। 4 ।

बृहस्पति देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः
अनेक शिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः। 5 ।

शुक्र दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः
प्रभुस्तारा ग्रहाणां च पीडां हरतु मे भृगुः। 6 ।

शनि सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः
मन्दाचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः। 7 ।

राहु महाशिरो महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः
अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी। 8 ।

केतु अनेक-रूप-वर्णश्च शतशोथ सहस्त्रशः
उत्पादरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः। 9 ।

नवग्रहों की उपासना

ग्रह	मन्त्र	समय	संख्या
सूर्य	"ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः"	प्रातः	7,000
चन्द्रमा	"ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः"	सन्ध्या	11,000
भौम	"ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः"	प्रातः	10,000
बुध	"ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः"	प्रातः	9,000
वृहस्पति	"ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः"	सन्ध्या	19,000
शुक्र	"ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः"	सूर्योदय	16,000
शनि	"ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः"	सन्ध्या	23,000
राहु	"ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः"	रात्रौ	18,000
केतु	"ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः"	रात्रौ	17,000

देवी प्रार्थना

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-अशेषजन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिम्-अतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्य-दुःखभय-हारिणि का त्वत्-अन्या, सर्वोपकार-करणाय दयार्द्रचित्ता।।

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद, प्रसीद मात-र्जगतोखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वारि पाहि विश्वं त्वं-ईश्वरी देवि चराचरस्य।

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः, परं तेषां मध्ये विरलतरलोहं तव सुतः।
मदीयोयं त्यागः समुचितम्-इदं नो तव शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचित्-अपि कुमाता न भवति।।
जगत्-मातर्-मातः तव चरणसेवा न रचिता, न वा दत्तं देवि द्रविणम्-अपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निर्-उपमं यत्-प्रकुरुषे, कुपुत्रो जायेत क्वचित्-अपि कुमाता न भवति।।
शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायाणे, सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तु ते।
या देवी सर्व्रभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तयै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्य-भिधीयते, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण, संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतिषु स्मृतिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु भ्रांतिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।

आनन्दसुन्दर-पुरन्द्र-मुक्तमाल्यं, मौलौ हठेन निहितं महिषासुरस्य
पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जु, मञ्जीर-शञ्जित-मनोहरम्-अम्बिकायाः
उत्तप्त-हेमरुचिरे त्रिपुरे पुनीहि, चेत्तश्चि-रन्तनम्-अघौघवनं लुनीहि,

कारागृहे निगड-बन्धन-पीड़ितस्य, त्वत्संस्मृतौ झट्-इति मे निगडा-स्त्रुट्यन्तु माया कुण्डलिनी, क्रिया-मधुमती, कालीकला-मालिनी मातंगी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी शक्ति शंकर-वल्लभा त्रिनयना वाक्वादिनी भैरवी, ह्रींकारी त्रिपुरा परा परमयी माता-कुमारीत्यसि। महाबले महोत्साहे, महाभय-विनाशिनि। त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये, शत्रूणां भयवर्धिनि। सर्वमंगल-मंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके, शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते।।

शंकर प्रार्थना

प्रणतोस्मि महादेव, प्रपन्नोस्मि सदाशिव, निवारय महामृत्युं, मृत्युंजय नमोस्तुते।
मृत्युंजय महादेव, पाहि मां शरणागतम्, जन्ममृत्यु-जरारोगैः, पीडितं भवबन्धनात्।

कर्पूर-गौरं करुणावतारं, संसार-सारं भुजगेन्द्र-हारम्।
सदा रमन्तं हृदयारबिन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि।।

हर शम्भो महादेव, विश्वेशामरवल्लभ। शिव शंकर सर्वात्मन्, नीलकण्ठ नमोस्तुते।

तव तत्त्वं न जानामि, कीदृशोसि महेश्वर, यादृशोसि महादेव, तादृशाय नमो नमः।
आधीनाम्-अगदं दिव्यं व्याधीनां मूलकृन्तनम् उपद्रवाणां दलनं महादेवम्-उपास्महे।।
आत्मा त्वं गिरजा मतिः, परिजनाः प्राणाः शरीरं गृहं, पूजा ते विषयो-पभोगरचना,
निद्रा समाधिस्थितिः। संचारोऽपि परिक्रमः पशुपते, स्तोत्राणि सर्वा गिरो, यत्‌यत्
कर्म करोमि देव भगवन्, तत् तत् तवाराधनम्।

नागेन्द्र-हाराय त्रि-लोचनाय, भस्मांग-रागाय महेश्वराय।
देवाधि-देवाय दिगम्बराय, तस्मै नकाराय नमः शिवाय।।

मातंग-चरमाम्बर-भूषणाय, समस्त-गीर्वाण-गणा-र्चिताय,
त्रैलोक्य-नाथाय पुरान्तकाय, तस्मै मकाराय नमः शिवाय।

शिवा-मुखाम्भोज-विकासनाय, दक्षस्य यज्ञस्य विनाशकाय
चन्द्रार्क-वैश्वानर-लोचनाय, तस्मै-शिकाराय नमः शिवाय।।

वशिष्ठ-कुम्भोत्‌भव-गौतमादि, मुनीन्द्र-वन्द्याय गिरीश्वराय।

श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै वकाराय नमः शिवाय।।
यज्ञ-स्वरूपाय जटाधराय, पिनाक-हस्ताय सनातनाय,
नित्याय शुद्धाय निरंजनाय, तस्मै यकाराय नमः शिवाय।
वपुष्प्रादुर्भावात् अनुमितम्-इदं-जन्मनि पुरा।
पुरारे नैवाहं क्वचित्-अपि भवन्तं प्रणतवान्।।

नमन्मुक्तः सम्प्र-त्यतनुर्-अहम्-अग्रे प्यनतिमान्, महेश क्षन्तव्यं तत्-इदम्-अपराध-द्वयम्-अपि ।। करचरणकृतं वाक्-कायजं कर्मजं वा, श्रवण-नयनजं वा, मानसं वाऽ पराधम्।

विदितम्-अविदितं-वा, सर्वम्-एतत्-क्षमस्व, जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो।।

लिंगाष्टकम्

ब्रह्मा मुरारिःसुरार्चित लिंगं, निर्मल-भासित-शोभित-लिंगम्।
जन्मज-दुःख-विनाशक-लिंगं, तत्प्रणमामि सदा शिव-लिंगम्।। 1 ।।

देव-मुनि-प्रवरा-र्चितलिंगं, कामदहं करुणाकर-लिंगम्।।
रावण-दर्प-विनाशित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।। 2 ।।

सर्व-सुगन्धि सुलेपित-लिंगं, बुद्धिविवर्धन-कारण-लिंगम्।।
सिद्ध-सुरासर-वंदित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम्।। 3 ।।

कनक-महामणि-भूषित-लिंगं, फणिपति-वेष्टित-शोभित-लिंगम्।।
दक्ष-सुयज्ञ-विनाशक लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम्।। 4 ।।

कुंकम-चंदन-लेपितलिंगं, पंकज-हार-सुशोभित-लिंगम्।।
संचित-पाप-विनाशन-लिंगं, तत्प्रणमामि-सदाशिव लिंगम्।। 5 ।।
देव-गणार्चित सेवित लिंगम्, भावेर्भक्तिभिरेव च लिंगम्।।
दिन-कर-कोटि-प्रभा-कर लिंगम् तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम्।। 6 ।।
अष्ट-दलोपरि वेष्टित-लिंगं, सर्व-समुद्-भव-कारण-लिंगम्।।
अष्ट-दरिद्र-विनाशित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।। 7 ।।
सुरगुरू-सुरवर-पूजित-लिंगम्, सुरवन-पुष्प-सदा-र्चित-लिंगम्।।
परात्परं-परमात्मक-लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम्।। 8 ।।
लिंगाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत्-शिव-सन्निधौ
शिवलोक मवाप्नोति शिवेन सह मोदते।
(इति लिंगाष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णम्)

शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं

मनो बुद्ध्य-हंकार-चित्तानि नाहं, नच श्रोत्र-जिह्वे नच घ्राण-नेत्रे।
नच व्योम-भूमि-र्न तेजो न वायु:, चिदानन्द-रूप: शिवोऽहं शिवोऽहं।1।
नच प्राण-संज्ञो न वे पंचवायु:, न-वा सप्त-धातु-र्न वा पंचकोश:
व वाक्-पाणिपादं न चोपस्थ-पायु:, चिदानन्द-रूप: शिवोहं शिवोहम्। 2 ।
नमे द्वेषरा॰ो न मे लोभ मोहौ, मदो नैव मे नैव मात्सर्य-भाव:
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्ष:, चिदानन्द रूप: शिवोहं शिवोहम्। 3 ।
न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दु:खं, न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञ:
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता चिदानन्दरूप: शिवोऽहं शिवोऽहम्। 4 ।
न मृत्यु-र्न शंका न मे जातिभेद: पिता नैव मे नैवा माता च जन्म।

न बन्धु-र्न मित्रं गुरु-नैव शिष्यः चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् 5।
अहं निर्विकल्पी निराकाररूपो लघुत्वात्-च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्
न चा संगतं नैव मुक्ति-र्न मेयः चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्। 6 ।

इति-श्रीमत्-शंकराचार्य-विरिचितं निर्वाणषटकं सम्पूर्णम्

विष्णुस्तुतिः

जय नारायण, जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे।
उद्धर मामसुरेशविनाशिन् पतितोहं संसारे।।
घोरं हर मम नरकरिपो, केशव कल्मषाभारं।
माम्-अनुकम्पय दीनम्-अनाथं, कुरु भव-सागरपारम्।। घोरं हर मम०।। 1।।
जय जय देव जया-सुरसूदन, जय केशव जय विष्णो।
जय लक्ष्मीमुख-कमल-मधुव्रत, जय दशकन्धर जिष्णो। घोरं हर मम०।। 2 ।।

यद्यपि सकलम्-अहं कलयामि हरे नहि किम्-अपि स सत्वम्।
तत्-अपि न मुञ्चति माम्-इदम्-अच्युत, पुत्रकलत्र-ममत्वं। घोरं हर मम०।। 3।।
पुनर्-अपि जननं पुनर्-अपि मरणं, पुनर्-अपि गर्भ-निवासम्।
सोढुम्-अलं-पुनर्-अस्मिन्-माधव, माम्-उद्धर निजदासम्। घोरं हर मम०।। 4 ।।
त्वं जननी जनकः प्रभुर्-अच्युत, त्वं सुहृत्-कुलमित्रम्।
त्वं शरणं शरणा-गतवत्सल, त्वं भव-जलधि-वहित्रं।। घोरं हर मम०।। 5 ।।
जनक-सुता-पति-चरण-परायण, शंकर-मुनिवर-गीतं।
धारय मनसि कृष्ण-पुरुषोतम, वारय संसृति-भीतिम्।। घोर हर मम०।। 6 ।।

नारायणस्तुतिः

अच्युतं केशवं रामनारायणं, कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकीनायकं राम चन्द्रं भजे।।

सूरजं शैशवं सत्यभा-माधवं, श्रीधरं श्रीपतिं-राधिका-राधितम्।
इन्दिरा-मन्दिरम् चेतसा सुन्दरं, देवकीनन्दनं नन्दजं संभजे।।
अँगनाम्-अँगनाम्-अन्तरे माधवो, माधवं माधवं चान्तरे-णांगना।
सत्यभा-कल्पिते मण्डले मध्यगः, सञ्जगौ वेणुना देवकीनन्दनः।।
बालिका-बालिका बाललीला-लयः, संग-सन्दर्शित-भ्रू-लता-विभ्रमः।
गोपिका गीत-दत्ता-वदानः स्वयं, संजगौ वेणुना देवकी-नन्दनः।।
जयतु जयतु देवो देवकीनन्दनोयं, जयतु जयतु कृष्णो, वृष्णिवंश-प्रदीपः।
जयतु जयतु मेघ, श्यामलः कोमलांगो, जयतु जयतु पृथ्वी-भारनाशो मकुन्दः।।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

गुरुस्तुतिः

वन्देहं सच्चिदानन्दं भेदातीतं जगद् गुरुम्
नित्यं पूर्णं निराकारं निर्गुणं सर्व-संस्थितम्। 1 ।
परात्परतरं ध्येयं नित्यम्-आनन्दकारणम्
हृदयाकाश-मध्यस्थं शुद्धस्फटिक-सन्निभम्। 2 ।
नमामि सद् गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम्
शिरसा योगपीठस्थं धर्मकार्माथ-सिद्धये। 3 ।
अखण्ड-मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुर-वे नमः। 4 ।
अज्ञानतिमरान्धस्य ज्ञानञ्जन-शलाकया
चक्षुर्-उन्मीलितं येन तस्मै श्री-गुरवे नमः। 5 ।
हरौ रुष्टे गुरु-स्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन
सर्वदेव-स्वरूपाय तस्मै श्री-गुर-वे नमः। 6 ।
चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरञ्जनम्
बिन्दु-नादकलातीतं तस्मै श्री-गुर-वे नमः। 7 ।
शिष्यानां मोक्षदानाय लीलया-देहधारिणे
सदेहेपि विदेहाय तस्मै श्री-गुर-वे नमः। 8 ।
ज्ञानिनां ज्ञानरूपाय प्रकाशाय प्रकाशिनाम्
विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनाम्। 9 ।
पुरस्तात्-पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्याम्-उपर्यधः
सदामत्-चित्तिरूपेण विधेहि भवदासनम्। 10 ।

विष्णु प्रार्थना

शान्ताकारं भुजंगशयनं पद्मनाभं सुरेशं । विश्वाधारं गगनसद्रश्यं मेघवर्ण शुभाङ्गम्। लक्ष्मी कान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यान गम्यं। वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्। १ । यस्य हस्ते गदा चक्रं गुरुडो यस्य वाहनं। शंखः करतले यस्य स मे विष्णुः प्रसीदतु । २ । यद्बल्ये यश्च कौमारे यद्यौवने कृतं मया। वयः परिणतौ यश्च यक्ष्च जन्मान्तरेषुच। कर्मणा मनसा वाचा यापापं समुवार्जितं तन्नारायण गोविन्द क्षमस्व गुरुडध्वज। ३ । त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखस्त्मेव त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्व ममदेव देव। ४ । तत्रैव गंगा यमुना चवेणी, गोदावरी सिंधु सरस्वती च सर्वाणि तीर्थानि वसंति तत्र, यत्राच्युतोदार कथा प्रसंगः। ५ । नमामि नारायण पादपंकजं करोमि नारायण पूजनं सदा। वदामि नारायण नाम निर्मलं, स्मरामि नारायण तत्वम व्ययम। ६ । गो कोटिदानं ग्रहणेषु, काशी, प्रयागं गंगाऽयुतकल्पवासः। यज्ञायतं मेरु सुवर्णदानं, गोविंदनाम्ना न कदापि तुल्यम्।। ध्येयः सदा सवितृमण्डल मध्यवर्ती नारायणः सरसिजासन- सन्निविष्ठः। केयूरवान-कनक- कुण्डलवान्-किरीटी हारी हिरण्य-वपुर्धृत शङ्खचक्रः। ८ । करार बिन्देन पदारबिन्दं मुखारबिन्दं विनिवेश्ययन्तं। अश्वत्थपत्रस्य पुटेयान, बालं मुकुन्दं मनसा स्मारामि। ९ । गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे, गोविन्द गोविन्द रथांगपाणे। गोविन्द गोविन्द मुकुंद कृष्ण, गोविन्द गोविन्द नमो नमस्ते। १० ।

शिव-चामर-स्तुतिः

ॐ अतिभीषण कटुभाषण यमकिङ्कर पटली
कृत-ताडन-परिपीडन-मरणागम-समये।
उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम्।। 1 ।।
अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपु-सञ्चय दलिते
पविकर्कश कटुजल्पित खलगर्हण-चलिते।
शिवया सह ममचेतसि शशिशेखर निवसन्
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर में हर दुरितम्।। 2 ।।
भव भञ्जन सुर-रञ्जन खलवञ्चन पुरहन्
दनुजान्तक मदनान्तक रतिजान्तक भगवन्।
गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्
शिवशङ्कर शिव शङ्कर हर में हर दुरितम्।। 3 ।।
शक्रशासन कृतशासन चतुराश्रम विषये
कलिविग्रह भवदुर्ग्रह रिपुदुर्बल समये।
द्विज-क्षत्रिय-वनिता शिशुदर कम्पित हृदये
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर में हर दुरितम्।। 4 ।।
भवसम्भव विविधामय परिपी-डितवपुषं
दयितात्मज ममताभर-कलुषी-कृत-हृदयम्।
करु मां निजचरणार्चन निरतं भव सततं
शिव शंकर शिवशंकर हर में हर दुरितम्।। 5 ।।

गायत्री चालीसा

ॐ भूर्भवः स्वः ॐ युतजननी
गायत्री नितकलिमल दहनी।
अक्षर चौबीस परम पुनिता
इनमें बसे शास्त्र श्रुति गीता।
शाश्वत सतोगुणी सत् रूपा
सत्य सनातन सुधा अनूपा।
हंसारूढ सितम्बर धारी
स्वर्णकान्ति शुचि गगन बिहारी।
पुस्तक पुष्प कमण्डलु माला
शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला।
ध्यान धरत पुलकित हियहोई
सुख उपजत दुख दुरमति खोई।

कामधेनु तुम सुर तरु छाया
निराकर की अद्भुत माया।
तुम्हरी शरण गहै जो कोई
तरै सकल संकट सों सोई।
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली
दिपै तुम्हारी ज्योति निराली।
तुम्हरी महिमा पार न पावै
जो शारद शत मुख गुन गावैं।
चार वेद की मातु पुनीता
तुम ब्रह्माणी गौरी सीता।
महा मन्त्र जितने जग माहीं
कोऊ गायत्री सम नाहीं।

सुमरत हिय में ज्ञान प्रकासै
आलस्य पाप अविद्या नासै।
सृष्टि बीज जग जननि भवानी
कालरात्रि वरदा कल्याणी।
ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते
तुमसों पावें सुरता तेते।
तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे
जननि हिं पुत्र प्राण ते प्यारे।
महिमा अपरम्पार तुम्हारी
जै जै जै त्रिपदा भय हारी।
पूरित सकल ज्ञान-विज्ञाना
तुम सम अधिक न जग में आना।
तुमहि जानि कछू रहे न शेषा
तुमहिं पाय कछू रहै न कलेषा।

जानत तुमहिं तुमहिं ह्वै जाई
पारस परसि कुधातु सुहाई।
तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाईं
माता तुम सब ठौर समाई।
ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे
सब गतिवान् तुम्हारे प्रेरे।
सकल सृष्टि की प्राण विधाता
पालक पोषक नाशक त्राता।
मातेश्वरी दया व्रतधारी
तुम सम तरे पातकी भारी।
जा पर कृपा तुम्हारी होई
ता पर कृपा करे सब कोई।
मन्द बुद्धि ते बुद्धि बल पावें
रोगी रोग रहित ह्वै जावें।

दारिद्र मिटै कटै सब पीरा
नासै दुख हर भव भीरा।
गृह क्लेश चित चिन्ता भारी
नासै गायत्री भय हारी।
सन्तति हीन सुसन्तति पावें
सुख सम्पत्ति युत मोद मनावें।
भूत पिशाचं सबै भय खावें
यम के दूत निकट नहीं आवें।
जो सधवा सुमिरें चितलाई
अछत सुहाग सदा सुखदाई।
घर बर सुख प्रबल हैं कुमारी
विधवा रहें सत्य व्रत धारी।
जयति जयति जगदम्ब भवानी
तुम सम और दयालु न दानी।
जो सद्गुरु से दीक्षा पावैं
सो साधन को सफल बनावें।

सुमिरन करै सुरुचि बडभागी
लहैं मनोरथ गृही विरागी।
अष्ट सिधि नव निधि की दाता
सब समर्थ गायत्री माता।
ऋषि मुनि तपस्वी योगी
आरत अर्थी चिन्तित भोगी।
जो जो शरण तुम्हारी आवैं
सो सो निज वांछित फल पावैं।
बल विद्या शील सुभाऊ
धन वैभव यश तेज उछाहू।
सकल बढ़ें सुख नाना
जो यह पाठ करै धर ध्याना।

यह चालीसा भक्तियुत, पाठ करै जो कोय
तापर कृपा प्रसन्नता, गायत्री की होय।

गणेश स्तुति:

आयसय शरण करतम क्षमा
ओं श्री गणेशाये नमः।
गणपत गणेश्वर हे प्रभो
कलिराज़ राजन हुन्द विभो
पज़ि लोलु पादन तल नमः।।ॐ
गुडनी च्यय छुय आधिकार
कलिकालकुय चय ताजदार
पज़ि लोलु पादन तल प्यमा।।ॐ
मूषक च़्य वाहन शूभवुन
त्रन लूकनय मंज़ फेरवुन
सहायक म्य रोज़तम हर दमः।।ॐ
यज्ञस ज़पस व्यवहारसुय
गुड़ छिय सुरान प्रथकारसय
कारस अनान छुःख चय जमः।।ॐ
सुन्दर लम्बोदर एक दन्त
स्मरन चाञ बतियन म्ये अन्द।
रति वेल, सुन्दर छुम समः।।ॐ
स्मरन यि चानी यिम करान
भवसागरस अपोर तरान
रट्अ सानि नावे चय नमा।।ॐ
रमरन यि चानी भक्ति ज़न
पूरण गछान तम्यसुन्द छु प्रन।
चरणोदकुक अमृत चमा।।ॐ
ज़गतुक महेश्वर चय पिता।

सीत रूप्र सित धर्मच सत्ता।
माता च्य गौरी श्री वुमा।।ॐ
बाह नाव सुन्दर शूभवञ
स्वर्गस गछान तिम बोलवञ
पूरण करुम पूरण तमा।।ॐ
आमुत भक्त च्यय छुय शरण
प्योमुत खोरन तल छुय परण।

वर दिथ कास्तम चय गमा।ॐ
सुबह प्यठ भखत, छिय लारान
प्रेयम पोश ह्यथ छिय प्रारान।
छुयख च्यानि पूजि लागनुक तमा।ॐ
गणेशबल प्यठ आख चीलथअय
अंग-अंग संओदरा मीलथय
गोअड़ बोअज म्यन प्रार्थना।।ॐ

शारदा पढ़िये

शारदा पढ़ कर अपनी सभ्यता तथा संस्कृति को जीवित रखें। हमारा कर्त्तव्य है कि हम शारदा लिपि की रक्षा करें क्योंकि यह हमारे बुजूर्गों का धरोहर है यदि आप शारदा पढ़ना चाहते हैं तो हमारे कार्यालय से शारदा प्राईमर मुफ्त ले सकते हैं।

संस्कृत पढ़िये

यदि आप कर्मकाण्ड को जीवित रखना चाहते हैं तो संस्कृत भाषा पढ़िये क्योंकि कर्मकाण्ड की सभी पुस्तकें संस्कृत भाषा में है मेरे ओर से सभी छोटी-बड़ी संस्थाओं से प्रार्थना है कि संस्कृत पढ़ने तथा पढ़ाने के लिये हर मौहल्ले में केन्द्र खोले तभी हम अपनी मर्यादा तथा कर्मकाण्ड को जीवित रख सकते हैं।

शिवाय नमः ओं नमः शिवाय

आधार ज़गतुक कुनुय छु मन्त्र शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
त्रिपंच नयनो ही आदि दीवो, जटा मुकट छुय गंडिथ च्य़ दीवो
चन्द्र-अर्द्ध शेखर, त्रिलोचनाय, शिवाय नमः ओं, नमः शिवाय।।
च्य़ नील कंठो जटन छय-गंगा, च मोक्षदायक गुसोञ्य नंगा
अलक्ष अगोचर छ्य़पन गुफाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।।
बिहिथ छय गौरी च्य सूत्य नालय, वलिथ छुय सर्पन हुंदुय दुशालै
सहस्त्र सूर्यि तीज़ च्य़ मंज़ जटाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।।
अथस च्य़ डाबर चू बीन वायान, कपाल-माल त्रिशूल धारान
भक्तयन अभय छुख दिवान यछ़ाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।।

रटिथ चू अंकुश खडगधारिथ, धनुर धनन मंज पिनाक चारथि वुदनि बू डंड्वथ करय हा माये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।।
भवाय दीवो शर्वाय दीवो, भस्माय दीवो सुरान च्य़ ज़ीवो च्य़ जीव पूज़ान छिय भावनाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
संसार सुदरस, म्य तार तारुम, अमर बनावुम शिव मार्ग हावुम वोलुस कुकर्मव कुवासनाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।।
अनाथ बन्धो दयायि सागर, संसार की दुःख म्य यिम छि तिम च़ठ ज़गतस दया कर च ह्यथ ओमाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।

हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

दुर्गा सिद्ध मन्त्र स्तोत्र

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद, प्रसीद मातर् जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं, त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।

अर्थः- शरणागत की पीड़ा को दूर करने वाली देवी! हम पर प्रसन्न होओ। पूरे विश्व की जननी! प्रसन्न होवो। हे विश्वेश्वरि! विश्व की रक्षा करो। हे देवी! तुम चराचर जगत् की अधीश्वरी (स्वामी) हो।

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या, विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत, त्वं वै प्रसन्ना भुंवि मुक्ति हेतुः।।

अर्थः- हे देवी! तुम अनन्त बलयुक्त वैष्णवी शक्ति हो, इस विश्व की बीजरूपा परा माया हो, आप ने इस पूरे विश्व को मोहित कर रखा है, आप ही प्रसन्न होने पर इस पृथ्वी पर मोक्ष की प्राप्ति कराती हो।

विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः, स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितम् अम्बयैतत्, का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः।।

अर्थः- हे देवी! समस्त विद्यायें आप के ही अलग-अलग रूप हैं संसार में जितनी भी स्त्रियां हैं सब आप की ही मूर्तियां है, हे जगत् अम्बा! एक मात्र आपने इस पूरे विश्व को व्याप्त कर रखा है आप की स्तुति क्या हो सकती है आप स्तवन करने योग्य पदार्थों से परे हो।

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं, विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्ध्या भवती भवन्ति, विश्वाश्रया ये त्वयि भक्ति नम्राः।।

अर्थः- हे विश्वेश्वरि! आप विश्व का पालन करती हो, आप विश्व रूपा हो, इस कारण आप समस्त विश्व को धारण करती हो आप भगवान् विश्वनाथ की भी वन्दनीया हो, जो लोग भक्तिपूर्वक आप के सामने सिर झुकाते हैं वे सम्पूर्ण विश्व को आश्रय देने वाले होते हैं।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
द्रारिद्र्य-दुःख भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोप कारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।

अर्थः- मां दुर्गे! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय दूर करती है और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती है। दुःख दरिद्रता और भय हरने वाली देवी! आप के सिवा दूसरी कौन है जिस का चित सबका उपकार करने के लिये हमेशा दयार्द्र रहता है।

सर्वमङ्गल-मङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्रम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।

अर्थः- सभी शुभकामनाओं को सिद्ध करने से सुन्दर अथवा कल्याणकारी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को देने वाली दुःखों से रक्षा करने वाली, अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य रूपी तीन नेत्रों वाली, दक्ष प्रजापत के यज्ञ में योग अग्नि में भस्म बनी हुई अतः गौर वर्ण वाली, विष्णु की लक्ष्मी रूपा शक्ति वाली माता तुम्हें नमस्कार हो।

शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे। सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तु ते।।

अर्थः- शरण में आये हुये दीनों एवं पीडितों की रक्षा में संलग्न रहने वाली तथा सब की पीडा दूर करने वाली नारायणी देवी! आप को नमस्कार है।

शिवाष्टकम्

शीतांशु-शुभ्र कलया कलितो-त्तमाङ्गं, ध्यान स्थितं धरणिभृत्तनयार्चितं तम्।
काला-नलोप-महला हल-कृष्ण कण्ठं, श्री शंकरं कलिमलापहरं नमामि।।

अर्थः- सुन्दर चन्द्रमा की शुभ्रकला से आप का शिरो भाग शोभित है, पर्वतराज हिमालय की कन्या पार्वती जी स्वयं ही आप की पूजा अर्चा करती है, संसार को जलन से बचाने के लिये कालानल के समान महा भीषण हलाल पी जाने से आप का कण्ठ काला हो गया है, इस कलिकाल का मल दूर करने में आप अपना सानी नहीं रखते, ऐसे ध्यान में मग्न आप शंकर को मेरा प्रणाम।

गायन्ति यस्य चरितानि महात्-भुतानि, पद्मोद्-भवोद्-भवमुखाः सततं मुनीन्द्राः
ध्यायन्ति यं यमितम्-इन्दु-कलावतं सं, सन्तः समाधि-निरतास्तम् अहं नमामि।।

अर्थः- आप के अत्यन्त अद्भुत चरितों का गान ऐसे-वैसे नहीं, नारदादि बड़े-बड़े महामुनि तक किया करते हैं, साधु शिरोमणि योगीश्वर भी समाधि लगा कर आप ही का ध्यान करते रहते हैं ऐसे आप शंकर को पुनरपि मेरा प्रणाम।

त्रैलोक्यम्-एतत्-अखिलं ससुरासुरञ्च, भस्मीभवेत्-यदि न यो दययार्द्र देहः।
पीत्वाऽहरद्गरलम्-आशु भयं तदुत्थं, विश्वा-वनैक-निरताय-नमोस्तु-तस्मै।।

अर्थः- हे शंकर! आप बड़े ही दयालु हैं, आप की दया सीमा रहित है, जब समुद्र मन्थन से हलाहल निकलने पर उस की आग असह्य हो गई, तब उस कालकूट का पान स्वयं करके तीनों लोकों को जल जाने से बचा लिया, संसार की रक्षा का इतना ख्याल रखने वाले आप के चरणों में मैं अपना सिर रखता हूँ।

नो शक्यम्-उग्र तपसापि युगान्तरेण, प्राप्तुं यद्-अन्य सुर पुङ्गवतस्त देव।
भक्तया सकृत्प्रणम्-अनेन-सदा-ददाति, यो नौमि नम्रशिरसा च तमाशुतोषम्।।

अर्थः- युग-युगान्त-पर्यन्त तपस्या करने पर भी जो फल प्राप्ति भक्तों को अन्य सुर पुङ्गवों से भी नहीं हो सकती, वही आप को भक्ति भावपर्वूक प्रणाम मात्र करने से आप के सच्चे भक्तों को सुलभ

हो जाती है, क्योंकि आप आशुतोष हैं (अर्थात् थोड़ी सेवा से प्रसन्न होने वाले) मैं आप के सामने अपना सिर झुकाता हूँ।

भूति प्रियोऽपि वितरत्यनिशं विभूतिं, भक्ताय यः फणिगणानपि धारयन् सन्।
हन्ति प्रचण्ड भव भीम भुजङ्ग भीतिं, तस्मै नमोस्तु सततं मम शंकराय।।

अर्थः- आप स्वयं ही विभूति-प्रिय हैं, वह प्यारी वस्तु विभूति अपने भक्तों को रोज़ ही लुटाया करते है, स्वयं आप महा भंयकर नागों के कण्ठे और मालायें आदि धारण करते है उधर आप ही जन्म-मरण रूपी भीम भुजङ्ग के भय से अपने सेवकों की रक्षा करते हैं हे मेरे शंकर ! आप को मेरा नमस्कार।

येषां भयेन विबुधा रजनी चराणां, नो तत्यजुर्हिम-महीध्र-गुहा गृहाणि।
हत्वा ददौ गिरिश तानपि शैव धाम, त्वत्तः परोऽस्ति परमेश्वर को दयालुः।।

अर्थः- हे शंकर! जरा उन राक्षसों का स्मरण कर जो इतने पराक्रमी हो गये थे कि वह देवों का तरह-तरह से उत्पीड़न करने लगे थे यहां तक कि देवता उन के भय से हिमालय की गुफाओं में छिपे रहते थे। ऐसे अत्याचारी और पापी राक्षसों को भी मार कर आप ने पुण्य लोक भेज दिया, क्या आप से कोई अधिक दयालु देवता कही हैं ? आप यथार्थ में परमेश्वर हैं।

पाप प्रसाधनरता दितिजा अपीन्द्रं, सद्यो विजित्य सुरधाम-धराधिपत्यम्।
यस्य प्रसादलवलेश-वशादवाप्ता:, तस्मै ममास्तु विनतिः परमेश्वराय।।

अर्थः- लङ्केश्वरादि राक्षस पुण्यात्मा नहीं थे वे महा उत्पातकारी और पापिष्ठ थे परन्तु आप का सच्चा सेवक होने के कारण महीन्द्र को जीतकर देव लोक के अधीश्वर बन बैठे, आप से बढकर मुझे कोई परमेश्वर्यशाली और कोई देवता दिख नहीं पड़ता, मेरी विनती स्वीकार करो।

अर्चा कृता न तव नाम हर स्मृतन्न, नो भक्तवत्सल कृतं तव किञ्चिदन्यत्।
वीक्ष्य स्वपादकमलोपनतं तथापि, माम् पाहि कारुणिक-मौलिमणे महेश।।

अर्थः- मैं पापी आप से किस मुंह से कुछ याचना करूं, मैंने कभी भूल कर भी आप की अर्चना नहीं की है, कभी भूल से भी आप का नाम नहीं लिया है, कभी भूल कर भी आप की कोई सेवा नहीं की है, फिर भी यह देख कर कि यह आप के चरणों पर पड़ा है और नाक रगड़ रहा है आशा है आप मुझ पर भी कृपा करेंगे, क्योंकि आप आशुतोष होकर परम भक्त वत्सल भी हैं।

गीता पढ़िये या सुनिये

अच्युताष्टकम्

अच्युतं केशवं रामनारायणं, कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिका वल्लभं, जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे।।
अच्युतं केशवं सत्य-भा-माधवं, माधवं, श्रीधरं राधिकाऽऽराधितम्।
इन्दिरा मन्दिरं चेतसा सुन्दरं, देवकी नन्दनं नन्दनं सन्दधे।।
विष्णवे जिष्णवे शंखिने चक्रिणे, रुक्मिणी रागिणे जानकी जानये।
वल्लवी-वल्लभा-याऽर्चिता-यात्मने, कंस-विध्वंसिने-वंशिने-ते-नमः।।
कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण, श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे।
अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज, द्वारका नायक द्रौपदी रक्षक।।
राक्षस-क्षोभितः-सीतया-शोभितो, दण्डकारण्य-भू-पुण्यता-कारणः।
लक्ष्मणेनाऽन्वितो-वानरैः-सेवितो-गस्त्य-सम्पूजितो-राघवः-पातु-माम्।।
धेनुकारिष्टको-ऽनिष्टकृत्-द्वेषिणां, केशिहा-कंसहृत्-वंशिका-वादिकः।
पूतना कोपकः सूरजा खेलनो, बाल गोपालकः पातु मां सर्वदा।।

विद्युत-द्योतवान्-प्रस्फुरत्-वाससं, प्रावृडम्-भोदवत्-प्रोल्लसत्-विग्रहम्।
वन्यया मालया शोभितोरः स्थल, लोहितांघ्रिद्वयं वारिजाक्ष भजे।।
कुञ्चितैः-कुन्तलैः-भ्राजमा-नानं, रत्न-मौलिं-लसत्-कुण्डले-गण्डयो।
हारकेयूरकं-कंकण-प्रोज्जवलं, किंकिणीं-अंजुलं-श्यामलं-तं-भजे।।
अच्युतस्या-षृकं-यः-पठेत्-इष्टदं, प्रेमतः-प्रत्यहं-पूरुषः-सस्पृहम्।
वृत्ततः सुन्दरं कर्तृ विश्वम्भरं तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्त्वरम्।।

शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय, भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै नकाराय नमः शिवाय।।
मन्दाकिनी-सलिल-चन्दन-चर्चिताय, नन्दीश्वर-प्रमथनाथि-महेश्वराय।
मन्दारपुष्प-बहुपुष्प-सुपूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिवाय।।
शिवाय-गौरी-वन्दनाब्ज-वृन्द, सूर्याय-दक्षाऽध्वर-नाशकाय।

श्रीनीकलण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै शिकाराय नमः शिवाय।।

वसिष्ठ-कुम्भोद्भव-गौतमार्य, मुनीन्द्र-देवाऽर्चित-शेखराय।

चन्द्रार्क-वैश्वानर-लोचनाय, तस्मै वकाराय नमः शिवाय।।

यक्षस्वरूपाय, जटाधराय, पिनाकहस्ताय समातनाय।

दिव्याय देवाय दिगम्बराय, तस्मै यकाराय नमः शिवाय।।

पंचाक्षरम्-इदिं पुण्यं यः पठेत्-शिव-सन्निधौ।

शिवलोकम्-अवाप्नोति-शिवेन-सह-मोदते।।

शिवषडक्षरस्तोत्रम्

ॐकारं विन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।

कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः।।

तमन्ति ऋषयो देवा, नमन्ति-अप्सरसां गणाः।

नरा नमन्ति देवेश नकाराय नमो नमः।।

महादेवं महात्मानं महाध्यानं परायणम्।
महापापहरं देवं मकाराय नमो नमः।।
शिवं-शान्तं-जगन्नाथं, लोका-नुग्रह-कारकम्।
शिवमेकपदं नित्यं शिकाराय नमो नमः।।
वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कण्ठभूषणम्।
वामे शक्तिधरं देवं यकाराय नमो नमः।।
यत्र यत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः।
यो गुरुः सर्वदेवानां यकाराय नमो नमः।।
षड्-अक्षरं-इदं-स्तोत्रं-यः-पठेत्-शिव-सन्निधौ।
शिव-लोकं-अवाप्नोति, शिवेन-सह-मोदते।।

श्री रुद्राष्टकम्

नमामि-ईशं-ईशान-निर्वाण-रूपं, विभुं-व्यापकं-ब्रह्म-वेद-स्वरूपम्।
अजं-निर्गुणं-निर्विकल्पं-निरीहं, चिदा-कारम-आकाशवासं-भजेऽहम।।

निराकारं-ओंकार-मूलं-तुरीयं, गिरा-ज्ञान-गोतीतं-ईशं-गिरीशम्।
करालं-महाकाल-कालं-कृपालं, गुणा-गार-संसार-पारं-नतोऽहम्।।
तुषाराद्रि-सङ्काश-गोरं-गभीरं, मनो-भूत-कोटि-प्रभासी-शरीरम्।
स्फुरन्-मौलिकल्लोलिनी-चारु-गङ्गा, लसत्-भाल-बालेन्दु-कण्ठे-भुजङ्गा।।
चलत्-कुण्डलं-शुभ्रनेत्रं-विशालं-प्रसन्नाननं-नीलकण्ठं-दयालुम्।
मृगाधीश-चर्माम्बर-मुण्डमालं, प्रियं-शङ्करं-सर्वनाथं-भजामि।।
प्रचण्डं-प्रकृष्टं-प्रगल्भं-परेशं, अखण्डं-भजे-भानु-कोटि-प्रकाशम्।
त्रयी-शूल-निर्मूलनं-शूल-पाणिं, भजेऽहं-भवानीपतिं-भाव-गम्यम्।।
कलातीत-कल्याण-कल्पान्त-कारी, सदा-सज्जना-नन्ददाता-पुरारिः।
चिदानन्द-वन्दोह-मोहाप-हारी, प्रसीद-प्रसीद-प्रभो-मन्मथारिः।।
न-यावत्-उमानाथ-पादार-विन्दं, भजन्तीह-लोके-परे-वा-नराणाम्।
न-तावत्-सुखं-शान्ति-सन्ताप-नाशं, प्रसीद-प्रभो-सर्व-भूताधिवासं।।
न जानामि-योगं-जयं-नैव-पूजां, नतोऽहं-सदा-सर्वदा-देव-तुभ्यम्।
जरा-जन्म दुखौघता-तप्यमानं, प्रभो-पाहि-शापात्-नमामीश-शम्भो।।

विद्युत-द्योतवान्-प्रस्फुरत्-वाससं, प्रावृडम्-भोदवत्-प्रोल्लसत्-विग्रहम्।
वन्यया मालया शोभितोरः स्थल, लोहितांघ्रिद्वयं वारिजाक्ष भजे।।
कुञ्चितैः-कुन्तलैः-भ्राजमा-नानं, रत्न-मौलिं-लसत्-कुण्डले-गण्डयो।
हारकेयूरकं-कंकण-प्रोज्जवलं, किंकिणीं-अंजुलं-श्यामलं-तं-भजे।।
अच्युतस्या-ष्टकं-यः-पठेत्-इष्टदं, प्रेमतः-प्रत्यहं-पूरुषः-सस्पृहम्।
वृत्ततः सुन्दरं कर्तृ विश्वम्भरं तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्त्वरम्।।

शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय, भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै नकाराय नमः शिवाय।।
मन्दाकिनी-सलिल-चन्दन-चर्चिताय, नन्दीश्वर-प्रमथनाथि-महेश्वराय।
मन्दारपुष्प-बहुपुष्प-सुपूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिवाय।।
शिवाय-गौरी-वन्दनाब्ज-वृन्द, सूर्याय-दक्षाऽध्वर-नाशकाय।

श्रीनीकलण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै शिकाराय नमः शिवाय।।
वसिष्ठ-कुम्भोद्भव-गौतमार्य, मुनीन्द्र-देवाऽर्चित-शेखराय।
चन्द्रार्क-वैश्वानर-लोचनाय, तस्मै वकाराय नमः शिवाय।।
यक्षस्वरूपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय समातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय, तस्मै यकाराय नमः शिवाय।।
पंचाक्षरम्-इदिं पुण्यं यः पठेत्-शिव-सन्निधौ।
शिवलोकम्-अवाप्नोति-शिवेन-सह-मोदते।।

शिवषडक्षरस्तोत्रम्

ॐकारं विन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः।।
तमन्ति ऋषयो देवा, नमन्ति-अप्सरसां गणाः।
नरा नमन्ति देवेश नकाराय नमो नमः।।

महादेवं महात्मानं महाध्यानं परायणम्।
महापापहरं देवं मकाराय नमो नमः।।
शिवं-शान्तं-जगन्नाथं, लोका-नुग्रह-कारकम्।
शिवमेकपदं नित्यं शिकाराय नमो नमः।।
वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कण्ठभूषणम्।
वामे शक्तिधरं देवं यकाराय नमो नमः।।
यत्र यत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः।
यो गुरुः सर्वदेवानां यकाराय नमो नमः।।
षड्-अक्षरं-इदं-स्तोत्रं-यः-पठेत्-शिव-सन्निधौ।
शिव-लोकं-अवाप्नोति, शिवेन-सह-मोदते।।

श्री रुद्राष्टकम्

नमामि-ईशं-ईशान-निर्वाण-रूपं, विभुं-व्यापकं-ब्रह्म-वेद-स्वरूपम्।
अजं-निर्गुणं-निर्विकल्पं-निरीहं, चिदा-कारम्-आकाशवासं-भजेऽहम्।।

निराकारं-ओंकार-मूलं-तुरीयं, गिरा-ज्ञान-गोतीतं-ईशं-गिरीशम्।
करालं-महाकाल-कालं-कृपालं, गुणा-गार-संसार-पारं-नतोऽहम्।।
तुषाराद्रि-सङ्काश-गोरं-गभीरं, मनो-भूत-कोटि-प्रभासी-शरीरम्।
स्फुरन्-मौलिकल्लोलिनी-चारु-गङ्गा, लसत्-भाल-बालेन्दु-कण्ठे-भुजङ्गा।।
चलत्-कुण्डलं-शुभ्रनेत्रं-विशालं-प्रसन्नाननं-नीलकण्ठं-दयालुम्।
मृगाधीश-चर्माम्बर-मुण्डमालं, प्रियं-शङ्करं-सर्वनाथं-भजामि।।
प्रचण्डं-प्रकृष्टं-प्रगल्भं-परेशं, अखण्डं-भजे-भानु-कोटि-प्रकाशम्।
त्रयी-शूल-निर्मूलनं-शूल-पाणिं, भजेऽहं-भवानीपतिं-भाव-गम्यम्।।
कलातीत-कल्याण-कल्पान्त-कारी, सदा-सज्जना-नन्ददाता-पुरारिः।
चिदानन्द-वन्दोह-मोहाप-हारी, प्रसीद-प्रसीद-प्रभो-मन्मथारिः।।
न-यावत्-उमानाथ-पादार-विन्दं, भजन्तीह-लोके-परे-वा-नराणाम्।
न-तावत्-सुखं-शान्ति-सन्ताप-नाशं, प्रसीद-प्रभो-सर्व-भूताधिवासं।।
न जानामि-योगं-जयं-नैव-पूजां, नतोऽहं-सदा-सर्वदा-देव-तुभ्यम्।
जरा-जन्म दुखौघता-तप्यमानं, प्रभो-पाहि-शापात्-नमामीश-शम्भो।।

रुद्राष्टकं-इदं प्रोक्तं, विप्रेण हर तुष्टये।
ये पठन्ति नरा-भक्त्या, तेषां शम्भुः प्रसीदति।।

दुर्गास्तुति

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे, नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे।
नमस्ते जगद्वन्द्य-पादारविन्दे, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
नमस्ते जगच्चिन्त्यमानस्वरूपे, नमस्ते महायोगिनि ज्ञानरूपे।
नमस्ते नमस्ते सदानन्दरूपे, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य, भयार्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारकर्त्री, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्ये, ऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारनौका, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
अपारे महादुस्तरेऽत्यन्तघोरे, विपत्सागरे मज्जतां देहभाजाम्।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारहेतुः, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।

नमश्चण्डिके चण्डदुर्दण्डलीला, समुत्खण्डिताखण्डिताशेषशत्रो।
त्वमेका गतिर्देव निस्तारबीजं, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
त्वमेवाघभावाधृतासत्यवादीर्न, जाताजितक्रोधनात् क्रोधनिष्ठा।
इडा पिङ्गला त्वं सुषुम्णा च नाडी, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे, सरस्वत्यरुन्धत्यमोघस्वरूपे।
विभूतिः शची कालरात्रिः सतिः त्वं, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।

सरस्वती वंदना

श्वेत-पद्मासना देवी श्वेत-पुष्पोप-शोभिता।
श्वेताम्बर-धरा नित्या श्वेत-गन्धानु लेपना।।
श्वेताक्षी शुक्ल वस्त्रा च श्वेत-चन्दन-चर्चिता।
वरदा सिन्धु-गन्धर्वैः ऋषिभिः स्तूयते सदा।।
स्तोत्रेणाऽनेन तां देवीं जगद्धात्रीं सरस्वतीम्।
ये स्तुवन्ति त्रिकालेषु सर्वविद्या लभन्ति ते।।

या देवी स्तूयते नित्यं ब्रह्मेन्द्र-सुर-किन्नरैः।
सा ममैवाऽस्तु जिह्वाग्रे पद्महस्ता सरस्वती।।

भज गोविन्दं भज गोविन्दं

दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनर् आयातः।
कालः क्रीडति गच्छति-आयु-तदपि न मुञ्चति-आशावायुः।।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ-करणे।
अग्रे वह्निः पृष्ठे भानू रात्रौ चिबुक-समर्पित जानुः
करतल भिक्षा तरु तल वासः, तदपि न मुञ्चति-आशा-पाशः।।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

यावत्-वित्तोपार्जन-सक्तः तावत् निज-परिवारो रक्तः।
पश्चात्-धावति-जर्जर-देहे वार्ता पृच्छति कोऽपि न जेहे।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।

जटिलो मुण्डी लुञ्चित-केशः, काषायाम्बर-बहु कृत वेषः।
पश्यन्नपि च न पश्यति मूढ, उदर-निमितं-बहु कृत वेषः।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।

भगवत्-गीता-किञ्चित्-अधीता, गङ्गा-जल-लव-कणिका पीता।
सकृदपि यस्य मुरारि-समर्चा, तस्य यमः किं कुरुते चर्चा।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।

अङ्गं गलितं पलितं मुण्ड़ं, दशनविहिनं-जातं-तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं, तदपि न मुञ्चति-आशा-पिण्डम्।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।

बालः-तावत्-क्रीडा-सक्तः, तरुणःतावत्-तरुणी-रक्तः।
वृद्धः-तावत्-चिन्ता-मग्नः, परमे-ब्रह्मणि-कोऽपि-न-लग्नः।

भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, मूढमते।

पुनरपि-जननं-पुनरपि-मरणं, पुनरपि-जननी-जठरे-शयनम्।
इह संसारे-खलु-दुस्तारे, कृपयाऽ पारे-पाहि-मुरारे।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

पुनरपि-रजनी-पुनरपि-दिवसः, पुनरपि-पक्षः-पुनरपि-मासः।
पुनरपि-अयनं-पुनरपि-वर्षं, तदपि-न-मुञ्चति-आशा-मर्षम्।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

वयसि-गते-कः-कामविकारः, शुष्के-नीरे-कः-कासारः।
नष्टे-द्रव्ये-कः-परिवारो, ज्ञाते-तत्वे-कः-संसारः।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

नारीस्तन भर-नाभि निवेशं, मिथ्या-माया-मोहा-वेशम्।
एतत्-मांस-वसादि-विकारं, मनसि-विचारय-बारम्-बारम्।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

कः-त्वं-कोऽहं-कुत-आयातः, का-मे-जननी-को-मे-तातः।
इति-परि-भावय-सर्वम्-असारं, विश्वं-त्यक्त्वा-स्वप्न-विचारम्।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

गेयं-गीता-नाम-सहस्त्रं, ध्येयं-श्री-पति-रूपं-अजस्त्रम्।
नेयं-सज्जन-सङ्गे-चितं, देयं-दीन-जनाय-च-वित्तम्।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

यावत्-जीवो-निवसति-देहे, कुशलं-तावत्-पृच्छति-गेहे।
गत-वति-वायौ-देहापाये, भार्या-बिभ्यति-तस्मिन्-काये।
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

सुखतः-क्रियंते-रामा-भोगः, पश्चात्-हन्त-शरीरे-रोगः।
यद्यपि-लोके-मरणं-शरणं, तदपि-न-मुञ्चति-पापा-चरणम्
भज गोविन्दं, भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

कुरुते-गङ्गा-सागर-गगनं, व्रत-परि-पालनम्-अथवा-दानम्।
ज्ञान-विहीनः-सर्व मतेन, मुक्तिः-न-भवति-जन्मशतेन
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, भज गोविन्दं मूढमते।

गणेश स्तुति

हेमजा सुतं भजे गणेशं ईश नन्दनम्।, एकदन्त वक्र तुण्ड नाग यज्ञ सूत्रकम्।।
रक्त गात्र धूम्र नेत्र शुक्ल वस्त्र मण्डितम्।, कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तुते गजाननम्।।
पाशपाणि चक्रपाणि मूषकाधि रोहिणम्।, अग्निकोटि सूर्य ज्योति वज्रकोटि पर्वतम्।।
चित्रमाल भक्तिजाल भालचन्द्र शोभितम्।, कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।
विश्ववीर्य विश्वसूर्य विश्वकर्म निर्मलम्।, विश्वहर्ता विश्वकर्ता यत्र तत्र पूजितम्।।
चतुर्मुखं चतुर्भुजं सेवितं चतुर्युगम्।, कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।
भूत भव्य हव्य कव्य भर्गो भार्गव वन्दितम्।, देव वह्नि काल जाल लोकपाल वन्दितम्।।

पूर्ण ब्रह्म सूर्यवर्ण पुरुषं पुरान्तकम्।, कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजानंनम्।।
ऋद्धि बुद्धि अष्टसिद्धि नव निधान दायकम्।, यज्ञकर्म सर्वधर्म सर्व वर्ण अर्चितम्।।
भूतधूत दुष्ट मुष्ट दान्वै सर्दार्चितम्।, कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।
हर्ष रूप वर्ष रूप पुरुष रूप वन्दितम्।, शोर्प कर्ण रक्त वर्ण रक्त चन्दन लेपितम्।।
योग इष्ट योग सृष्ट योग दृष्टि दायकम्।, कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुतेगजाननम्।।

आरती

दुर्गति-नाशिनि दुर्गा जय-जय, काल-विनाशिनि काली जय-जय।
उमा-रमा-ब्रह्माणी जय-जय, राधा-सीता-रुक्मिणि जय-जय।।
साम्ब सदाशिव, साम्ब सदाशिव, साम्ब सदाशिव जय शंकर।
हर-हर शंकर दुःखहर सुख कर, अघ-तम-हर हर हर शंकर।।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण-कृष्ण हरे हरे।।

जय-जय दुर्गा, जय मा तारा, जय गणेश जय शुभ-आगारा।
जयति शिवाशिव जानकि राम, गौरी शंकर सीताराम।।
जय रघुनन्दन जय सियाराम, व्रज-गोपी-प्रिय राधे श्याम।
रघुपति राघव राजा राम, पतितपावन सीताराम।।

तेरे पूजन को भगवान्

तेरे पूजन को भगवान, बना मन मन्दिर आलीशान।
किसने जानी तेरी माया, किसने भेद तुम्हारा पाया।।
हारे ऋषि-मुनि कर ध्यान, बना मन मन्दिर आलीशान।
तू ही जल में तू ही थल में, तू ही मन में तू ही वन में।
तेरा रूप अनूप महान, बना मन मन्दिर आलीशान।
तू हर गुल में, तु बुलबुल में, तू हर डाल के पातन में।

तू हर दिल में है मुर्तिमान, बना मन मन्दिर आलीशान।
तूने राजा रंक बनाये, तूने भिक्षुक राज बिठाये।।
तेरी लीला ऐसी महान, बना मन मन्दिर आलीशान।
झूठे जग की झूठी माया, मूर्ख इस में क्यों भरमाया।।
कर कुछ जीवन का कल्याण, बना मन मन्दिर आलीशान।।

आरती गणेश जी

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
एक दंत दयावंत, चार भुजा धारी। मस्तक पर सन्दूर सोहे, मूसे की सवारी।।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
अंधन को आंख देत, कोढ़िन को काया। बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
हार चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा। लड्डुअन का भोग लगे, संत करे सेवा।।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।

शिवजी की आरती

शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं
सर्व विश्व का जो परमात्मा है,
सभी प्राणियों की वही आत्मा है।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ,
शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं
जिसे शस्त्र काटे न अग्नि जलावे
न पानी गलावे न मृत्यु मिटावे।
वही आत्मा सच्चिादानन्द मैं हूँ
शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं।।
अजर और अमर जिस को वेदों ने गाया
यही ज्ञान अर्जुन को हरि ने सुनाया।
अमर आत्मा है मरण शील काया
सभी प्राणियों के जो घट में समाया।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ
शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं
है तारी से तारों में प्रकाश जिस का
है चन्द्र व सूर्य में है वास जिस का
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ
शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं
शिवोहं शिवोहं शिवोहं शिवोहं

आरती शंकर जी

जय शिव ओंकारा, भज जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धंगी धारा, ओ३म् हर हर महादेव।।

एकानन चतुरानन पंचानन राजे, स्वामी पंचानन राजे।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे, ओ३म् हर हर महादेव।।

दो भुज चारु चतुर्भुज दश भुज अति सोहे, स्वामी दस भुज अति सोहे।
तीनों रूप निखरत, त्रिभुवन-जन मोहे, ओ३म् हर हर महादेव।।

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी, स्वामी मुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी, ओ३म् हर हर महादेव।।

श्वेताम्बर पिताम्बर बाघाम्बर अंगे, स्वामी बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक गरूड़ादिक भूतादिक संगे, ओ३म् हर हर महादेव।।

कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र त्रिशूल धारी, स्वामी चक्र त्रिशूल धारी।
सुखकारी दुखहारी जग-पालन कारी, ओ३म् हर हर महादेव।।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका, स्वामी जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका, ओ३म् हर हर महादेव।।
त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावे, स्वामी जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे, ओ३म् हर हर महादेव।।

आरती लक्ष्मी जी

ओ३म् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु दाता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तु ही जग माता, मैया तु ही जग माता।

दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पति दाता। मैया तु ही सुख-सम्पति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।

तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता, मैया तु ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।

जिस घर में तुम रहती, सब सद्गुण आता, मैया सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता, मैया वस्त्र न हो पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।

शुभ-गुण मंदिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता, मैया क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।

महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता, मैया जो कोई जन गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता, ओ३म् जय लक्ष्मी माता।।

गंगा माँ

ओ३म् जय गंगे माता, मैया जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता, ओ३म् जय गंगे माता।
चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता, मैया जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता, ओ३म् जय गंगे माता।
पुत्र सागर के तारे, सब जग को ज्ञाता, मैया सब जग को ज्ञाता।
कृपा दृष्टि हो तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता, ओ३म् जय गंगे माता।
एक बार जो प्राणी, शरण तेरी आता, मैया शरण जो तेरी आता।
यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता, ओ३म् जय गंगे माता।
आरती मातु तुम्हारी, जो नर नित गाता, मैया जो नर नित गाता।
सेवक वही सहज में, मुक्ति को पाता, ओ३म् जय गंगे माता।

आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे,
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे, ॐ।
जो ध्यावे फल पावे दुःखविनशे मन का
सुख सम्पत्ति घर आये कष्ट मिटे तन का, ॐ।
मात पिता तुम मेरे शरण पड़ों किसकी
तुम बिन और न दूजा आस करूँ जिसकी।। ॐ
तुम-पूरण-परमात्मा तुम अन्तर्यामी
पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी। ॐ

तुम-करुणा के सागर तुम पालन कर्त्ता
मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्त्ता। ॐ।
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति
किस विधि मिलों दयामय तुमको मैं कुमति। ॐ।
दीन बन्धु दुःख हर्ता रक्षक तुम मेरे
अपने चरण लगावो द्वार पड़ा तेरे। ॐ।
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा। ॐ।

दीन बन्धु दुःख हर्ता रक्षक तुम मेरे, स्वामी रक्षक तुम मेरे।
अपने चरण लगावो द्वार पड़ा मैं तेरे, ओ३म् जय जगदीश हरे।।
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा, स्वामी पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा, ओ३म् जय जगदीश हरे।।

भवसर कुस तरि

आदि प्रभातन युस दय नाव स्वरि।, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।।
भावनाइ सान सुस तस पूजा करि, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।।
सुलि प्रभातन श्रान ध्यान करि, गरि गरि हर हर परि लो लो।।
द्वख त संकट तस पान भगवान् हरि, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।।
गृहस्थ आश्रम कुय युस व्रत दरि, लूक सीवाई प्यठ मरि लो लो।।
निष्काम कर्मन लोला युस बरि, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।।
सन्तोष व्रच प्यठ मन युस थ्यर करि, हर सात सुय व्रत दरि लो लो।

सुख त शान्ती हुंद युस हलमा बरि, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।
श्वास आश्वासस दय नाव युस स्वरि, दय सुन्द ध्याना दरि लो लो।
लय रोजि तथ मंज कारूबारा करि, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।।
पऽछय सीवाय प्यठ पान अर्पण करि, बेलूस बऽग रावि घरि लो लो।
ड्यक मुचरिथ युस दान धर्मा करि, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।।
हु त ब्ह मशरावि सारिनीय लोल भरि, लोलुक सोदा करि लो लो।
जीव जाचन सूत लो लुच माय बरि, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।।
काम क्रूध लूभ मोह अहंकार यस खरि, सत-असत वार सर करि लो लो।
अपजिस दुय करि पजरस लोल बरि, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।।
तरवुन करनोव आलव दिवान तरि, कंसि मा छु तरुन घर लो लो।
आलुस त्राविथ उद्यूग युस करि, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।।
प्रथ शायि मंज़ जानुन कुस वास करि, सोरुय कस मंज! स्वरि लो लो।
बेबस जानिथ देह अद त्याग करि, सुय हा यमि भवसर तरि लो लो।।

हरे राम, हरे राम, राम राम, हरे - हरे
हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे - हरे

गौरीस्तुतिः

ॐ लीलारब्ध-स्थापित-लुप्ताखिल-लोकां, लोकातीतै-र्योगिभिर्-अन्तर्-हृदि-मृग्याम्।
बालादित्य-श्रेणि-समान-द्युति-पुञ्जां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थ :—जो जगदम्वा विना किसी परिश्रम के सृष्टि को बनाती है पालन करती है और नाश करती है, योग के अन्तिम अवस्था पर पहुंचे हुये योगी जिस शक्ति रूपी मां को हृदय में ढूंढ़ते हैं, उदित होते हुये असंख्य सूर्यों जैसी प्रकाश वाली, कमल जैसे नेत्रों वाली माता गौरी (योगाग्नि से जलाये हुये शरीर के कारण गौर वर्ण वाली) की मैं स्तुति करता हूँ।

आशा-पाश-क्लेश-विनाशं विदधानां, पादाम्भोज-ध्यान-पराणां पुरुषाणाम्।
ईशीम्-ईशाङ्ग गार्ध हरां तां तनुमध्यां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थ :—जो भक्त जन उस शक्ति रूपी माता के चरण कमलों के ध्यान में लगे हुए हैं, उन के आशा के

बन्धनों से पैदा हुए कष्टों को नाश करने वाली, शक्तिशाली, शंकर के आधे शरीर पर अधिकार वाली, सूक्ष्म कमर वाली, कमल जैसे नेत्रों वाली, माता गौरी की मैं स्तुति करता हूँ।

प्रत्याहार-ध्यान-समाधि-स्थितिभाजां, नित्यं चित्ते निर्वृत्तिकाष्ठां कलयन्तीम्।
सत्य-ज्ञाना-नन्दमयीं तां तडित्-आभां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थ :—प्रत्याहार, ध्यान तथा समाधि के साधना में लगे हुये भक्तों के चित्त में आनन्द उत्पन्न करने वाली, सत्य ज्ञान तथा आनन्द स्वरूप वाली, बिजली की जैसी प्रकाशवाली, कमल जैसे नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।

चन्द्रापीडा-नन्दितमन्द-स्मितवक्त्रां, चन्द्रापीडा-लंकृत-लोला-लकभाराम्।
इन्द्रोपेन्द्रा-द्यर्चित पादाम्बुजयुग्मां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थ :—भगवान् शंकर को आनन्दित करने वाले मुस्कराहट से युक्त मुख वाली, भगवान् शंकर के निमित सजाये हुये घूंघट वाले बालों की भार वाली, इन्द्र तथा नारायण जिसके चरणों की पूजा करते हैं उस कमल जैसे नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।

नाना कारैः शक्ति-कदम्बै-र्भुवनानि, व्याप्य स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका।
कल्याणीं तां कल्पलताम्-आनतिभाजां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थ :—भिन्न-भिन्न शक्तियों से भूः, भुवः, स्वः लोकों में व्याप्त होकर जो मां अकेली स्वतंत्र रूप से खेलती

रहती है, जो कल्याण रूप से शरण में आये हुए के लिए कल्पलता है अर्थात् हर कामना को पूर्ण करने वाली है ऐसी ही कमल जैसी नेत्रों वाली मां की मैं स्तुति करता हूँ।

मूलाधारात्-उत्थित-वर्त्ती विधिरन्ध्रं, सौरं-चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताङ्गीम्।
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां ताम्-अभिवन्द्यां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थ :–सूर्य लोक और चन्द्रमा लोक से गुज़र कर मूलाधार से उठी हुई ब्रह्म रन्ध्र तक पहुंची हुई प्रकाश रूप, स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण शरीर में व्याप्त, प्रणाम के योग्य, कमलों जैसी नेत्रों वाली माता गौरी की मैं स्तुति करता हूँ।

आदि-क्षान्ताम्-अक्षर मूर्त्या, विलसन्तीं, भूते भूते भूत-कदम्बं प्रसवित्रीम्।
शब्द-ब्रह्मा-नन्द-मयीं ताम्-अभिरामां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थ :–'अ' से लेकर 'क्ष' तक अक्षर रूप में विलास करने वाली, युग-युग में प्राणियों को उत्पन्न करने वाली, शब्द ब्रह्मस्वरूप आनन्दमई उस सुन्दर मां का, जिस के नेत्र कमल के समान हैं मैं स्तुति करता हूँ।

टिप्पणी : षट्दलों में 'अ' से लेकर 'क्ष' तक अक्षर अंकित हैं जिन को मात्रिकायें कहते हैं, योगियों के मत से षट् दलों में अन्तिम मात्रा 'क्ष' है जो आज्ञाचक्र में अंकित है इसी कारण इस श्लोक में 'अ' से 'क्ष' तक का वर्णन है जबकि वर्णमाला में पहला अक्षर 'अ' है और अन्तिम अक्षर 'ह' है। **"शब्द ब्रह्म"** योगी की जब कुण्डलिनी जाग्रत होती है तो उससे **'स्फुट'** अर्थात् शब्द होता है, उसका पहला शब्द **'नाद'** कहलाता है

इसी प्रकार जीव सृष्टि में पहला उत्पन्न होने वाला शब्द 'ब्रह्म' कहलाता है।

यस्याः कुक्षौ लीनम्-अखण्ड़ं, जगत्-अण्डं, भूयो भूयः प्रादुर्-अभूत्-अक्षतमेव।
भर्त्रा सार्धं तां स्फटिकाद्रौ, विहरन्तीं, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थ :—जिस जगदम्बा की गोद में यह सब सृष्टि लय हो जाती है फिर बार-बार किसी खण्डन के बिना फिर से उत्पन्न होती है प्रकाश के केन्द्र ब्रह्मरन्ध्र में सदाशिव के साथ विहार करती हुई अथवा बर्फ से ढ़क्के हुए सफेद हिमालय पर्वत पर विहार करने वाली कमल जैसे नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूं।

यस्याम्-एतत्प्रोतम्-अशेषं मणिमाला, सूत्रे यत्-वत् क्वापि चरं चाप्यचरं च।
ताम्-अध्यात्म-ज्ञानपदव्या-गमनीयां, गैरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थ :—जिस शक्ति में यह सारी चराचर सृष्टि ऐसे पिरोई हुई है जैसे सूत्र में रत्न गुथे हुये होते हैं उसी शक्ति रूपी मां को जो आध्यात्मज्ञान से जानी जाती है जिस के नेत्र कमलों के समान हैं उसी मां की मैं स्तुति करता हूँ।

नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः साक्षी यस्याः सर्गविधौ सहंरणे च।
विश्वत्राण-क्रीडन शीलां शिवपत्नीं, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।

अर्थ :—जिस महामाया के सृष्टि बनाते समय अथवा संहार करते समय सदा शिव जो नित्य, सत्य, सजातीय इत्यादि तीन भेदों से रहित हैं जो आप के बनाने के काम में केवल साक्षी रूप में रहते हैं, जगत की रक्षा करना

जिन का एक खेल है उसी कमल जैसी नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।

प्रातः काले भावविशुद्धिं विदधानो, भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः।
वाचां सिद्धिं सम्पत्तिम्-उच्चैः शिवभक्तिं, तस्या-वश्यं पर्वत-पुत्री विदधाति।।

अर्थ :—जो प्रातः काल शुद्ध हृदय से युक्त और संकल्प विकल्प रहित होकर भक्ति से नित्य इन दस गौरी माता के श्लोकों का उच्चारण करता है उस भक्त को सिद्धि, ऐश्वर्य, भगवान् शंकर की भक्ति पार्वती माता अवश्य देती है।

सर्वमङ्गल-मङ्गल्ये, शिवे-सर्वार्थ-साधिके शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते।।

सर्वमङ्गल = भक्त की सभी शुभकामनायें सिद्ध करने में, ***मङ्गला*** = सुन्दर अथवा कल्याण कारी, ***शिवे*** = (देवी पुराण में शिवा शब्द मुक्ति का वाचक है) हे मोक्ष देने वाली, ***सर्वार्थसाधिके*** = धर्म, अर्थ काम, मोक्ष देने वाली, ***शरण्ये*** = दुःखों से रक्षा करने वाली, ***त्र्यम्बके*** = अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा रूप तीन नेत्र वाली ***गौरि*** = दक्ष के यज्ञ में योग-अग्नि में भस्म बनी हुई, हे गौर वर्णवाली ***नारायणि*** = विष्णु की लक्ष्मी रूपा शक्ति वाली हे माता, ***नमः*** = नमस्कार ***अस्तु*** = हो, ***ते*** = तुम्हें।

अर्थ :—सभी शुभकामनाओं को सिद्ध करने से सुन्दर अथवा कल्याणकारी, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को देने वाली, दुःखों से रक्षा करने वाली अग्नि चन्द्रमा, सूर्य रूप तीन नेत्रों वाली, दक्ष प्रजापति के यज्ञ में योग अग्नि में भस्म बनी हुई अतः गौरवर्णवाली, विष्णु की लक्ष्मी रूपा शक्तिवाली माता तुम्हें नमस्कार हो।

ब्राह्मी-विद्या

ॐ ॐ ॐ त्रिगुणपुरुष क्षेत्रचर, मोहं भिन्धि, रजस्तमसी भिन्धि, प्राकृत-पाशजालं-सावरणं परिहर, सत्वं ग्रहाण-पुरुषोत्तमोसि, सोम-सूर्यानल, प्रवर, परमधामन् ब्रह्म विष्णुमहेश्वरस्वरूप, सृष्टिस्थिति-संहारकारक, भ्रू-मध्य-निलय, तेजोसि-धामासि-अमृतात्मन् ॐ तत्सत् हँसः, शुचिषत्, वसुरन्त-रिक्षसत् होता वेदिषत्, अतिथि-दुरोणसत्, नृषत्-वरसत्-ऋतसत्- व्योमसत्, अब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं, परंब्रह्म-स्वरूप, सर्वगत सर्वशक्ते, सर्वेश्वर, सर्वेन्द्रिय-ग्रन्थि भेदं कुरु, परमं-पदं परामर्शय परमार्ग ब्रह्म-द्वारं सर, कुमार्ग-जहि-षट्-कोशिकं शरीरं-त्यज, शुद्धोसि बुद्धोसि विमलोसि क्षमस्व स्वपदम्-आस्वादय स्वाहा।

काश्मीर के दक्षिण प्रान्त के तीर्थ

गत दो वर्षों से विजयेश्वर पंचांग में कुछ प्राचीन तीर्थों के विषय में लोगों की जानकारी के लिये लिखता आ रहा हूँ इस वर्ष भी और कुछ तीर्थों के विषय में लिख रहा हूँ तथा साथ ही आप से प्रार्थना करता हूँ यदि आप के पास किसी प्राचीन तीर्थ अथवा किसी व्यक्ति विशेष की कुछ जानकारी होगी तो हमें लिख कर भेजे अथवा 555607 दूरभाष पर हम से सम्पर्क करें।

वासुकनाग (वासुकी कुण्ड) देवसर: काज़ीगुड से उत्तर पश्चिम की तरफ लगभग 20 किलोमीटर दूर कुँड इलाके में त्रिपुर सुन्दरी के दामन में स्थित वलटिंगू गांव के पास वासुक नाम का चश्मा है, व शिवजी के अनन्त स्वामी नाग 'वासुकी' के नाग नाम पर प्रसिद्ध है। एक लोक-कथा के अनुसार एक बार एक साधु कमण्डल (अलगड्डू) लेकर वलटिंगू आया और यहां एक छायादार पेड़ के नीचे बैठकर सो गया, जंगल से कुछ स्त्रियां लकड़ी लेकर आ रहीं थीं, उन्होंने साधू को नींद में पाकर कमण्डल से एक सांप (नाग) बाहर आते हुये देखा, नाग ने यहां जगह बनाई और पानी की सूरत में चश्मा प्रकट हुआ, साधू नींद से जागा और उस नाग को फिर कमण्डल में भरने लगा क्योंकि उसे यह नाग (चश्मा) डेंग (सन्गलदान जम्मू) के खुश्क इलाके को पानी देने के लिये लेना था लेकिन एक मुसलमान दरवेश नूरशाह बगदादी की विनती करने पर साधू ने इस चश्मे को गर्मियों में वलटिंगू काश्मीर में और सर्दियों में (डेंग) जम्मू में रखना मान लिया, कहते हैं कि चैत्र मास की 15वीं तारीख को इस चश्मे में यहां पानी नमूदार होता है और असूज में फिर गायब होकर डेंग के किसी घराने के रसोई घर में फिर नमूदार होता है, यात्री लोग जंगत्रय को यहां क्षीर और पीले चावलों का चट्टू रखने आते हैं, चश्मे के ऊपर पहाड़ की ऊँची चोटी पर त्रिपुर सुन्दरी का अस्थापन और बागबम्बूर है जहां पहुंचना कठिन है, काश्मीर में वासुकी नाम के चश्मे कई हैं और भद्रवाह में भी प्रसिद्ध वासुकी नाग है।

मामलेश्वर अस्थापन (पहल गाम): अमरनाथ कथा के अनुसार जव शिवजी महाराज पार्वती को अमर कथा सुनाने के लिये अमरनाथ की तरफ ले जाते है और उनके साथ तमाम देवी-देवता भैरव गण आदि होते हैं लेकिन भगवान शङ्कर अमर होने की अमर कथा केवल माता पार्वती को ही अकेले में सुनाना चाहते है इसलिये मामलेश्वर पहुंचकर शिवजी तमाम देवी-देवताओं को आदेश देते है कि "मां" अर्थात् आगे मत वढो, तो वहां आस-पास के इलाकों में सव देवी-देवता अपना-अपना स्थान ग्रहण कर लेते हैं, इसी "मां" शब्द से ही इस स्थान का नाम मामलेश्वर पड़ा मामलेश्वर से ही अमरकथा की यात्रा शिवजी और पार्वती शुरु करते हैं। मामलेश्वर या मामल मन्दिर लेदर (लम्वोदरी) नदी के दायें किनारे पर पहलगाम के पास स्थित है, यहाँ एक प्राचीन खस्ता हाल मन्दिर है, पहले जमाने में अमरनाथ यात्री पहले मामलेश्वर की यात्रा करते थे, राजतरङ्गिनी के अनुसार राजा जय सिंहा (1128) ई॰ ने यहां मन्दिर की चोटी पर ऑवले की शक्ल का सोने का क्लश चढाया था, मन्दिर की वुनियाद से पानी निकलकर चश्मा की सूरत इख्तियार कर लेता है, मन्दिर में शिवलिङ्ग नया है। मगर प्रणाली प्राचीन काल की है। "अमरेश्वर कल्प" में यहां के मन्दिर को मीमेश्वर का नाम आया है जिसको काश्मीरी में 'मामल' वना।

राज्ञापोरा (लोकटी पोर) पहलगाम: अनन्तनाग से पहलगाम जाने वाली सड़क पर आधे मील की दूरी पर स्थित लोनीपोरा (राज्ञापोरा) का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है जिस को काश्मीरी में **लोकटीपोरा** कहते हैं यहां राज्ञादेवी का अस्थापन है, क्षीरभवानी तुलमुला की तरह यहां चिनारों के दरमियान एक कुण्ड है जिस पर मन्दिर वनाया गया है, इस मन्दिर में राज्ञा देवी की मूर्ति है ऊपर की तरफ पहाड़ी पर महादेव जी का अस्थापन गणेश जी की मूर्ति और आंगन में और दो कुण्ड है, एक धर्मशाला और यज्ञशाला भी है, हर साल ज्येष्ठाष्टमी के दिवस पर यहां एक महान् यज्ञ रचाया जाता है, अमरनाथ कथा के अनुसार जव भगवान् शंङ्कर माता पार्वती को अमरकथा सुनाने के लिये अमरनाथ गुफा की तरफ

ले जाते है तो शिवजी महाराज सारे देवी-देवताओं को रास्ते में भिन्न-2 स्थानों पर ठहरने और आगे न वढने का आदेश देता है, शक्तिमाता का राज्ञा स्वरूप राज्ञापोरा में निवास करता है, गाँटमूला में आदिनाथ, चन्द्रागाम (खयार) में चन्द्रा स्वामिन काठसू में कुब्जका भगवती आदि देवी-देवता निवास करती हैं।

पांजथ (काजीगुण्ड): शाह आवाद (डूरू) परगना के काजीगुण्ड कस्वा के पूर्व में 2 किलोमीटर दूर पांजथ का तीर्थ है कहावत है कि यहां गहरे चश्मे से वितस्ता का दुवारा जन्म हुआ है, महात्मों ने पांजथनाग को **'पंच हस्त नाग'** नाम दिया गया है, कहावत के अनुसार पंचशत नाम ही पांजथ वना और कहते हैं इस में पांच सौ चश्में मिले हुये हैं, राजा अवन्ती वर्मन 1855-83 के वजीर शोरावाहन ने यह गाँव जागीर के तौर पर इस तीर्थ के नाम रखा था और वहाँ एक मठ तामीर किया था, कुछ समय पूर्व तक यहां साल में नवरेह के दिन एक यात्रा भी लगती थीं तथा यहाँ एक छोटा सा मन्दिर भी था लेकिन अव पुराने आसार कहीं भी नहीं है डोगरा शासक यहां प्रायः आया करते थे और उन्होंने किसी किसी जगह तामीर भी किये थे, 'पांजथनाग' के उत्तर में सप्त ऋर्षियों का अस्थापन है जहां आज भी पुराने खण्डरात मौजूद हैं और एक नाला वहकर पांजथनाग के साथ मिलकर आगे नदी का रूप धारण कर लेता है।

प्रश्नोत्तरी

पिछले वर्ष से मैंने **'विजयेश्वर पंचांग'** में "प्रश्नोत्तरी" का विभाग आरम्भ किया उसी के अनुसार इस वर्ष भी कुछ प्रश्नों का समाधान शास्त्रों के आधार से लिखने का प्रयत्न कर रहा हूँ।

प्र. :- कन्याओं को यज्ञोपवीत संस्कार का अधिकर है या नहीं?

उ. :- शास्त्रों में दरज है कि वैदिक - संस्कृति में कन्याओं को यज्ञोपवीत ग्रहण करने का वैसी ही अधिकार था जैसा

वालकों को, वैदिक काल में स्त्रियां वेद-शास्त्र पढ़ा करती थी। गोभिलीय गृह्य सूत्र में लिखा है:-

प्रावृतां यज्ञोपवीतिनीम अभ्युदानयन् जपेत् सोमोऽददत् गन्धर्वाय इति

अर्थात्:- कन्या को कपड़ा पहने हुये, यज्ञोपीत धारण किये हुये पति के निकट लाये तथा यह मन्त्र पढें। इस मन्त्र में स्पष्ट है कि कन्या यज्ञोपवीत किये हुये हो। यह श्लोक भी इसकी पुष्टी करता है।

पुराकल्पे हि नारीणां मौञ्जीबन्धन मिष्यते। अध्यापनं च वेदानां सावित्री वाचनं तथा।।

अर्थात्:- प्राचीन काल में स्त्रियों का मौञ्जीबन्धन-उपनयन संस्कार होता था, वे वेदादि शास्त्रों का अध्ययन भी करती थी। हारीत संहिता तथा पराशर संहिता में कहा है:-

"द्विविधा स्त्रियों ब्रह्मवादिन्यः, सद्योवध्वश्च'। तत्र ब्रह्मवादिनीनाम् उपनयनम्, अग्निबन्धनम्, वेदाध्ययनम् स्व-गृहे भिक्षा इति, वधूनाम तु उपस्थिते विवाह कथंचित उपनयनं कृत्वा विवाहः कार्यः"।

अर्थात्:- दो प्रकार की स्त्रियां होती हैं एक वे ब्रह्मवादिनी जिन का उपनयन होता है, जो अग्निहोत्र करती है, वेदाध्ययन करती है अपने परिवार में ही भिक्षावृति से रहती है और दूसरी वे जिन का उपनयन संस्कार करके विवाह होता है। इसकी पुष्टी '**निर्णय सिन्धुकार**' ने भी अपने पुस्तक के पृष्ट 414 पर की है।

अथर्व वेद में लिखा है:- '**ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दतेपीतम्**।

अर्थात्:- ब्रह्मचर्याश्रम में रह कर वेदों को पढने और ब्रह्मचर्य.को पालन करने के उपरान्त गृहस्थ की कामना करने वाली कन्या युवक पति का वरण करती है।

वेद मन्त्रों के अर्थों को स्पष्ट करने वालों को 'ऋषि' कहा जाता है "**ऋषयो मन्त्र द्रष्टारः**' कई वेद मन्त्रों के अर्थ खोलने वाली '**ऋषिकायें**' भी हुई है ऋग्वेद में इस प्रकार की लगभग 30 ऋषिकाओं के नाम आते हैं जैसे गार्गी, मैत्रेयी,

मदालसा, अनुसूय्या, अरुन्धती, देवयानी, अहिल्या, कुन्ती, द्रोपदी इत्यादि गायत्री की उपासक रही है।
इसके अतिरिक्त मनु महाराज प्रत्येक धर्म कार्य में स्त्री-पुरुष का समान अधिकार मानते है। मनु ने घर में अग्निहोत्र आदि धर्मकार्यों के आयोजन की मुख्य जिम्मेदारी स्त्री को ही सौंपी है और यह आदेश दिया है कि पुरुष को प्रत्येक धर्म कार्य स्त्री को साथ लेकर करना चाहिये जैसे **"शोचे धर्म अन्नपक्त्यां"** अर्थात् घर की शुद्धि, धर्मकार्यों का आयोजन और भोजन बनाना आदि स्त्री को सौंपा है) मनु ने संस्कारों को सभी के लिये समान रूप दिया है वहां पर स्त्री-पुरुष का कोई भेद नहीं है सभी संस्कार मन्त्रपूर्ववती करने चाहिये वह स्त्री का हो या पुरुष का संस्कार ब्रह्मण वर्ग के लिये जरूरी चाहे वह स्त्री हो अथवा पुरुष।

काश्मीरी पण्डित लौगाक्ष के 24 संस्कारों को ही मानते हैं हम लड़की के केवल 9 संस्कार करते है। औश्र लड़के के 24 संस्कार। मनु स्मृति में लिखा है **'जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्यते'** अर्थात् संस्कार करने पर ही हम अपने आप को ब्रह्मण कहला सकते हैं। शास्त्रों में लिखा है कि लड़की माता-पिता का क्रिया कर्म कर सकती है तथा लड़की अपने माता-पिता का दाह संस्कार भी कर सकती है परन्तु धर्म शास्त्र में यह भी लिखा है कि यज्ञोपवीत के बिना हम कोई भी धार्मिक कार्य अथवा क्रिया कर्म नहीं कर सकते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि वैदिक काल में कन्याओं का यज्ञोपवीत संस्कार होता था। यह बात भी है कि जब हम अपने लड़के का विवाह करते हैं तो लग्न के समय लड़के को छः दागों वाला यज्ञोपवीत पहनाते है और लड़के से कहता है कि पहले आप को तीन दागों वाला यज्ञोपवीत था अब छः दागों वाला यज्ञोपवीत है इसमें से तीन दागे आप को अपनी स्त्री के हैं अर्थात् आप को आज से अपनी स्त्री के धार्मिक कार्यों का चार्ज भी लेना है क्योंकि उस को गृहस्थ का पूरा कार्य है तथा बच्चों की देखभाल करनी है इस से स्पष्ट होता है कि लड़की को भी यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार था परन्तु समय बीतने के साथ-साथ यह संस्कार केवल लड़कों

तक ही सीमित रहा है जैसे कर्ण वेध का संस्कार। पहले पहल कर्ण वेध का संस्कार दोनों लड़कों तथा लड़कियों को करते थे परन्तु समय बीत जाने के साथ-साथ यह संस्कार केवल लड़कियों तक ही सीमित रहा। आप किसी वृद्ध माता जी से भी पूछें कि पहले पहल स्त्रियां भी लंगोट तथा आटीपन लगाती थी, आटीपन को मेखला कहते है जो कि यज्ञोपवीत संस्कार पर ही कमर में बान्दा जाता है इससे भी स्पष्ट होता है कि पहले पहल लड़कियों को भी यज्ञोपवीत संस्कार किया जाता था।

ओंकार नाथ शास्त्री

प्र०:- पीपल (अश्वत्थ) का वृक्ष पवित्र क्यों माना जाता है?

उ०:- हमारे शास्त्रों में अश्वत्थ (पीपल) की महिमा इस प्रकार बताई गई है '**अर्थववेद**' में लिखा है '**अश्वत्थो देव सदनः**' अर्थात् पीपल को देवताओं का घर कहा है इस कारण इस की पूजा से भी देवताओं की पूजा होती है। श्रीमत् भगवत् गीता अध्याय 10 श्लोक 26 के अनुसार '**अश्वत्थः सर्व वृक्षाणाम्**' भगवान् कृष्ण स्वयं कहते हैं कि मैं सब वृक्षों में पीपल का वृक्ष हूँ स्कन्ध पुराण के अनुसार 'पीपल की जड़ में विष्णु, तने में केशव, शाखाओं में नारायण, पत्तों में भगवान् हरि और फल में सब देवताओं से युक्त अच्युत सदा निवास करते हैं।

प्र०:- चरणामृत से क्या लाभ है?

उ०:- पूजा के समय ताम्रपात्र में रखी शालग्राम की प्रतिमा अथवा लिंग का जल द्वारा संस्कार होता है उस में तुलसी चन्दन, दूध, घी, दही इत्यादि पदार्थ मिले रहते हैं ताम्बे के पात्र में रखा हुआ जल रोगनाशक होता है विशेषतौर से इस में वेद मन्त्रों की शक्ति मिश्रित होती है वही जल शंख में डाला हुआ और भी शक्ति सम्पन्न हो जाता है तब वह जल एक अमृत का काम करता है उसके सेवन से अकाल मृत्यु नहीं होती है। शास्त्रों में लिखा है।

विष्णु पादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते। अकाल मृत्यु हरणं सर्व व्याधि विनाशनम्।।

इस प्रकार चरणामृत पान से शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक लाभ होता है।

प्र०:- पश्चिम दिशा अथवा उत्तर दिशा की ओर सिर क्यों नहीं रखना चाहिये?

उ०:- वैखानस गृह्य सूत्र में लिखा है "प्रत्यगुत्तरशिराश्व न स्वपिति" अर्थात् पश्चिम तथा उत्तर दिशा की ओर सिर करके सोना निषेध है। शतपत् ब्रह्मण में लिखा है "प्राची हि देवानां दिक्" अर्थात् पूर्व दिशा देवताओं की दिशा है इस कारण पूर्व दिशा की ओर पैर करने से देवताओं का अपमान होता है, ग्रह नक्षत्रादि सभी पश्चिम से पूर्व की ओर जाते है इस कारण पूर्व दिशा देव दिशा है, विज्ञान भी इस बात की पुष्टि करता है कि उत्तरी ध्रुव से दक्षिण ध्रुव की ओर इस प्रकार की लहरें चलती हैं जो मनुष्य के मस्तिष्क को हानि पहुंचाती है।

इन को मत भूलिये

सन्ध्या चोंगः- सन्ध्या अर्थात् सायंकाल, चोंग काश्मीरी भाषा में दीप को कहते है वह दीप जिस को सायंकाल में जलाया जाता है। हमारी मातायें सन्ध्या के समय दीप जलाती थीं तथा भंगवान् से अपने परिवार तथा पूरे संसार की खुशी के लिये प्रार्थना करती थी और पढ़ती थी।

ॐ शुभं भुवन कल्याणं आयुर्दा सुख सम्पदम्। सर्व शत्रु विनाशाय द्वीप ज्योर्ति नमस्तुते।।

सन्यवारीः- पहले पहल प्रत्येक घर में ताम्बे के छोटे दो लोटे होते थे जिन को सन्यवारी कहते हैं अभी भी क़िसी-किसी घर में आप सन्यवारी देख सकते हैं। हमारी मातायें ब्राह्मी मुहूर्त में इन लोटों को मांजती थीं तथा शुद्ध पानी भरती थी और इसी पानी से घर के दरवाजे (Main Gate) को छींटे देती थी और पढ़ती थी:-

जले विष्णु, थले विष्णु, विष्णु आकाश मण्डले। स्थाने-स्थाने हरि विष्णु विष्णु जगत् मण्डले।।

फिर किचन में किसी साफ स्थान पर रखती थी इन के लिये निश्चित स्थान होता था जब भोजन तैयार हो जाता था तो सवसे पहले थोड़ा सा भोजन और सब्जि इत्यादि इन में पित्रों के निमित डाला जाता था।

ब्रान्द फशः- ब्रान्द का वास्तविक अर्थ हैं बरामदा अर्थात् (Main Gate of the Building) फश का वास्तिविक अर्थ है लिपाई करना। बरामदे की लिपाई करना। हमारी मातायें ब्राह्मी मुहूर्त में उठकर मिट्टी तथा गोबर से ब्रान्द फश लगाती थीं प्रायः यह कार्य बहुओं के जिम्मे होता था इसी कारण वहु को **ब्रान्दकन्य** भी कहते हैं। उसी के आधार पर इस वंश की सन्तति आगे वढ़ती है।

हूनि-म्यटः- का वास्तविक अर्थ यह नहीं है कि जो अन्न हम कुत्ते को डालें। वास्तव में जो अन्न हम खाते हैं यह हमारी जाठराग्नि को शान्त करता है शास्त्रों में लिखा है जिस प्रकार हम अग्नि में आहुति डालते हैं उसी प्रकार हम अन्न रूपी आहुतियां जाठराग्नि (पेट की अग्नि) को शान्त करने के लिये डालते हैं यह भी एक प्रकार का दैनिक हवन है इस को आरम्भ करने से पहले हम अपनी थाली में से थोड़ा सा अन्न बाहर रखते थे जिस को हम हूनि-म्यट कहते हैं। शास्त्रों में लिखा है भगवान् को अथवा अपने इष्ट देव को अपर्ण करके खाना चाहिये। इस कारण हूनि-म्यट का यही अर्थ है कि खाने से पहले जो अन्न हम अपने इष्ट देव को अर्पण करते हैं उसी को हूनि-म्यट कहते है हो सकता है पहले इस का और ही कोई नाम हो, जो विगड़ते विगड़ते 'हूनि-म्यट' बन गया।

प्रस्थानः प्रस्थान का वास्तविक अर्थ है यात्रा या यात्रा मुहूर्त पर यात्रा की दिशा में कहीं रखाया गया यात्री का वस्त्रादि सामान। शुभ मुहूर्त पर प्रस्थान निकालना भी शुभफलदायक होता है आप अपना कोई वस्तु जो आप ने यात्रा में साथ लेना हो किसी दूसरे स्थान पर या किसी के घर में रखना चाहिये। शास्त्रों में दरज है:-

सप्ताहान्येव पूर्वस्यां, प्रस्थानं पञ्च दक्षिणे। पश्चिमे त्रीणि शस्तानि, सौम्यायां तु दिन द्वयम्।।
अर्थात्:- पूर्व दिशा की ओर जाना हो तो 7 दिनों तक, दक्षिण की ओर जाना हो तो 5 दिनों तक, पश्चिम की ओर जाना हो तो 3 दिनों तक और उत्तर की ओर जाना हो तो 2 दिनों तक प्रस्थान रहता हैं।

देव गौणः यह संस्कार दोनों लड़के तथा लड़की को किया जाता है। लड़की को देवगौण के समय तीसरा संस्कार **'गोदान'** किया जाता है अर्थात् वेद मन्त्रों से लड़की के बाल सम्भाले जाते हैं लड़कियों के मस्तिष्क को स्वस्थ बनाये रखने के लिये बालों को सम्भाल कर वेद-मन्त्रों से प्रेरणा की जाती है भारतीय संस्कृति में लड़की के बाल काटने निषेध हैं लड़की के लिये बाल काटना **'अपशकुन'** माना जाता हैं, बाल काटने पर लड़की अपने माता-पिता का क्रिया कर्म नहीं कर सकती है क्योंकि क्रिया कर्म के समय जिस प्रकार लड़का अपने यज्ञोपवीत को कभी दायें कभी बायें रखता है इसी प्रकार लड़की को यज्ञोपवीत के बदले अपना गुत्थ कभी दायें कभी बायें रखना पड़ता है यह तभी सम्भव है जब लड़की बाल नहीं काटेगी। पुरानी कहावत भी है:- **"मस छुय वस"**

(1) देव गौण के लिये कोई भी वार, तिथि तथा पंचक निषेध नहीं है।

(2) देव गौण कर के एक सप्ताह तक यज्ञोपवीत अथवा विवाह संस्कार होना आवश्यक है। *(धर्म शास्त्र)*

लग्न चीरः लग्नचीर दो शब्दों से बना है लग्न + चीर, लग्न का वास्तविक अर्थ है ज्योतिष द्वारा निश्चित किया हुआ समय, **'चीर'** का वास्तविक अर्थ है लिखित प्रमाण का एक प्रकार का विशेष रोल वह रोल जैसे पहले एक राजा दूसरे राजा को पत्र भेजता था वह भी रोल के आकार में होता था, इसी प्रकार पहले लग्न चीर भी गोलाकार के रूप में होती थी, आज कल उस ने फोटू की शक्ल ले ली है। लग्नचीर को लग्न पत्रिका भी कहते हैं अर्थात् विवाह की

निश्चित तिथि-सूचक या वर के घर भेजी हुई कन्या के पिता की वह चिट्ठी जिस पर कन्यादान का निश्चित समय, बारातियों का तेदाद, पण्डितों का तेदाद इत्यादि लिखा होता है हज़ारों वर्षों से यह प्रथा हमारे समाज में चलती आई है तथा आजकल भी प्रचलित है देखने में आता है कि विस्थापन के पश्चात् हमारे समाज में कुछ ऐसा बदलाव सा आया हुआ है जो हमारे समाज के लिये खतरे की घण्टी है हम अपनी सभ्यता से दूर हटते जा रहे हैं जो हमारे लिये तथा भविष्य के लिये अच्छा नहीं है। देखने में आता है कि आजकल कोई भी बारात समय पर लड़की वालों के यहां समय पर पहुंचती नहीं है लग्न की तो बात ही नहीं कोई भी लग्न समय पर नहीं होता है निश्चित समय पर कन्यादान का न करना एक महान पाप है इसी कारण बच्चों का गृहस्थ जीवन एक नरक बनता जाता है इसके जिम्मेदार हम सब हैं अपने बच्चों के गृहस्थ जीवन को सुखमय बनाने के लिये उन का लग्न समय पर करें।

सम्पादक

महापुरुषों के अनमोल वचन

मेहनत वह चाबी है जो किस्मत का दरवाजा खोल देती है।

धैर्य रखना कठिन है पर उस का फल मीठा होता है।

भाग्य पर भरोसा वह करता है जिस में पौरुष नहीं होता।

प्रेम सबसे करो, विश्वास थोड़ों का करो।

एक बार मुंह से निकले हुये शब्द कभी वापस नहीं आते।

मेल मिलाप उन्नति की आत्मा है।

क्रोध यमराज है।

घोड़े से सवार तभी गिरता है जब उसे सवारी का गर्व हो जाता है।

यदि सुख से जीना चाहते हो तो चिन्ता छोड़ो।

दूसरों के भाग्य पर जीवन निर्वाह करने वाले सदा दुखी रहते हैं।

सतसंग से अन्धे को आंख और मृतक को जीवन मिलता है

सतसंग आदमी को अन्धकार से निकाल कर रोशनी की ओर ले जाता है।

सतसंग दुःखों से छुटकारा दिलाता है और मन को शान्ति

देता है।

सतसंग से बीमारियों तथा चिन्ताओं से छुटकारा मिलता है।

सतसंग प्रभु कृपा के विना नसीब नहीं होता है।

दोष मनुष्य के भाग्य में नहीं मनुष्य में है।

विद्वानों का दास बनना उत्तम है पर मुर्खों का स्वामी बनना हानिकारक है।

जो अपना कर्त्तव्य करने से चूकता है वह एक महान लाभ से स्वयं को वंचित रखता है।

अधिक क्रोध और हर्ष नहीं करना चाहिये।

भोजन खाने के नियम

खड़े होकर भोजन न करें।

जूता, चप्पल इत्यादि पहन कर भोजन न करें।

फूटे बर्तन में न खार्यें।

चारपाई अथवा वैड पर बैठ कर भोजन न करें।

भोजन खाने से पहले भोजन को प्रणाम करें।

किसी का झूठा न खार्यें।

किसी के साथ न खार्यें।

नियमित भोजन खार्यें।

झूठन मत छोड़ो।

घर में भोजन सब को वांट कर खाओं।

भोजन करते समय मौन रहो।

भोजन करने से पहले तथा भोजन करने के पश्चात् दोनों हाथ अच्छी तरह से धो लो।

भोजन चमच्च से नहीं हाथ से खाओं।

पंक्ति में बैठे होने पर जब तक हर एक को भोजन सामने न आये तब तक सब्जि इत्यादि चाटने या खाने का प्रयत्न न करें।

पक्ंति से पहले उठना निषेध है।

ताम्वे के वर्तन, पीपल के पत्तों पर भोजन नहीं करना चाहिये।

भोजन पलाश पत्र, आम तथा केले के पत्ताल पर करना श्रेष्ठ हैं।

नवग्रहों की उपासना

हिन्दू जाति में प्राचीन काल से नवग्रहों की उपासना प्रचलित है इस के मूल में हम लोगों के शरीर से नवग्रहों का सम्बन्ध और ज्योतिष की दृष्टि से सुपुष्ट विचार भी हैं यह उक्ति प्रायः सर्वत्र प्रसिद्ध है कि '**यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे**' अर्थात् जो कुछ एक शरीर में है वह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में है और जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में है वह एक शरीर में भी है सभी ग्रह अपनी-अपनी गति से सूर्य की ओर बढ़ रहे हैं पृथ्वी के साथ सब का सम्बन्ध है अलग-अलग अरिष्ट के अनुसार तथा प्रत्येक शान्ति के लिये इन की पूजा होती है। जिस ग्रह का जो वर्ण है उसी रंग की वस्तुयें प्रायः पूजा में लाई जाती है मैं यहां पर ग्रहों के विषय में थोड़ी बहुत जानकारी द्रे रहा हूँ।

सूर्यः- ग्रहों के राजा है, कश्यप गोत्र, क्षत्रिय एवं कलिंग देश के स्वामी है इन के अधि देवता शिव है इन का रक्त वर्ण है इन का मन्त्र है "**ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः**"।

चन्द्रमाः- का अत्रि गोत्र है यमुना देश के स्वामी हैं इन के अधिदेवता उमादेवी है इन का श्वेत वर्ष है इन का मन्त्र है "**ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः**"।

मंगलः- भरद्वाज गोत्र के क्षत्रिय हैं, ये अवन्ति के स्वामी है इन के अधिदेवता स्कन्द (कार्तिकेय) है इन का रक्त वर्ण है इन का मन्त्र है "**ॐ हूं श्रीं मंगलाय नमः**"।

बुधः- का गोत्र अत्रि और मगध देश के स्वामी हैं इन के अधिदेवता नारायण है इन का वर्ण पीला है इन का मन्त्र है "**ॐ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः**"।

बृहस्पतिः अंगिरा गोत्र के ब्रह्मण है सिन्धु देश के स्वामी हैं इनके अधिदेवता ब्रह्मा है इन का वर्ण पीत (पीला) है इन का मन्त्रे है "ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः"।

शुक्रः- भृगु गोत्र के ब्राह्मण हैं, भोजकट देश के स्वामी हैं इन के अधिदेवता इन्द्र है इन का वर्ण श्वेत है इन का मन्त्र है "ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय-नमः"।

शनिः- कश्यप गोत्र के शूद्र हैं सौराष्ट्र प्रदेश के स्वामी हैं इन के अधिदेवता यमराज हैं इन का वर्ण कृष्ण है इन का मन्त्र है "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः"।

राहुः- पैठीनस गोत्र के शुद्र है मलय देश के स्वामी है इन के अधिदेवता काल है इन का वर्ण कृष्ण है इन का मन्त्र है "ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः"।

केतुः- जैमिनि गोत्र के शूद्र हैं कुशद्वीप के स्वामी हैं इन के अधिदेवता चित्रगुप्त हैं इन का रंग धुएं का सा है इन का मन्त्र है "ॐ ह्रीं केतवे नमः"।

पूजा पद्धति के अनुसार नवग्रहों का अनुष्ठान करना चाहिये अथवा जिस ग्रह ही खराव दशा चल रही हो उन पर लिखित मन्त्र से प्रतिदिन 11 मालाओं का जाप करें ऐसा करने से अवश्य क्रूर ग्रह शान्त हो सकता है।

नोट :- नवग्रहों की पुजा पद्धति संक्षेप में वना रहा हूँ शीघ्र ही आप के सामने आयेगी। जिससे पढ़ कर आप स्वयं नवग्रहों का अनुष्ठान कर सकते हैं।

(सम्पादक)

मांस खाना पाप (शास्त्रों के आधार पर)

स्वामांसं परमांसेन यो वर्धयितुम् इच्छति, नारदः प्राह धर्मात्मा नियतं सोवसीदति।।

अर्थः- जो दूसरे के मांस से अपना मांस बढाना चाहता है वह निश्चय से दुःख उठाता है।

आहर्ता चानुमन्ता च विशस्ता क्रयविक्रयी, संस्कर्ता चोप भोक्ता च खादकाः सर्व एव ते।।

अर्थः- जो हत्या के लिय पशु पालता है, जो उसे मारने की अनुमति देता है, जो उस का वध करता है, जो खरीदता है, बेचता है, पकाता है, खाता है वे सब के सब खाने वाले ही माने जाते हैं तथा सब पाप के भागी होते हैं।

ये भक्षयन्ति मांसानि भूतानां जीवितैषिणाम्, भक्ष्यन्ते तेऽपि भूतैस्तैरिति मे नास्ति संशयः।।

अर्थः- जो जीवित रहने की इच्छा वाले प्राणियों के मांस को खाते है वे दूसरे जन्म में उन्ही प्राणियों द्वारा भक्षण किये जाते हैं इस में किसी प्रकार का संशय नही है।

मां स भक्षयते यस्मात् भक्षयिष्ये तमप्यहम्।

अर्थः- आज मुझे वह खाता है तो कभी मैं भी उसे खाओं गा।

यत्र प्राणि-वधो धर्म : अधर्मस्तत्र कीदृशः, ब्राह्मणो यत्र मांसाशी चांडालस्तत्र कीदृशः।

अर्थः- जहां प्राणिहत्या धर्म माना जाता है अधर्म के विषय में वहां क्या कहा जाये, जहां ब्राह्मण ही मांस खाता हो वहां चण्डाल कैसा होगा। --

श्रीमद्भगवत् गीता

पं॰ प्रेम नाथ शास्त्री ने श्रीमद्भगवत् गीता की व्याख्या काश्मीरी भाषा में ग्यारह कैस्टों के माध्यम से लोगों तक पहुँचाई उसी काश्मीरी व्याख्या का हिन्दी रूपान्तरण इस वर्ष से **विजयेश्वर पंचांग** के माध्यम से आप तक पहुँचा रहा हूँ।

शास्त्र परम्परा है, प्रायः प्रत्येक शास्त्र अथवा धार्मिक ग्रन्थ के आरम्भ में मंगल होता है, वेद जो अनादि तथा अपौरुषेय हैं उन वेदों को भी जव ऋषियों ने प्रकट किया, ऋषियों ने उन वेदों के आरम्भ में 'ॐ' शब्द का उच्चारण किया है ऋग् वेद का पहला मन्त्र है "ॐ **अग्मिीड्ये पुरोहितं यज्ञस्य देवमृतिज्यं होतांर रत्नधातमम्**" परन्तु भगवद्गीता के आरम्भ में किसी मंगल शब्द का उच्चारण वेद व्यास ने किया नहीं है, मंगल करते भी कैसे, जव कि मंगल से तात्पर्य है ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति के लिये भगवान् की शरण में जाना, परन्तु जव भगवद्गीता भगवान् के मुखारविन्द से ही कही गई है- तो भगवान् स्वयं ही किस का मंगल करे।

भगवद्गीता के आरम्भ में ही है "**धृतराष्ट्र उवाच**" धृतराष्ट्र वोला, धृतराष्ट्र अन्धा था परन्तु वह केवल आंखों से ही अन्धा नहीं था, वह मन से भी अन्धा था जिस का संकेत भगवद्गीता के पहले ही श्लोक में मिलता है।

धर्म क्षेत्रे कुरु-क्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय।।

अर्थः- हे संजय ! धर्म भूमि कुरुक्षेत्र में युद्ध की इच्छा वाले मेरे और पाण्डवों ने क्या किया ?

व्याख्याः- इस श्लोक में धृतराष्ट्र संजय से यह नहीं पूछता है कौरवों और पाण्डवों ने क्या किया, बल्कि पूछता है **मामकाः** (मेरे) और पाण्डवों ने क्या किया, यह मेरा और तेरा ही संसार का वीज है, धृतराष्ट्र इसी तेरे और मेरे की उलझन में वंधा हुआ था। धृतराष्ट्र शव्द का यह भी अर्थ है, धृत=हड़प किया था, राष्ट्र=देश, पृथ्वी, जायदाद आदि अथवा दूसरे

का हक, वह कहलाता है धृतराष्ट्र, सारांश यह है जिस को मेरा और तेरा यह भेदभाव हो, और जिस ने दूसरे का हक हड़प किया है वह धृतराष्ट्र कहलाता है - ऐसे धृतराष्ट्र का अन्तिम परिणाम क्या होता है उस का उदाहरण धृतराष्ट्र स्वयं ही है जो धृतराष्ट्र जीते ही अपने परिवार के सर्वनाश का वर्णन संजय के मुख से स्वयं ही सुनता है।

संजय उवाच = संजय कहने लगा।

धृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा। आचार्य मुपसंगम्य राजा वचनम ब्रवीत ।।2।।

अर्थः- हे राजन् पाण्डवों की व्यूह रचना से युक्त सेना देख कर राजा दुर्योधन द्रोणाचार्य के पास जा कर कहले लगा।।

पश्यैतां पाण्डु पुत्राणामाचार्य महतीं चमूम्। व्यूढां द्रुपद पुत्रेण तव शिष्येण धीमता ।।3।।

अर्थः- हे आचार्य आप के चतुर शिष्य द्रुपद पुत्र ने जिस सेना की व्यूह रचना की है वह पाण्डवों की वड़ी भारी सेना देखिये।

व्याख्याः- पाण्डवों की सेना अपनी सेना से कम होने पर भी द्रुर्योधन को अधिक मालूम पड़ी जवकि कौरवों की सेना 11 अक्षौहिणी थी और पाण्डवों की सेना केवल सात ही अक्षौहिणी थी, एक अक्षौहिणी सेना में होते हैं 21 हजार 8 सौ 70 हाथी, 21 हजार 8 सौ रथ, 65 हजार, 610 घोड़े, एक लाख 93 हजार तीन सौ 50 पैदल।

क्या राजनीति के ऐसे पण्डित दुर्याधन को सेना का अनुमान लगाने में भूल हुई, ऐसे राजनीति के मर्मज्ञ पण्डित को धोखा लगना सम्भव है ही नहीं, परन्तु युद्ध आरम्भ होने से पूर्व दुर्योधन के मन में यह विचार आया था कि पाण्डव 13 वर्ष वनवास में जंगलों की खाक छानते रहे अतः इन 13 वर्षो में अपने मित्रों रिश्तेदारों परिचितों से विछड़ गये हैं इसलिये पाण्डवों का युद्ध में कौन साथ देगा, इसी लिये युद्ध के समय पाण्डवों की सेना कौरवों की सेना से कम होने पर भी दुर्योधन को पाण्डवों की सेना अपनी सेना से अधिक मालूम पड़ी। इतना ही नहीं वल्कि दुर्योधन पांडवों की सेना आशा से

अधिक देखकर अन्दर से भयभीत भी हो गया था, परन्तु राजनीति में निपुण होने से अपनी अर्न्तदशा को धीरज से दवा कर द्रोणाचार्य के पास झटपट चला गया ऐसे युद्ध के समय पर द्रोणाचार्य को भीष्म पितामह के पास जाना चाहिये था, जबकि युद्ध के सेनापति भीष्म पितामह थे परन्तु पाण्डवों की सेना देखकर ही दुर्योधन के मन में यह विचार आया, ऐसा न हो भीष्म पिता के सेनानायक वनाने से द्रोणाचार्य मन से मेरे पर नाराज हूँ, उस नाराजगी की भावना से ही द्रोणाचार्य को आदर देने के लिये द्रोणाचार्य को अपने पास न वुला कर स्वयं ही उन के पास गये और कहने लगे, हे आचार्य ! पाण्डवों की सेना इतनी होने पर भी, उस सेना की व्यूह रचना आप के शिष्य द्रुपुद पद (पुत्र दृष्ट द्युम्न) ने की है, आप का शिष्य होते हुये भी आप के साथ वह लड़ने आया है परन्तु डरने की कोई वात नहीं, एक शिष्य का गुरु के पास क्या महत्व है आप के लिये उस को पराजित करना कोई वड़ी वात नहीं है इस श्लोक में दुर्योधन ने दृष्ट द्युम्न का नाम न लेकर द्रुपद पुत्र का नाम लिया है- यह नाम लेकर द्रोणाचार्य को याद दिलाया कि राजा द्रुपद के साथ आप की पुरानी शत्रुता है ही, जैसा कि महाभारत में दर्ज है:- उस शत्रुता का वदला लेने का भी यही समय है इस वात का भी इशारा दिया। दुर्योधन द्रोणाचार्य से कहता है इन पाण्डवों से केवल दृष्टद्युम्न ही वीर नहीं है और कौन-कौन वीर है उन का वर्णन

(अगले वर्ष के पंचांग में)

स्वामी परमानन्द

(जमींदारी की लीला वेदान्त के ढांचे में)

पिछले दो वर्षों से मैं स्वामी परमानन्द की लीला का हिन्दी रूपान्तरण दे रहा हूँ जिस की व्याख्या पं॰ प्रेम नाथ शस्त्री ने काश्मीरी भाषा में कैसट के माध्यम से की है जो कि वाजार में उपलब्ध है इस वर्ष भी दो श्लोकों का रूपान्तरण कर रहा हूँ।

सोन्थ छुय द्रह तारह म्वत यावुन, लजि पजि साथा रावरावुन।

वव ब्योल मव प्रार, कर मंगल, सन्तोष ब्यालि बवि आनन्द फल।।

अर्थः- हे किसान ! हर समय बीज वोया नहीं जाता है, यद्यपि वसन्त चैत्र और वैशाख दो महीने हैं जिन पर बीज वोया जाता है, उन दिनों में चुस्ती से रहना किसी प्रकार की ढील नहीं करना, यदि समय पर बीज नहीं बोओगे तो शास्त्र कहता है **"कालेऽ क्रियमानस्य कालः पिबति तत्फलम्"** अर्थात् जो कार्य समय पर नहीं किया जाता है तो समय उस काम के फल को नष्ट करता है। हे किसान ! जव आप समय पर बीज बोओगे तो सन्तोषजनक धान्य उत्पन्न होगा जिस से आप आनन्द के फल का अनुभव करोगे। वेदान्त के ढांचे में यही पदः-

हे मनुष्य ! मनुष्य के लिये भगवत् नाम रूप बीज बोने का समय कब होता है, जिस से आप को ईश्वर अनुग्रह अथवा पूर्व जन्म के संस्कारों से भगवत् नाम लेने का दृढ़ संकल्प ध्रुव तथा प्रह्लाद की भांति हो, वही आप के भगवत् नाम रूपी वीज वोने का समय है भगवान् कृष्ण भी भगवत् गीता में इस बात की पुष्टि करते हुये कहता है **"अन्त काले च मामेव स्मरन् मुक्त्वा कलेवरम्"**।

अर्थातः- अन्तकाल में जो मेरा स्माण करेगा वह परम गति को प्राप्त करता है परन्तु किसी को भी अन्तकाल की पहचान नहीं है, अन्तकाल के पश्चात् ही मनुष्य को नया जीवन मिलता है, नया वसन्त आरम्भ होता है अर्थात् मनुष्य को भगवत् नाम स्मरण के लिये हर समय वसन्त ही वसन्त है, भगवत् नाम स्मरण करने से आप को निश्चय से सन्तोष रूपी आनन्द का अनुभव होगा।

त्रपुरिथ फुरनायि नोम वुधुर, स्वर के चकू सूतिन सुय भर। ९

इन्द्रिय गगरन करु वठल, सन्तोष ब्यालि बुवि आनन्द फल।।

अर्थः- हे किसान ! अपने खेत के गडों को तू मिट्टी से भर ले और अपने खेत को हमवार कर, यदि आप के खेत में चूहों ने विल वनाये होंगे तथा उन में चूहे हों वह आप के धान्य हो नष्ट करेंगे आप उन विलों में पानी भर दे अथवा दुआं जला ताकि आप का खेत वच जाये और आप को सन्तोषजनक फल मिले जिससे आप आनन्द रूपी फल का अनुभव करोगे।

यही पद वेदान्त के ढांचो में:-

स्वामी परमानन्द कहते हैं हे साधक ! आप का मन एक प्रकार का सर है जिस को एक कम 84 लाख हयवानियत के जन्मों के संस्कार लगे होंगे, इसी कारण मनुष्य को मन रूपी सर में हयवानियत के संस्कार विना किसी प्रयत्न के उठते है इस पद में परमानन्द ने इन्द्रियों को चूहे की उपमा दी है, चूहा तमोगुण का प्रतीक माना जाता है, जो लक्षण तमोगुण के हैं वही गुण चूहे में भी पाये जाते हैं, अकारण वैरी हर समय विना मतलव के नुकसान पहुँचाने वाला, हर समय परेशान, चंचल तथा भयभीत, मूर्तिमान तमोगुण, परन्तु ऐसा होने पर भी मूर्तिपूजक इस प्रकार के दुष्ट चूहें को आदिदेव गणेश का वाहन मानत हैं यह कैसे हो सकता है सुनियेः-

वही मनुष्य भगवान् गणेश की पूजा कर सकता है जिस ने तमोगुण रूपी चूहे को अपने पैरों तले दबाया होगा, स्वामी परमानन्द कहते हैं, हे मनुष्य ! आप का मन एक प्रकार का सर है इस मन रूपी सर को एक कम 84 लाख हयवानियत जन्मों के संस्कार लगे हैं इस कारण संकल्प विकल्प रूपी विचारों को नष्ट करने के लिये हर समय मन्त्र राज "ॐ" अनाहत शब्द का उच्चारण कर, जिस से मन रूपी सर निर्मल होगा, जिस साधक ने इन्द्रिय रूपी चूहों को पैरों तले रोन्दा होगा वही साधक लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है वही सन्तोष रूपी आनन्द फल प्राप्त कर सकता है।

(शेष अगले वर्ष के पंचांग में)

लल्ल-वाख (लल्ल-वाक्य)

गत दो वर्षों से मैं लल्ल वाक्यों का हिन्दी रूपान्तरण करता आया हूँ, जिन की व्याख्या पं॰ प्रेम नाथ शास्त्री ने काश्मीरी भाषा में की है जो विजयेश्वर कैसटों के माध्यम से बाजार में उपलब्ध है इस वर्ष भी दो वाखों का हिन्दी रूपान्तरण कर रहा हूँ।

चूहनाह बूहना ध्येय ना ध्यान, गव-मानय सख, क्रिय मशिथ।

अन्यो ड्यूंठुक क्यंह ना अन्वय, गय सथ लय पर पशिथ।।

संस्कृत रूपांतरः-

त्वं नासि नाहं न च तत्र ध्येयं, ध्यांन न तत्रास्ति च सर्वकारकः।।

पश्यन्ति नोतत्र च नेत्र हीना, शिवं विपश्यन्ति गुणाभिरामाः।।

अर्थः- परमस्थान को पहुँच कर साधक को मैं और आप नहीं रहता है, वहां न ध्याता, न ध्यान, न ध्येय रहता है वह सर्व शाक्तिमान शिव भी लय हो जाता है, परनतु अन्धा उस परं शिव को कैसे देख सकता है, सन्त लोग ही उन को प्रत्यक्ष देख सकते हैं।

व्याख्याः- मुण्डकोपनिषद्ध में लिखा हैः-

समाने वृक्षे पुरुषो निमग्नो, अनीशया शोचति मह्यमानः।

जुष्टं यदा पश्यत्यन्यमीशम्, अस्य महिमानमिति वीत शोकः।।

भवार्थः- एक वृक्ष पर हृदय रूपी गोंसले में दो पक्षी जीवात्मा तथा परमात्मा नाम वाले अथवा तत् या त्वं इकट्ठे रहते

हैं जव तू और मैं, तत् या त्वं, जीवात्मा तथा परमात्मा एक होंगे, जव ही भेदभाव समाप्त होगा तभी वह वन्धन से मुक्त हुआ साधक परमशिव को प्रत्यक्ष रूप में देख सकता है अन्धा उस परम शिव को कैसे देख सकता है योगी अथवा सन्त लोग ही उस को देख सकते हैं।

लल्लीश्वरी के इस वाक्य को "कि सत्जन ही उस को देख सकता है" को यह मन्त्र पुष्टि करता है।

"तत्-विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीय चक्षुराततम्" ज्ञानी लोग अथवा योगी लोग उस परम शिव को उसी प्रकार प्रत्यक्ष रूप में देख सकते हैं जिस प्रकार आम लोग सूर्य भगवान् को प्रत्यक्ष रूप में देखते हैं।

दीहिचि लरि दारि वर त्रिपुरिम, प्राण चूर रुटूम तू द्युतमस दम।

हृदयिचि कूठरि अन्दर ग्वंडुम, ओमकि चावुक तुलमस बम।।

संस्कृत रूपांतर-

सम्यक निरुद्धा निजकाय मार्गा, मया गृहीतो हृदि प्राण चौरः।

नादं चकाराति-महुः प्रताडितः, ॐकार कायात् नुकशंभिर्घातात्।।

अर्थः- लल्लेश्वरी कहती हैः- देह रूपी मकान की खिड़कियों; दरवाजों को वन्द करके प्राणरूपी चोर को हृदयरूपी कमरे में वन्द किया अर्थात् इस को अपने नियन्त्रण में किया। इस वाक्य में इस वात का संकेत है कि प्राणायाम भी परमशिव के साथ मिलाने की एक साधना है परन्तु प्राणायाम रूपी साधना में मन्त्र रूपी चावुक की आवश्यकता पड़ती है जो प्राणरूपी चोरों को वश करने में सहायक वनता हैं, लल्लेश्वरी कहती है "ॐ" जो मन्त्रो का राजा है का प्रयोग मैंने इस प्राणायाम में किया।

व्याख्याः ऊपर लिखित वाक्य प्राणायाम से सम्वन्धित है इस कारण पहले उसी को लेंगे कि प्राण क्या है? कुछ लोग प्राणों को आंत्म तत्व कुछ जड तत्व मानते हैं प्रायः सभी इस चीज से सहमत हैं कि **'श्वास'** को प्राण कहते हैं, शरीर में मुख्य पांच प्राण हैं:- प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान।

प्राण वायु, पाचन शक्ति, रक्त, वसा अथवा मलमूत्र वनाने में सहायता करता है अपान वायु शरीर से मलमूत्रादि त्यागने में सहायता करता है। समान वायु सभी नाड़ियों में रस इत्यादि पहुँचाने में सहायता करता हैं।

व्यान वायुः- गुह्यस्थान से ही सभी नाडियों में खून को गतिशील रखने में सहायता करता है।

उदान वायुः- यह गले से व्रह्मरन्ध्र तक काम करता है, मरते समय यही उदान वायु सूक्ष्म शरीर को स्थूल शरीर से अलग करता है। जो सूक्ष्म शरीर अपने अच्छे वुरे संस्कारों समेत नया जन्म लेता है प्राणों के नियन्त्रण से स्वयमेव शरीर इन्द्रिय तथा मन पर नियन्त्रण होता है।

मनुष्य शरीर में असंख्य नाड़ियाँ हैं उन में **'सुष्मणा, इड्डा, पिंगला प्रधान नाडियाँ हैं'** इन तीन में से सुष्मना नाडी सर्वश्रेष्ठ है जो मूलाधार (गुह्यस्थान के मूल) से आरम्भ होकर व्रह्मरन्ध्र तक होती है। इस सुष्मणा नाड़ी के वाईं ओर इड्डा नाड़ी तथा दाईं ओर पिंगला नाडी, भौहूं के मध्य में यह तीनों नाड़ियाँ मिलती हैं जिस को त्रिवेणी कहते हैं।

कलिसन्तरणोपनिषद्

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।

ज्योतिषी आप्ताभ शर्मा
का
36वां निर्वाण दिवस

25 अक्टूबर, 2002 तदनुसार

कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्थी शुक्रवार को

विजयेश्वर पञ्चाङ्ग कार्यालय

अजीत कॉलोनी, गोलगुजराल, जम्मू
में मनाया जायेगा।

कार्यक्रम

यज्ञारम्भ	24 अक्टूबर	9 बजे रात
पूर्णाहुति	25 अक्टूबर	1 बजे दिन
प्रसाद भोजन रूप में		1.30 बजे दिन

गुरुकीर्तन 3 बजे दिन

पं॰ प्रेम नाथ शास्त्री का
तीसरा निर्वाण दिवस

24 अगस्त, 2002 तदनुसार
भाद्र कृष्ण पक्ष द्वितीया को उनके
निवासस्थान अजीत कॉलोनी गोल गुजराल
में मनाया जायेगा समय पर आकर
प्रीतिभोज में भाग लें।

कार्यक्रम

यज्ञारम्भ	23 अगस्त	9 बजे रात
पूणाहुति	24 अगस्त	1 बजे दिन
प्रसाद	भोजन रूप में	1.30 बजे दिन

पं॰ प्रेम नाथ शास्त्री की
82वीं जयन्ती

29 सितम्बर, 2002 को मनाई जाएगी
प्रोग्राम के विषय में जनता को समय पर
समाचार पत्र द्वारा सूचित किया जायेगा।

ओंकार नाथ शास्त्री

पितृ पक्ष में श्राद्ध कब
2059 के लिये

प्रतिपदा का	22 सितम्बर
द्वितीया का	23 सितम्बर
तृतीया का	24 सितम्बर
चतुर्थी का	25 सितम्बर
पंचमी का	26 सितम्बर
षष्ठी का	27 सितम्बर
सप्तमी का	28 सितम्बर
अष्टमी का	29 सितम्बर
नवमी का	30 सितम्बर
दशमी का	1 अक्टूबर
एकादशी का	2 अक्टूबर
द्वादशी का	3 अक्टूबर
त्रयोदशी का	4 अक्टूबर
चतुर्दशी का	5 अक्टूबर
अमावसी का	6 अक्टूबर
पूर्णिमा का	6 अक्टूबर

यज्ञोपवीत कब ?

काश्मीरी पण्डित यज्ञोपवती को विशेष महत्वपूर्ण स्थान देते आये हैं जबकि काश्मीरी पण्डितों का गायत्रीमन्त्र सामूहिक गुरुमन्त्र है, यह संस्कार काश्मीरी पण्डितों की संस्कृति का अंग बन चुका है। धर्म शास्त्र की आज्ञा है यह संस्कार ब्राह्मण को 7वें वर्ष से 16 वर्ष तक करना चाहिये, प्राचीनकाल में यह संस्कार गुरुकुल में किया जाता था फिर तब से ब्रह्मचारी गुरुकुल में ही ठहरता था-चूँकि विद्यार्थी को गुरुकुल में वेदों का पठनपाठन तथा ब्रह्मचर्य का पालन 25 वर्ष तक करना पड़ता था इसलिये उन विद्यार्थियों को ब्रह्मचारी कहते थे, जब ब्रह्मचारी गुरुकुल से विद्या सम्पूर्ण करके घर वापस आता था उसको समावर्तन कहते थे-गर्भ से लेकर यज्ञोपवीत तक के 8 संस्कार बालक को घर में ही किये जाते थे-यज्ञोपवीत से लेकर 16 संस्कार काश्मीरी पण्डित ब्रह्मचारी को गुरुकुल में ही करते थे जो सभी संस्कार वेदों के पठन-पाठन से सम्बन्धित होते थे-"वेद" कहते हैं ज्ञान को, वह इँजीनरी हो या साईंस अथवा डाक्टरी आदि।

समय बदलता है तो समय के साथ मनुष्य को भी बदलने पर विवश होना पड़ता है-अब हम यज्ञोपवीत संस्कार गुरुकुल के बदले घर में ही करते हैं, केवल यज्ञोपवीत ही नहीं बल्कि गर्भ से लेकर समावर्तन तक के सभी 24 संस्कार एक ही दिन में यज्ञोपवीत के दिन ही करते हैं, मानिये अब यह संस्कार हम केवल अपनी प्राचीन संस्कृति को स्मारक रूप में जीवित रखने के लिये ही करते हैं।

आज के युग में गुरुकुलों का स्थान लिया है कालिजों और यूनिवर्सिटियों ने, वर्तमानकाल में जब तक एक विद्यार्थी वेदाभ्यास यानी ईन्जीनरी डाक्टरी साईंस आदि कोई ट्रेनिंग कर रहा है वह विद्यार्थि तब तक ब्रह्मचारी ही कहलायेगा यदि दैवयोग से किसी कारण वश इस अवस्था तक विद्यार्थी का यज्ञोपवीत न किया हो अवश्य कीजिये।

यज्ञोपवीत को ब्रह्मसूत्र भी कहते हैं

क्यों ?

ब्राह्मण को कपास के सूत्र का यज्ञोपवीत होना चाहिये, जब ब्रह्मचारी गुरुकुल में होता था तो वह खुद अपने हाथ से कपास का सूत्र कातता था, सूत्र कातते समय वह ब्रह्मचारी लगातार "ॐ" शब्द का उच्चारण करता था, "ॐ" चूँकि ब्रह्म का नाम है, इसलिये यज्ञोपवीत को ब्रह्मसूत्र भी कहते हैं।

हमारे समाज में एक नया बुरा रस्म चालू हुआ है, जब यज्ञोपवीत संस्कार पर कोई रिश्तेदार ब्रह्मचारी को सोने का यज्ञोपवीत पहनाते हैं-वह ब्रह्मसूत्र नहीं पहनाया जाता है बल्कि धनाभिमान सूत्र पहनाया जाता है। उर्दू में धन को कहते हैं "दोलत" दो + लत से मतलब है जो धन दो लातें मारता है जब धन आता है तो आगे से लात मारकर अभिमान का सिर खड़ा करता है परन्तु धन कहीं ठहरता नहीं जब धन जाता है तो कमर पर लात मारकर उस धनाढ़्य को ज़मीन पर सुला कर भाग जाता है। इसी कारण मैंने सोने के उस सूत्र का नाम धनाभिमान सूत्र लिखा है।

यदि मेरे पास धन है मैं सोने का यज्ञोपवीत या नारीवन ऐसे संस्कार पर दिखावे के लिये अर्पण करूँ तो जो निर्धन है वह भी देखा देखी में करना चाहता है परन्तु वह ऐसा कर नहीं सकता है बल्कि उसकी संर्द आहें उस ब्रह्मचारी के लिये शाप बनती हैं।

ब्राह्मण या पिता जब ब्रह्मचारी को यज्ञोपवीत डालता है तो पढ़ता है-बलं-अस्तु-तेजः। जिस का अर्थ है हे ब्रह्मचारी इस यज्ञोपवीत से तुम्हारा शरीर नीरोग हो परमात्मा तुम्हें तेज सत्बुद्धि दे-परन्तु निश्चय जानिये सोने का यज्ञोपवीत उस ब्रह्मचारी के लिये शाप बनेगा-

हे काश्मीरी पण्डित! हर बात में **"लोक संग्रह"** का ख्याल रखे।

गायत्री मन्त्र का महत्व

गायत्री की महिमा सभी वेदों तथा पुराणशास्त्रों में सविस्तार दर्ज है- अथर्व-वेद में स्वयं वेदभगवान् का कहना है-"**स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्, आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्**" **अर्थ:**-मेरे द्वारा स्तुति की गई द्विजों को पवित्र करने वाली वेदमाता गायत्री आयु प्राण सन्तति पशु कीर्ति धन बह्मतेज देने वाली है।

"गायत्री मन्त्र"

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्-सवितुर् वरेण्यं, भर्गो-देवस्य धीमहि, धियो यो-नः प्रचोदयात्

अर्थ:- में उस शक्ति का चिन्तन करता हूँ जो शक्ति ॐ ब्रह्मरूप हैं, **भूर्भुवः स्वः** जो शक्ति तीनों लोकों में व्याप्त है, **तत्**-जिस को वेदों ने तत् नाम से पुकारा है **सविता**-जो शक्ति इस सृष्टि को बनाती है, पालन करती है, नाश करती है, "**वरेण्यम्**" जो वरण करने के योग्य है, **भर्गः**- जो तेजो रूप है, **देवः** जो द्योतनशील है, अथवा ऐश्वर्यवाली है, ऐसी उस महान् शक्ति का **धीमहि**- चिन्तन करता हूँ, वह शक्ति '**धियः**' मेरी बुद्धि को, **प्रचोदयात्**- सत् कर्मो में प्रेरित करे।

मैं उस शक्ति का चिन्तन करता हूँ, जो ब्रह्मरूप हैं, जो शक्ति तीनों लोकों में व्याप्त है, जिस को वेद "तत्" नाम से पुकारते हैं, जो शक्ति इस सृष्टि को बनाती, पालन तथा संहार करती है, जो वरण करने (अपनाने) के योग्य है, जो तेजोरूप है, जो ऐश्वर्य देने वाली है ऐसी ही उस महान् शक्ति का मैं चिन्तन करता हूँ, वह शक्ति मेरी बुद्धि को सत्कर्मों में लगाये।

गायत्री मन्त्र का महत्व क्यों ?

शब्दनित्य है **(शब्द ब्रह्म)** वर्तमान विज्ञान भी यही मानता है, आज जो बातें हम करते हैं, अथवा हमारे मन की लहरें आकाश में अथवा सृष्टि के अन्तराल में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहती है, सृष्टि के आरम्भ से ही ऋषि मुनि साधक गायत्री मन्त्र के अनुष्ठान करते आये हैं, उन ऋषियों मुनियों साधकों की साधनायें भावनायें तपश्चर्यायें इस छोटे से गायत्री मन्त्र के पीछे तेजोपुंज के रूप में एकत्रित है, जो व्यक्ति इस गायत्री मन्त्र का उच्चारण अथवा जप करता है उस साधक की सफलता में वह तेजोपुंज अवश्य सहायक बनता है, साधक ज्यों ही इस मन्त्रराज का जप अथवा उच्चारण करने लगता है तो उसी क्षण में इस मंत्र के प्रभाव का अनुभव करने लगता है, यही है इस गायत्री मन्त्र के महत्व का रहस्य।

गायत्री जपविधिः-

शुद्ध आसन पर पद्मासन पर पूर्व की ओर मुख कर के पानी का एक लौटा और एक थाली तर्पण

के लिये रख कर नमस्कार करते हुये पढ़े (यदि नदी के तट पर करना हो तो थाली की आवश्यकता नहीं):-

प्रणवस्य ऋषि र्ब्रह्मा गायत्रं छन्द एवच, देवोग्नि-र्व्याहृतिषु च विनियोगः प्रकीर्तितः, प्रजापते-र्व्याहृतयः पूर्वस्य परमेष्ठिनः। व्यस्ताश्चैव समस्ताश्च ब्राह्मम्-अक्षरम्-ओम्-इति। व्याहृतीनां समस्तानां दैवतं तु प्रजापतिः, व्यस्तानाम्-अयम्-अग्निश्च वायुः सूर्यश्च-देवताः। छन्दश्च व्यहृतीनाम्-एकाक्षराणम्-उक्ताख्यम्-द्वयक्षराणाम्-अत्युक्-ताख्यम्। विश्वामित्र-ऋषि-श्छन्दो, गायत्रं सविता तथा, देवतो-पनये जप्ये गायत्र्या योग उच्यते आवाहयामि गायत्रीं, सर्व-पाप-प्रणाशि-नीम्। न गायत्र्याः परं जप्यं, नव्याहृति-समं हुतम्, आगच्छ वरदे देवि, जप्ये मे सन्निधौ भव। गायन्तं त्रायसे यस्मात्-गायत्री त्वं ततः स्मृता, अग्नि-र्वायुश्च सूर्यश्च, बृहस्पत्याप-एव-च, इन्द्रश्च-विश्वे-देवाश्च देवताः सम्-उदाहृताः। एवंम्-आर्ष-छन्दो दैवतं विनियोगं चानुस्मृत्य। गायत्र्या शिखाम्-अबद्ध्य गायत्र्यैव समन्ततः, आत्मन-श्चापः परिक्षिप्य, प्राणायामं कुर्यात्, ओजोसीति गायत्रीम्-आवह्य देवानाम्-आर्षम् (अपने आप को छिडकें अंजलि धारण करते हुये पढ़े:-**ओजोसि सहोसि बलम्-असि भ्राजोसि देवानां धाम नामासि, विश्वम्-असि-विश्वायुः, सर्वम्-असि-सर्वायुः, अभि-भूः-** **अंगन्यास-कीजिये**-दोनों हाथों की ऊँगलियों से स्पर्श करते हुये पढ़ें: "**अ**" **नाभौ** (नाभिको) "**उ**" **हृदि** (हृदय को) "**म**" **शिरसि** (सिरको)।। **ॐ"भूः"-अंगुष्ठाभ्यां नमः** (दोनों अंगूठों को) "**भुवः तर्जनीभ्यां नमः** (अंगूठे के साथ वाली ऊँगलियों को), "**स्वः**" **मध्यमाभ्यां नमः** (बीचवाली ऊँगलियों को) "**महः**" **अनामिकाभ्यां नमः**, (सब से छोटी अंगुली की साथ वाली ऊँगलियों को "**जनः**" **कनिष्ठकाभ्यां नमः**

(छोटी ऊँगलियों को "तपः सत्यं " करतल पृष्ठाभ्यां नमः (दोनो हाथ के तलवों को आपस में स्पर्श करें। "भू." पादयोः (पावों को) "भुवः" जान्वोः (गुठनों को) "स्वः" गुह्ये (गुह्यस्थान को) "महःनाभौ (नाभि को) "जनः" हृदि (हृदय को) "तपः" कण्ठे (गले को) "सत्यं" शिरसि (सिर को), ॐ "भूः" हृदयाय नमः "भुवः" शिरसि स्वाहा, "स्वः" शिखायै वौषट् (चोटी को) महःकवचाय हुँ, (वस्त्रों को) जनः नेत्राभ्यां वौषट् (नेत्रों को) "तपः सत्यम्-अस्त्राय फट्" चुटकी मारे।। "तत्-सवितुर्" अंगुष्ठाभ्यां नमः, "वरेण्यं" तर्जनीभ्यां नमः, "भर्गो-देवस्य मध्यमाभ्यां नमः, "धीमहि" अनामिकाभ्यां नमः, "धियो योनः" कनिष्ठकाभ्यां नमः, "प्रचोदयात्" करतल करपृष्ठाभ्यां नमः तत् "पादयोः सवितुर्" जान्वोः (गुठनों को) "वरेण्यं" कट्यां कमर को, भर्गो नाभौ "देवस्य" हृदये "धीमहि" कण्ठे "धियोः,'नासिकायां "यो" चक्षुषोः (नेत्रों को) "नः ललाटे (माथे को) "प्रचोदयात्" शिरसि,।। "तत् सवितुर्" हृदयाय नमः "वरेण्यं " शिर-से स्वाहा, "भर्गो देवः" शिखायै वौषट् 'धीमहि' कवचाय हुँ (वस्त्रों को "धियो योनः "नेत्राभ्यां वौषट् 'प्रचोदयात् अस्त्रायाय फट् (चुटकी मारिये) "आपः" स्तनयोः (स्तनों को) "ज्योतिः" नेत्रयोः, "रसो" मुखे "अमृतं" ललाटे "ब्रह्म-भूभुर्वः स्वरों" (शिसि) प्राणायाम करके तर्पण कीजियेः-

ॐ अस्य गायत्री शापविमोचन-मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषि गायत्री च्छन्दः वरुणो देवता ब्रह्मशाप-विमोचने विनियोगः। (तर्पण करते रहिये)

शापविमोचन

ओ३म्-यत्-ब्रह्मेति ब्रह्मविदो विदुः-त्वां पश्यन्ति धीराः।
सुमनसो-वा गायत्री त्वं ब्रह्मशापात्-विमुक्ता भव ।। 1 ।।
ओ३म्-अर्क-ज्योतिर् अहं ब्रह्मा ब्रह्म ज्योतिर्-अहं शिवः
शिव-ज्योतिर्-अहं विष्णुः शिव-ज्योतिः शिवः परम्।। 2 ।।
गायत्री त्वं वशिष्ठ शापात्-विमुक्ता भव।
ॐ अहो देवि महादेवि दिव्ये सन्ध्ये सरस्वति।
अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोनि नमोस्तुते।
गायत्रि त्वं विश्वामित्र-शपात्-विमुक्ता भव।। 3 ।।

गायत्री का ध्यान करते हुये पढ़ेः-

मुक्ता-विद्रुम-हेम-नील-धवल, छायै-र्मुखैः-त्रीक्षणैः

युक्ताम्-इन्दु-निबद्ध-रत्न-मुकटां, तत्त्वात्म-वर्णात्मिकाम्
गायत्रीं वरदा-भया-ड्.कुश-करां शूलं कपालं गुणं
शंखं चक्रम्-अथार-बिन्दु-युगलं हस्तै-र्वहन्तीं भजे।। 1 ।।
आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।
गायत्रि छन्दसां-मात-र्ब्रह्म-योने नमोस्तुते।। 2।।

यह मन्त्र तीन बार पढ़ कर-गायत्री मन्त्र का जप करें

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्-वेरण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ

यदि माला से जप करना है तो जप समाप्त करके माला सिर पर रख कर प्राणायाम करके तर्पण करते हुये पढ़ेः- **देवा-गातु-श्रोत्रियाः देवा गातुविदो, गातुं वित्वा-गातु-मित मनसस्-पत-इमं देवयज्ञं स्वाहा, वाचे स्वाहा वातेधाः** नमो धर्मनिधानाय नमः सुकृत-साक्षिणे। नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः

जप करने का स्थानः- घर के उस कमरे में जप करें जहां आप की एकाग्रता में किसी प्रकार का विघ्न न पड़े, नदी के तट पर जप करना अधिक लाभदायक रहता है। जप की विधि आसन प्राणायाम आदि की जानकारी इसी जन्त्री के जपप्रकरण में देखिये।

क्या महिलाओं को गायत्री साधना जप अनुष्ठान आदि करने का अधिकार है ?

वेदों शास्त्रों पुराणों के स्वाध्याय से यह स्पष्ट होता है कि पुरुष हो या स्त्री दोनों गायत्री उपासना के अधिकारी हैं, प्राचीनकाल में गार्गी, मैत्रेयी देवयानी, लोपामुद्रा आदि महिलाओं ने गायत्री शक्ति की उपासना से ही आत्मा को समुन्नत बनाया था सावित्री ने एक वर्ष तक गायत्री की साधना की थी जिस साधना से ही वह अपने पति को यमराज से लौटा सकी। स्त्री और पुरुष दोनों ही गायत्री माता की सन्तान है, स्त्री सधवा हो या विधवा अपने जीवन को सफल बनाने के लिये गायत्री मन्त्र का जप किया करें।

धर्मशास्त्र

धार्मिक रीति रिवाज भी संस्कृति के ही अंग माने जाते हैं, परंतु जब वे रीति रिवाज धर्मशास्त्र के आधार पर हूँ, कहीं कहीं धर्मशास्त्रों में मतभेद पाया जाता है, ऐसी दशा में देशाचार की भी प्रामाण्यता होती है- इन बातों को ध्यान में रखकर ही धर्मशास्त्र की चन्दबाते समय समय पर काम आने वाली निम्नलिखित हैं।

सगोत्रः- जिन का आपस में एक ही गोत्र हो सगोत्री कहलाते हैं- सगोत्रियों का आपस में विवाह

करना निषेध हैं, मातृपक्ष से पांच पीढी तक पितृपक्ष से सात पीढी तक विवाह नहीं कर सकते हैं।

दत्तकः- (मंगत लाना) अपने खानदान से दत्तक लाना धर्मशास्त्र के अनुसार उत्तम माना जाता है, दूसरे वंश का भी दत्तक लाया जा सकता है, साला (पत्नी का भाई) दत्तक लाना धर्मशास्त्र से निषेध है।

मुण्डनः- माता अथवा पिता के मरने पर मुण्डन करना पुत्र के लिये आवश्यक है, यदि बड़ा लड़का घर में न हो अथवा किसी कारण से क्रिया कर्म दाह संस्कार आदि न कर सके तो कोई भी पुत्र कर सकता है।

क्रिया कर्म का अधिकारी पुत्र, दाह संस्कार पर घर में न होने पर बारवें दिन तक जिस दिन भी घर पहुँचे उस दिन से ही व्रतधारी रह कर क्रिया कर्म कर सकता है, परन्तु क्रिया कर्म आरम्भ करने से पहले मुण्डन करना आवश्यक है।

अशौचः- दो प्रकार का होता है, जन्म का अशौच जिसे सूतक कहते हैं और दूसरा मरने का अशौच, जिस को मृतक कहते हैं, ब्राह्मणों को दस दिन, क्षत्रियों को 12 दिन और शूद्र को 30 दिन का अशौच होता है, बिना विवाह के कन्या का, पिता के घर में मृत्यु हो तो तीन दिन का अशौच होता है, विवाहित लड़की को 10 दिन के अन्दर जिस दिन भी माता पिता के मृत्यु का सन्देह मिले तो उस दिन से लड़की को तीन दिन का अशौच होता है।

दो अशौचः- एक साथ दो अशौच होने पर पहले अशौच के समाप्त होने पर ही दूसरे अशौच की

भी शुद्धि होती है, उदाहरण के रूप में, किसी के पिता की मृत्यु होती है उस के दसवें दिन से पहले किसी दिन (पैतृव्य) चाचा की मृत्यु हो ऐसी दशा में जिस दिन पहला अशौच समाप्त होता उसी दिन दूसरा अशौच भी समाप्त होता है, यदि जन्म के अशौच पर मरने का अशौच पड़े तो मरने का अशौच समाप्त होने पर यदि दसवें दिन मरने के अशौच पर फिर से मरने का अशौच पड़े तो ही शुद्धि होती है, यदि दसवें दिन मरने के अशौच पर फिर से मरने का अशौच पड़े तो मरने का अशौच समाप्त होने पर ही शुद्धि होती है, ऐसी स्थिति में दूसरा अशौच समाप्त होने पर दो दिन के लिये अधिक अशौच रहता है, यदि 11 वें दिन मरने के अशौच पर फिर से मरने का अशौच पड़े तो अशौच समाप्त होने के बाद अधिक तीन दिन तक अशौच रहता है। सूतक का अशौच हो या मृतक का अशौच 11वां दिन करना आवश्यक है, 12वां दिन अशौच समाप्त होने के पश्चात् भी किया जाता है, षड्मासिक पर भी किया जा सकता है।

छलुनः- दसवें दिन तक छलुन आवश्यक है, यदि लड़की दसवें दिन तक छलुन का कार्य न करे तो उस को ग्यारवें बारवें दिन के क्रियाकर्म में सम्मिलित होने का अधिकार नहीं है, छलुन के लिये शुभवार होनी चाहिये, यह बात याद रखें हिन्दू संस्कृति के अनुसार सूर्योदय से सूर्योदय तक वार होती है 12 बजे रात से वार बदलती है ऐसा न मानिये, जिस समय छलुन करना हो उस समय शुभवार होनी चाहिये, शुभवार है सोमवार, बुधवार, शुक्रवार, परन्तु बृहस्पतिवार शुभवार होने पर भी छलुन के लिये निषेध है, पंचक भी छलुन के लिये निषेध है।

अस्थि संचय:- फूल प्रवाहित करना, मृत्यु के पश्चात् दस दिन के अन्दर ही गंगा में प्रवाहित करें यदि ऐसा न हो सके तो एक वर्ष के अन्दर किसी भी दिन प्रवाहित करें।

यदि बच्चा मरा हुआ उत्पन्न हो अथवा उत्पन्न होते ही मरे उस बच्चे को लट्ठे में लपेट कर पृथ्वी को अर्पण करें, घर से गोद में उठाकर गड्ढा खोदने तथा पृथ्वी में अर्पण करने के समय तक लगातार **"ॐ नमः शिवाय"** मन्त्र का बार-बार उच्चारण करें, दाँत निकलने तक जिस बच्चे का मृत्यु हो जाये उसका दाह संस्कार न करें अपितु उस को भी पृथ्वी अर्पण करें, दान्त निकलने के पश्चात् जो बच्चा मरे उस का दाह संस्कार करें, यज्ञोपवीत संस्कार के बिना कोई भी लड़का किसी भी आयु का हो उस की मृत्यु होने पर दाह संस्कार के पश्चात् दसवाँ दिन अवश्य करें, 11वां और बारवां दिन न करें, उस बालक के निमित आने वाले किसी शुभ वार पर बालकों को भी पूरी भोजनादि से तृप्त करें, उस मृतक बालक को जिन वस्तुओं पाठ्य पुस्तकों की ओर प्रवृत्ति हो किसी निर्धन-विद्यार्थी को ऐसी वस्तुयें पुस्तकें वस्त्रादि दानरूप में दीजिये, या कोई आर्थिक सहायता कीजिये ताकि उसकी पढ़ाई आगे चल सके। **श्रद्धया-देयम्-अश्रद्धया-देयम्"** देना ही शान्ति का मार्ग है।

श्राद्ध:- श्राद्ध की जो तिथि हो, जन्त्री में उस मास की वह तिथि देखें, यदि उस तिथि के साथ "दिवा" "दि" का चिन्ह हो तो श्राद्ध एक दिन पहले होता है, यदि प्रविष्ठ "प्र" की निशानी हो तो श्राद्ध अपने ही दिन होगा, दिवा-प्रविष्ठ के आधार से जन्त्री में, श्राद्ध और मध्याह्न दर्ज है वहीं से देखिये। श्राद्ध के दिन अधिक भोजन न खायें, दिन को न सोयें, ब्रह्मचर्य का पालन करें, दूसरे घर में खाना न खाइये, शराब अथवा किसी मादक द्रव्य का प्रयोग न कीजिये।

मासिक श्राद्ध (मासवार) :- मासवार की जो तिथि हो उस तिथि का मध्याह्न देखना आवश्यक है मध्याह्न श्राद्ध किस दिन का कब होगा विजेयश्वर जन्थरी में दर्ज है यदि श्राद्ध करने में आप असमर्थ हैं तो विधि अनुसार संकल्प करें। (श्राद्ध संकल्प विधि जन्थरी में दर्ज है) तथा अपने गुरुदेव को भोजन दक्षिण आदि से तृप्त करें।

षठ् मासिक श्राद्ध :- (षडमोस) मृतक के श्राद्ध की जो तिथि हो, मध्याह्न के आधार से उस तिथि का श्राद्ध कब होगा उस दिन एक दिन पहले षठ्–मासिक–श्राद्ध (षडमोस) करें और निश्चित मध्याह्न के दिन मासवार करें। जब किसी के षडमोस (षठ्–मासिक–श्राद्ध) में किसी प्रकार का विघ्न पडे तो षडमोस वार्षिक श्राद्ध (वहरवर) तक किसी भी निश्चित मासवार तिथि पर किया जा सकता है।

वार्षिक श्राद्ध :- (वहरव्र) देखते समय इस बात का ख्याल रखें यदि आप हर श्राद्ध में मध्याह्न देखते हैं तो वार्षिक श्राद्ध की तिथि में भी मध्याह्न देखिये यदि आप मध्याह्न देखते नहीं हैं तो निश्चित श्राद्ध की तिथि को 'दिवा' 'प्रतिष्ठ' के आधार से देखिये, मध्यान्ह्न के आधार से अथवा दिवा प्रविष्ठ के आधार से जिस दिन निश्चित तिथि का श्राद्ध आयेगा उस दिन से एक दिन पहले मासवार होगी।

जब किसी के वार्षिक श्राद्ध (वहरवर) में किसी प्रकार का विघ्न आ पडे अर्थात् वह निश्चित तिथि पर वार्षिक श्राद्ध कर न सके तो वह वार्षिक श्राद्ध पितृपक्ष में निश्चित तिथि पर कर सकता है अथवा अगले वर्ष में जब वार्षिक श्राद्ध होगा तो उसी दिन वहरवर भी कर सकता है।

जब किसी अविवाहित लड़की की मृत्यु हो तो क्या करें?

अविवाहित लड़की के मृत्यु पर तीन दिन का आशौच होता है उस की आत्मा को शान्ति दिलाने के लिये इन तीन दिनों तक आपके घर में भगवत्–गीता अथवा राम गीता की गूंज रहनी चाहिये, तीसरे दिन इस के निमित गरीब बच्चों में पुस्तकें अथवा किसी अनाथालय में दान के रूप में कुछ दे सकते हैं, उस का दसवां इत्यादि नही होता है।

श्राद्ध करने न करने के सम्बन्ध में **:** विवाह यज्ञोपवीत आदि संस्कार के पश्चात् छः मास तक श्राद्ध न करें, परन्तु इस बात को भूलिये मत, वह धर्माशास्त्र की आज्ञा माता पिता के श्राद्ध पर लागू नहीं है, बल्कि माता पिता का श्राद्ध अवश्य करना चाहिये, यदि किसी पितर का श्राद्ध करना हो परन्तु तिथि मास का ज्ञान न हो तो ऐसी स्थिति में मार्गकृष्णपक्ष अमावसी के दिन श्राद्ध करें, यदि श्राद्ध करने में आप असमर्थ हैं तो विध्यनुसार संकल्प करें, किसी योग्य पात्र को भोजन दक्षिणा आदि से तृप्त करें और स्वयं व्रतधारी रहिये, एक समय शुद्ध भोजन खाइये, श्राद्ध के दिन मांस का प्रयोग न करें, भगवान् व्यास का कहना है ***''देवयज्ञे पितृश्राद्धे तथा मांगल्य कर्मणे, तस्यैव नरके वासो यो कुर्यात् जीवघातनम्''*** जो गृहस्थी पितृश्राद्ध विवाहादि मंगल कर्म में जन्मोत्सव आदि में मांस का प्रयोग करता है, वह नरक में जाता है।

ज्येष्ठ महीना **:–** यदि कन्या और वर दोनों ही ज्येष्ठ अर्थात् प्रथम गर्भ के हूँ तो उन का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिये परन्तु दोनों में से यदि केवल एक ही ज्येष्ठ हो तो ज्येष्ठ मास में विवाह कर सकते हैं, यदि ज्येष्ठ मास में विवाह करना जरूरी हो तो ज्येष्ठ महीना में जब तक सूर्य कृतिका

नक्षत्र में रहेगा कृतिका नक्षत्र में सूर्य कब तक रहेगा? (विजयेश्वर पंचांग में देखिये) तब तक विवाह करने में कोई दोष नहीं है। यज्ञोपवीत संस्कार के लिये ज्येष्ठ महीना तथा ज्येष्ठ लड़का होना निषेध नही है।

पंचक :- घनिष्ठा नक्षत्र के उत्तरार्ध से रेवती नक्षत्र के अन्त तक पांच नक्षत्र (घनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती) पंचक कहलाता है। पंचक में कौन–कौन काम करना निषेध है? दाह संस्कार, छलुन, दक्षिण की ओर जाना, मिट्टी, तेल, मिट्टी के बरतन, लकड़ी काटनी अथवा घर लानी, छत ल्यण्टर इत्यादि डालना तथा विवाह संस्कार में मस मुचरून निषेध है, शेष सभी कामों के लिये पंचक शुभ माना जाता है।

देव गौण :- देवगौण के लिये कोई मुहूर्त, वार, तिथि इत्यादि देखने की कोई जरूरत नहीं हैं, विवाह तथा यज्ञोपवीत का देवगौण सात दिन पहले भी हो सकता है। देवगौण करके विवाह अथवा यज्ञोपवीत संस्कार के दिन तक यदि जन्म का अशौच पडे तो अशौच का दोष नहीं होता है, यदि यज्ञोपवीत अथवा विवाह संस्कार का दिन निश्चित किया हो और जन्म अशौच पडे तो यज्ञोपवीत अथवा विवाह संस्कार का दिन बदल लेना चाहिये यदि ऐसा न हो सके तो संस्कार के समय "कूष्माण्ड" की ऋचाओं से अग्नि में घी की आहुतियां डालने से शुद्धि होती है परन्तु मृतक के अशौच पर धर्मशास्त्र की यह आज्ञा लागू नही है अर्थात् मृतक अशौच पडने पर यज्ञोपवीत तथा विवाह संस्कार न करें।

त्र्यहः :- जब किसी तिथि का क्षय होता है अर्थात् जब तिथि गुम होती है उस दिन हम जन्थरी में त्र्यहः लिखते हैं जैसे विक्रमी 2056 में चैत्र शुक्ल पक्ष षष्ठी भौमवार 23 मार्च को हम ने त्र्यहः

लिखा है उस दिन षष्ठी तिथि प्रातः 6 बजे 50 मिनट (षदि 6–50) तक ही है फिर सप्तमी तिथि आरम्भ हो कर रात के 4 बजे 42 मिनट पर समाप्त होती है जैसे (सप्र. प्र 4–42) अर्थात् वह दूसरे दिन प्रातः सूर्य उदय से पहले ही समाप्त होती है उसी कारण इस प्रकार की तिथि को हम गुम होना मानते है यदि इस गुम तिथि (त्र्यहः पर किसी का जन्म दिन होगा तो उसे अपना जन्म दिन षष्ठी को ही मनाना चाहिये क्योंकि सप्तमी तिथि गुम है इसी प्रकार कभी–कभी शुक्ल पक्ष अष्टमी भी गुम होती है तो वह व्रत भी सप्तमी को ही रखना चाहिये इसी प्रकार यदि किसी का श्राद्ध इत्यादि हो वह भी पहली तिथि पर ही करना चाहिये।

त्रिस्पृक् :- जिस दिन अधिक तिथि होती है हम उस दिन त्रिस्पृक् अथवा (दिन अधिक) जन्थरी में लिखते हैं अर्थात् उस दिन एक ही तिथि दो दिन रहती है जैसे 2056 में वैशाख कृष्ण पक्ष द्वितीया 2 अप्रैल तथा 3 अप्रैल को है यदि इस प्रकार की तिथि पर आप का जन्म दिन अथवा कोई देवव्रत (अष्टमी इत्यादि फाके) आये तो यह दूसरी तिथि पर (3 अप्रैल) पर मनाना चाहिये, यदि श्राद्ध अथवा कोई भी पितृ कार्य ऐसी तिथि पर आये तो वह पहली तिथि (2 अप्रैल) के दिन ही मनाना चाहिये।

* *

भगवान् कृष्ण कहते हैं

जो व्यक्ति श्रद्धा से गीता संवाद (गीता प्रवचन) सिर्फ सुनेगा ही, वह मुक्त होकर, पुण्यात्मा जहां पहुंचते हैं उन शुभलोकों को वह भी पावेगा। अध्याय 18 श्लोक 71

नोट : यदि आप को धर्मशास्त्र, कर्मकाण्ड, ज्योतिष अथवा विजयेश्वर पञ्चाङ्ग के विषय में कुछ पूछना हो तो आप विजयेश्वर पञ्चाङ्ग कार्यालय अजीत कालोनी, गोल गुजराल से सम्पर्क करें। दूरभाष : 555607

देहली वालों के लिये शुभ सूचना :-
यदि आप को धर्मशास्त्र, कर्मकाण्ड, ज्योतिष अथवा विजयेश्वर पञ्चाङ्ग के विषय में कुछ पूछना हो तो आप दूरभाष नं॰ : 5767456 पर सम्पर्क कर सकते हैं क्योंकि सम्पादक 15 नवम्बर से 30 मार्च तक देहली में होते हैं।

श्राद्ध संकल्प विधिः

पितृऋण चुकाने के निमित्त श्राद्ध अवश्य करें, यदि आप श्राद्ध करने में असमर्थ है तो संकल्प करें, ऐसी धर्मशास्त्र की आज्ञा है। श्राद्ध संकल्प के लिये पहले सामग्री एकत्रित करें, एक थाली में चावल थोड़ा सा नमक फल दक्षिणा आदि रखें, थोड़ा सा तिल धूप दीप फूल अर्ध पवित्र तिलक, केसर या चन्दन का तिलक जिस पितर का श्राद्ध हो उस का फोटो तिलक फूल की मालादि से सजा कर सामने रखें, यदि फोटो न हो तो भगवान् विष्णु का, अथवा भगवान् कृष्ण का फोटो रखें। पद्मासन में शुद्ध आसन पर पूर्व की ओर मुख करके बैठिये, संकल्प करने से पहले श्रीमद्भगवद्गीता का कम से कम एक अध्याय का पाठ करें, यदि ऐसा न हो सके, तो जन्त्री के पाठ प्रकरण से अष्टादशश्लोकी गीता का पाठ अवश्य करें, उस के पश्चात् दीप धूप करें जैसा कि "कर्मकाण्डदीपक" में दर्ज है, दीपो नमः धूपो नमः तक पढ़कर पढ़ें:-

ॐ तत्-सत्-ब्रह्म, अद्य-तावत्-तिथौ-अद्य (मास पक्षवार का नाम लेकर) जैसे वैशाख-मासस्य कृष्णपक्षस्य, (अथवा) शुक्लपक्षस्य तृतीस्यां तिथौ-भौम-वासरा-न्वितायां-विष्णु-प्रीत्यर्थम्-दीप-धूप संकल्पात् सिद्धिर्-अस्तु-दीपो नमः धूपोनमः।

बांयाँ यज्ञोपवीत रख कर तिल सहित जल से तर्पण करते हुये पढ़ेः- **नमः पितृभ्यः- प्रेतेभ्यः, नमो धर्माय विष्णावे नमो यमाय रुद्राय कान्तार पतये नमः।**

ॐ तत् सत्-ब्रह्म-अद्य-तावत्-तिथौ-अद्य (मास-पक्ष तिथि वार का नाम लेकर) पित्रे.... प्रपिताम-हाय। मात्रे पिता-मह्यै प्रपितामह्यै। माता महाय, प्रमाता-महाय, वृद्ध प्रमाता-महाय, प्रमातामह्यै वृद्ध-प्रमातामह्यै समस्तमाता-पित्भ्यो द्वादश-दैवतेभ्यः पितृभ्यः नित्यकर्म निमितं दीपः स्वधः, धूपः स्वधः, जिस पितर का श्राद्ध हो उसी का नाम गोत्रसहित लेकर संकल्प का पानी जो आपने हाथ में लिया होगा चावल आदि पर छिड़कते हुये पढ़े-ॐ तत्-सत्-ब्रह्म-अद्य-तावत्-तिथौ अद्य मास-पक्ष-तिथि-वार का नाम लेकर पढ़े :- सांवत्सरिके श्राद्धे (यदि काम्बर पछ (पितृपक्ष) का श्राद्ध हो) कन्यांकिगत आपरि-पाके श्राद्धे परलोके वैकुण्ठ पदवीप्राप्त्यर्थं आत्मनः पुण्य वृद्धयर्थं इदं-अन्नं दक्षिणा सहितं-फल-मूलवस्त्रादि-सहितं संकल्पयामि संकल्पयमि संकल्पयामि (दायाँ यज्ञोपवीत) रखकर फिर से तर्पण करते हुये पढ़ेः-

नमो-ब्रह्मणे-नमो-अस्तु-अग्नये-नमः पृथिव्यै-नमः औषधीभ्यः नमो वाचस्पतये-नमो-विष्णवे-बृहते कणोमि। इति-एतासाम्-एव-देवतानां-सारिष्टिं-सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम्-आप्नोति य एवं विद्वान्-स्वाध्यायम्-अधीते ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

जन्म दिन पूजा

पूजा आरम्भ करने से पहले यज्ञोपवीत धारण करें और थाल में नारीवण को रखकर नमस्कार करते हुये पढ़े।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशि-वर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायें सर्व-विघ्नोपशान्तये।।
अभिप्रेतार्थ-सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैर्-अपि। सर्व-विघ्नच्छिदे तस्मै गणधिपतये नमः। 1 ।

हृदय और मुख को जल छिड़कते हुए पढें।

तीर्थे स्नेयं तीर्थ-मेव समानानां भवति। मा नः शंस्योर्-अरुरुषो धूर्तिः प्राणड्.मर्त्यस्य रक्षा-णो ब्रह्मणस्पते ।।

अनामिका उंगली में पवित्र धारण करके अपने आप को तिलक, अर्घ, फूल लगाते हुये पढें।

परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंचभूतात्मकाय विश्वात्मने मंत्रनाथाय आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।।

रत्नीदीप धूप को तिलक, अर्घ, पुष्प अपर्ण करके सूर्य भगवान् को थाली में तिलक तथा अर्घ, पुष्प अर्पण करते हुये पढें:-

नमो धर्म-निधानाय नमः स्वकृतसाक्षिणे। नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः।।

खोसू से थाली में रखे हुये नारीवण के ऊपर अर्घ सहित जल की धारा डालते हुये पढें:-

यत्रास्ति-माता न पिता न बन्धु-र्भ्रातापि नो यत्र सुहृत्-ज्जनश्च न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रि-स्तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय-आधारशक्त्यै धूपदीपसङ्.-कल्पात् सिद्धिर्-अस्तु धूपो नमः दीपो नमः।।

जलसहित खोसू में थोड़ा सा तिलक और तीन पुष्प डालते हुये पढें:-

सं वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः। संसृष्टास्तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः, संयावः प्रियास्तन्वः, सं प्रिया, हृदयानि वः। आत्मा वो अस्तु, सं प्रियः सं प्रियस्तन्वो मम।

इसी जल की धारा को नारीवण पर डालते हुये पढें-

अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव। मित्रा-वरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव। बृहस्पतेः प्राणः सं ते प्राणं ददातु तेन जीव, जन्मोत्सव-देताभ्यो जीवादानं परिकल्पयामि नमः।

चावल सहित दो दर्भ सीधे हाथ में लेकर तीन बार गायत्री मन्त्र पढें:-

ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्-वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो योनः प्रचोदयात् '3' जन्मोत्सव-देक्तानां-अर्चाम्-अहं करिष्ये ॐ कुरुष्व।।

इसी मंत्र से हाथ में पकडें हुये दो दर्भ निमाल में डालकर फिर से दो दर्भ आसन के रूप में नारीवण

के सामने डालते हुये पढें:- **सप्त-जन्मोत्सव देवतानां आसनं नमः।** चावल सहित दो दर्भ हाथ में पकड कर केवल चावल को कन्धों से फैकते हुये पढें:- **सप्त-जन्मोत्सवदेताभ्यः युष्मान्-पूजयामि। ऊों-पूजय।।** दो दर्भ इसी तरह पकड़ते हुये पढें:- **सहस्नशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। सभूमिं विश्वतो वृत्वा-त्यतिष्ठत्-दशांगुलम्। जन्मोत्सवदेवता आवाहयिष्यामि। ऊों-आवाहय।।**

पहले पकडे हुए दो दर्भ निर्माल में ढालक कर तीन बार फूल नारीवण पर डालते हुए पढें:-

भगवन्! पुण्डरीकाक्ष! भक्तानु-ग्रहकारक-अस्मत् दयानु-रोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो।।3।।

दोनों कन्धों के ऊपर चावल फैंक कर प्राणायाम करके खोसू में जल डालते हुये पढें:-

पाद्यार्थम्-उदकं नमः । शन्नो देवीरभिष्टय-आपो भवन्तु पीतये। शंयोर्-अभिस्नवन्तु नः।

लाय, केसर, सर्वौषधि, दर्भ, जल, सब चीजें खोसू में डालकर नारीवण पर जल छोडते हुए पढें।

अश्व-त्थामने, बलये, व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय, मार्काण्डेयाय, परशुरामाय, सप्तचिरजीवेभ्यः पाद्यं नमः।।

पाद्य का बचा हुआ पानी निर्माल में डालकर फिर से खोसू में पानी डालते हुये पढें:-

शन्नो देवीर्-अभीष्टये-आपो भवन्तु पीतये। शंयोर्-अभिस्त्रवन्तु नः।

जल, दर्भ, घी, चावल, जौ, सर्वोपधि, दूध ये आठ चीजें खोसू में डालकर नारीवण पर डालते हुये पढें:-

अश्वत्थामन्, बले, व्यास, हनुमन्, कृपाचार्य, मार्कण्डेय, परशुराम, सप्त-चिर, जीव इदं वो ऽर्घ्यं नमः । शुद्ध जल डालते हुये पढें:- प्रजापति-जन्मोत्सवदेवताभ्यः आचमनीयं नमः। दूध वगैरह जल डालते हुये पढें:-

तद्विष्णोः परम पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततं तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णो-र्यत्परमं पदम्। प्रजापति जन्मोत्सवदेवताभ्यः स्नानं नमः।।

किसी कटोरी में फूलों का आसन बनाते हुये पढें:-

आसनाय नमः गरुडासनाय नमः पद्मा-सनाय नमः शतदल-पद्मा-सनाय नमः, सहस्त्रदल-पद्मासनाय नमः।किमासनं ते गरुढासनाय, किं भूषणं कौस्तुभ-भूषणाय, लक्ष्मीकलत्राय, किम्-अस्ति, देयं-वागीश किं ते वचनीयम्-अस्ति।।

नारीवण को आसन पर बिठाते हुये पढें:- **उत्तिष्ठ भगवन् विष्णो उत्तिष्ठ कमलापते! उत्तिष्ठ त्रिजगन्नाथ! त्रैलोकी मंगलं कुरु।।**

नारीवण को सात तिलक लगाते हुये पढें:-

अश्वत्थाम्ने, बलये, व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय मार्कण्डेयाय परशुरामाय सप्तचिर-जीवेभ्यः समालभनं गन्धो नमः।

इन्हीं सात नामों का उच्चारण करते हुये नारीवण पर अर्घ और पुष्प चढाते हुये पढें:-

अश्वत्थाम्ने, बलये (इत्यादि) नाम्ना अर्घो नमः पुष्पं नमः।। धूप रत्नीदीप, कपूर उठकर घुमायें। यह मंत्र पढें:-

तेजसो शुक्रमसि ज्योतिर्‌सि धामासि, प्रियं देवानामंऽनादृष्टं देवयजनं देवताभ्यस्त्वा देवताभ्यो गृहणामि, यज्ञेभ्यस्त्वा यज्ञिभ्यो, गृहणामि, जन्मोत्सवदेवताभ्यः धूपं रत्नदीपं कर्पूरं च परिकल्पयामि नमः।

नमस्कार करते हुये पढें:-

जय नारायण, जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे। उद्धर मामृऽसुरेश-विनाशन्, पति-तोऽहं संसारे। घोरं हर मम नरकरिपो, केशव कल्मषभारम्। माम्-अनुकम्पय दीनम्-अनाथं कुरु भवसागरपारम्। भगवते वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय। सप्त-जन्मोत्सव-देवताभ्यः चामरं छत्रं परिकल्पयामि नमः।

फूल चढाते हुये पढें:-

ध्येयं सदा परिभवघ्नमृऽभीष्टदोहं तीर्थास्पदं शिव-विरिंच-नुतं शरण्यम्। भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं वन्दे महापुरुष ते चरणार-बिन्दम्।।

नमस्कार करते हुये पढ़ें:-

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा च अष्टांग-नमस्कारं करोमि नमः।

कटोरी में थौड़ा दूध, शहद, या क्षीर रख कर अर्पण करते हुये पढें:-

वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय प्रजापति-जन्मोत्सवदेवताभ्यः मात्रामधुपर्क ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।

दक्षिणा डालते हुये पढें:- जन्मोत्सव-देवताभ्यः दक्षिणायै तिल-हिरण्य रजत निष्कर्ण ददानि।

फिर से दक्षिणा अर्पण करते हुये पढें:-

एता देवताः सदक्षिणान्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु।।

फूल चढाते हुये पढें:-

उों तद्विष्णोः परम पदं सदापश्यन्ति-सूरयः दिवीव चक्षुर्-आततम्। तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम्।

अब नैवेद्य तहर या क्षीर थाली में लाकर एक पात्र में अलग चट्टू और पांच म्यचियाँ रखें, नैवेद्य के साथ ही मिसरी भी रखें। नैवेद्य की थाली को दोनों हाथों से पकड़कर सारा प्रोप्युन पढ़े।

आज्ञा मांगते हुये पढें:-

आज्ञ मे दीयतां नाथ नैवेद्यस्यास्य भक्षणे। शरीरयात्रा सिद्ध्यर्थं भगवन् क्षन्तुम्-अर्हसि।।

पुष्प चढ़ाते हुये पढे:-

आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवंस्त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणा-गतम्।

पवित्र निकालकर, हाथ में नारीवण वांधकर, चट्टू कहीं बाहर रखकर, निर्माल नदी में डालकर नैवेद्य के साथ शकर दायें हथेली में रखकर मुहं में डालते हुये पढें:-

माकार्ड्ण्डेय नमस्तुभ्यं सप्तकल्पान्त जीवन, आयुर्-अरोग्यं सिद्धर्यथं प्रसीद भगवन्मुने। मार्कण्डेय महाभाग सप्तकल्पान्त-जीवन, चिरऽजीवी यथा त्वं तु मुनीनां प्रवरद्विज, कुरुष्व मुनिशार्दूल, तथा मां चिरजीविनम्।।

मानसिक शान्ति देने वाला मन्त्र

ॐ नमः शाम्भवाय च मयो भवाय च
नमः शंकराय च मयस्कराय च
नमः शिवाय च शिवतराय च।

We offer our salutations to Thee — the Giver of Happiness. We offer our Salutations to Thee — the Auspiciousness. We offer our Salutations to Thee — the Bestower of Bliss and still greater Bliss

प्रेप्युन

एक थाली में नैवेद्य तथा दूसरी में चटू और पांच म्यचियां या टकड़े रख कर गणेश जी का ध्यान करके शुद्ध पानी अपने आप पर छिडकते हुये पढ़ें:-

तीर्थे स्नेयं तीर्थम्-एव, समानानां भवति, मानः शंसो अररुषो धूर्तिः प्राणड्-मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

अपने आप को तिलक लगाते हुये पढ़ें:-

परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंच-भूतात्मकाय विश्वात्मने ,मन्त्र नाथाय, आत्मने नारायणाय-आधार-शक्त्यै-समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः, पुष्पं नमः।

दीप को तिलक लगाते हुये तथा पुण्प चढाते हुये पढ़ें:-

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वत-स्तिमि-रापहः प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः।

धूप को तिलक लगाते हुये पढेः-

वनस्पति रसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत्-तमः आधारः सर्वदेवानां धूपोयं परिकल्पितः।

सूर्य भगवान् का ध्यान करके पात्र में तिलक पुष्प डालते हुये पढ़ें:-

नमो धर्म-निधानाय, नमः स्वकृत-साक्षिणे, नमः प्रत्यक्ष-देवाय भास्कराय नमो नमः।

कवली से थाल में जल डालते हुये पढ़ें:-

यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुः- भ्रातापि नो यत्र सुहृत जनश्च, न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः तत्रात्म-दीपं शरणं प्रपद्ये आत्मने नारायणाय-आधार-शक्तयै, दीप-धूप-संकल्पात् सिद्धिर्-अस्तु, दीपो नमः धूपो नमः।

प्रेप्युन (नैवद्यमन्त्र)

(नैवेद्य को दोनों हाथों से पकड़ते हुये पढें)

अमृतेश-मुद्रया-अमृतीकृत्य अमृतम्-अस्तु अमृतायतां नैवेद्यम्। सावित्राणि सावित्रस्य देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो-र्बाहुभ्यां-पूष्णो हस्ताभ्याम्-आददे।। महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वार्देवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलश-देवताभ्यः ब्रह्मविष्णु महेश्वर-देवताभ्यः चतुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतु-पतये नारायणाय दुर्गायै त्रयम्बकाय वरूणाय यज्ञपुरुषाय अग्नि-ष्वात्तादिभ्यः पितृ...गणदेवताभ्भ्यः। भगवते वासुदेवाय सङ्.-कर्षणाय प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय सत्याय-पुरुषाय अच्युताय माधवाय गोविन्दाय-सहस्त्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मीसिहताय नारायणाय भवायदेवाय-शर्वाय-देवाय-रुद्राय-देवाय पशुपतये देवाय उग्राय-देवाय भीमायदेवाय महा-देवाय ईशानाय-देवाय ईश्वराय-देवाय उमासहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिंगलाय गजाननाय

लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्षाय वल्लभा-सहिताय श्रीमहागणेशाय। क्लीं कां कुमाराय षण्मुखाय मयूरवाहनाय सेनाधिपतये कुमाराय। भगवते ह्रॉं ह्रीं सः सूर्याय सप्ताश्वाय अनश्वाय एकाश्वाय नीलाश्वाय प्रत्यक्षदेवाय परमार्थ-साराय तेजोरूपाय प्रभासहिताय आदित्याय। भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्. ग्यै टंकधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका-भगवत्यै श्री शारदा-भगवत्यै श्री महाराज्ञीभगवत्यै श्री ज्वाला भगवत्यै व्रीडाभगवत्यै वैखरीभगवत्यै वितस्ताभगवत्यै गंगाभगवत्यै यमुनाभगवत्यै कालिकाभगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुन्दर्यै सहस्त्रननाम्न्यै देव्यै भवान्यै अभयंकरीदेव्यै क्षेमंकरीभगवत्यै सर्वशत्रुघातिण्यै इहराष्ट्रधिपतये इन्द्राय वज्रहस्ताय अग्नये शक्तिहस्ताय यमाय दण्डहस्ताय नैऋतये खड्ग-हस्ताय वरुणाय पाशहस्ताय वायवे ध्वजहस्ताय कुवेराय-गदा-हस्ताय विष्णवे-चक्रहस्ताय. अनन्तदिभ्योऽष्टाभ्यः कुलनागदेवताभ्यः अग्न्या-दित्याभ्यां वरुण-चन्द्रमोभ्यां कुमार-भौमाभ्यां विष्णु-बुधाभ्यां इन्द्रा-बृहस्पतिभ्यां सरस्वती-शुक्राभ्यां, प्रजापति-शनैश्चराभ्यां गणपति-राहुभ्यां, रुद्रकेतुभ्यां ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्ता-गस्त्याभ्यां ब्रह्मणे कूर्माय ध्रुवाय अनन्ताय हरये लक्ष्म्यै कमलायै शिरव्यादिभ्यः

पंच-चत्वारिंशत्-वास्तोष्पति-याग-देवताभ्यः ब्राह्मादिभ्यो मातृभ्यः गौर्यादिभ्यो मातृभ्यः ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गा-क्षेत्र-गणेश्वर-देवताभ्यः राकादेवताभ्यः त्रिका-देवताभ्यः सिनीवाली-देवताभ्यः यामी-देवताभ्यः रौद्री-देवताभ्यः वारुणी-देवताभ्यः बार्हस्पत्य-देवताभ्यः ॐ भूर्देवताभ्यः ॐ भुवोदेवताभ्यः ॐ स्वर्देवताभ्यः ॐ भूर्भुवः-स्वर्देवताभ्यः अखण्ड-ब्रह्माण्ड-यागदेवताभ्यः धूर्भ्यः उपधूर्भ्यः महागायत्र्यै सावित्र्यै-सरस्वत्यै हेरकादिभ्यो वदुकादिभ्यः, उत्पन्नम्-अमृतं दिव्यं प्राक्-क्षीरो-दधि-मन्थनात्-अन्नम्-अमृतरूपेण नैवेद्यं प्रति-गृह्यताम्

(ईष्टदेवता का ध्यान करते हुये पढे:- ओं तत्सत् - ब्रह्म - अद्य तावत् तिथौ अद्य -मासस्य-पक्षस्य-तिथौ- आत्मनो वाङ्.मनः कार्योपार्जित-पापनि-वारणार्थम, ओं नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः। "चुटू" को स्पर्श करते हुये पढ़े:- या काचित् - योगिनी- रौद्रा - सोम्या घोरतरा परा। खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवन्तु मे सदा। चुटू को अंगूठे से तिलक लगाकर अर्घफूल डालते हुये पढें:- आकाशमातृभ्योऽन्नं नमः, आकाशमातृभ्यः समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः पुष्पं नमः। प्रेप्युन की थाली चुटू के साथ सात (7) म्यचियां अथवा सात छोटे प्रसाद के भाग रखे हुये होते हैं- पहली म्यची को स्पर्श करते हुये पढ़े- भगवते वासुदेवाय

अन्नं क्षीरं मोदकादीन् समर्पयामि नमः। (2) दूसरी को स्पर्श करते हुये पढ़ेः- **भगवते भवाय देवाय अन्नं समर्पयामि नमः (3) भगवते विनायकाय अन्नंसमर्पयामि नमः (4) ह्राँ ह्रीं सूर्याय अन्नं समर्पयामि नमः (5) इष्टदेवी भगवत्यै अन्नं मोदकान्-मिष्ठानं-क्षीरं समर्पयामि नमः।**

अंतिम दो भागों या दो म्यचियों पर अर्घ पानी डालते हुये पढें- **यस्मिन्-निवसति क्षेत्रे क्षेत्रपालाः सकिंकराः। तस्मै नि-वेदयाम्यद्य बलिं पानीय संयुतम्, क्षां-क्षेत्राधिपतये अन्नं नमः रां राष्ट्राधिपतये अन्नं नमः-सर्वाभय-वरप्रदो मयि पुष्टिं पुष्टिपति-र्दधातु।** दोनों हाथ में फूल लेते हुये प्रणाम करते हुये पढ़ें- **आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवन्-त्वां-प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम्। उभाम्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा वचसा चोरसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः।**

तर्पणः- सीधा हाथ रखते हुये पढ़े- **नमो ब्रह्मणे, नमो अस्त्वग्नये, नमः पृथिव्यै, नमः औषिधिम्यः, नमो वाचे नमो वाचस्पतये, नमो विष्णवे, बृहते, कृणोमि, इत्येतासाम्-एव-देवतानां-सा-रि-ष्टिं-सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम्-आप्नोति-य एवं विद्वान् - स्वाध्यायम्-अधीते। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।**

इन्द्राक्षी

अस्य श्री इंद्राक्षी स्तोत्रमन्त्रस्य, पुरंदर-ऋषिः, अनुष्टप्-छन्दः, इन्द्राक्षी देवता, ह्लीं बीजम्, श्रीं. शक्तिः, क्लीं कीलकम्। सकलकामना-सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

अथ-ध्यानम्।

इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीत-वस्त्रधरां शुभाम् वामे हस्ते वज्रधरां दक्षिणे चाभय-प्रदाम्।1। सहस्त्र नेत्रां सूर्याभां नानालंकार-भूषिताम्, प्रसन्न वदनां नित्यम्-अप्सरो-गणसेविताम्।2। श्री-दुर्गां सौम्य-वदनां पाशांकुशधरां परां, त्रैलोक्य-मोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम्।3। ॐ ह्रीं श्रीं इन्द्राक्षीं श्रीं प्रीं स्वाहा।

इन्द्र-उवाज-

इन्द्राक्षी नाम सा देवी देवतैः समुदाहृता, गौरी शाकंभरी देवी दुर्गा-नाम्नीति-विश्रुता।1।

कात्यायनी महादेवी चन्द्र-घण्टा-महातपः, गायत्री सा च सावित्री बह्माणी ब्रह्मवादिनी ।2। नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला, अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्री-स्तपस्विनी ।3। मेघ-श्यामा सहस्त्राक्षी, विष्णुमाया जलोदरी, महोदरी मुक्त-केशी घोररूपा महाबला ।4। आनन्दा-भद्रजा नंदा रोगहंत्री शिवप्रिया, शिवदूती कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी ।5। इन्द्राणी चन्द्ररूपा च इन्द्र-शक्ति-परायणा, महिषा-सुर-संहर्त्री चामुण्डा गर्भदेवता ।6। वाराही नारसिंही च भीमा भैरव नादिनी, श्रुतिः स्मृति-धृति-मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती ।7। आनंदा विजया पूर्णा मानस्तोकाऽ पराजिता, भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यंबिका शिवा ।8। शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्ध-शरीरिणी, एतै-र्नाम-पदै-र्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता ।9। आयुर्-आरोग्यम्-ऐश्वर्य सुख-संपत्तिकारकम्, क्षय-पस्मार-कुष्ठादि-ताप-ज्वर-निवारणम् ।10।

जातक मिलाप-प्रकरण

बल देखने की विधि :—लग्न और चन्द्रमा से वर वधू की जन्मकुण्डली के पहले चौथे, 7वें, 8वें, 12वें घर में जितने पापग्रह होंगे उतने बल मानिये, एक पापग्रह का एक बल माना जाता है। बृहस्पति और शुक्र एक घर में इकट्ठे हों तो उसका भी एक बल मानिये यदि लड़के के जन्म कुण्डली में शुक्र से चौथे, 8वें, घर में कोई पापग्रह हों तो उतने बल लड़के के और मान लीजिए, राक्षस जाति का भी एक बल मानिये।

नक्षत्र नाम —अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु तिष्या आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा अनुराधा ज्येष्ठ, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक् पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद् रेवती।

षष्टाष्टक नवपंचक द्विर्द्वादशी

लड़के अथवा लड़की की राशि से गिनने पर आठवीं और छटी राशि षष्टाष्टक कहलाती है, ऐसे ही एक की राशि से दूसरे की राशि तक गिनने पर नवीं और पाँचवी राशि **नवपंचक** कहलाती है, दूसरी और बारवीं राशि **द्वि-र्द्वादशी** कहलाती है, जैसे लड़के या लड़की की राशि मेष और वृश्चिक, मिथुन और मकर हो तो आपस में **मित्र षष्टाष्टक** होगी—आप निम्नलिखित चक्र में देखिए :-

राशि कूट चक्र

मित्र षष्टाष्टक	मेष + वृश्चिक	मिथुन + मकर	सिंह + मीन	तुला + वृष	धनु + कर्क	कुम्भ + कन्या
शत्रु षष्टाष्टक	वृष + धनु	कर्क + कुम्भ,	कन्या + मेष	वृश्चिक + मिथुन	मकर + सिंह	मीन + तुला
मित्रनवपंचक	मेष + सिंह	मिथुन + तुला	सिंह + धनु	तुला + कुम्भ	धनु + मेष	कुम्भ + मिथुन
शत्रुनपंचक	वृष + कन्या	कर्क + वृश्चिक	कन्या + मकर	वृश्चिक + मीन	मकर + वृष	मीन + कर्क
मित्रद्विर्द्वादशी	मेष + मीन	मिथुन + वृष	सिंह + कर्क	तुला + कन्या	धनु + वृश्चिक	कुम्भ + मकर
शत्रुद्विर्द्वादशी	वृष + मेष	कर्क + मिथुन	कन्या + सिंह	वृश्चिक + तुला	मकर + धनु	मीन + कुम्भ

देखने की विधि :—मेप राशि की वृश्चिक राशि के साथ मित्र पप्टाप्टक है जो शुभ है इसी प्रकार वृप राशि का धनु राशि के साथ शत्रु पप्टाप्टक है जो मिलाप के लिए अशुभ है।

नोट :—मित्रपप्टाप्टक, मित्रनवपंचक, मित्रद्विर्द्वादशी निपेध नहीं—अपितु, शुभफलदायक है।

नाडी देखने का चित्र

आद्य नाड़ी	अश्वि	आर्द्रा	पुन	उफा	हस्त	ज्येष्ठा	मूला	शत	पूभा
मध्य नाडी	भर	मृग	तिष्या	पूफा	चित्रा	अनु	पूषा	धनि	उभा
अन्त्य नाडी	कृति	रोहि	अश्ले	मघा	स्वाति	विशा	उषा	श्रव	रेव

नाड़ी देखने की विधि :—जन्मपत्री मिलाने के लिए दोनों वधूवर का नक्षत्र अवश्य मालूम होना चाहिए यदि दोनों का नक्षत्र आद्य नाडी की पंक्ति में हो तो **आद्य नाड़ी दोष** होता है, ऐसे ही यदि दोनों का नक्षत्र मध्यनाड़ी की पंक्ति में हो तो **मध्यनाडी दोष** होता है, यदि दोनों वरवधू का नक्षत्र अन्त्य नाडी की पंक्ति में हो तो **अन्त्य नाडी दोष** होता है। मध्यनाडी दोष विशेष हानिकारक माना जाता है।

जाती देखने का चित्र

देव जाति :—	अनु	मृग	श्रवण	पुनर्व.	रेवती	स्वाति	हस्त तिष्या	अश्वि	
मनुष्य जाति	पूषा	पूफा.	पूभा.	उफा.	उषा	रोहि	भर	आद्रा	उभा
राक्षस जाति	मघा	अश्ले	धनि	कृति	ज्येष्ठा	मूला	शत	चित्रा	विशा

देखने की विधि :—अनुराधा नक्षत्र होने पर देवजाति, ऐसे ही पूर्व फाल्गुणी नक्षत्र के लिए मनुष्य जाति, मघा नक्षत्र की राक्षस जाति :—

देवजाति + राक्षस जाति = मध्यम
राक्षस जाति + देव जाति = मध्यम
राक्षस जाति + मनुष्य जाति = अशुभ

मनुष्यजाति + देव जाति = शुभ
देव जाति + मनुष्य जाति = शुभ
मनुष्य जाति + राक्षस जाति = अशुभ

दोनों लड़के तथा लड़की की एक ही जाति का होना शुभफल होता है, विशेपतया यदि लड़की की जाति राक्षस हो और लड़के की मनुष्य जाति, तो विशेष हानिकारक होती है।

जातक मिलाप सारिणी

लड़की	लड़का	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि	भर	कृति	कृति	रोहि	मृग	मृग	आर्द्रा	पुन	पुन	तिष्या	आश्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	हस्त	चित्रा
मेष	अश्वि	28	33	28	18	24	23	26	17	18	23	31	27	20	24	15	11	11	13
	भर	33	28	29	18	27	15	18	26	26	31	24	25	19	17	24	19	19	6
	कृति	27	28	28	18	10	17	20	20	20	25	27	23	16	19	20	15	15	19
वृष	कृति	19	19	19	28	19	27	17	17	17	21	23	19	19	22	22	20	21	23
	रोहि	24	24	11	20	28	36	27	23	22	26	27	13	11	25	27	26	26	19
	मृग	24	15	19	27	35	29	19	24	23	26	19	21	20	16	25	23	26	12
मिथुन	मृग	27	18	23	19	26	20	28	33	31	20	11	15	24	21	29	31	34	20
	आर्द्रा	19	27	22	19	25	26	34	28	25	12	21	13	22	28	21	25	25	27
	पुन	19	26	22	19	22	23	32	24	28	14	21	16	22	26	20	24	25	27
कर्क	पुन	22	29	25	21	24	25	18	10	13	28	34	29	17	21	15	17	18	20
	तिष्या	30	21	27	23	25	18	11	19	24	34	28	29	19	15	24	26	26	12
	आश्ले	25	23	22	19	12	21	13	12	15	29	29	28	15	16	18	21	20	26
सिंह	मघा	19	19	16	17	11	18	21	21	20	17	19	16	28	30	27	15	15	20
	पूफा	25	17	19	20	24	16	19	27	26	23	17	17	30	28	34	24	21	6
	उफा	19	27	22	23	27	26	29	22	22	17	26	20	27	34	28	18	17	15
कन्या	उफा	11	21	16	21	26	24	32	22	24	18	28	21	16	23	17	28	27	25
	हस्त	11	19	16	21	24	25	32	19	24	18	27	22	16	21	15	26	28	28
	चित्रा	13	5	19	23	19	11	19	26	25	20	12	26	22	7	14	25	27	28

जातक मिलाप सारिणी

लड़की	लड़का	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुंभ			मीन		
		चित्रा	स्वाति	विशा	विशा	अनु	ज्येष्ठा	मूला	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव
मेष	अश्वि	23	27	22	19	25	15	13	25	23	25	26	21	21	15	16	15	24	26
	भर	15	28	21	19	18	20	20	18	26	28	26	10	10	20	24	23	17	26
	कृति	28	14	19	17	20	26	25	19	12	14	14	25	25	26	18	18	20	13
वृष	कृति	22	9	14	22	25	30	22	15	7	12	11	25	29	30	23	20	22	13
	रोहि	18	15	8	15	30	24	14	20	11	16	18	19	25	24	29	26	27	19
	मृग	11	25	17	24	22	25	15	11	17	22	26	12	18	26	28	25	18	27
मिथुन	मृग	13	27	20	13	13	14	23	19	25	20	24	10	12	21	23	24	17	26
	आर्द्रा	20	27	20	14	19	5	15	28	27	22	23	17	19	12	17	19	26	26
	पुन	20	27	21	15	21	6	14	27	27	22	23	17	19	13	16	18	27	26
कर्क	पुन	19	27	21	19	25	11	8	21	21	26	27	21	12	6	10	16	25	25
	तिष्या	11	25	21	19	17	21	18	13	21	26	27	13	4	13	18	26	18	26
	आश्ले	26	12	17	16	19	26	23	16	8	13	13	26	17	18	11	18	20	12
सिंह	मघा	24	11	16	25	25	32	24	19	9	4	5	18	24	25	18	18	19	12
	पूफा	10	25	18	24	23	25	20	17	24	19	19	6	11	19	24	24	17	25
	उफा	18	27	18	25	31	17	9	25	25	20	20	12	18	11	16	16	27	25
कन्या	उफा	17	26	17	18	26	12	14	30	30	24	24	24	17	10	15	17	28	26
	हस्त	20	27	19	20	26	14	15	27	29	23	24	20	19	11	14	16	26	26
	चित्रा	19	19	26	27	11	25	27	13	21	16	17	16	16	24	17	19	10	19

वधू-वर मिलाप सारिणी देखने की विधि

जन्मपत्री मिलान के लिए वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गण, भकूट, नाडी यह आठ मानिये पर्चे होते हैं, यदि वर्ण आपस में (वधू वर का) मिले तो एक गुण मानिये 1 अंक मिलता है, जब वश्य का आपस में मिलान होगा, तोउस के दो अंक यानी 2 गुण मिलते हैं ऐसे ही क्रमशः तारा के मिलान में 3 गुण योनि के मिलान में 4 गुण होते हैं अर्थात् 8 पर्चों में क्रमशः 1+2+3+4+5+6+7+8 कुल मिलाकर 36 गुण होते हैं, वधूवर के मिलान में 36 में से 18गुण मिले तो विवाह शुभफलदायक होगा।

सारिणी देखने के लिये दोनों (वर-वधू) लडके, लडकी की जन्मराशि का ज्ञान होना आवश्यक है, मानिये लड़के की राशि है मेष और लड़की की राशि है मिथुन। मेष राशि वाले का नक्षत्र होगा अश्विनी, भरणी अथवा कृतिका और मिथुन राशि वाले का नक्षत्र होगा मृगशिर, आर्द्रा पुनर्वसु, सारिणी में देखिये हर राशि के नीचे नक्षत्र लिखे हैं। उदाहरण के रूप में मानिये लड़के की राशि है मेष और नक्षत्र है भरणी, ऐसे ही लड़की की राशि है मिथुन मानिये नक्षत्र है मृगशिर – सारिणी में देखियेः– भरणी नक्षत्र की खड़ी पंक्ति और मृगशिर की पड़ी पंक्ति जहां आपस में मिलती है वहां सारिणी में 18 दर्ज हैं, यानी वधू-वर के मिलान में 18 गुण हैं, इसलिये यह मिलान शुभ है। दूसरा उदाहरण देखिये, लड़के की राशि है सिंह और नक्षत्र है मघा, लड़की की राशि है कन्या और नक्षत्र है "हस्त" सारिणी में देखिये "मघा" नक्षत्र की खड़ी पंक्ति और हस्त की पड़ी पंक्ति में केवल 16 गुण मिलते हैं अतः मिलाप शुभ नहीं होगा।

मंगल दोष विचार

1. शनि भौमोथवा कश्चित् पापोवा तादृशोभवेत् तेष्वेव भवनेषु भौम दोष विनाशकृत्।।

जिस जन्म कुण्डली में वह लड़की की हो या लड़के की 1, 4, 7, 8, 12 वें घर में यदि मंगल हो उसी के जवाब में, जन्मचक्र से अथवा राशि चक्र से कोई क्रूरग्रह (यह आवश्यक नहीं मंगल ही हो) सूर्य, भौम, शनि राहु, इन्हीं घरों में यानी 1, 4, 7,8,12 वाँ हो तो मंगल का दोष नहीं होता है।

2. "अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे, द्यूने मृगे कर्किचाष्टे भौम दोषो न विद्यते।।"

लड़के अथवा लड़की की कुण्डली में, लग्न में मेष राशि का मंगल हो, वृश्चिक का मंगल चौथा हो, मकर राशि में सातवाँ हो, कर्क का आठवाँ हो, धनु का बारवाँ हो तो भौम का यानी मंगल का दोष नहीं होता है।

3. सप्तमस्थो यदा भौमो गुरुणा च निरीक्षित: तदातु सर्वसौरण्यं स्यात् मंगलीदोष नाशकृत्।

यदि सातवाँ मंगल हो, उस पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो मंगल का दोष नहीं होता है।

4. भौम यदि वक्री, नीच, अस्त अथवा शत्रु के घर में हो तो मंगल का दोष नहीं होता है।

नाडी दोष अपवाद

1. लड़के अथवा लड़की का नक्षत्र यदि रेवती, रोहिणी, मृगशिर, तिष्या, कृतिका, उत्तराभाद्रपद्, श्रवणी, आर्द्रा तथा ज्येष्ठा हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है।

2. यदि लड़के लड़की में से एक की राशि कन्या और दूसरे की मिथुन, एक की धनु, दूसरे की मीन, एक की तुला, दूसरे की राशि वृष हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है।
3. वर तथा कन्या की राशि एक हो परन्तु नक्षत्र अलग–अलग हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है अथवा वर तथा कन्या का नक्षत्र एक हो और राशि अलग–अलग हो तो नाडी दोष नहीं होता हैं।
4. नाड़ी दोष होने पर यदि पाद भेद हो तो भी नाड़ी दोष नहीं होता है।
5. वर और वधू के राशि स्वामियों अथवा नवांश स्वामियों की यदि आपस में मित्रता हो – तो राक्षस जाति तथा षष्ठाष्टक आदि का दोष नहीं होता है।

यात्रा प्रकरण

यात्रा के लिए उत्तम नक्षत्र

अश्विनी, पुनर्वसु, अनूराधा, तिष्या, मृगशिर, रेवती हस्त धनिष्ठा।

यात्रा के लिए निषेध नक्षत्र

भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति, विशाखा।

यात्रा के लिये मध्यम नक्षत्र

रोहिणी, उत्तराफाल्गुणी, उत्तराषाढ़ा, उत्तरभाद्रपदा, पूर्वाफा., पूर्वाषा., ज्येष्ठा, मूला, शतभिषक्।

यात्रा के लिये अशुभ योग

कालदण्डः, धौम्यः, ध्वांक्षः, उन्मूलम्, मुस्लम्, मुद्गरम्, काण्डः, क्षयः, शूलम्।

यात्रा के लिए अशुभ चन्द्रमा

अपनी राशि से चौथा, आठवाँ, बारवाँ।

यात्रा को जाना यदि आवश्यक हो तो

बृहस्पति, शुक्रवार, रविवार, को रात्रि में यात्रा को जाने

में कोई दोष न मानिये, ऐसे ही सोमवार, शनिवार और मंगलवार – इन तीन वारों का दोष दिन को न मानिये।

वार दोष निवारण के लिये

रविवार को पान खाकर यात्रा को जायें, सोमवार को दूध अथवा खीर, मंगलवार को आँवला अथवा कांजी, खट्टी पदार्थ, बुधवार को मीठा, बृहस्पति वार को दही, शुक्रवार को कच्चा दूध, शनिवार को उड़द अथवा तहर।

घातचन्द्र - घातवार

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	राशि
1	5	9	2	6	10	3	7	4	8	11	12	चन्द्र
रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	भौम	गुरु	शुक्र	वार

मेष राशि वालों के लिए पहला चन्द्रमा घात चन्द्रमा है, ऐसे ही रविवार भी घातवार है, घातचन्द्रमा केवल यात्रा के लिये निषेध है।

यात्रा के लिए उत्तम योगिनी तथा चन्द्रमा

दिशा	*वार*	*बायें योगिनी*	*पीछे योगिनी*	*सन्मुख चन्द्रमा*	*दायां चन्द्रमा*
पूर्व	रवि, भौम, बुध, गुरु, शुक्र	द्वितीया दशमी,	षष्ठी चतुर्द	मेष, सिंह, धनु	मकर, कन्या, वृष,
पश्चिम	सोम, बुध, गुरु, शनि	पंचमी, त्रायो,	प्रतिपदा, नवमी	मिथुन, तुला, कुंभ	कर्क, वृश्चि, मीन
दक्षिण	सोम, भौम, बुध, शुक्र	प्रतिपद् नवमी	द्वितीया, दशमी	मकर, कन्या, वृष,	मिथुन, तुला, कुम्भ
उत्तर	सोम, शुक्र, शनि, रवि,	षष्ठी, चतुर्द	पंचमी, त्रयोदशी	कर्क, वृश्चिक, मीन	मेष, सिंह, धनु

7

आमदनी खर्च का चित्र

	मे	वृ	दि	क	सिं	कं	तु	वृं	ध	म	कुं	मी
आय	8	2	8	2	5	8	2	8	5	14	14	5
व्यय	8	14	11	8	5	11	14	5	11	11	11	11

नोटः आमदनी और खर्च के अंकों के जोड़ से एक कम करके आठ से भाग देने पर फल निम्नलिखित है।

एक बाकी बचेः- तो यह वर्ष सुख शान्ति के वातावरण में आदरमान से व्यतीत होगा, यदि आप नौकरी करते हैं तो अचानक तरक्की की सम्भावना है यदि आप नौकरी की तलाश में है तो प्रयत्न करने पर अवश्य सफलता होगी, यदि आप तिजारत करते हैं तो आपके कारोबार को विशाल बनाने के निमित यह वर्ष रिकार्ड होगा, कारोबार सम्बन्धित प्रत्येक काम में आपको लाभ रहेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये भी यह वर्ष अनुकूल है आप प्रयत्न कीजिये आशा से अधिक सफलता होगी।

दो बाकी बचेः- जिन तर्की की आशाओं को लेकर आप बहुत समय से प्रतीक्षा कर रहे है प्रायः सभी आशायें पूर्ण होंगी हर आरम्भ किये कार्य में सफलता निश्चित रूप से होगी, सफलता के साथ-साथ आदरमान की दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा, आप परिश्रम कीजिये ग्रह आपके सहायक है यदि आप कपड़ें से सम्बन्धित व्यापार करते है तो लाभ की आशा न रखें, किरयाना, लोहा मशीनरी सम्बन्धित काम करने वाले व्यापारी लाभ में रहेंगे, यदि आपका काम फलों वागों से सम्बन्धित है तो दौड़, धूप अधिक

परन्तु अन्त में जाकर आपने खसारा में ही रहना होगा, नौकरी पेशा होने पर नौकरी सम्बन्धित कोई समस्या क्यों न हो जरा सी सावधानी से कदम उठाने पर ही समस्या का समाधान होगा, हर पहलू से उत्तम समय होने पर भी शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिये, शरीर को स्वस्थ रखने के लिए उपाय के रूप में किसी भी मादक द्रव्य का सेवन न करें, रविवार को निश्चित रूप से वैष्णव रहें।

तीन बाकी बचे:- तो यह वर्ष संघर्ष का होगा, कोई भी कार्य उलझनों व रुकावटों का सामना किये बिना सफल नहीं होगी, घरेलू परेशानियां भी आपको घेरे रखेंगी केवल परिवार में सन्तान पक्ष से शान्ति रहेगी, घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा जिसमें अधिक से अधिक धन राशि का व्यय होगा शरीर के विषय में सावधान रहिए चोट आदि लगने का भी अन्देशा है, किसी रिश्तेदार मित्र अथवा किसी विश्वासपात्र से धोखा लगने का योग है, उपाय के रूप में हनुमान चालीसा अथवा बहुरूपगर्भ का पाठ नियम से करें यदि किसी दिन पाठ न कर सकोगे तो दूसरे दिन उस पाठ को करें, यदि आप विद्यार्थी है आपको इस वर्ष सावधान रहना चाहिये रात दिन परिश्रम करने पर ही सफलता की आशा रखें, वह सफलता भी इच्छानुसार नहीं होगी, यदि आप इस वर्ष सफलता चाहते हैं तो नियम से घर से किसी वृद्ध सदस्य अथवा माता-पिता के चरणों को प्रातः प्रणाम् करके नित्य उनसे आर्शीवाद प्राप्त करें।

चार बाकी बचे:- तो यह वर्ष संघर्ष तथा दौड़-धूप में ही गुजरेगा हर एक कार्य में कोई न कोई उलझन खड़ी होगी, यदि आप नौकरी पेशा है तो मर्जी से उलट तबदीली होगी, गृहस्थी होने पर घरेलू परेशानियों का सामना करना पड़ेगा परन्तु खर्च के नये-नये रास्ते निकल आयेंगे यदि आप व्यापारी हैं, तो लेन-देन के विषय में सावधान रहें अचानक धोखा लगने का अन्देशा हैं, लेन-देन अथवा धन के सम्बन्ध में किसी

गैर का विश्वास न किजिए बाद में पछताना पड़ेगा, जायदाद सम्बन्धित कोई झगड़ा खड़ा होने का अन्देशा है, जायदाद सम्बन्धित किसी झगड़े का आरम्भ दिख पड़ते ही आपसी सुलह करने में दलचस्पी रखें, उपाय के रूप में नित्य प्रातः काल उठ कर किसी बुजुर्ग अथवा माता-पिता के चरणों का स्पर्श करके आर्शीवाद प्राप्त करें निश्चय रखिये वह आर्शीवाद रामवाण का काम करेगा।

पांच बाकी बचे:- तो वर्ष भर मानसिक अशान्ति बनी रहेगी, कोई भी कार्य बिना रुकावट के सफल नहीं होगा, वर्ष भर घरेलू परेशानियों से छुटकारा नहीं मिलेगा, धन की दशा भी डांवाडोल रहेगी, कभी धन आवश्यकता अनुसार मिलता रहेगा कभी तंगदस्ती से दुचार होगा, कभी अचानक लाभ की सम्भावना है, उस लाभ की आशा में अधिक विश्वास न रखें, उपाय के रूप में घर में कोई महोत्सव या मकान आदि बनाने का प्रोग्राम बनायें ऐसे शुभ कामों में लगे रहना आपके लिये शान्ति का कारण बनेगा, यदि यात्रा का प्रोग्राम बने अवश्य बनायें घर की अपेक्षा आप यात्रा में सुखी रहेंगे, विद्यार्थी वर्ग को चेतावनी है कि आप पढ़ाई में आलस्य न करें परिश्रम करने पर आप अच्छी पोजीशन में सफल होंगे।

छः बाकी बचे:- तो आपके घर में शान्ति की सूचना है, आपको किसी महापुरुष से संयोग होगा जो आपकी मानसिक शान्ति का कारण बनेगा, कोई भी कार्य आप हाथ में लेंगे, उसमें अवश्य सफलता होगी आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी, मान की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा, सामाजिक तथा धार्मिक कामों में दिलचस्पी बनी रहेंगी, नौकरी पेशा वालों के लिए यद्यपि यह वर्ष दौड़-धूप तथा संघर्ष का ही होगा परन्तु मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, व्यापारी वर्ग भी लाभ में रहेगा, विद्यार्थियों के लिये, यह वर्ष सफलता का

है, धन लाभ के साथ-साथ खर्च का योग भी बलवान है, प्रायः खर्च शुभ कामों में ही होगा घर में विवाह आदि महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा।

सात बाकी बचे:- तो इस वर्ष आपका भाग्योदय होगा, आप केवल प्रोग्राम ही न बनायें अपितु हर प्रोग्राम को अमली रूप देने का प्रयत्न कीजिये, इस वर्ष ग्रह अनुकूल है आपके कठिन से कठिन काम को सफल बनाने में सहायक होंगे, यदि आप गृहस्थी हैं तो घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम अवश्य बनेगा, यदि आप मकान या जायदाद बनाने का विचार रखते हैं तो इस वर्ष इस शुभ अवसर को हाथ से न जाने दें यदि आप व्यापार करते हैं या नौकरी अथवा विद्यार्थी हैं तो आप का हर काम जरा सा ध्यान देने पर सफल होगा आपको यात्रा का प्रोग्राम बने जिसें संतोषजनक सफलता होगी, आपका स्वास्थ्य भी इस वर्ष ठीक रहेगा, धन लाभ के साथ-साथ खर्च का योग है।

बाकी कुछ न बचे:- तो वर्ष भर के लिये संघर्ष तथा दौड़धूप का सूचक है, गृहस्थी होने पर घरेलू परेशानियाँ आपका पीछा छोड़ेंगी नहीं, यदि आप नौकरी करते हैं तो दफ्तर में प्रायः मन अशान्त रहेगा, सम्बन्धित अफसरों से अनबन रहेगी, नौकरी सम्बन्धित यदि तरक्की की कोई आशा है, हर एक कार्य ज्यों का त्यों लटकता रहेगा, यदि आप व्यापार करते हैं परिश्रम बहुत करना होगा परन्तु पल्ले कुछ नहीं पड़ेगा, यदि आप विद्यार्थी है तो परिश्रम करने पर भी संतोषजनक सफलता नहीं होगी, यद्यपि यह वर्ष हर पहलू से ढीला ही रहेगा ऐसा होने पर भी धार्मिक प्रवृति, सामाजिक कामों में दिलचस्पी बनी रहेगी, उपाय के रूप में आप हर सोमवार को भगवान् शंकर पर जल चढाया करें।

व्रतों की सूची 2059 के लिये

संकट चतुर्थी

वैशाख	30	अप्रैल	भौमवार
ज्येष्ठ	29	मई	बुधवार
आषाढ़	28	जून	शुक्रवार
श्रावण	27	जुलाई	शनिवार
भाद्र	26	अगस्त	सोमवार
आश्विन	25	सितम्बर	बुधवार
कार्तिक	25	अक्टूबर	शुक्रवार
मार्ग	23	नवम्बर	शनिवार
पौष	23	दिसम्बर	सोमवार
माघ	21	जनवरी	भौमवार
फाल्गुन	20	फरवरी	गुरुवार
चैत्र	21	मार्च	शुक्रवार

कुमार षष्ठी व्रत

चैत्र	18	अप्रैल	गुरुवार
वैशाख	17	मई	शुक्रवार
ज्येष्ठ	16	जून	रविवार
आषाढ़	15	जुलाई	सोमवार
श्रावण	13	अगस्त	भौमवार
भाद्र	11	सितम्बर	बुधवार
आश्विन	11	अक्टूबर	शुक्रवार
कार्तिक	9	नवम्बर	शनिवार
मार्ग	9	दिसम्बर	सोमवार
पौष	8	जनवरी	बुधवार
माघ	7	फरवरी	शुक्रवार
फाल्गुन	9	मार्च	रविवार

अष्टमी व्रत

चैत्र	20	अप्रैल	शनिवार
वैशाख	20	मई	सोमवार
ज्येष्ठ	18	जून	भौमवार
आषाढ़	17	जुलाई	बुधवार
श्रावण	15	अगस्त	गुरुवार
भाद्र	14	सितम्बर	शनिवार
आश्विन	13	अक्टूबर	रविवार
कार्तिक	12	नवम्बर	भौमवार
मार्ग	12	दिसम्बर	गुरुवार
पौष	11	जनवरी	शनिवार
माघ	9	फरवरी	रविवार
फाल्गुन	11	मार्च	भौमवार

पूर्णिमा व्रत

चैत्र	27 अप्रैल	शनिवार
वैशाख	26 मई	रविवार
ज्येष्ठ	24 जून	सोमवार
आषाढ़	24 जुलाई	बुधवार
श्रावण	22 अगस्त	गुरुवार
भाद्र	21 सितम्बर	शनिवार
आश्विन	21 अक्टूबर	सोमवार
कार्तिक	20 नवम्बर	बुधवार
मार्ग	19 दिसम्बर	गुरुवार
पौष	18 जनवरी	शनिवार
माघ	16 फरवरी	रविवार
फाल्गुन	18 मार्च	भौमवार

अमावसी व्रत

वैशाख	12 मई	रविवार
ज्येष्ठ	10 जून	सोमवार
आषाढ़	10 जुलाई	बुधवार
श्रावण	8 अगस्त	गुरुवार
भाद्र	7 सितम्बर	शनिवार
आश्विन	6 अक्टूबर	रविवार
कार्तिक	4 नवम्बर	सोमवार
मार्ग	4 दिसम्बर	बुधवार
पौष	2 जनवरी	गुरुवार
माघ	1 फरवरी	शनिवार
फाल्गुन	3 मार्च	सोमवार
चैत्र	1 अप्रैल	भौमवार

संक्रान्ति व्रत

वैशाख	14 अप्रैल	रविवार
ज्येष्ठ	15 मई	बुधवार
आषाढ़	15 जून	शनिवार
श्रावण	16 जुलाई	भौमवार
भाद्र	17 अगस्त	शनिवार
आश्विन	17 सितम्बर	भौमवार
कार्तिक	17 अक्टूबर	गुरुवार
मार्ग	16 नवम्बर	शनिवार
पौष	16 दिसम्बर	सोमवार
माघ	14 जनवरी	भौमवार
फाल्गुन	13 फरवरी	गुरुवार
चैत्र	15 मार्च	शनिवार

माता—पिता के चरणों में स्वर्ग है

एकादशी व्रत

चैत्र	23 अप्रैल	भौमवार
वैशाख	22 मई	बुधवार
ज्येष्ठ	21 जून	शुक्रवार
आषाढ़	20 जुलाई	शनिवार
श्रावण	18 अगस्त	रविवार
भाद्र	17 सितम्बर	भौमवार
आश्विन	16 अक्टूबर	बुधवार
कार्तिक	15 नवम्बर	शुक्रवार
मार्ग	15 दिसम्बर	रविवार
पौष	14 जनवरी	भौमवार
माघ	13 फरवरी	गुरुवार
फाल्गुन	14 मार्च	शुक्रवार

गीता पढ़िये

पंचक आरम्भ		पंचक समाप्त	
5 मई	9 बजे 4 दिन	10 मई	9 बजे 53 दिन
1 जून	5 बजे 8 दिन	6 जून	5 बजे 26 शां
28 जून	1 बजे 37 रात	3 जुलाई	1 बजे 31 रात
26 जुलाई	9 बजे 44 दिन	31 जुलाई	9 बजे 27 दिन
22 अगस्त	4 बजे 47 दिन	27 अगस्त	4 बजे 38 दिन
18 सितम्बर	10 बजे 47 रात	23 सितम्बर	11 बजे रात
15 अक्टूबर	4 बजे 34 रात	20 अक्टूबर	5 बजे 5 रात
12 नवम्बर	11 बजे 19 दिन	17 नवम्बर	11 बजे 32 दिन
9 दिसम्बर	7 बजे 41 रात	14 दिसम्बर	6 बजे 51 शां
6 जनवरी	5 बजे प्रात:	10 जनवरी	2 बजे 54 रात
2 फरवरी	2 बजे 2 दिन	7 फरवरी	11 बजे 6 दिन
1 मार्च	9 बजे 26 रात	6 मार्च	6 बजे 45 शां
28 मार्च	3 बजे 16 रात	2 अप्रैल	7 बजे 29 रात

गण्डान्त आरम्भ	गण्डान्त समाप्त	गण्डान्त आरम्भ	गण्डान्त समाप्त
13 अप्रैल 8 वजे 31 रात	14 अप्रैल 9 वजे 52 दिन	5 सितम्बर 6 वजे 23 शां	6 सितम्बर 5 वजे 18 प्रातः
22 अप्रैल 5 वजे 17 प्रातः	22 अप्रैल 4 वजे 41 दिन	13 सितम्बर 11 वजे 19 रात	14 सितम्बर 11 वजे 19 दिन
30 अप्रैल 9 वजे 54 दिन	30 अप्रैल 9 वजे 26 रात	23 सितम्बर 4 वजे 16 दिन	24 सितम्बर 5 वजे 47 प्रातः
9 मई 3 वजे 16 रात	10 मई 4 वजे 29 दिन	2 अक्टूबर 4 वजे 44 रात	3 अक्टूबर 3 वजे 43 दिन
19 मई 11 वजे 17 दिन	19 मई 11 वजे रात	11 अक्टूबर 6 वजे 42 प्रातः	11 अक्टूबर 6 वजे 27 शां
27 मई 7 वजे 58 रात	28 मई 7 वजे 15 प्रातः	20 अक्टूबर 10 वजे 22 रात	21 अक्टूबर 11 वजे 50 दिन
6 जून 10 वजे 45 दिन	6 जून 12 वजे 4 रात	30 अक्टूबर 1 वजे 13 दिन	30 अक्टूबर 12 वजे 43 रात
15 जून 4 वजे 43 दिन	15 जून 4 वजे 9 रात	7 नवम्बर 4 वजे 32 दिन	7 नवम्बर 3 वजे 45 रात
23 जून 4 वजे 51 रात	24 जून 4 वजे 40 दिन	16 नवम्बर 4 वजे 48 रात	17 नवम्बर 4 वजे 15 दिन
3 जुलाई 6 वजे 51 शां	4 जुलाई 8 वजे 12 दिन	26 नवम्बर 7 वजे 31 शां	27 नवम्बर 7 वजे 21 प्रातः
12 जुलाई 11 वजे 23 रात	13 जुलाई 10 वजे 32 दिन	4 दिसम्बर 3 वजे 26 रात	5 दिसम्बर 2 वजे 33 दिन
21 जुलाई 11 वजे 19 दिन	21 जुलाई 11 वजे 55 रात	14 दिसम्बर 12 वजे 6 दिन	14 दिसम्बर 1 वजे 36 रात
30 जुलाई 2 वजे 43 रात	31 जुलाई 4 वजे 6 दिन	23 दिसम्बर 1 वजे रात	24 दिसम्बर 12 वजे 43 दिन
9 अगस्त 8 वजे 9 दिन	9 अगस्त 7 वजे शां	1 जनवरी 1 वजे 12 दिन	1 जनवरी 10 वजे 50 रात
17 अगस्त 5 वजे 38 दिन	18 अगस्त 5 वजे 40 प्रातः	10 जनवरी 8 वजे 11 रात	11 जनवरी 9 वजे 41 दिन
27 अगस्त 9 वजे 53 दिन	27 अगस्त 11 वजे 24 रात	20 जनवरी 7 वजे 50 प्रातः	20 जनवरी 7 वजे 16 शां

गण्डान्त आरम्भ	गण्डान्त समाप्त
29 जनवरी 8 वजे 32 रात	30 जनवरी 7 वजे 45 प्रातः
6 फरवरी 4 वजे 21 रात	7 फरवरी 5 वजे 54 दिन
16 फरवरी 4 वजे 58 दिन	16 फरवरी 4 वजे 14 रात
24 फरवरी 2 वजे 2 रात	25 फरवरी 1 वजे 49 दिन
6 मार्च 12 वजे 3 दिन	6 मार्च 1 वजे 31 रात
15 मार्च 3 वजे 28 रात	16 मार्च 2 वजे 40 दिन
24 मार्च 7 वजे 55 प्रातः	24 मार्च 7 वजे 32 शां

ग्रह संचार 2059 के लिये

सूर्य

13 अप्रैल मेष में
14 मई वृष में
15 जून मिथुन में
16 जुलाई कर्क में
16 अगस्त सिंह में
16 सितम्वर कन्या में
17 अक्टूवर तुला में
16 नवम्वर वृश्चिक में
16 दिसम्वर धनु में
14 जनवरी मकर में
13 फरवरी कुम्भ में
14 मार्च मीन में

भौम

19 मई मिथनु में
4 जुलाई कर्क में
19 अगस्त सिंह में
6 अक्टूवर कन्या में
22 नवम्वर तुला में
7 जनवरी वृश्चिक में
22 फरवरी धनु में

बुध

25 अप्रैल वृष में
14 मई वुध वक्री
4 जुलाई मिथुन में
19 जुलाई कर्क में
1 अगस्त सिंह में
21 अगस्त कन्या में
28 अक्टूवर तुला में
15 नवम्वर वृश्चिक में
4 दिसम्वर धनु में
25 दिसम्वर मकर में
10 जनवरी धनु में वक्री
8 फरवरी मकर में
1 मार्च कुम्भ में
18 मार्च मीन में

बृहस्पति

4 जुलाई कर्क में

शुक्र

21 अप्रैल वृष में
15 मई मिथुन में
9 जून कर्क में
5 जुलाई सिंह में
1 अगस्त कन्या में
31 अगस्त तुला में

	शनि	राहु	केतु
1 जनवरी वृश्चिक में 30 जनवरी धनु में 24 फरवरी मकर में	23 जुलाई मिथुन में 8 जनवरी वृष में वक्री	वृष में	वृश्चिक में

हमारे पर्व और त्यौहार 2059 के लिये

थालस बुथ वुछुन	13 अप्रैल	ज्येष्ठाष्टमी	18 जून	जन्माष्टमी	30 अगस्त	वेरीनाग यात्रा	19 सितम्वर
नवरेह (नवरात्रा)	13 अप्रैल	निर्जला एकादशी	21 जून	कुशामावसी	7 सितम्वर	अनन्त चतुर्दशी }	20 सितम्वर
वैशाखी	13 अप्रैल	हार अष्टमी	17 जुलाई	विनायक चतुर्थी	10 सितम्वर	अनन्त नाग यात्रा }	
जंग त्रय	15 अप्रैल	हार नवमी	18 जुलाई	वराह पंचमी	11 सितम्वर	पितृ पक्ष आरम्भ	22 सितम्वर
दुर्गाष्टमी	20 अप्रैल	हार द्वादशी (वाह)	21 जुलाई	गंगाष्टमी, शारदाष्टमी }	14 सितम्वर	साहिव सप्तमी	28 सितम्वर
रामनवमी, उमा ज. }	21 अप्रैल	ज्वाला चतुर्दशी	23 जुलाई	लल्लेश्वरी जयन्ती }		महालक्ष्मी अष्टमी	30 सितम्वर
शिवाभगवती जयंति }		गुरु पूर्णिमा	24 जुलाई	काश्मीरी पण्डितों }		पित्रामावसी	6 अक्टूवर
ऋषिपीर श्राद्ध	2 मई	व्यास पूजा	24 जुलाई	का वलिदान दिवस }		नवरात्रारम्भ	7 अक्टूवर
अक्षया तृतीया }	15 मई	श्रावण द्वादशी	19 अगस्त	नारायणी एकादशी }	17 सितम्वर	दुर्गाष्टमी	13 अक्टूवर
परशु राम जयन्ती }		रक्षा वन्धन }	22 अगस्त	गौतम नाग यात्रा }		महानवमी }	14 अक्टूवर
गणेश चतुर्दशी	25 मई	अमर नाथ यात्रा }		वितस्ता त्रयोदशी		सरस्वती विर्सजन }	
		चन्दन षष्ठी	28 अगस्त				

विजयादशमी	15 अक्टूबर	साहिव सप्तमी	24 जनवरी	हुरि अकदोह	17 फरवरी	थाल भरुण	13 मार्च
दीपावली	4 नवम्बर	शिव चतुर्दशी	30 जनवरी	होराष्टमी	24 फरवरी	सोन्थ	14 मार्च
सोमामावसी	4 नवम्बर	गौरी तृतीया	4 फरवरी	चक्रेश्वर यात्रा		होली	17 मार्च
भाई दूज	6 नवम्बर	त्रिपुरा चतुर्थी	5 फरवरी	शिवरात्रि (हरेथ)	28 फरवरी	चित्र चुदाह	31 मार्च
मुंजहर तहर	20 दिसम्बर	वसन्त पंचमी	6 फरवरी	शिव चतुर्दशी	2 मार्च	श्री भट्ट दिवस	
क्ष्यचरि अमावसी	2 जनवरी	सूर्य सप्तमी	8 फरवरी	वटुक परमोजुन		थाल भरुण	1 अप्रैल
शिशर संक्रान्ति	14 जनवरी	भीमसेन एकादशी	13 फरवरी	डुन्धमावसी	3 मार्च	विचार नाग यात्रा	
काश्मीर पण्डितों		यक्षणी चतुर्दशी		सोमामावसी			
का जन्म भूमि	19 जनवरी	काव पूर्णिमा	16 फरवरी	तैलाष्टमी	11 मार्च		
निष्क्रासन दिवस		माघ पूर्णिमा					

निषेध समय 2059 के लिये

बृहस्पति अस्त :-

9 जुलाई से 1 अगस्त तक

स्यंघ (सिंह राशि में सूर्य) :

17 अगस्त से 16 सितम्बर तक

श्राद्ध (पितृ पक्ष) : 22 सित. से 6 अक्टूबर तक

शुक्रास्त :

22 अक्टूबर से 6 नवम्बर तक

पौष (धनु राशि में सूर्य) :

15 दिसम्बर से 14 जनवरी 2003 तक

चैत्र कृष्ण पक्ष : 19 मार्च से 1 अप्रैल तक

काश्मीर के महात्माओं की जयन्तियाँ श्राद्ध अथवा यज्ञ

नोटः- नीचे लिखे गए श्राद्धों में 'दि' 'प्र' के आधार से एक दिन की तिथि आगे पीछे भी हो सकती है स्वयं ठीक कीजिए।

चण्डीग्राम महात्मा यज्ञ	चैत्र शुक्ल पक्ष सप्तमी	20 अप्रैल	स्वामी आनन्द जी विलगाम	आषाढ शुक्ल पक्ष सप्तमी	16 जुलाई
स्वामी भाई टोठ जी महाराज	चैत्र शुक्ल पक्ष दशमी	22 अप्रैल	भगवान् गोपीनाथ जयन्ती	आषाढ शुक्ल पक्ष द्वादशी	21 जुलाई
स्वामी कुमार जी जयन्ती	चैत्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	24 अप्रैल	स्वा. पुष्कर नाथ यज्ञ	आषाढ शुक्ल पक्ष द्वादशी	21 जुलाई
स्वा॰ बोन काका यज्ञ	वैशाख कृष्ण पक्ष चतुर्थी	30 अप्रैल	स्वामी विद्याधर जी यज्ञ	आषाढ शुक्ल पक्ष त्रयो.	22 जुलाई
जानकीनाथ साहिब दर जयन्ती	वैशाख कृष्ण पक्ष सप्तमी	3 मई	स्वामी लाल जी यज्ञ	श्रावण कृष्ण पक्ष तृतीया	27 जुलाई
श्री महादेव काक भान जयन्ती	वैशाख कृष्ण पक्ष सप्तमी	3 मई	ग्रट बब दिवस	श्रावण कृष्ण पक्ष द्वादशी	6 अगस्त
श्री सर्वानन्द जी गुसानी गुण्ड	वैशाख कृष्ण पक्ष एका.	8 मई	जानकीनाथ साहिब दर यज्ञ	श्रावण शुक्ल पक्ष अष्टमी	15 अगस्त
श्री स्वामी लक्ष्मण जी जयन्ती	वैशाख कृष्ण पक्ष द्वादशी	9 मई	स्वामी गोविन्द कौल यज्ञ	श्रावण शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	21 अगस्त
श्री शकर साहिब [illegible]	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रति	13 मई	स्वामी गण काक यज्ञ	श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	22 अगस्त
योगीराज धर्मदत्त जी यज्ञ	वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया	15 मई	पं॰ प्रेम नाथ शास्त्री यज्ञ	भाद्र कृष्ण पक्ष द्वितीया	24 अगस्त
श्री काक जी यज्ञ	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष द्वितीया	28 मई	स्वामी परमानन्द जी यज्ञ	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी	10 सित.
स्वा. बादशाह कलन्दर जयन्ती	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष चतुर्थी	30 मई	स्वामी कृष्ण जू राजदान जं॰	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी	10 सित.
भगवान् गोपी नाथ यज्ञ	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष द्वितीया	12 जून	माता उमादेवी यज्ञ	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	14 सित.
पण्डित शंकर राजदान यज्ञ	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्टमी	18 जून	ललीश्वरी जयन्ती	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	14 सित.
श्री सिद्ध बब जयन्ती	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष नवमी	19 जून	श्री शकर साहिब यज्ञ	आश्विन कृ. पक्ष द्वितीया	23 सित.
श्री मोहनलाल जी जयन्ती	आषाढ कृष्ण पक्ष तृतीया	27 जून	स्वामी लक्ष्मण जी यज्ञ	आश्विन कृ. पक्ष चतुर्थी	25 सित.
स्वामी स्वयमानन्द जयन्ती	आषाढ शुक्ल पक्ष षष्ठी	15 जुलाई	पं॰ प्रेम नाथ शास्त्री जयन्ती	आश्विन कृष्ण पक्ष सप्तमी	29 सित.

स्वामी हर काका जयन्ती	आश्विन कृ. पक्ष त्रयोदशी	4 अक्टू.	स्वामी विद्याधर जी जयन्ती	मार्ग शुक्ल पक्ष तृतीया	6 दिस.
स्वामी काल बब यज्ञ	आश्विन कृ. पक्ष चतुर्दशी	5 अक्टू.	स्वामी कृष्ण जू राजदान यज्ञ	मार्ग शुक्ल पक्ष अष्टमी	12 दिस.
स्वामी हरिकृष्ण यज्ञ	आश्विन शु. पक्ष द्वितीया	8 अक्टू.	श्री नन्द लाल साहिब जयन्ती	पौष कृष्ण पक्ष दशमी	29 दिस.
श्री नन्दलाल साहिब यज्ञ	आश्विन शु. पक्ष त्रयोदशी	19 अक्टू.	स्वामी राम जी जयन्ती	पौष कृष्ण पक्ष द्वादशी	31 दिस.
श्री सिद्ध बब यज्ञ	कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वितीया	23 अक्टू.	श्री अशोकानन्द यज्ञ	पौष कृष्ण पक्ष अमावसी	2 जनवरी
ज्योतिष आप्ताभ शर्मा यज्ञ	कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्थी	25 अक्टू.	स्वामी शिव राम यज्ञ	पौष शुक्ल पक्ष प्रतिपदा	3 जनवरी
स्वा. विदलाल (गुशी) यज्ञ	कार्तिक कृष्ण पक्ष षष्ठी	27 अक्टू.	स्वामी बोन काक जयन्ती	पौष शुक्ल पक्ष दशमी	13 जन.
महादेव काक जयन्ती	कार्तिक कृष्ण पक्ष नवमी	30 अक्टू.	मथुरा देवी यज्ञ	पौष शु. पक्ष चतुर्दशी	17 जन.
स्वामी महताब काक जी जं॰	कार्तिक शुक्ल पक्ष चतुर्थी	8 नवम्बर	श्री आप्ताभ राम यज्ञ	माघ कृष्ण पक्ष पंचमी	22 जन.
श्री मधुसूदन राजदान यज्ञ	कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी	10 नव.	स्वामी राम जी यज्ञ	माघ कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	31 जन.
स्वामी गोकुलनाथ जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष सप्तमी	11 नव.	श्री नन्द लाल जी यज्ञ	माघ शुक्ल पक्ष तृतीया	4 फर.
श्री महादेव काक यज्ञ	कार्तिक शुक्ल पक्ष अष्टमी	12 नव.	शारिका जी यज्ञ	फाल्गुन कृष्ण पक्ष तृतीया	19 फर.
स्वामी आत्माराम यज्ञ	कार्तिक शुक्ल पक्ष एका.	15 नव.	श्री विदलाल जयन्ती-गुशी	फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्थी	20 फर.
स्वा. हरिकृष्ण जी जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष एका.	15 नव.	स्वामी महताब काक जी यज्ञ	फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वितीया	5 मार्च
श्रीमती कमला जी काचरु जं॰	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वादशी	16 नव.	श्री नन्दलाल जी जयन्ती	फाल्गुन शुक्ल पक्ष अष्टमी	11 मार्च
स्वामी पुष्करनाथ जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वादशी	16 नव.	स्वामी गोविन्द कौल जयन्ती	फाल्गुन शुक्ल पक्ष त्रयो.	16 मार्च
चण्डीगाम महात्मा जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	20 नव.	श्री काल बब यज्ञ	फाल्गुन शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	18 मार्च
स्वामी काशीनाथ यज्ञ-हुगामा	मार्ग कृष्ण पक्ष पंचमी	25 नव.	स्वा. हरकाक यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष सप्तमी	24 मार्च
स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती यज्ञ	मार्ग कृष्ण पक्ष षष्ठी	26 नव.	श्री किशकाक वहीपोरा यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष नवमी	27 मार्च
स्वामी सर्वानन्द जी यज्ञ	मार्ग कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	2 दिस.	ब्रह्मचार्य अर्जुनदेव यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष दशमी	29 मार्च
शारिका जी जयन्ती यज्ञ	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	6 दिस.	श्री गाशकाक यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष अमावसी	1 अप्रैल

आश्लेषा नक्षत्र देखने का चित्र 2059 के लिये												
पक्ष	तारीख	तिथि	आरम्भ	तिथि	पहला पाद	तिथि	दूसरा पाद	तिथि	तीसरा पाद	तिथि	चौथा पाद	तारीख
चैत्र शु. पक्ष	21 अप्रै.	नव.	12-12 दिन	नव.	5-52 शां	नव.	11-32 रात	नव.	5-12 रात	दशम्यां	10-52 दिन	22 अप्रै.
वैशाख शु. पक्ष	18 मई	षष्ठ.	5-57 शां	षष्ठ.	11-53 रात	षष्ठ.	5-39 रात	सप्त.	11-25 दिन	सप्त.	5-03 शां	19 मई
ज्येष्ठ शु. पक्ष	14 जून	चतुर्थी.	1-17 रात	पंच.	6-33 प्रातः	पंच.	11-50 दिन	पंच.	5-07 शां	पंच.	10-27 रात	15 जून
आषाढ़ शु. पक्ष	12 जुला.	द्विती.	6-34 प्रातः	द्विती.	12-10 दिन	द्विती.	5-46 दिन	द्विती.	11-22 रात	द्विती.	4-58 रात	12जुला.
श्रावण कृ. पक्ष	8 अग.	अमा.	3-39 दिन	अमा.	9-08 रात	अमा.	2-37 रात	प्रति.	8-06 दिन	प्रति.	1-36 दिन	9 अग.
भाद्र कृ. पक्ष	4 सित.	द्वाद.	1-56 रात	त्रयो.	7-25 प्रातः	त्रयो.	12-54 दिन	त्रयो.	6-23 शां	त्रयो.	11-53 रात	5 सित.
आश्विन कृ. पक्ष	2 अक्टू.	दश.	11-49 दिन	दश.	5-26 दिन	दश	11-03 रात	दश.	4-40 रात	एका.	10-18 दिन	3 अक्टू.
कार्तिक कृ. पक्ष	29 अक्टू.	अष्ट.	7-46 रात	अष्ट.	1-35 रात	अष्ट.	7-24 प्रातः	अष्ट.	1.13 दिन	नव.	7-03 रात	30अक्टू.
मार्ग कृ. पक्ष	25 नव.	पंच	1-42 रात	षष्ठ.	7-38 प्रातः	षष्ठी	1-34 दिन	षष्ठी.	7-30 शां	षष्ठी.	1-28 रात	26 नव.
पौष कृ. पक्ष	22 दिस.	तृती.	7-16 रात	तृती.	1-10 रात	चतु.	7-04 प्रातः	चर्तु.	12-58 दिन	चतु.	6-33 रात	23 दिस.
माघ कृ. पक्ष	19 जन.	प्रति.	2-32 दिन	प्रति.	8-17 रात	प्रति.	2-02 रात	द्वि.	7-47 प्रातः	द्वि.	1-35 दिन	20 जन.
माघ शु. पक्ष	15 फर.	त्रयो.	11-58 रात	त्रयो.	5-38 रात	चर्तु.	11-18 दिन	चर्तु.	4-48 दिन	चतुर्द.	10-39 रात	16 फर.
फाल्गुन शु. पक्ष	15 मार्च	द्वाद.	10-17 दिन	द्वाद.	5-39 दिन	द्वाद.	9-41 रात	द्वाद.	3-23 रात	त्रयो.	9-08 दिन	16 मार्च

मूल नक्षत्र देखने का चित्र 2059 के लिये

पक्ष	तारीख	तिथि	आरम्भ	तिथि	पहला पाद	तिथि	दूसरा पाद	तिथि	तीसरा पाद	तिथि	चौथा पाद	तारीख
वैशाख कृ. पक्ष	30 अप्रै.	चतु.	3-42 दिन	चतु.	9-39 रात	चतु.	3-36 रात	पंच	9-33 दिन	पंच	3-35 दिन	1 मई
ज्येष्ठ कृ. पक्ष	27 मई	प्रति.	1-40 रात	द्विती.	7-33 प्रातः	द्विती.	1-26 दिन	द्विती.	7-19 शां	द्विती.	1-15 रात	28 मई
ज्येष्ठ शु. पक्ष	24 जून	पूर्णि.	10-42 दिन	पूर्णि.	4-35 दिन	पूर्णि.	10-28 रात	पूर्णि.	4-21 रात	प्रति.	10-25 दिन	25 जून
आषाढ शु. पक्ष	21 जुला.	द्वाद.	5-55 दिन	द्वाद.	11-57रात	द्वाद.	5-59 रात	त्रयो.	12-01 दिन	त्रयोद.	6-03 शां	22 जुल.
श्रावण शु. पक्ष	17 अग.	दश.	11-36 रात	दश.	5-43 रात	एका.	11-50 दिन	एका.	5-57 दिन	एका.	12-04 रात	18 अग.
भाद्र शु. पक्ष	13 सित.	सप्त.	5-14 रात	अष्ट.	11-19 दिन	अष्ट.	5-24 दिन	अष्ट.	11-29 रात	अष्ट.	5-33 रात	14 सप्त.
आश्विन शु. पक्ष	11 अक्टू.	षष्ठी.	12-29 दिन	षष्ठी	6-18 शां	षष्ठी	12-07 रात	षष्ठी	5-56 रात	सप्त	12-11 दिन	12 अक.
कार्तिक शु. पक्ष	7 नव.	तृती.	10-03 रात	तृती.	3-47 रात	चतु.	9.31 दिन	चतु.	3.15 दिन	चतु.	9.00 रात	8 नव.
मार्ग शु. पक्ष	5 दिस.	प्रति	8-52 दिन	प्रति	2-30 दिन	प्रति	8-08 रात	प्रति.	1-46 रात	द्विती.	7-27 दिन	6 दिस.
पौष कृ. पक्ष	1 जन.	चतुर्द.	6-49 रात	चतुर्द.	12-30 रात	अमा.	6-11 प्रातः	अमा.	11-52 दिन	अमा.	5-36 शां	2 जन.
माघ कृ. पक्ष	28 जन.	एकाद.	2-20 रात	द्वाद.	8-20 प्रातः	द्वाद.	2-00 दिन	द्वाद.	7-50 शां	द्वाद.	1-42 रात	29 जन.
फाल्गुन कृ. पक्ष	25 फर.	नव.	7-52 प्रातः	नव.	1-41 दिन	नव.	7-30 शां	नव.	1-19 रात	दश.	7-36 प्रातः	26 फर.
चैत्र कृ. पक्ष	24 मार्च	सप्त.	1-39 दिन	सप्त.	7-30 शां.	सप्त.	1-21 रात	अष्ट.	7-12 प्रातः	अष्ट.	1-04 दिन	25 मार्च

ग्रहण विवरण: **ग्रस्तोदय कंकण सूर्य ग्रहण:-** यह ग्रहण ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अमावसी सोमवार-तदनुसार 10 तथा 11 जून की रात्रि को होगा परन्तु यह ग्रहण भारत के पूर्वोत्तर के कुछ भागा में केवल 9, 10 मिनटों के लिय दिखाई देगा। इस कारण इस दिन व्रत इत्यादि रखने की जरूरत नहीं है।

खग्रास सूर्य ग्रहण: यह ग्रहण मार्ग कृष्ण पक्ष अमावसी बुधवार तदनुसार 4 दिसम्वर 2002 को होगा यह ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा इस कारण व्रत रखने की जरूरत नहीं है।

2059 ज्योतिष की नजर में

- वर्ष का राजा शुक्र कश्मीरी पद्धति से
- वर्ष का राजा शनि भारतीय पद्धति से
- वर्ष का मन्त्री शनि
- धान्य का स्वामी सूर्य
- अजनास के स्वामी भौम
- मेघ के स्वामी शनि
- रस का स्वामी बृहस्पति
- धतुओं के स्वामी भौम
- रक्षामन्त्री शुक्र
- फलों के स्वामी शुक्र
- धन का स्वामी चन्द्रमा
- सम्वत्सर का नाम मन्मथ
- वृष का वाहन घोड़ा
- आषाढ़ नौवी 18 जुलाई

वर्ष के दस पदाधिकारी → ज्योतिष की नजर में

वर्ष का राजा	:	**शुक्र** (काश्मीरी पद्धति से) पृथ्वी सस्य से पूर्ण होगी, भूमि पर वहुत जल वर्षे, वृक्षों में फल वहुत हो, पृथ्वी राजसुख से युक्त हो।
वर्ष का राजा	:	**शनि** (भातीय पद्धति से) वर्षा का अभाव, रोगों से मनुष्य पीड़ित होंवे, राजाओं में युद्ध, चोरों से भय, जनता क्षुधा से पीड़ित।
वर्ष का मन्त्री	:	**शनि**, राजा विनय रहित हो जावे, जनता दुःखी होवे, वर्षा का अभाव, कृषि वर्ग वर्षा के अभाव से चिन्तित हो।
धान्य का स्वामी	:	**सूर्य** यदि धान्याधिप हो तो जलाभाव उडद, मूंग, तिल मंहगे, राजविग्रह, धान्यादि का भाव तेज, जनता में रोगों के कारण कष्ट।
अजनास के स्वामी	:	**भौम** होने से हाथी, गदर्भ, ऊंट, गाय, वैल पशु पक्षियों में रोगों का प्रार्दुभाव, वर्षा की वेढ़ंगी चाल, अनाज महंगा।
मेघ के स्वामी	:	**शनि** होने से वर्षा का अभाव, नाना प्रकार के रोग, राजा लोग चिंतित, आकस्मिक उपद्रवों से जनता दुःखी।
रस का स्वामी	:	**बृहस्पति** होने से प्रजा में सुख का अनुभव, तृण इत्यादि की उपज अच्छी, ब्राह्मण पूजन में वृद्धि।

धातुओं के स्वामी : **भौम** होने से मूंगा, रक्त वस्त्र, लाल चन्दन ताम्वा के भावों में वढ़ोत्तरी, कारखानों में उपज अच्छी होगी।

रक्षामन्त्री : **शुक्र** होने से शासन वर्ग तथा प्रजा में सुख तथा शान्ति का योग, व्यापारी लोगों को लाभ, हर ओर से सुख का माहोल।

फलों के स्वामी : **शुक्र** होने से प्रत्येक प्रकार के वृक्ष फले फुले, प्रशासनिक वर्ग को सुख तथा शान्ति।

धन के स्वामी : **चन्द्रमा** होने से रसदार वस्तुओं के खरीदने-वेचने में धन प्राप्ति, वस्त्र, धान, तैल, घी आदि पदार्थों से धन प्राप्ति, उद्योगपति पूंजी का खुलकर निवेश करेंगे।

सम्वत्सर का नाम : **मन्मथ** होने से राज विरोध, पूर्व देशों में लोगों को पीड़ा, चावल, गुड, शक्कर, चीनी, गेहूँ आदि की पैदावार सन्तोषजनक रहेगी।

वर्ष का वाहन : **घोड़ा** होने से भूमिकम्प, राजाओं में विग्रह वर्पा की कमी, आतंकवाद में वढ़ावा।

संसारः इस वर्ष क्रूर ग्रहों ने छः पदों पर अपना प्रभत्व स्थापित किया है और विशेषतौर से दो महत्वपूर्ण पदों राजा तथा मन्त्री को भी अपने पास रखा है केवल चार पद शुभ ग्रहों को मिले है, सूर्य भी अर्द्रा नक्षत्र में क्रूर वार (शनिवार) को ही प्रवेश करता है यह मिला-जुला हानिकारक योग संसार के लिये भयंकर अशान्ति का संकेत है, संसार में चारों और अशन्ति तथा आतन्कवाद का दवदवा छाया रहेगा शास्त्रों में लिखा है:-

जगत् चक्र

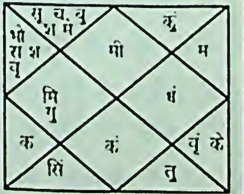

एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पंचखेचराः। प्लावयन्ति मही सर्वा रूधिरेण जलेन वा।।

अर्थात्:- जव चार क्रूर ग्रह एक साथ एक राशि में होंगे तो पूरी पृथ्वी खून तथा जल से लथपथ होती है। इस वर्ष 14 मई को चार क्रूर ग्रह जगत कुण्डली के तीसरे भाव में एक साथ मिलते हैं। जिस के प्रभाव से आकस्मिक दुर्घटनायें, भूकम्प, वाढ़, तूफान तथा दैवी उत्पातों से जनधन की हानि कहीं छत्रभंग का योग तथा कहीं पर राजनैतिक उत्थल-पुत्थल देखने में आएगा। शक्तिशाली देश एक-दूसरे पर अपना वर्चस्व जमाने के लिये नये प्रकार के प्रमाणु अस्त्र-शस्त्रों का परीक्षण करते रहेंगे, उन्नतिशील तथा शान्ति प्रिय देश भी इन क्रूर लपटों से वचेंगे नहीं। शनि ने तीन पदों को सम्भाला है इस कारण पश्चिमी देशों पर इस का ज्यादा प्रभाव होगा। क्योंकि शनि पश्चिमी दिशा का स्वामी माना जाता है पश्चिमी देशों में भी विशेष तौर से मुस्लिम देशों में राजनैतिक उल्ट-फेर आपसी टकराव तथा दैवी दुर्घटनाओं से असंख्य धन जन का नाश होगा।

विश्व युद्ध और 2002

4 अप्रैल 2002 को वृष राशि में तीन क्रूर ग्रह भौम, शनि तथा राहु एक साथ हो रहे हैं और 19 मई तक इकट्ठे रहते है यह अशुभ योग पूरे विश्व के लिये खतरे की घण्टी है इस समय में आतंकवाद चरम सीमा पर पहुँचेगा तथा तीसरे विश्व युद्ध जैसा माहौल चारों और दिखाई देगा यह अशुभ योग विशेषतौर से मुस्लिम ममालिकों के लिये अशुभ रहेगा, मुस्लिम मामलिक आपसी फूट के कारण विशेष हानि में रहेंगे। भारत भी इस चपेट से वचेगा नहीं परन्तु जगत् लग्न में बृहस्पति का होना तथा काश्मीरी पद्धति से शुक्र का राजा होना तथा रक्षा मन्त्री शुक्र का होना तीसरे विश्व युद्ध को वचाये रखने

में पूरे सहायक रहेंगे जव भी तीसरा विश्व युद्ध होगा तो भारत एक शाक्तिशाली देश के रूप में उभर कर आयेगा, तथा तीसरे विश्व युद्ध का आरम्भ भारत से नहीं होगा।

भारत

वर्ष चक्र

गणतन्त्र चक्र

2059 का शुभारम्भ 12 अप्रैल 2002 को रात्रि के 12 वजे 51 मिनट पर धनु लग्न पर हो रहा है 53वां गणतन्त्र कर्क लग्न से आरम्भ हुआ तथा लग्नेश चन्द्रमा बारहवें में बृहस्पति तथा राहु के साथ वैठा हुआ है और काल सर्प का योग बनाता है, काल सर्प योग के विषय में फलित ज्योतिषयों के अलग-अलग मत होने पर मेरे विचार से यह योग भारत वर्ष के लिये सोने पर सुहागे का काम देगा, भारत की प्रभुत्वा को स्वीकार करने के लिये वड़े-वड़े शाक्तिशाली देश विवश होंगे, अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर भारत की प्रतिष्ठा में आश्चर्यचकित वृद्धि होगी, वर्ष का राजा शुक्र तथा शनि के मिले-जुले प्रभाव से भारत के मैत्री संबंध शाक्तिशाली देशों के साथ सुदृढ़ होंगे क्रूर ग्रहों के प्रभाव से भारत वचेगा नहीं उन के प्रभाव से यहां की आर्थिक स्थिति में कभी ढीलापन तथा कभी दृढ़ता के कारण यहां की आर्थिक स्थिति डांवाडोल रहेगी जिस का प्रभाव आम जनता पर भी पड़ सकता है, जो यहां के शासक वर्ग के लिये चिन्ता का कारण बनेगा, जगत् लग्न में चार ग्रहों का दूसरे भाव में होना तीन क्रूर ग्रहों का तीसरे भाव में होना भारत के लिये शुभ संकेत नहीं है इस अशुभ योग के प्रभाव से भारत में प्राकृतिक दुर्घटनायें, रेल दुर्घटनाएं, वम विस्फोट, आकाशी उपद्रव

तथा आतंकवाद का सिलसिला बढ़ता ही रहेगा।

काश्मीर ग्रहों का विशेष प्रभाव काश्मीर पर ही होता है, वर्ष के आरम्भ पर ही एक राशि में तीन क्रूर ग्रहों के प्रभाव से काश्मीर में आतंकवाद का ताण्डव नृत्य जोर पकड़ता जायेगा, जिस से जन, धन की हानि होगी पाकिस्तान के कई संगठन आतंकवाद को प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप में सहायता तथा समर्थन देते रहेंगे। वहां की सरकारी एजेंसी भी आतंकवाद को पनपने में किसी प्रकार की कसर बाकी नहीं रखेगी जिसके कारण यहां के राजनैतिक सामाजिक तथा प्राकृतिक विकास कार्यों में रुकावटें आयेंगी इसके अतिरिक्त कहीं पर भयंकर युद्ध जैसा माहौल देखने में आयेगा जिसके कारण यहां की जनता स्तब्ध रहेगी। प्रशासन आतंकवाद को दबाने में कई प्रकार के हथकंडों को प्रयोग में लायेगी जिसमें कुछ हद तक वह सफल भी रहेगी।

जरा ध्यान दें:

विस्थापन कुण्डली के ग्रहों को वेधाष्टक वर्ग, दृष्टि इत्यादि की कसौटी पर परखने से विदित होता है कि "काश्मीरी पण्डितों" का अभी काश्मीर वापिस जाना कोसों दूर है।

विस्थापन कुण्डली

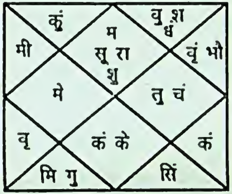

(शेष उस सर्व शाक्तिमान के हाथों में क्योंकि परमात्मा ही सर्वज्ञ है, ज्योतिषी नहीं)

चैत्र शुक्लपक्ष

विक्रमी सं॰ 2059, *13 अप्रैल की ग्रह स्थिति:-* मेष में सूर्य, बुध, शुक्र। वृष में भौम, शनि, राहु। मिथनु में बृहस्पति। वृश्चिक में केतु।

दिन	मान	वैशा.	अप्रैल	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	वसन्त ऋतु-उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	गुरु उदय	गुरु अस्त
32	00	1	13	शनि	आश्वि.प्र	05	45	प्रति. प्र	2	53	नवरेह, नवरात्रारम्भ, 8-31 रात से गण्डान्त, 5-49 रात मेष में (A)	6/8	6/56
	05	2	14	रवि	भर	दिन	रात	द्विती.प्र	4	37	9-52 दिन तक गण्डान्त, संक्रान्ति कालदण्ड:।	7	57
	10	3	15	सोम	भर. दि	08	01	तृती. प्र	6	2	जंगत्रय, 2-31 दिन वृष में चन्द्र, यज्ञ शिव मन्दिर (B)	6	58
	15	4	16	मंग.	कृति. दि	09	57	चतु.	दिन	रात	दिन अधिक, मुसलम्।	4	58
	20	5	17	बुध	रोहि. दि	11	29	चतु. दि	7	2	12-3 रात मिथुन में चन्द्र, शूलम्।	3	59
	25	6	18	गुरु	मृग. दि	12	32	पंच. दि	7	33	कुमार षष्ठी, मृत्यु:।	2	7/0
	30	7	19	शुक्र	आर्द्रा.दि	01	02	षष्ठी.दि	7	31	काम्य:।	1	1
	35	8	20	शनि	पुन. दि	12	56	सप्त.दि	6	52	त्र्यहः (अष्ट प्र 5.35) दुर्गाष्टमी, 7-1 दिन से कर्क में चन्द्र, छत्रम्	00	2
	40	9	21	रवि	तिष्या.दि	12	12	नव. प्र	3	41	11-20 दिन वृष में शुक्र, रामनवमी, उमा जयन्ती, (C)	5/59	2
	45	10	22	सोम	आश्ले.दि	10	52	दश. प्र	1	13	5-17 प्रात: से 4.41 दिन तक गण्डान्त, 10.52 दिन (D)	58	2
	50	11	23	मंगल	मघा दि	09	00	एका. प्र	10	16	कामदा एकादशी, कालदण्ड:।	57	3
	50	12	24	बुध	पूफा. दि	06	41	द्वाद. प्र	7	58	(उफा: प्र 4.5) 12.3 दिन कन्या में चन्द्र, स्थिर:।	55	3
	53	13	25	गुरु	हस्त. प्र	01	20	त्रयो. दि	3	28	2.50 रात वृष में बुध, क्षय:।	54	3
	58	14	26	शुक्र	चित्रा प्र	10	38	चर्तु. दि	11	55	11.59 दिन तुला में चन्द्र, गज:।	53	4
33	03	15	27	शनि	स्वाति प्र	08	10	पूर्णी. दि	8	30	त्र्यहः (प्रति प्र 4.23) सिद्ध:।	52	5

मध्याह्न: प्रति. से चतु. तक अपने दिन, पंच से अष्ट. तक पहले दिन, नव से त्रयो. तक अपने दिन चतुर्दशी पूर्णि पहले दिन। श्राद्ध: प्रति. से चतु. अपने दिन, पंच. से अष्ट. पहले दिन, नव से त्रयो. अपने दिन, चर्तु. पूर्णि. पहले दिन। (A) सूर्य, मुहूर्त 15 किनारी, वैशाखी, सौम्य:। (B) पुरखू कम्प, फेज-2, वर:।, (C) शिवा भगवती जयन्ती, श्रीवत्स:।, (D) सिंह में चन्द्र, सौम्य:।

वैशाख कृष्णपक्ष

विक्रमी सं॰ 2059, *28 अप्रैल की ग्रह स्थितिः-* मेष में सूर्य। वृष में भौम, बुध, शुक्र, शनि, राहु। मिथुन में बृहस्पति। वृश्चिक में केतु।

दिन	मान	वैशा.	अप्रैल	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	वसन्त ऋतु-उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
33	10	16	28	रवि	विशा. दि	6	4	द्विती. प्र	2	43	12.38 दिन वृश्चिक में चन्द्र, उन्मूलम्।	5/50	7/6
	10	17	29	सोम	अनु. दि	4	33	तृती. प्र	12	43	मानसम्।	50	6
	15	18	30	भौम	ज्ये. दि	3	42	चतु. प्र	11	23	सकंट चतुर्थी, 9.54 दिन से 9.26 रात तक गण्डान्त, (A)	49	7
	20	19	मई	बुध	मूला दि	3	35	पंच. प्र	10	47	ध्वजः।	48	8
	23	20	2	गुरु	पूषा. दि	4	16	षष्ठी.प्र	11	1	ऋषि पीर श्राद्ध, 10.38 रात मकर में चन्द्र, प्राजापत्यः।	47	8
	27	21	3	शुक्र	उषा. दि	5	43	सप्त. प्र	12	1	आनन्द।	46	9
	32	22	4	शनि	श्रव. दि	7	48	अष्ट. प्र	1	39	स्थिरः।	45	10
	34	23	5	रवि	धनि. प्र	10	23	नव. प्र	3	45	9.4 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, मातंगः।	44	10
	40	24	6	सोम	शत. प्र	1	15	दश.	दिन	रात	दिन अधिक, अमृतम्।	43	11
	45	25	7	भौम	पूभा प्र	4	15	दश. दि	6	7	9.30 रात मीन में चन्द्र, काण्डः।	42	12
	50	26	8	बुध	उभा.	दिन	रात	एका. दि	8	34	अलापकः।	41	13
	55	27	9	गुरु	उभा. दि	7	10	द्वाद. दि	10	55	3.16 रात से गण्डान्त, स्वा. लक्ष्मण जी जयन्ती, (B)	40	14
	58	28	10	शुक्र	रवे. दि	9	53	त्रयो. दि	1	2	4.29 दिन तक गण्डान्त, 9.53 दिन मेष में चन्द्र (C)	40	15
34	00	29	11	शनि	अश्वि. दि	12	18	चर्तु. दि	2	50	3.10 दिन कृत्तिका में सूर्य, सौम्यः।	39	15
	5	30	12	रवि	भर दि	2	21	अमा. दि	4	15	8.47 रात वृष में चन्द्र, कालदण्डः।	38	16

मध्याह्न : प्रति. का पहले दिन, द्विती. से दश. तक अपने दिन, एका. द्वाद. का पहले दिन, त्रयो से अमा. तक अपने दिन।
श्राद्ध : प्रति. का पहले दिन, द्विती. से दश. तक अपने दिन, एका. से अमा. तक पहले दिन। (A) 3.42 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, मुद्गरम्। (B) निशात-काश्मीर, महेन्द्रनगर, जम्मू, नयोहा-देहली क्षत्रम। (C) और पंचक समाप्त, श्रीवत्सः।

वैशाख शुक्लपक्ष

विक्रमी सं॰ 2059, *13 मई की ग्रह स्थिति:-* मेष में सूर्य। वृष में भौम, शुक्र, शनि, बुध, राहु। मिथुन में बृहस्पति। वृश्चिक में केतु।

दिन	मान	वैशा	मई	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	ग्रीष्म ऋतु-उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
34	10	31	13	सोम	कृति. दि	4	00	प्रति. दि	5	15	मासान्त, स्थिरः।	5/,,	7/,,
	10	ज्ये.	14	भौम	रोहि. दि	6	15	द्वि. दि	5	50	2.42 रात वृष में सूर्य, मुहूर्त 30 किनारी, मातंगः।	37	17
	15	2	15	बुध	मृग. दि	6	5	तृती. दि	5	59	5.43 प्रातः मिथनु में चन्द्र, 2.48 दिन मिथुन में शुक्र (A)	36	18
	20	3	16	बृह.	आर्द्रा. दि	6	28	चतु. दि	5	41	बृहस्पति मास, काण्डः।	35	19
	22	4	17	शुक्र	पुन. दि	6	26	पंच. दि	4	57	12.26 दिन कर्क में चन्द्र, कुमार षष्ठी, अलापकः।	35	20
	25	5	18	शनि	तिष्य. दि	5	57	षष्ठी दि	3	46	मैत्रम्।	35	20
	30	6	19	रवि	आश्ले. दि	5	3	सप्त. दि	2	10	11.17 दिन से 11 बजे रात तक गण्डान्त, 5.3 दिन (B)	34	21
	32	7	20	सोम	मघा. दि	3	46	अष्ट. दि	12	•9	ध्वांक्षः।	33	22
	35	8	21	भौम	पूफा. दि	2	8	नव. दि	9	47	7.39 रात कन्या में चन्द्र, धौम्यः।	32	22
	37	9	22	बुध	उफा. दि	12	14	दश. दि	7	9	त्र्यहः (एका. प्र. 4.19) नारद एकादशी, हुमट वल यात्रा, प्रवर्धः।	32	23
	42	10	23	बृह.	हस्त. दि	10	10	द्वाद. प्र	1	24	9.7 रात तुला में चन्द्र, क्षयः।	31	24
	42	11	24	शुक्र	चित्रा. दि	8	3	त्रयो. प्र	10	30	गजः।	31	25
	45	12	25	शनि	स्वा. दि	6	00	चर्तु. प्र	7	47	(विशा. प्र 4.10) 10.38 रात वृश्चिक में चन्द्र, (C)	31	25
	50	13	26	रवि	अनु. प्र	2	41	पूर्णि. दि	5	21	मृत्युः।	30	26

मध्याह्न : प्रति. से अष्ट. तक अपने दिन, नवमी से एका. तक पहले दिन द्वादशी से पूर्णिमा तक अपने दिन। श्राद्ध : प्रति. से एका. पहले दिन द्वाद. से पूर्णि तक अपने दिन। (A) अक्षया तृतीया परुषराम जयन्ती, संक्रान्ति अमृतम्। (B) सिंह में चन्द्र, 11.5 दिन *मिथुन में भौम,* वज्रम्। (C) गणेश चतुर्दशी, गणपतयार यात्रा, सिद्धः।

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष विक्रमी सं० 2059, *27 मई की ग्रह स्थिति:-* वृष में सूर्य, बुध, शनि, राहु। मिथुन में भौम, गुरु, शुक्र। वृश्चिक में केतु।

दिन	मान	ज्ये.	मई	वार	नक्षत्र	बजे	मि०	तिथि	बजे	मि०	ग्रीष्म ऋतु-उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
34	52	14	27	सोम	ज्येष्ठ. प्र	1	40	प्रति. दि	3	21	1-40 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, (A)	5/29	7/26
	55	15	28	भौम	मूला. प्र	1	15	द्विती. दि	1	53	7.15 प्रातः तक गण्डान्त, श्री काक जी यज्ञ हांगल गुंड (B)	29	27
35	00	16	29	बुध	पूषा. प्र	1	29	तृती. दि	1	4	संकट चतुर्थी श्रीवत्सः।	28	28
	00	17	30	बृह.	उषा. प्र	2	28	चतु. दि	12	56	7.42 प्रातः मकर में चन्द्र, सौम्यः।	28	28
	2	18	31	शुक्र	श्रव. प्र	4	4	पंच. दि	1	31	धौम्यः।	28	29
	3	19	जून	शनि	धनि. प्र	दिन रात		षष्ठी. दि	2	45	5.8 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, प्रवर्धः।	28	29
	7	20	2	रवि	धनि. दि	6	13	सप्त. दि	4	32	मातंगः।	27	30
	7	21	3	सोम	शत. दि	8	51	अष्ट. दि	6	43	अमृतम्।	27	30
	10	22	4	भौम	पूभा. दि	11	44	नव. प्र	9	4	5.2 प्रातः मीन में चन्द्र, मृत्युः।	27	31
	10	23	5	बुध	उभा. दि	2	40	दश. प्र	11	24	अलापकः।	27	31
	15	24	6	बृह.	रेव. दि	5	26	एका. प्र	1	29	5.26 शां मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, (C)	26	32
	17	25	7	शुक्र	अश्वि. प्र	7	53	द्वाद. प्र	3	12	वज्रम्।	26	33
	17	26	8	शनि	भर. प्र	9	52	त्रयो. प्र	4	26	4.18 रात वृष में चन्द्र, ध्वांक्षः।	26	33
	17	27	9	रवि	कृति. प्र	11	22	चतुर्द. प्र	5	8	7.27 रात कर्क में शुक्र, धौम्यः।	26	33
	17	28	10	सोम	रोहि. प्र	12	19	अमा. प्र	5	17	सोमावसी, प्रवर्धः	26	33

मध्याह्न : प्रति. से अमावसी तक अपने दिन। श्राद्ध : प्रति से अष्ट. तक पहले दिन, नवमी से अमा. तक अपने दिन। (A) 7.58 रात से गण्डान्त, काम्यः। (B) नगरोटा, जम्मू, छत्रम्। (C) रथा एकादशी, 10.45 दिन से 12.4 रात तक गण्डान्त, मैत्रम्।

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

विक्रमी सं॰ 2059, *11 जून की ग्रह स्थिति:-* वृष में सूर्य, बुध, शनि, राहु। मिथुन में **भौम**, बृहस्पति। कर्क में शुक्र। वृश्चिक में केतु।

दिन	मान	ज्यें.	जून	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	ग्रीष्म ऋतु-उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
35	20	29	11	भौम	मृग. प्र	12	45	प्रति. प्र	4	55	12.33 दिन मिथुन में चन्द्र, क्षयः।	5/26	7/34
	23	30	12	बुध	आर्द्र. प्र	12	44	द्विती. प्र	4	5	गजः।	26	35
	23	31	13	गुरु	पुन. प्र	12	17	तृती. प्र	2	51	6.25 शां से कर्क में चन्द्र, सिद्धः।	26	35
	23	32	14	शुक्र	तिष्य. प्र	11	31	चतु. प्र	1	16	मासान्त, उन्मूलम्।	26	35
	25	आप	15	शनि	आश्ले. प्र	10	27	पंच. प्र	11	25	शनि मास, 9.14 दिन मिथुन में सूर्य, मुर्हत 15, (A)	26	36
	25	2	16	रवि	मघा. प्र	9	10	षष्ठी प्र	9	21	कुमार षष्ठी, मुद्गरम्।	26	36
	25	3	17	सोम	पूफा. प्र	7	45	सप्त. दि	7	8	1.23 रात कन्या में चन्द्र, ध्वजः।	26	36
	27	4	18	भौम	उफा. दि	6	14	अष्ट. दि	4	50	ज्येष्ठाष्टमी-क्षीर भवानी यात्रा तुलमुल काश्मीर, भवानी नगर (B)	26	37
	25	5	19	बुध	हस्त. दि	4	40	नव. दि	2	28	3.55 रात तुला में चन्द्र, आनन्दः।	27	37
	25	6	20	गुरु	चित्र. दि	3	8	दश. दि	12	9	चरः।	27	37
	25	7	21	शुक्र	स्वा. दि	1	42	एका. दि	9	54	निर्जल एकादशी, मुसलम्।	27	37
	27	8	22	शनि	विशा. दि	12	26	द्वाद. दि	7	48	6.41 दिन आर्द्र नक्षत्र में सूर्य, 6.45 प्रातः (C)	27	38
	27	9	23	रवि	अनु. दि	11	24	त्रयो. दि	5	56	त्र्यहः (चतुर्द प्र 4-22) 4.51 रात से गण्डान्त, मृत्युः।	27	38
	25	10	24	सोम	ज्ये. दि	10	42	पूर्णि. प्र	3	12	10.42 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 4.40 दिन (D)	28	38

मध्याह्नः प्रति. से दश. तक अपने दिन, एका. से चतुर्द. तक पहले दिन, पूर्णिमा का अपने दिन। श्राद्धः प्रति. से सप्त. तक अपने दिन, अष्ट से चतुर्द. तक पहले दिन, पूर्णि. का अपने दिन। (A) किनारी, 10.27 रात सिंह में चन्द्र संक्रान्ति व्रत, 4.43 दिन से 4.9 रात तक गण्डान्त, मानसम्। (B) जानी पांरा, जम्मु प्राजापत्यः। (C) वृश्चिक में चन्द्र, दक्षिणायन, शूलम्। (D) तक गण्डान्त, रूपभवानी जयन्ती कबीर जयन्ती, वटसावित्री, काम्यः।

आषाढ कृष्ण पक्ष

विक्रमी सं० 2059, 25 जून की ग्रह स्थितिः- मिथुन में सूर्य, भौम, बृहस्पति। कर्क में शुक्र। वृश्चिक में केतु। वृष में बुध, शनि, राहु।

दिन	मान	आषा.	जून	वार	नक्षत्र	बजे मि.	तिथि	बजे मि.	ग्रीष्म ऋतु-दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
35	25	11	25	भौम	मूला. दि	10 25	प्रति. प्र	2 31	छत्रम्।	5/28	7/38
	25	12	26	बुध	पूषा. दि	10 37	द्विती. प्र	2 21	4.50 दिन मकर में चन्द्र, श्रीवत्सः।	28	38
	22	13	27	गुरु	उषा दि	11 23	तृती. प्र	2 47	सौम्यः।	29	38
	22	14	28	शुक्र	श्रव. दि	12 42	चतु. प्र	3 48	संकट चतुर्थी, 1.37 रात कुम्भ में चन्द्र और (A)	29	38
	22	15	29	शनि	धनि. दि	2 36	पंच. प्र	5 24	प्रवर्धः।	29	38
	20	16	30	रवि	शत. दि	4 59	षष्ठी.	दिन रात	दिन अधिक, क्षयः।	30	38
	20	17	जुला.	सोम	पूभा. प्र	7 43	षष्ठी. दि	7 22	1-2 दिन मीन में चन्द्र, गजः।	30	38
	17	18	2	भौम	उभा. प्र	10 38	सप्त. दि	9 39	सिद्धः।	31	38
	17	19	3	बुध	रेव. प्र	1 31	अष्ट. दि	12 00	6.51 शां से गण्डान्त, 1.31 रात मेष में चन्द्र और (B)	31	38
	17	20	4	गुरु	अश्वि. प्र	4 9	नव. दि	2 11	10.29 दिन मिथुन में बुध, 9.46 दिन कर्क में भौम, (C)	31	38
	15	21	5	शुक्र	भर.	दिन रात	दश. दि	4 1	4.58 दिन सिंह में शुक्र, मुद्गरम्।	32	38
	15	22	6	शनि	भर. दि	6 19	एका. दि	5 18	योगिनी एकादशी, 12.44 दिन वृष में चन्द्र, ध्वांक्षः।	33	38
	12	23	7	रवि	कृति. दि	7 54	द्वाद. दि	5 57	धौम्यः।	34	38
	12	24	8	सोम	रोहि. दि	8 50	त्रयो. दि	5 56	8.59 रात मिथुन में चन्द्र, प्रवर्धः।	34	38
	7	25	9	भौम	मृग. दि	9 6	चतुर्द. दि	5 14	10.48 दिन बृहस्पति अस्त, क्षयः।	35	37
	7	26	10	बुध	आर्द्र दि	8 45	अमा. दि	3 56	2.7 रात कर्क में चन्द्र, गजः।	35	37

बृहस्पति अस्त
9 जुलाई

मध्याह्न : प्रति. से षष्ठी अपने दिन, सप्तमी का पहले दिन, अष्टमी से अमा. तक अपने दिन। श्राद्धः प्रति. से षष्ठी अपने दिन, सप्त. से अमा. तक पहले दिन। (A) पंचक आरम्भ धौम्यः। (B) पंचक समाप्त, उन्मूलम्। (C) 7.36 रात कर्क में गुरु, 8.12 दिन तक गण्डान्त, मानसम्।

आषाढ शुक्लपक्ष

विक्रमी सं॰ 2059, *11 जुलाई की ग्रह स्थिति:-* मिथुन में सूर्य, बुध। कर्क में भौम, बृहस्पति। सिंह में शुक्र। वृश्चिक में केतु। वृष में शनि, राहु।

दिन	मान	आषा.	जुलाई	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	वर्षा ऋतु-दक्षिणाय (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
35	5	27	11	गुरु	पुन. दि	7	52	प्रति. दि	2	8	सिद्धः।	5/36	7/37
	00	28	12	शुक्र	तिष्य.दि	6	34	द्वि. दि	11	58	4.58 रात सिंह में चन्द्र, 11.23 रात से गण्डान्त (A)	36	37
	00	29	13	शनि	मघा. प्र	3	13	तृती.दि	9	31	10.32 दिन तक गण्डान्त, काम्यः।	37	36
34	57	30	14	रवि	पूफा. प्र	1	24	चतु. दि	6	56	त्र्यहः (पंच प्र 4.19) छत्रम्।	37	36
	55	31	15	सोम	उफा. प्र	11	39	षष्ठ. प्र	1	47	सोमभास, कुमार षष्ठी, 6.58 प्रातः कन्या में चन्द्र, मासान्त, श्रीवत्सः।	38	36
	52	श्रा.	16	भौम	हस्त. प्र	10	3	सप्त. प्र	11	24	8.3 रात कर्क में सूर्य, मुहूर्त 30 दरियाई, संक्रान्ति वहरात सौम्यः।	38	36
	52	2	17	बुध	चित्र. प्र	8	40	अष्ट. प्र	9	14	हार अष्टमी, 9.21 दिन तुला में चन्द्र, कालदण्डः।	39	35
	47	3	18	गुरु	स्वा. दि	7	31	नव. दि	7	19	हार नवमी, शारिका जयन्ती, स्थिरः।	40	35
	45	4	19	शुक्र	विशा.दि	6	40	दश. दि	5	41	6.18 प्रातः कर्क में बुध, 12.54 दिन वृश्चिक में चन्द्र, मातंगः।	40	35
	42	5	20	शनि	अनु. दि	6	8	एका.दि	4	22	देवशयनी एकादशी, अमृतम्।	41	35
	38	6	21	रवि	ज्ये. दि	5	55	द्वाद. दि	3	22	11.19 दिन से 11.55 रात तक गण्डान्त, 5.55 दिन (B)	41	34
	35	7	22	सोम	मूला. दि	6	3	त्रयो.दि	2	44	अलापकः।	42	34
	31	8	23	भौम	पूषा. दि	6	33	चतु. दि	2	28	6.54 रात मिथुन में शनि, 12.48 रात मकर में चन्द्र, (C)	43	33
	28	9	24	बुध	उषा. दि	7	29	पूर्णि.दि	2	37	गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, वज्रम्।	43	32

मध्याह्नः प्रति. का अपने दिन, द्विती. से पंच. तक पहले दिन, षष्ठी से पूर्णि. तक अपने दिन। श्राद्धः प्रति. से पंच तक पहले दिन, षष्ठी से नवमी तक अपने दिन, दश से पूर्णि. तक पहले दिन। (A) (आश्ले प्र 4.58) उन्मूलम्। (B) धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, लोकभवन यात्रा काण्ड। (C) ज्वाला चतुर्दशी रिव्रव यात्रा (काश्मीर) मैत्रम्।

श्रावण कृष्ण पक्ष विक्रमी सं० 2059, *25 जुलाई की ग्रह स्थितिः-* कर्क में सूर्य, भौम, बुध, बृहस्पति। सिंह में शुक्र। वृश्चिक में केतु। वृष में राहु। मिथुन में शनि।

दिन	मान	श्रा.	जुलाई	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	वर्षा ऋतु-दक्षिणाय (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
34	25	10	25	गुरु	श्रव. प्र	8	50	प्रति. दि	3	13	ध्वजः।	5/44	7/32
	21	11	26	शुक्र	घनि. प्र	10	40	द्विती.दि	4	17	9.44 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, प्राजापत्यः।	45	32
	18	12	27	शनि	शत प्र	12	55	तृती.दि	5	49	संकट चतुर्थी, आनन्दः।	45	30
	15	13	28	रवि	पूभा. प्र	3	33	चतु. प्र	7	45	8.55 रात मीन में चन्द्र, चरः।	46	30
	11	14	29	सोम	उभा.	दिन	रात	पंच. प्र	10	00	मुसलम्।	47	29
	8	15	30	भौम	उभा. दि	6	27	षष्ठी. प्र	12	26	2.43 रात से गण्डान्त, सिद्धः।	47	27
	5	16	31	बुध	रेव. दि	9	27	सप्त. प्र	2	48	4.6 दिन तक गण्डान्त, शीतला सप्तमी, 9.27 दिन (A)	48	27
	1	17	अग.	गुरु	अश्वि.दि	12	28	अष्ट. प्र	4	52	4.48 रात सिंह में बुध, 7.59 रात *कन्या में शुक्र*, (B)	48	25
33	56	18	2	शुक्र	भर. दि	2	49	नव.	दिन	रात	दिन अधिक, 9.19 रात वृष में चन्द्र, मुद्गरम्।	49	25
	52	19	3	शनि	कृति. दि	4	47	नव. दि	6	27	ध्वजः।	49	24
	48	20	4	रवि	रोहि. दि	6	3	दश. दि	7	22	प्राजापत्यः।	50	23
	46	21	5	सोम	मृग. दि	6	32	एका. दि	7	30	कमला एकादशी, 6.23 प्रातः मिथनु में चन्द्र, आनन्दः।	51	23
	42	22	6	भौम	आर्द्र. दि	6	15	द्वाद. दि	6	51	त्र्यहः (त्रयो. प्र 5.26) चरः।	51	22
	38	23	7	बुध	पुन. दि	5	15	चर्तु. प्र	3	22	11.29 दिन कर्क में चन्द्र, मुसलम्।	52	21
	33	24	8	गुरु	तिष्य. दि	3	39	अमा. प्र	12	45	शूलम्।	53	20

बृहस्पति उदय
1 अगस्त

मध्याह्नः प्रति. से नव. तक अपने दिन, दश. से त्रयो. तक पहले दिन, चर्तुद, अमा. अपने दिन। श्राद्धः प्रति से तृती. पहले दिन, चर्तु.. से नवमी तक अपने दिन, दश. से त्र्योदशी तक पहले दिन चतुर्द, अमा. अपने दिन। (A) मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, उन्मूलम्। (B) 8.49 *रात बृहस्पति उदय* मानसम्।

श्रावण शुक्लपक्ष

विक्रमी सं० 2059, *9 अगस्त की ग्रह स्थिति:-* कर्क में सूर्य, भौम, वृहस्पति। सिंह में बुध। कन्या में शुक्र। वृश्चिक में केतु। वृष में राहु। मिथुन में शनि।

दिन	मान	श्राव.	अग.	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	वर्षा ऋतु-दक्षिणाय (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
33	30	25	9	शुक्र	आश्ले.दि	1	36	प्रति. प्र	9	46	8.9 दिन से 7 बजे शां तक गण्डान्त, 1.36 दिन (A)	5/53	7/19
	26	26	10	शनि	मघा. दि	11	16	द्विती. दि	6	34	काम्यः।	54	18
	21	27	11	रवि	पूफा. दि	8	50	तृती.दि	3	19	2.15 दिन कन्या में चन्द्र, छत्रम्।	54	17
	17	28	12	सोम	उफा. दि	6	27	चतु. दि	12	10	(हस्त प्र 4.27) श्रीवत्सः।	56	16
	13	29	13	भौम	चित्रा. प्र	2	27	पंच. दि	9	16	कुमार षष्ठी, नाग पंचमी, 3.23 दिन तुला में चन्द, ध्वांक्षः।	57	15
	8	30	14	बुध	स्वा. प्र	1	1	षष्ठी.दि	6	43	त्र्यहः (सप्त. प्र 4.35) बुध मास, धोम्यः।	57	13
	5	31	15	गुरु	विशा. प्र	12	4	अष्ठ. प्र	2	57	6.19 प्रातः वृश्चिक में चन्द्र, मासान्तं, प्रवर्धः।	58	12
	1	भाद्र	16	शुक्र	अनु. प्र	11	36	नव. प्र	1	47	4.23 रात सिंह में सूर्य, मुहूर्त 15 समुद्रीय, क्षयः।	59	11
32	56	2	17	शनि	ज्ये. प्र	11	36	दश. प्र	1	7	5.38 दिन से गण्हान्त, 11.36 रात से धनु में चन्द्र (B)	59	10
	48	3	18	रवि	मूला. प्र	12	4	एका. प्र	12	53	5.40 प्रातः तक गण्डान्त सिद्धः।	6/00	9
	45	4	19	सोम	पूषा. प्र	12	56	द्वाद. प्र	1	5	3.23 रात *सिंह में भौम*, श्रावण बाह, शोपियान यात्रा, (C)	00	8
	41	5	20	भौम	उषा. प्र	2	11	त्रयो. प्र	1	41	7.12 प्रातः मकर में चन्द्र, मानसम्।	1	6
	36	6	21	बुध	श्रव. प्र	3	48	चर्तु. प्र	2	39	7.57 रात से कन्या में बुध, छत्रम्।	1	5
	32	7	22	गुरु	धनि. प्र	5	46	पूर्णि. प्र	3	59	4.47 दिन से कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, रक्षा-बन्धन (D)	2	4

मध्याह्न : प्रति. से चतु. अपने दिन, पंच. से सप्त. पहले दिन, अष्ट. से पूर्णि अपने दिन। श्राद्धः प्रति. द्वि. अपने दिन, तृती. से सप्त. पहले दिन, अष्ट. से पूर्णिमा अपने दिन। सिंह में चन्द, मृत्युः। (A) सिंह में चन्द, मृत्युः। (B) और मूल आरम्भ संक्रान्ति, गजः। (C) उन्मूलम्। (D) अमरनाथ यात्रा थजीवार यात्रा बिजबिहारा, श्रीवत्सः।

भाद्र कृष्ण पक्ष

विक्रमी सं॰ 2059, *23 अगस्त की ग्रह स्थितिः-* सिंह में सूर्य, भौम। कन्या में बुध, शुक्र। वृश्चिक में केतु। वृष में राहु। मिथुन में शनि। कर्क में वृहस्पति।

दिन	मान	भाद्र	अग.	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	वर्षा ऋतु-दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
32	28	8	23	शुक्र	शत.	दिन	रात	प्रति. प्र	5	41	सौम्यः।	6/2	7/3
	22	9	24	शनि	शत. दि	8	5	द्विती.	दिन	रात	4.2 रात मीन में चन्द्र, *निर्वाण दिवस पं॰ प्रेम नाथ शास्त्री* (A)	3	2
	18	10	25	रवि	पूभा दि	10	43	द्विती.दि	7	42	चरः।	4	1
	13	11	26	सोम	उभा. दि	1	36	तृती.दि	7	00	संकट चतुर्थी, मुसलम्।	4	00
	10	12	27	भौम	रेव. दि	4	38	चतु. दि	12	29	9.53 दिन से 11.24 रात तक गण्डान्त, 4.38 दिन से (B)	5	6/59
	6	13	28	बुध	अश्वि.प्र	7	39	पंच. दि	2	59	चन्दन षष्ठी (चन्द्रोदय 9 बजे 57 रात) मृत्युः।	6	57
31	58	14	29	गुरु	भर. प्र	10	29	षष्ठी.दि	5	19	काम्यः।	6	55
	55	15	30	शुक्र	कृति. प्र	12	55	सप्त. प्र	7	16	जन्माष्टमी (चन्द्रोदय 11 बजे 6 रात) 5.10 प्रातः वृष में चन्द्र, छत्रम्।	7	54
	51	16	31	शनि	रोहि. प्र	2	43	अष्ट. प्र	8	37	1.14 रात तुला में शुक्र, श्रीवत्सः।	8	53
	46	17	सप्त.	रवि	मृग. प्र	3	46	नव. प्र	9	13	3.15 दिन मिथुन में चन्द्र, सौम्यः।	8	52
	40	18	2	सोम	आर्द्र. प्र	3	59	दश. प्र	8	59	कालदण्डः।	9	51
	36	19	3	भौम	पुन. प्र	3	21	एका. प्र	7	53	9.30 रात कर्क में चन्द्र, स्थिरः।	10	50
	31	20	4	बुध	तिष्य.प्र	1	56	द्वाद. दि	5	58	मातंगः।	11	49
	25	21	5	गुरु	आश्ले.प्र	11	53	त्रयो. दि	3	21	6.23 शां से गण्डान्त, 11.53 रात सिंह में चन्द्र अमृतम्।	11	48
	21	22	6	शुक्र	मघा. प्र	9	21	चतुर्द.दि	12	12	5.18 प्रातः तक गण्डान्त, काण्डः।	12	47
	16	23	7	शनि	पूफा दि	6	31	अमा. दि	8	40	त्र्यहः (प्रति. प्र 4.58) 11.48 रात कन्या में चन्द्र, (C)	12	45

मध्याह्न : प्रति. द्वि. अपने दिन, तृती का पहले दिन, चतु. से चतुर्द. तक अपने दिन, अमा. का पहले दिन। श्राद्ध : प्रति. द्वि. अपने दिन तृती से षष्ठी तक पहले दिन, सप्तमी से द्वाद. तक अपने दिन, त्रयो. से अमा. तक पहले दिन। (A) दिन अधिक, आनन्दः। (B) मेष में चन्द्र और पंचकं समाप्त, शूलम्। (C) कुशामावसी, अलापकः।

भाद्र शुक्ल पक्ष

विक्रमी सं॰ 2059, 8 सितम्बर की ग्रह स्थितिः- सिंह में सूर्य, भौम। कन्या में वुध। तुला में शुक्र। वृश्चिक में केतु। मिथुन में शनि। वृष में राहु। कर्क में वृहस्पति।

दिन	मान	भाद्र.	सित.	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	वर्षा ऋतु-दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
31	10	24	8	रवि	उफा दि	3	36	द्विती. प्र	1	15	मैत्रम्। (A)	6/13	6/43
	6	25	9	सोम	हस्त दि	12	46	तृती. प्र	9	42	11.29 रात तुला में चन्द्र, वज्रम्।	14	42
	2	26	10	भौम	चित्र दि	10	13	चतु. दि	6	30	विनयक चतुर्थी ध्वांक्षः।	14	40
30	56	27	11	वुध	स्वा. दि	8	5	पंच. दि	3	47	वराह पंचमी-कुमार षष्ठी, 12.53 रात वृश्चिक में चन्द्र, धौम्यः।	15	38
	51	28	12	गुरु	विशा.दि	6	30	षष्ठी.दि	1	38	(अनु प्र 5.32) प्रवर्धः।	16	37
	47	29	13	शुक्र	ज्ये. प्र	5	14	सप्त.दि	12	8	शुक्रमास, 11.19 रात से गण्डान्त, चरः।	16	37
	41	30	14	शनि	मूला. प्र	5	33	अष्ट.दि	11	18	11.19 दिन तक गण्डान्त, 5.14 प्रातः धनु में चन्द्र और (A)	17	36
	36	31	15	रवि	पूषा.	दिन	रात	नव. दि	11	6	मासान्त, शूलम्। (A2)	17	35
	32	आश्वि.	16	सोम	पूषा दि	6	27	दश. दि	11	28	3.34 रात कन्या में सूर्य, मुहूर्त 45 पहाडी, 12.49 दिन (B)	17	33
	26	2	17	भौम	उषा. दि	7	52	एका.दि	12	21	नारायणी एकादशी, गोत्तमनाग यात्रा, संक्रान्ति, मानसम्।	18	31
	21	3	18	वुध	श्रव. दि	9	43	द्वाद. दि	1	40	10.47 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, छत्रम्।	19	30
	17	4	19	गुरु	धनि. दि	11	54	त्रयो.दि	3	20	वितस्ता त्रयोदशी, वेरीनाग यात्रा, श्रीवत्सः।	20	28
	11	5	20	शुक्र	शत. दि	2	23	चतुर्. दि	5	17	अनन्त चतुर्दशी, अनन्तनाग यात्रा, सौम्यः।	21	27
	7	6	21	शनि	पूभा. दि	5	6	पूर्णि. प्र	7	29	10.26 दिन मीन में चन्द्र, कालदण्डः।	22	26

मध्याह्नः प्रति. का पहले दिन, द्विती. से सप्त. तक अपने दिन, अष्ट. से दश. तक पहले दिन, एका. से पूर्णि तक अपने दिन। श्राद्धः प्रति. का पहले दिन, द्विती. से चतु. अपने दिन, पंच. से चतुर्द. पहले दिन, पूर्णि का अपने दिन। (A) मूल आरम्भ, गंगाष्टमी शारदाष्टमी, लल्लेश्वरी जयन्ती उमानगरी यज्ञ मुठ्ठी जम्मू, **काश्मीरी पण्डितों का बलिदान दिवस, मुसलम्।** (B) मकर में चन्द्र उन्मूलम्।

आश्विन कृष्णपक्ष

सविक्रमी सं॰ 2059, 22 सितम्बर की ग्रह स्थितिः- कन्या में सूर्य, बुध। तुला में शुक्र। वृश्चिक में केतु। वृष में राहु। मिथुन में शनि। कर्क में वृहस्पति। सिंह में भौम।

दिन	मान	आश्वि	सित.	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	शरद ऋतु-दक्षिणान (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
30	3	7	22	रवि	उभा प्र	8	00	प्रति. प्र	9	53	पितृपक्षारम्भ-स्थिरः	6/22	6/25
29	56	8	23	सोम	रेव. प्र	11	1	द्वि. प्र	12	23	11 बजे रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, (A)	23	24
	52	9	24	भौम	अश्वि. प्र	2	3	तृती. प्र	2	55	5.47 प्रातः तक गण्डान्त, अमृतम्।	24	23
	48	10	25	बुध	भर. प्र	5	00	चतु. प्र	5	21	संकट चतुर्थी, काण्डः।	24	21
	41	11	26	गुरु	कृति.	दिन	रात	पंच.	दिन	रात	दिन अधिक, 11.41 दिन वृष में चन्द्र, अलापकः।	24	20
	37	12	27	शुक्र	कृति. दि	7	41	पंच. दि	7	30	छत्रम्।	25	18
	31	13	28	शनि	रोहि. दि	9	56	षष्ठी. दि	9	13	साहिब सप्तमी, 10.48 रात मिथुन में चन्द्र श्रीवत्सः।	25	16
	26	14	29	रवि	मृग. दि	11	35	सप्त. दि	10	17	पं॰ प्रेम नाथ शास्त्री जयन्ती, सौम्यः।	26	15
	22	15	30	सोम	आर्द्र. दि	12	29	अष्ट. दि	10	36	महालक्ष्मी अष्टमी, कालदण्डः।	27	14
	18	16	अक्टू.	भौम	पुन. दि	12	34	नव. दि	10	5	6.36 प्रातः कर्क में चन्द्र, स्थिरः।	27	12
	11	17	2	बुध	तिष्य. दि	11	49	दश. दि.	8	44	4.44 रात से गण्डान्त, मातंगः।	28	10
	7	18	3	गुरु	आश्ले. दि	10	18	एका. दि	6	35	त्र्यहः (द्वा प्र 3.45) 3.43 दिन तक गण्डान्त, (B)	29	9
	3	19	4	शुक्र	मघा. दि	8	7	त्रयो. प्र	12	24	(पूफा प्र 5.27) काण्डः।	29	8
28	56	20	5	शनि	उफा. प्र	2	28	चतुर्द. प्र	8	41	10.43 दिन कन्या में चन्द्र, उन्मूलम्।	30	7
	51	21	6	रवि	हस्त. प्र	11	22	अमा. दि	4	48	पितृामावसी, 9.25 दिन कन्या में भौम, मानसम्।	30	6

मध्याह्न : प्रति से पंच. तक अपने दिन, षष्ठी से द्वादशी तक पहले दिन, त्रयो. से अमा. तक अपने दिन। श्राद्ध : प्रति से पंच तक अपने दिन, षष्ठी से द्वादशी तक पहले दिन, त्रयो. से अमा. तक अपने दिन। (A) 4.16 दिन से गण्डान्त मातंगः। (B) सन्यासियों का श्राद्ध, 10.18 दिन सिंह में चन्द्र, अमृतम्।

आश्विन शुक्लपक्ष

विक्रमी सं० 2059, 7 अक्टूबर की ग्रह स्थितिः- कन्या में सूर्य, भौम, बुध। तुला में शुक्र। वृश्चिक में केतु। वृष में राहु। मिथुन में शनि। कर्क में वृहस्पति।

दिन	मान	आश्वि.	अक्टू.	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	शरद ऋतु-दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
28	47	22	7	सोम	चित्र. प्र	8	20	प्रति. दि	12	56	नवरात्रारम्भ, 9.52 दिन तुला में चन्द्र, मुद्गरम्।	6/31	6/5
	41	23	8	भौम	स्वाति. दि	5	35	द्वेती. दि	9	16	त्र्यहः (तृती. प्र 5.58) ध्वजः।	31	4
	36	24	9	बुध	विशा. दि	3	16	चतु. प्र	3	12	9.51 दिन वृश्चिक में चन्द्र, प्राजापत्यः।	32	3
	32	25	10	गुरु	अनु. दि	1	32	पंच. प्र	1	5	यज्ञ दुर्गा मन्दिर नगरोटा जम्मू, आनन्दः।	33	1
	28	26	11	शुक्र	ज्ये. दि	12	29	षष्ठी. प्र	11	42	कुमार षष्ठी 12.29 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ (A)	33	00
	21	27	12	शनि	मूला. दि	12	21	सप्त. प्र	11	5	मुसलम्।	35	5/59
	16	28	13	रवि	पूषा. दि	12	37	अष्ट. प्र	11	12	दुर्गाष्टमी, सूर्यमास, 6.56 रात मकर में चन्द्र, शूलम्।	36	57
	12	29	14	सोम	उषा. दि	1	46	नव. प्र	12	1	महानवमी, सरस्वती विसर्जन, मृत्युः।	37	55
	8	30	15	भौम	श्रव. दि	3	30	दश. प्र	1	24	विजयादशमी, 4.34 रात कुम्भ में चन्द्र और (B)	38	54
	3	31	16	बुध	धनि. दि	5	43	एका. प्र	3	15	मासान्त, मैत्रम्।	38	53
27	58	कत्तक	17	गुरु	शत. प्र	8	18	द्वाद. प्र	5	25	4.16 दिन तुला में सूर्य, मुहूर्त 15 समुद्रीय, (C)	39	52
	52	2	18	शुक्र	पूभा. प्र	11	7	त्रयो.	दिन	रात	दिन अधिक, 4.26 दिन मीन में चन्द्र, ध्वांक्षः।	40	51
	48	3	19	शनि	उभा. प्र	2	5	त्रयो. दि	7	49	धौम्यः।	40	50
	43	4	20	रवि	रेव. प्र	5	5	चर्तु. दि	10	19	5.5 रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त (D)	41	49
	38	5	21	सोम	अश्वि.	दिन	रात	पूर्णि. दि	12	50	11.50 दिन तक गण्डान्त, क्षयः।	42	48
												43	47

मध्याह्न : प्रतिपदि का अपने दिन, द्विती. तृती. का पहले दिन, चतु. से त्रयो. तक अपने दिन चतुर्दशी का पहले दिन, पूर्णि. का अपने दिन। श्राद्धः प्रति. से तृती. पहले दिन, चतु. से त्रयो. तक अपने दिन, चतुर्द, पुर्णि का पहले दिन। (A) 6.42 प्रातः से 6.27 शां तक गण्डान्त, चरः। (B) पंचक आरम्भ, अलापकः। (C) संक्रान्ति व्रत, वज्रम्। (D) 10.22 रात से गण्डान्त, प्रवर्धः।

कार्तिक कृष्णपक्ष

विक्रमी सं० 2059, *22 अक्टूबर की ग्रह स्थितिः-* तुला में सूर्य, शुक्र। कन्या में भौम, बुध। वृश्चिक में केतु। वृष में राहु। मिथुन में शनि। कर्क में वृहस्पति।

दिन	मान	कृत.	अक्टू.	वार	नक्षत्र	बजे	मि०	तिथि	बजे	मि०	शरद ऋतु - दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
27	30	6	22	भौम	अश्वि.दि	8	3	प्रति. दि	3	18	12.10 दिन शुक्रास्त, अमृतम्।	6/43	5/46
	26	7	23	बुध	भर. दि	10	54	द्विती. दि	5	37	5.34 शां वृष में चन्द्र, काण्डः।	44	45
	21	8	24	गुरु	कृति. दि	1	32	तृती. प्र	7	41	अलापकः।	46	44
	16	9	25	शुक्र	रोहि. दि	3	51	चतु. प्र	9	24	संकट चतुर्थी, 4.52 रात मिथुन में चन्द्र, मैत्रम्।	47	43
	11	10	26	शनि	मृग. प्र	5	45	पंच. प्र	10	38	वज्रम्।	47	42
	7	11	27	रवि	आर्द्र. प्र	7	5	षष्ठी. प्र	11	17	ध्वांक्षः।	48	41
	3	12	28	सोम	पुन. प्र	7	47	सप्त. प्र	11	15	12.31 दिन तुला में बुध, 1.36 दिन कर्क में चन्द्र, धौम्यः।	49	39
26	58	13	29	भौम	तिष्य. प्र	7	46	अष्ट. प्र	10	30	प्रवर्धः।	50	38
	53	14	30	बुध	आश्ले. प्र	7	3	नव. प्र	9	00	1.13 दिन से 12.43 रात तक गण्डान्त, (A)	51	38
	48	15	31	गुरु	मघा. प्र	5	39	दश. प्र	6	50	गजः।	52	35
	43	16	नव.	शुक्र	पूफा. दि	3	41	एका. दि	4	7	9.3 रात कन्या में चन्द्र, सिद्धः।	52	34
	38	17	2	शनि	उफा. दि	1	13	द्वाद. दि	12	55	उन्मूलम्।	53	33
	35	18	3	रवि	हस्त. दि	10	27	त्रयो. दि	9	23	त्र्यहः (चतुर्द. प्र 5.43) 9 बजे रात तुला में चन्द्र-मानसम्।	54	32
	31	19	4	सोम	चित्र. दि	7	33	अमा. प्र	2	4	(स्वा. प्र 4.41) सोमामावसी, अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, (B)	55	31

शुक्रास्त
22 अक्टूबर

मध्याह्न : प्रति. से द्वाद. तक अपने दिन, त्रयो. चतुर्द का पहले दिन, अमा. का अपने दिन। **श्राद्धः** प्रति. द्वि. पहले दिन, तृती. से एका. अपने दिन, द्वाद. से चतुर्द. तक पहले दिन, अमा. का अपने दिन। (A) 7.3 रात सिंह में चन्द्र, क्षयः। (B) स्वा. रामतीर्थ जयन्ती, और निर्वाण दिवस, मुद्गरम्। दीपावली

कार्तिक शुक्लपक्ष

विक्रमी सं॰ 2059, *5 नवम्बर की ग्रह स्थिति:-* तुला में सूर्य, बुध, शुक्र। वृश्चिक में केतु। वृष में राहु। मिथुन में शनि। कर्क में बृहस्पति। कन्या में भौम।

	मान	कतक	नव.	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	शरद ऋतु-दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
दिन	31	20	5	भौम	विशा. प्र	2	2	प्रति. प्र	10	37	8.44 रात वृश्चिक में चन्द्र, श्रीवत्सः।	6/54	5/31
26	28	21	6	बुध	अनु. प्र	11	46	द्विती. प्र	7	32	4.52 रात शुक्रोदय, सौम्यः।	55	30
	23	22	7	गुरु	ज्ये. प्र	10	3	तृती. दि	4	58	4.32 दिन से 3.45 रात तक गण्डान्त, 10.3 रात (A)	56	30
	18	23	8	शुक्र	मूला. प्र	9	00	चतु. दि	3	3	स्थिरः।	57	29
	13	24	9	शनि	पूषा. प्र	8	42	पंच. दि	1	52	कुमार षष्ठी, 2.47 रात मकर में चन्द्र, मांतगः। शुक्र उदय 6 नवम्बर	59	29
	11	25	10	रवि	उषा. प्र	9	10	षष्ठी. दि	1	29	अमृतम्।	7/00	29
	6	26	11	सोम	श्रव. प्र	10	24	सप्त. दि	1	53	स्वा. गोकुलनाथ जयन्ती, सिद्धः।	1	28
	1	27	12	भौम	धनि. प्र	12	18	अष्ट. दि	3	2	11.19 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, भौम मास (B)	2	27
	00	28	13	बुध	शत. प्र	2	43	नव. दि	4	47	मानसम्।	3	27
	56	29	14	गुरु	पूभा. प्र	5	31	दश. प्र	6	59	10.49 रात मीन में चन्द्र, मुद्गरम्।	3	26
25	53	30	15	शुक्र	उभा.	दिन	रात	एका. प्र	9	29	हरिबोधिनी एकादशी, शिवस्वाप, मासान्त, (E)	4	26
	48	मग	16	शनि	उभा. दि	8	31	द्वाद. प्र	12	4	4.5 दिन वृश्चिक में सूर्य मुहूर्त 30 पहाड़ी, संक्रान्ति व्रत (C)	5	25
	43	2	17	रवि	रेव. दि	11	32	त्रयो. प्र	2	36	4.15 दिन तक गण्डान्त, 11.32 दिन मेष में चन्द्र (D)	6	24
	41	3	18	सोम	अश्वि. दि	2	28	चर्तु. प्र	4	58	क्षयः।	7	24
	38	4	19	भौम	भर. दि	5	11	पूर्णि.	दिन	रात	दिन अधिक, 11:48 रात वृष में चन्द्र, गजः।	8	24
	33	5	20	बुध	कृति. प्र	7	36	पूर्णि. दि	7	4	वार्षिक यज्ञ स्वा. मोहनवत्र आश्रम मिश्रीवाला, जम्मू, सिद्धः।	9	23

मध्याह्नः प्रति. से पूर्णिमा तक अपने दिन। श्राद्धः प्रति से तृती. अपने दिन, चतु. से नव. पहले दिन दश. से पूर्णि. तक अपने दिन। (A) धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, कालदण्डः। (B) और भौम वर्ष, उन्मूलम्। (C) 4.48 रात से गण्डान्त, धौम्यः। (D) और समाप्त, प्रवर्धः। (E) वृश्चिक में बुध ध्वजः।

मार्ग कृष्णपक्ष

विक्रमी सं॰ 2059, *21 नवम्बर की ग्रह स्थितिः-* वृश्चिक में सूर्य, बुध, केतु। वृष में राहु। मिथुन में शनि। कर्क में वृहस्पति। कन्या में भौम। तुला में शुक्र।

दिन	मान	मग.	नव.	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	हेमन्त ऋतु-दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
25	31	6	21	गुरु	रोहि. प्र	9	41	प्रति. दि	8	49	उन्मूलम्।	7/10	5/23
	26	7	22	शुक्र	मृग. प्र	11	22	द्विती.दि	10	12	8.55 दिन *तुला में भौम,* 10.33 दिन मिथुन में चन्द्र, मानसम्।	11	22
	25	8	23	शनि	आर्द्र प्र	12	37	तृती.दि	11	8	संकट चतुर्थी मुद्गरम्।	12	22
	23	9	24	रवि	पुन. प्र	1	24	चतु. दि	11	37	7.13 शां कर्क में चन्द्र, ध्वजः।	12	22
	18	10	25	सोम	तिष्य. प्र	1	42	पंच. दि	11	36	प्राजापत्यः।	13	21
	16	11	26	भौम	आश्ले.प्र	1	28	षष्ठी.दि	11	3	1.28 रात सिंह में चन्द्र, 7.31 शां से गण्डान्त, आनन्दः।	14	21
	13	12	27	बुध	मघा. प्र	12	45	सप्त.दि	10	00	7.21 प्रातः तक गण्डान्त, चरः।	15	21
	11	13	28	गुरु	पूफा. प्र	11	32	अष्ट.दि	8	25	त्र्यहः (नव. प्र 6.23) महाकाल भैरवाष्टमी, मुसलम्।	16	21
	8	14	29	शुक्र	उफा. प्र	9	53	दश. प्र	3	53	5.10 प्रातः कन्या में चन्द्र, शूलम्।	17	21
	3	15	30	शनि	हस्त. प्र	7	53	एका. प्र	1	6	मृत्युः।	18	20
	2	16	दिस.	रवि	चित्र. प्र	5	40	द्वाद. प्र	10	8	काम्यः।	19	20
	1	17	2	सोम	स्वाति.दि	3	18	त्रयो. प्र	7	1	6.49 प्रातः तुला में चन्द्र, छत्रम्।	19	20
24	58	18	3	भौम	विशा.दि	12	57	चतु. दि	3	57	7.33 प्रातः वृश्चिक में चन्द्र, श्रीवत्सः।	20	20
	56	19	4	बुध	अनु. दि	10	45	अमा.दि	1	4	3.26 रात से गण्डान्त, 3.8 रात धनु में बुध सौम्यः।	21	20

मध्याह्नः प्रति. से नवमी तक पहले दिन, दशमी से अमा. तक अपने दिन।

श्राद्धः प्रति से नवमी तक पहले दिन, दशमी से चतुर्दशी तक अपने दिन अमा. का पहले दिन।

मार्ग शुक्लपक्ष

विक्रमी सं॰ 2059, 5 *दिसम्बर की ग्रह स्थितिः*- वृश्चिक में सूर्य, केतु। धनु में बुध। वृष में राहु। मिथुन में शनि। कर्क में बृहस्पति। तुला में भौम, शुक्र।

दिन	मान	मगर	दिस.	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	हेमन्त ऋतु-दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
24	53	20	5	गुरु	ज्ये. दि	8	52	प्रति. दि	10	31	8.52 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 2.33 दिन तक (A)	7/22	5/20
	52	21	6	शुक्र	मूल. दि	7	27	द्विती.दि	8	26	त्र्यहः (तृती. प्र 6.56) (पूषा प्र 6.36) स्थिरः।	23	20
	51	22	7	शनि	उषा. प्र	6	26	चतु. प्र	6	26	12.35 दिन मकर में चन्द्र, मातंगः।	23	20
	48	23	8	रवि	श्रव. प्र	7	1	पंच. प्र	6	8	अमृतम्।	24	20
	48	24	9	सोम	धनि.	दिन	रात	षष्ठी. प्र	6	53	7.41 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, कुमार षष्ठी, सिद्धः।	25	21
	47	25	10	भौम	धनि. दि	8	21	सप्त.	दिन	रात	दिन अधिक, उन्मूलम्।	26	21
	46	26	11	बुध	शत. दि	10	21	सप्त.दि	8	21	मानसम्।	26	21
	43	27	12	गुरु	पूभा. दि	12	54	अष्ट.दि	10	24	बृहस्पति मास, 6.14 प्रातः मीन में चन्द्र, मुद्गरम्।	27	21
	41	28	13	शुक्र	उभा. दि	3	48	नव. दि	12	51	ध्वजः।	28	21
	42	29	14	शनि	रेव. प्र	6	51	दश. दि	3	28	12.6 दिन से 1.36 रात तक गण्डान्त, 6.51 शां मेष में (B)	29	22
	41	पौष	15	रवि	अश्वि. प्र	9	49	एका. प्र	6	3	आनन्दः।	29	22
	40	2	16	सोम	भर. प्र	12	32	द्वाद. प्र	8	23	6.45 प्रातः धनु में सूर्य मुहूर्त 15, किनारी, संक्रान्ति चरः।	30	22
	41	3	17	भौम	कृति. प्र	2	52	त्रयो. प्र	10	18	7.9 प्रातः वृष में चन्द्र, मुसलम्।	30	23
	38	4	18	बुध	रोहि. प्र	4	43	चर्तु. प्र	11	45	दत्तात्रेय जयन्ती, शूलम्।	31	23
	40	5	19	गुरु	मृग. प्र	6	3	पूर्णि. प्र	12	40	5.23 दिन मिथुन में चन्द्र, मृत्युः।	32	24

मध्याह्न : प्रति. से तृती. पहले दिन, चतु. से सप्त तक अपने दिन, 'अष्टमी का पहले दिन, नव. से पूर्णि. तक अपने दिन। **श्राद्ध** : प्रति से तृती. पहले दिन चतु. से सप्त. अपने दिन, अष्ट. से दश. पहले दिन। एका. से पूर्णि. अपने दिन। (A) गण्डान्त, कालदण्डः। (B) चन्द्र और पंचक समाप्त, मासान्त प्राजापत्यः।

पौष कृष्णपक्ष

विक्रमी सं० 2059, 20 दिसम्बर की ग्रह स्थितिः- धनु में सूर्य, बुध। वृष में राहु। मिथुन में शनि। कर्क में वृहस्पति। तुला में भौम, शुक्र। वृश्चिक में केतु।

दिन	मान	पौष	दिस.	वार	नक्षत्र	वजे	मि॰	तिथि	वजे	मि॰	हेमन्त ऋतु - उत्तरायण (ग्रह संचार वजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
24	38	6	20	शुक्र	आर्द्र. प्र	6	54	प्रति. प्र	1	4	मातृका पूजा, मुंजहर तहर, काम्यः।	7/32	5/24
	37	7	21	शनि	पुन. प्र	7	17	द्विती. प्र	12	59	1.13 रात कर्क में चन्द्र, मुद्गरम्।	33	24
	38	8	22	रवि	तिष्य. प्र	7	16	तृती. प्र	12	27	ध्वजः।	33	25
	37	9	23	सोम	आश्ले.प्र	6	53	चतु. प्र	11	32	संकट चतुर्थी, 1 वजे रात से गण्डान्त, प्राजापत्यः।	34	25
	38	10	24	भौम	मघा. प्र	6	11	पंच. प्र	10	18	12.43 दिन तक गण्डान्त, 6.53 प्रातः सिंह में चन्द्र, आनन्दः।	34	26
	40	11	25	बुध	पूफा. प्र	5	13	षष्ठी. प्र	8	46	5.48 शां मकर में बुध, चरः।	35	27
	40	12	26	गुरु	उफा. प्र	4	2	सप्त. प्र	6	59	10.55 दिन कन्या में चन्द्र, मातंगः।	35	27
	41	13	27	शुक्र	हस्त. प्र	2	39	अष्ट.दि	5	00	महाकाली जयन्ती, अमृतम्।	35	28
	40	14	28	शनि	चित्र. प्र	1	8	नव. दि	2	51	8.25 दिन तुला में चन्द्र, काण्डः।	36	28
	42	15	29	रवि	स्वा. प्र	11	31	दश. दि	12	35	श्रीनन्द लाल साहब (नन्दमोत) जयन्ती, आनन्देश्वर भैरव (A)	36	29
	43	16	30	सोम	विशा.प्र	9	52	एका.दि	10	15	4.18 दिन वृश्चिक में चन्द्र, मैत्रम्।	36	30
	45	17	31	भौम	अनु. प्र	8	16	द्वाद. दि	7	55	त्र्यहः (त्रयो. प्र. 5.41) वज्रम्।	37	31
	45	18	जन.	बुध	ज्ये. प्र	6	49	चतुर्द.प्र	3	38	6.27 रात वृश्चिक में शुक्र, 1.12 दिन से 10.50 रात (B)	37	31
	47	19	2	गुरु	मूला. प्र	5	36	अमा. प्र	1	53	क्ष्यचरिमावसी, धौम्यः।	37	32

मध्याह्नः प्रति. से दश. तक अपने दिन, एका. से त्रयो. तक पहले दिन, चतुर्द, अमा. अपने दिन। **श्राद्धः** प्रति. से अष्ट. तक अपने दिन, नव. से त्रयो. तक पहले दिन, चतुर्द, अमा. अपने दिन। (A) जयन्ती, अलापकः। (B) तक गण्डान्त, 6.49 शां धनु में चन्द्र और मूल गण्डान्त, 2003 ध्वांक्षः।

पौष शुक्लपक्ष

विक्रमी सं० 2059, *3 जनवरी की ग्रह स्थितिः*- धनु में सूर्य। मकर में बुध। वृष में राहु। मिथुन में शनि। कर्क में वृहस्पति। तुला में भौम। वृश्चिक में शुक्र, केतु।

दिन	मान	पौष	जन.	वार	नक्षत्र	बजे	मि०	तिथि	बजे	मि०	हेमन्त ऋतु-उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
24	50	20	3	शुक्र	पूषा. दि	4	46	प्रति. प्र	12	33	10.41 रात मकर में चन्द्र, प्रवर्धः।	7/37	5/33
	50	21	4	शनि	उषा. दि	4	24	द्विती.प्र	11	45	क्षयः।	37	33
	51	22	5	रवि	श्रव दि	4	38	तृती. प्र	11	34	मुसलम्।	37	34
	52	23	6	सोम	धनि. दि	5	31	चतु. प्र	12	5	5 वजे प्रातः कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, शूलम्।	38	35
	55	24	7	भौम	शत. प्र	7	4	पंच. प्र	1	17	11.43 रात वृश्चिक में भौम, मृत्युः।	38	36
	57	25	8	बुध	पूभा. प्र	9	14	षष्ठी. प्र	3	8	कुमार षष्ठी, 12.43 दिन वृष में वक्री शनि, (A)	38	37
25	00	26	9	गुरु	उभा. प्र	11	55	सप्त. प्र	5	28	छत्रम्।	38	38
	00	27	10	शुक्र	रेव. प्र	2	54	अष्ट.	दिन	रात	दिन अधिक, 2.54 रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, (B)	38	38
	3	28	11	शनि	अश्वि.प्र	5	58	अष्ट.दि	8	4	शनिमास, 9.41 दिन तक गण्डान्त, सौम्यः।	38	39
	7	29	12	रवि	भर.	दिन	रात	नव. दि	10	42	कालदण्डः।	37	40
	10	30	13	सोम	भर. दि	8	50	दश. दि	1	6	3.28 दिन वृष में चन्द्र, मासान्त। चरः	37	41
	12	माघ	14	भौम	कृति. दि	11	19	एका.दि	3	2	5.28 दिन मकर में सूर्य मुहूर्त 45, समुद्रीय, (C)	37	42
	15	2	15	बुध	रोहि. दि	1	1	द्वाद. दि	4	22	1.55 रात मिथुन में चन्द्र, शूलम्।	37	43
	17	3	16	गुरु	मृग. दि	2	29	त्रयो.दि	5	00	मृत्युः।	37	44
	21	4	17	शुक्र	आर्द्र. दि	3	5	चतुर्द.दि	4	58	काम्यः।	37	45
	25	5	18	शनि	पुन. दि	3	4	पूर्णि. दि	4	18	9.15 दिन कर्क में चन्द्र, छत्रम्।	36	46

मध्याह्न : प्रति. से अष्ट. तक अपने दिन, नवमी का पहले दिन, दश. से पूर्णि तक अपने दिन। श्राद्ध : प्रति से अष्ट. तक अपने दिन, नवमी से पूर्णि तक पहले दिन। (A) 2.43 दिन मीन में चन्द्र, काम्यः। (B) 8.11 रात से गण्डान्त बुध वक्री श्रीवत्सः। (C) शिशर संक्रान्ति, पुत्रदा एकादशी मुसलम्।

माघ कृष्णपक्ष

विक्रमी सं॰ 2059, *19 जनवरी की ग्रह स्थितिः-* मकर में सूर्य। वृष में शनि, राहु। कर्क में वृहस्पति। वृश्चिक में शुक्र, भौम, केतु। धनु में बुध।

दिन	मान	माघ	जन.	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	हेमन्त ऋतु-उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
25	27	6	19	रवि	तिष्य. दि	2	32	प्रति. दि	12	3	काश्मीरी पण्डितों का जन्मभूमि निष्कासन दिवस, श्रीवत्सः।	7/36	5/47
	31	7	20	सोम	आश्ले.दि	1	35	द्विती.दि	1	29	1.35 दिन सिंह में चन्द्र, 7.50 प्रातः से 7.16 शां तक (A)	36	48
	32	8	21	भौम	मघा. दि	12	21	तृती.दि	11	34	संकट चतुर्थी, काल दण्डः।	35	48
	35	9	22	वुध	पूफा. दि	10	56	चतु. दि	9	29	त्र्यहः, (पंच प्र 7.19) 4.34 दिन कन्या में चन्द्र, स्थिरः।	35	49
	38	10	23	गुरु	उफा. दि	9	27	षष्ठी.प्र	5	9	मातंगः।	35	50
	42	11	24	शुक्र	हस्त. दि	8	00	सप्त. प्र	3	4	साहिव सप्तमी, 7.19 शां तुला में चन्द्र, (B)	34	51
	46	12	25	शनि	स्वात. प्र	5	19	अष्ठ.प्र	1	4	काण्डः।	34	52
	50	13	26	रवि	विशा.प्र	4	10	नव. प्र	11	13	10.28 रात वृश्चिक में चन्द्र, उन्मूलम्।	33	53
	53	14	27	सोम	अनु. प्र	3	10	दश. प्र	9	30	मानसम्।	33	54
	57	15	28	भौम	ज्ये. प्र	2	20	एका. प्र	7	58	2.20 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, मुद्ररम्।	32	55
26	1	16	29	वुध	मूला. प्र	1	42	द्वाद. प्र	6	37	8.32 रात से गण्डान्त, ध्वजः।	32	56
	6	17	30	गुरु	पूषा. प्र	1	19	त्रयो.दि	5	31	7.45 प्रातः तक गण्डान्त, 7.17 प्रातः धनु में शुक्र, (C)	31	57
	10	18	31	शुक्र	उषा. प्र	1	16	चर्तु. दि	4	43	7.17 प्रातः मकर में चन्द्र, आनन्दः।	30	58
	13	19	फर.	शनि	श्रव. प्र	1	38	अमा.दि	4	18	स्थिरः।	30	59

मध्याह्न : प्रति. द्वित. अपने दिन, तृती से पंच पहले दिन, षष्ठी से अमा. अपने दिन। श्राद्ध : प्रति से पंच. तक पहले दिन षष्ठी से त्रयो. तक अपने दिन, चतुर्द, अमा. पहले दिन। (A) गण्डान्त, सौम्यः। (B) (चित्र प्र 6.36) अमृतम्। (C) शिव चतुर्दशी, प्राजापत्यः।

माघ शुक्लपक्ष

विक्रमी सं० 2059, 2 फरवरी की ग्रह स्थितिः- मकर में सूर्य। वृष में शनि, राहु। कर्क में वृहस्पति। वृश्चिक में भौम, केतु। धनु में बुध, शुक्र।

दिन	मान	माघ	फर.	वार	नक्षत्र	बजे	मि.	तिथि	बजे	मि.	शिशर ऋतु-उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
26	18	20	2	रवि	धनि. प्र	2	28	प्रति. दि	4	22	2.2 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, मातंगः।	7/29	6/00
	22	21	3	सोम	शत. प्र	3	51	द्विती.दि	4	58	अमृतम्।	28	1
	26	22	4	भौम	पूभा. प्र	5	47	तृती. प्र	6	8	गौरी-तृतीया, 11.18 रात मीन में चन्द्र, काण्डः।	28	2
	31	23	5	बुध	उभा.	दिन	रात	चतु. प्र	7	53	त्रिपुरा चतुर्थी, काम्यः।	27	3
	33	24	6	गुरु	उभा. दि	8	14	पंच. प्र	10	7	वसन्त पंचमी, 4.21 रात से गण्डान्त, छत्रम्।	26	3
	38.	25	7	शुक्र	रेव. दि	11	6	षष्ठी. प्र	12	42	कुमार षष्ठी, 11.6 दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, (A)	25	4
	42	26	8	शनि	अश्वि.दि	2	11	सप्त. प्र	3	23	7.45 प्रातः मकर में बुध, सूर्य सप्तमी, (B)	24	5
	46	27	9	रवि	भर. दि	5	15	अष्ट. प्र	5	55	11.59 रात वृष में चन्द्र, कालदण्डः।	24	6
	51	28	10	सोम	कृति. प्र	8	2	नव.	दिन	रात	दिन अधिक, चन्द्र मास, स्थिरः।	23	7
	56	29	11	भौम	रोहि. प्र	10	18	नव. दि	8	1	मासान्त, मातंगः।	22	8
27	1	फा.	12	बुध	मृग. प्र	11	53	दश. दि	9	30	11.8 दिन मिथुन में चन्द्र, अमृतम्।	21	9
	6	2	13	गुरु	आर्द्र. प्र	12	41	एका.दि	10	11	भीमसेन एकादशी, संक्रान्ति, 6.26 प्रातः कुम्भ में सूर्य, (C)	20	10
	11	3	14	शुक्र	पुन. प्र	12	41	द्वाद. दि	10	4	6.39 शां कर्क में चन्द्र, अलापकः।	19	11
	16	4	15	शनि	तिष्य. प्र	11	58	त्रयो.दि	9	9	मैत्रम्।	18	12
	21	5	16	रवि	आश्ले. प्र	10	39	चतुर्द.दि	7	32	त्र्यहः (पूर्णिमा प्र 5.21) 4.58 दिन से 4.14 रात (D)	17	13

मध्याह्न : प्रति से नव. तक अपने दिन, दश से पूर्णि. तक पहले दिन। श्राद्ध : प्रति, द्वि. का पहले दिन, तृती. से नव. तक अपने दिन, दश. से पूर्णि. तक पहले दिन। (A) 5.54 दिन तक गण्डान्त, श्रीवत्सः। (B) मार्तण्ड तीर्थ यात्रा, सौम्यः। (C) मुहूर्त 30, किनारी, काण्डः। (D) तक गण्डान्त, 10.39 रात सिंह में चन्द्र, काव पूर्णिमा, माघ पूर्णिमा, यक्षणी चतुर्दशी, वज्रम।

फाल्गुन कृष्णपक्ष

विक्रमी सं॰ 2059, *17 फरवरी की ग्रह स्थितिः-* कुम्भ में सूर्य। वृष में शनि, राहु। कर्क में बृहस्पति। वृश्चिक में भौम, केतु। धनु में शुक्र। मकर में बुध।

दिन	मान	फा.	फर.	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	शरद ऋतु - दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
27	23	6	17	सोम	मधा. प्र	8	53	प्रति. प्र	2	46	हुरि अकदोह, ध्वांक्षः।	7/16	6/13
	28	7	18	भौम	पूफा. प्र	6	51	द्विती. प्र	11	57	12.18 रात कन्या में चन्द्र, धौम्यः।	15	14
	33	8	19	बुध	उफा. दि	4	41	तृती. प्र	9	3	प्रवर्धः।	14	15
	38	9	20	गुरु	हस्त. दि	2	33	चतु. दि	6	13	संकट चतुर्थी, 1.34 रात तुला में चन्द्र, क्षयः।	13	16
	43	10	21	शुक्र	चित्रा.दि	12	35	पंच. दि	3	34	गजः।	12	17
	48	11	22	शनि	स्वा. दि	10	53	षष्ठी.दि	1	11	1.7 दिन धनु में भौम, 3.49 रात वृश्चिक में चन्द्र, सिद्धः।	11	18
	51	12	23	रवि	विशा.दि	9	31	सप्त. दि	11	9	उन्मूलम्।	10	18
	56	13	24	सोम	अनु. दि	8	31	अष्ट.दि	9	29	10.39 प्रातः मकर में शुक्र, होराष्टमी, चक्रेश्वर यात्रा, (A)	9	19
28	2	14	25	भौम	ज्ये. दि	7	52	नव. दि	8	11	7.52 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, (B)	8	20
	8	15	26	बुध	मूला. दि	7	36	दश. दि	7	15	त्र्यहः (एका. प्र 6.40) ध्वजः।	6	21
	13	16	27	गुरु	पूषा. दि	7	40	द्वाद. प्र	6	27	1.47 दिन मकर में चन्द्र, प्राजापत्यः।	5	22
	18	17	28	शुक्र	उषा. दि	8	5	त्रयो. प्र	6	36	*शिवरात्रि* - हेरथ, आनन्दः।	4	23
	21	18	मार्च	शनि	श्रव. दि	8	51	चर्तु.	दिन	रात	दिन अधिक 9.26 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, (C)	3	23
	26	19	2	रवि	धनि. दि	10	00	चर्तु. दि	7	8	शिवचतुर्दशी, मातंगः।	2	24
	32	20	3	सोम	शत दि	11	34	अमा. दि	8	5	सोमामावसी, डून्यमावसी, वटुक परमोजुन, अमृतम्।	1	25

शिवरात्रि
28 फरवरी

मध्याह्न : प्रति. से षष्ठी तक अपने दिन, सप्त. सं एकादशी तक पहले दिन, द्वा. से चतुर्द तक अपने दिन, अमा. का पहले दिन। श्राद्धः प्रति. से चतु. तक अपने दिन, पंचमी से एका. तक पहले दिन, द्वाद. से चतुर्द तक अपने दिन, अमावसी का पहले दिन। (A) 2.2 रात से गण्डान्त मानसम्। (B) 1.49 दिन तक गण्डान्त, मुद्गरम्। (C) 4.3 दिन कुम्भ में बुध, स्थिरः।

फाल्गुन शुक्लपक्ष

विक्रमी सं॰ 2059, *4 मार्च की ग्रह स्थितिः*- कुम्भ में सूर्य, बुध। वृष में शनि, राहु। कर्क में बृहस्पति। वृश्चिक में केतु। धनु में भौम। मकर में शुक्र।

दिन	मान	फा.	मार्च	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	शरद ऋतु-दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
28	38	21	4	भौम	पूभा. दि	1	33	प्रति. दि	9	29	7.2 प्रातः मीन में चन्द्र, काण्डः।	6/59	6/26
	43	22	5	बुध	उभा. दि	3	57	द्विती.दि	11	19	अलापकः।	58	27
	46	23	6	गुरु	रेव. प्र	6	45	तृती.दि	1	34	6.45 शां मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 12.3 दिन (A)	57	27
	52	24	7	शुक्र	अश्वि.प्र	9	48	चतु. दि	4	8	वज्रम्।	56	28
	58	25	8	शनि	भर. प्र	12	58	पंच. प्र	6	50	ध्वांक्षः।	54	29
29	3	26	9	रवि	कृति. प्र	4	00	षष्ठी. प्र	9	28	कुमार षष्ठी, 7.45 प्रातः वृष में चन्द्र, धौम्यः।	53	30
	6	27	10	सोम	रोहि. प्र	6	41	सप्त. प्र	11	48	प्रवर्धः।	52	30
	12	28	11	भौम	मृग.	दिन	रात	अष्ट. प्र	1	33	तैलाष्टमी, 7.46 शां मिथुन में चन्द्र, क्षयः।	51	31
	18	29	12	बुध	मृग. दि	8	47	नव. प्र	2	34	बुधमासः, अमृतम्।	49	32
	23	30	13	गुरु	आर्द्र. दि	10	8	दश. प्र	2	43	4.34 रात कर्क में चन्द्र, थाल भरुण, मासान्त, काण्डः।	48	33
	26	चैत्र	14	शुक्र	पुन. दि	10	38	एका. प्र	2	00	3.18 रात मीन में सूर्य, मुहूर्त 30, दरियाई, सोन्थ, अलापकः।	47	33
	32	2	15	शनि	तिष्य.दि	10	17	द्वाद. प्र	12	27	संक्रान्ति व्रत, 3.28 रात से गण्डान्त, मैत्रम्।	46	34
	38	3	16	रवि	आश्ले.दि	9	8	त्रयो. प्र	10	10	9.8 दिन सिंह में चन्द्र, 2.40 दिन तक गण्डान्त, व्रजम्।	44	35
	43	4	17	सोम	मघा. दि	7	21	चतुर्द.प्र	7	19	(पूफ॰ प्र 5-3) ध्वांक्षः।	43	36
	47	5	18	भौम	उफा. प्र	2	27	पूर्णि. दि	4	5	होली, 4.18 दिन मीन में बुध, 10.25 दिन (B)	42	36

सोन्थ 14 मार्च

थाल भरुण 13 मार्च

मध्याह्न : प्रति. द्वित. का पहले दिन, तृती. से पूर्णि. तक अपने दिन।
श्राद्ध : प्रति से चतु. तक पहले दिन, पंच से पूर्णि तक अपने दिन। (A) से 1.31 रात तक गण्डान्त, श्री राम कृष्ण परं हंस जयन्ती, मैत्रम्। (B) कन्या में चन्द्र, प्राजापत्यः

चैत्र कृष्णपक्ष

विक्रमी सं० 2059, *19 मार्च की ग्रह स्थितिः*- मीन में सूर्य, बुध। वृष में शनि, राहु। कर्क में बृहस्पति। वृश्चिक में केतु। धनु में भौम। मकर में शुक्र।

दिन	मान	चैत्र	मार्च	वार	नक्षत्र	बजे	मि.	तिथि	बजे	मि.	वसंत ऋतु-उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
29	53	6	19	बुध	हस्त. प्र	11	43	प्रति. दि	12	37	आनन्दः।	6/40	6/37
	58	7	20	गुरु	चित्र. प्र	9	2	द्विती.दि	9	7	त्र्यहः (तृ प्र 5.44) 10.23 दिन तुला में चन्द्र, चरः।	39	38
30	2	8	21	शुक्र	स्वात.दि	6	34	चतु. प्र	2	37	संकट चतुर्थी, मुसलम्।	38	38
	8	9	22	शनि	विशा.दि	4	27	पंच. प्र	11	54	8.46 रात कुम्भ में शुक्र, 11 बजे दिन वृश्चिक में चन्द्र, शूलम्।	36	39
	13	10	23	रवि	अनु. दि	2	47	षष्टी.प्र	9	40	मृत्युः।	35	40
	20	11	24	सोम	ज्येष्ठ दि	1	39	सप्त. प्र	7	59	1.39 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, (A)	34	41
	23	12	25	भौम	मूला. दि	1	4	अष्ट. प्र	6	52	छत्रम्।	32	42
	28	13	26	बुध	पूषा. दि	1	30	नव. दि	6शां	18	7.13 शां मकर में चन्द्र, श्रीवत्सः।	31	42
	35	14	27	गुरु	उषा. दि	1	34	दश. दि	6	17	सौम्यः।	30	43
	38	15	28	शुक्र	श्रव. दि	2	34	एका. प्र	6	46	3.16 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, धौम्यः।	28	44
	43	16	29	शनि	धनि. दि	4	1	द्वाद. प्र	7	41	प्रवर्धः।	27	45
	48	17	30	रवि	शत. दि	5	52	त्रयो. प्र	9	2	क्षयः।	26	46
	55	18	31	सोम	पूभा. प्र	8	5	चर्तु. प्र	10	45	1.32 दिन मीन में चन्द्र, चित्र चुदाह, गजः।	25	46
	58	19	अप्रै.	भौम	उभा. प्र	10	38	अमा. प्र	12	49	श्रीभट्ट दिवस, विचार नाग यात्रा, धाल भरुण, सिद्धः।	23	47

मध्याह्न : प्रति. का अपने दिन, द्वि., तृती, का पहले दिन, चतु. से अमावसी तक अपने दिन। श्राद्ध : प्रति से तृती. तक पहले दिन, चतु. से नवमी तक अपने दिन, दश. का पहले दिन, एका. से अमा. तक अपने दिन। (A) 7.55 प्रातः से 7.32 शां तक गण्डान्त, काम्यः।

मुहूर्त प्रकरण
(2059 के लिये)

साथ रदुन
(यज्ञोपवीत तथा विवाह मुहूर्तों के लिये वस्त्र, मसाला, अग्निवत्र लिवुन धरनावय, मंज लागन्य, मस मुचरून इत्यादि)

चैत्र शुक्ल पक्ष

17 अप्रैल चतुर्थी बुधवार
18 अप्रैल पंचमी गुरुवार
19 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
1 वजे 2 दिन से
21 अप्रैल नवमी रविवार
25 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार
3 वजे 28 दिन तक
26 अप्रैल चतुर्दशी शुक्रवार
11 वजे 55 दिन से

वैशाख कृष्ण पक्ष

28 अप्रैल द्वितीया रविवार
29 अप्रैल तृतीया सोमवार
3 मई सप्तमी शुक्रवार
5 वजे 43 दिन से
10 मई त्रयोदशी शुक्रवार
9 वजे 53 दिन से

वैशाख शुक्ल पक्ष

16 मई चतुर्थी गुरुवार
6 वजे 28 शां से
17 मई पंचमी शुक्रवार
22 मई दशमी बुधवार
12 वजे 14 दिन से
23 मई द्वादशी गुरुवार
24 मई त्रयोदशी शुक्रवार
26 मई पूर्णिमा रविवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

27 मई प्रतिपदि सोमवार
31 मई पंचमी शुक्रवार
6 जून एकादशी गुरुवार
5 वजे 26 शां से
7 जून द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

13 जून तृतीया गुरुवार
19 जून नवमी बुधवार
2 वजे 28 दिन से
20 जून दशमी गुरुवार
21 जून एकादशी शुक्रवार
24 जून पूर्णिमा सोमवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

27 जून तृतीया गुरुवार
11 वजे 23 दिन से
4 जुलाई नवमी गुरुवार
2 वजे 11 दिन से
7 जुलाई द्वादशी रविवार
8 जुलाई त्रयोदशी सोमवार
5 वजे 56 शां तक

श्रावण कृष्ण पक्ष

4 अगस्त दशमी रविवार
5 अगस्त एकादशी सोमवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

12 अगस्त चतुर्थी सोमवार
14 अगस्त षष्ठी बुधवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

16 सितम्बर दशमी सोमवार
18 सितम्बर द्वादशी बुधवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

7 अक्टूबर प्रतिपदि सोमवार
10 अक्टूबर पंचमी गुरुवार
11 अक्टूबर षष्ठी शुक्रवार
12 वजे 29 दिन तक
14 अक्टूबर नवमी सोमवार
1 वजे 46 दिन से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

7 नवम्बर तृतीया गुरुवार
4 वजे 58 दिन तक
11 नवम्बर सप्तमी सोमवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

21 नवम्बर प्रतिपदि गुरुवार
22 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
24 नवम्बर चतुर्थी रविवार
11 वजे 37 दिन से
25 नवम्बर पंचमी सोमवार
1 दिसम्बर द्वादशी रविवार
2 दिसम्बर त्रयोदशी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

5 दिसम्बर प्रतिपदि गुरुवार
8 दिसम्बर पंचमी रविवार

पौष शुक्ल पक्ष

16 जनवरी त्रयोदशी गुरुवार
17 जनवरी चतुर्दशी शुक्रवार
4 वजे 51 दिन से

माघ कृष्ण पक्ष

19 जनवरी प्रतिपदि रविवार
2 वजे 32 दिन से
24 जनवरी सप्तमी शुक्रवार
27 जनवरी दशमी सोमवार

माघ शुक्ल पक्ष

2 फरवरी प्रति रविवार
2 वजे 2 मिनट तक
7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार
11 वजे 6 दिन से
14 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

19 फरवरी तृतीया बुधवार
4 वजे 41 दिन से
20 फरवरी चतुर्थी गुरुवार
6 वजे 13 शां से
21 फरवरी पंचमी शुक्रवार
23 फरवरी सप्तमी रविवार
24 फरवरी अष्टमी सोमवार
9 वजे 29 दिन तक
28 फरवरी त्रयोदशी शुक्रवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

7 मार्च चतुर्थी शुक्रवार
4 वजे 8 दिन से
10 मार्च सप्तमी सोमवार

यज्ञोपवीत मुहूर्त
विक्रमी सम्वत 2059 के लिये

चैत्र शुक्ल पक्ष

19 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
1 वजे 2 दिन से
1 वजे 49 दिन तक (4)
1 वजे 49 दिन से
4 वजे 11 दिन तक (5)

24 अप्रैल द्वादशी बुधवार
8 वजे 50 दिन से
11 वजे 6 दिन तक (3)
11 वजे 6 दिन से
1 वजे 29 दिन तक (4)
25 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार
8 वजे 46 दिन से
11 वजे 2 दिन तक (3)
11 वजे 2 दिन से
1 वजे 26 दिन तक (4)

वैशाख कृष्ण पक्ष

29 अप्रैल तृतीया सोमवार
8 वजे 31 दिन से
10 वजे 46 दिन तक (3)
10 वजे 46 दिन से
1 वजे 10 दिन तक (4)

वैशाख शुक्ल पक्ष

17 मई पंचमी शुक्रवार
9.39 दिन से 11.59 दिन तक (4)
11.59 दिन से 2.21 दिन तक (5)
22 मई दशमी बुधवार
12 वजे 14 दिन से
2 वजे 5 दिन तक (5)
23 मई द्वादशी गुरुवार
9 वजे 16 दिन से
11 वजे 39 दिन तक (4)
11 वजे 39 दिन से
1 वजे 57 दिन तक (5)
24 मई त्रयोदशी शुक्रवार
9 वजे 8 दिन से
11 वजे 31 दिन तक (4)
11 वजे 31 दिन से
1 वजे 53 दिन तक (5)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

27 मई प्रतिपदि सोमवार
3 वजे 21 दिन से
4 वजे 2 दिन तक (6)
31 मई पंचमी शुक्रवार
8 वजे 40 दिन से
11 वजे 4 दिन तक (4)
11 वजे 4 दिन से
1 वजे 26 दिन तक (5)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

13 जून तृतीया गुरुवार
7 वजे 49 प्रातः से
10 वजे 13 दिन तक (4)
10 वजे 13 दिन से
12 वजे 34 दिन तक (5)
19 जून नवमी बुधवार
2 वजे 31 दिन से
3 वजे 10 दिन तक (7)
20 जून दशमी गुरुवार
7 वजे 22 प्रातः से
9 वजे 45 दिन तक (4)
9 वजे 45 दिन से
12 वजे 7 दिन तक (5)
12 वजे 7 दिन से
2 वजे 27 दिन तक (6)
21 जून एकादशी शुक्रवार
7 वजे 18 प्रातः से
9 वजे 41 दिन तक (4)
9 वजे 41 दिन से
12 वजे 3 दिन तक (5)

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

27 जून तृतीया गुरुवार
11 वजे 25 दिन से
11 वजे 39 दिन तक (5)
11 वजे 39 दिन से
2 वजे दिन तक (6)

9 जुलाई से 16 सितम्बर तक का समय यज्ञोपवीत के लिये निषेध है

भाद्र शुक्ल पक्ष

19 सितम्बर त्रयोदशी गुरुवार

8 वजे 30 दिन से
10 वजे 52 दिन तक (7)
10 वजे 52 दिन से
1 वजे 14 दिन तक (8)

(22 सितम्बर से
6 अक्टूबर तक श्राद्ध)

आश्विन शुक्ल पक्ष

10 अक्टूबर पंचमी गुरुवार
7 वजे 7 प्रातः से
9 वजे 30 दिन तक (7)
11 वजे 51 दिन से
1 वजे 54 दिन तक (9)

11 अक्टूबर षष्ठी शुक्रवार
7 वजे 3 प्रातः से
9 वजे 26 दिन तक (7)
11 वजे 47 दिन से
12 वजे 29 दिन तक (9)

(22 अक्टूबर से
6 नवम्बर तक शुक्रास्त)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

11 नवम्बर सप्तमी सोमवार
9 वजे 45 दिन से
11 वजे 48 दिन तक (9)

17 नवम्बर त्रयोदशी रविवार
9 वजे 22 दिन से
11 वजे 24 दिन तक (9)

मार्ग कृष्ण पक्ष

24 नवम्बर चतुर्थी रविवार
2 वजे 1 दिन से
3 वजे 2 दिन तक (12)

25 नवम्बर पंचमी सोमवार
8वजे 50 दिन से
10 वजे 53 दिन तक (9)

मार्ग शुक्ल पक्ष

9 दिसम्बर षष्ठी सोमवार
6 वजे 48 प्रातः से
9 वजे 44 दिन तक (9)
12 वजे 50 दिन से
2 वजे 9 दिन तक (12)

13 दिसम्बर नवमी शुक्रवार
2 वजे 5 दिन से
3 वजे 37 दिन तक (1)

माघ कृष्ण पक्ष

22 जनवरी चतुर्थी बुधवार
10 वजे 56 दिन से
11 वजे 28 दिन तक (12)
11 वजे 28 दिन से
12 वजे 59 दिन तक (1)

माघ शुक्ल पक्ष

6 फरवरी पंचमी गुरुवार
7 वजे 44 प्रातः से
9 वजे 10 दिन तक (11)
10 वजे 29 दिन से
12 वजे दिन तक (1)

7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार
7 वजे 40 प्रातः से
9 वजे 6 दिन तक (11)

14 फरवरी द्वादशी शुक्रवार
8 वजे 38 दिन से
9 वजे 58 दिन तक (12)
9 वजे 58 दिन से
11 वजे 29 दिन तक (1)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

19 फरवरी तृतीया बुधवार
8 वजे 22 दिन से
9 वजे 42 दिन तक (12)
9 वजे 42 दिन से
11 वजे 12 दिन तक (1)

21 फरवरी पंचमी शुक्रवार
8 वजे 11 दिन से
9 वजे 30 दिन तक (12)
9 वजे 30 दिन से
11 वजे 1 दिन तक (1)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

5 मार्च द्वितीया बुधवार
8 वजे 43 दिन से
10 वजे 14 दिन तक (1)
12 वजे 7 दिन से
2 वजे 23 दिन तक (3)

6 मार्च तृतीया गुरुवार
8 वजे 39 दिन से
10 वजे 10 दिन तक (1)
12 वजे 4 दिन से
1 वजे 34 दिन तक (3)

विवाह मुहूर्त
2059 के लिये

चैत्र शुक्ल पक्ष

22 अप्रैल दशमी सोमवार
10 वजे 52 दिन से
11 वजे 14 दिन तक (3)
11 वजे 14 दिन से
1 वजे 37 दिन तक (4)
11 वजे 4 रात से
1 वजे 6 रात तक (9)
1 वजे 6 रात से
2 वजे 45 रात तक (10)
2 वजे 45 रात से
4 वजे 10 रात तक (11)

24 अप्रैल द्वादशी बुधवार
8 वजे 50 दिन से
11 वजे 6 दिन तक (3)
11 वजे 6 दिन से
1 वजे 29 दिन तक (4)
1 वजे 29 दिन से
3 वजे 51 दिन तक (5)
10 वजे 56 रात से
12 वजे 58 रात तक (9)
12 वजे 58 रात से
2 वजे 37 रात तक (10)
2 वजे 37 रात से
4 वजे 2 रात तक (11)

25 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार
8 वजे 46 दिन से
11 वजे 2 दिन तक (3)
11 वजे 2 दिन से
1 वजे 26 दिन तक (4)
1 वजे 26 दिन से
3 वजे 47 दिन तक (5)
10 वजे 52 रात से
12 वजे 54 रात तक (9)
12 वजे 54 रात से
2 वजे 33 रात तक (10)
2 वजे 33 रात से
3 वजे 58 रात तक (11)

26 अप्रैल चतुर्दशी शुक्रवार
8 वजे 43 दिन से
10 वजे 58 दिन तक (3)
10 वजे 58 दिन से
1 वजे 22 दिन तक (4)
1 वजे 22 दिन से
3 वजे 43 दिन तक (5)
10 वजे 48 रात से
12 वजे 50 रात तक (9)
12 वजे 50 रात से
2 वजे 29 रात तक (10)
2 वजे 29 रात से
3 वजे 54 रात तक (11)

वैशाख कृष्ण पक्ष

1 मई पंचमी बुधवार
8 वजे 23 दिन से
10 वजे 38 दिन तक (3)
10 वजे 38 दिन से
1 वजे 2 दिन तक (4)
1 वजे 2 दिन से
3 वजे 24 दिन तक (5)

3 मई सप्तमी शुक्रवार
10 वजे 20 रात से
12 वजे 23 रात तक (9)
2 वजे 2 रात से
3 वजे 27 रात तक (11)
4 मई अष्टमी शनिवार
8 वजे 11 दिन से
10 वजे 26 दिन तक (3)
10 वजे 26 दिन से
12 वजे 50 दिन तक (4)
12 वजे 50 दिन से
3 वजे 12 दिन तक (5)
10 वजे 17 रात से
12 वजे 19 रात तक (9)
1 वजे 58 रात से
3 वजे 23 रात तक (11)
5 मई नवमी रविवार
8 वजे 7 दिन से
10 वजे 23 दिन तक (3)
10 वजे 23 दिन से
12 वजे 46 दिन तक (4)
12 वजे 46 दिन से
3 वजे 8 दिन तक (5)
10 वजे 13 रात से
12 वजे 15 रात तक (9)
12 वजे 15 रात से
1 वजे 54 रात तक (10)
8 मई एकादशी बुधवार
7 वजे 55 प्रातः से
10 वजे 11 दिन तक (3)
10 वजे 11 दिन से
12 वजे 34 दिन तक (4)
12 वजे 34 दिन से
2 वजे 56 दिन तक (5)
10 वजे 1 रात से
12 वजे 3 रात तक (9)
12 वजे 3 रात से
1 वजे 42 रात तक (10)
1 वजे 42 रात से
3 वजे 7 रात तक (11)
9 मई द्वादशी गुरुवार
7 वजे 51 प्रातः से
10 वजे 7 दिन तक (3)
10 वजे 7 दिन से
12 वजे 30 दिन तक (4)
12 वजे 30 दिन से
2 वजे 52 दिन तक (5)
10 वजे 57 रात से
11 वजे 59 रात तक (9)
11 वजे 59 रात से
1 वजे 38 रात तक (10)
1 वजे 38 रात से
3 वजे 3 रात तक (11)
10 मई त्रयोदशी शुक्रवार
7 वजे 47 प्रातः से
10 वजे 3 दिन तक (3)
10 वजे 3 दिन से
12 वजे 27 दिन तक (4)
12 वजे 27 दिन से
2 वजे 48 दिन तक (5)
9 वजे 53 रात से
11 वजे 55 रात तक (9)
11 वजे 55 रात से
1 वजे 34 रात तक (10)
1 वजे 34 रात से
2 वजे 59 रात तक (11)
11 मई चतुर्दर्शी शनिवार
7 वजे 44 प्रातः से
9 वजे 59 दिन तक (3)
9 वजे 59 दिन से
12 वजे 23 दिन तक (4)
12 वजे 23 दिन से
2 वजे 44 दिन तक (5)

वैशाख शुक्ल पक्ष

19 मई सप्तमी रविवार
11 वजे 20 रात से

12 वजे 59 रात तक (10)
12 वजे 59 रात से
2 वजे 24 रात तक (11)
2 वजे 24 रात से
3 वजे 43 रात तक (12)

20 मई अष्टमी सोमवार
9 वजे 24 दिन से
11 वजे 47 दिन तक (4)
11 वजे 47 दिन से
2 वजे 9 दिन तक (5)

22 मई दशमी वुधवार
9 वजे 16 दिन से
11 वजे 39 दिन तक (4)
11 वजे 39 दिन से
2 वजे 1 दिन तक (5)
11 वजे 8 रात से
12 वजे 47 रात तक (10)
12 वजे 47 रात से
2 वजे 12 रात तक (11)
2 वजे 12 रात से
3 वजे 32 रात तक (12)

23 मई द्वादशी गुरुवार
9 वजे 12 दिन से
11 वजे 35 दिन तक (4)
11 वजे 35 दिन से
1 वजे 57 दिन तक (5)
11 वजे 4 रात से
12 वजे 43 रात तक (10)
12 वजे 43 रात से
2 वजे 8 रात तक (11)
2 वजे 8 रात से
3 वजे 28 रात तक (12)

24 मई त्रयोदशी शुक्रवार
9 वजे 8 दिन से
11 वजे 31 दिन तक (4)
11 वजे 31 दिन से
1 वजे 53 दिन तक (5)
1 वजे 53 दिन से
4 वजे 14 दिन तक (6)
11 वजे रात से
12 वजे 39 रात तक (10)
12 वजे 39 रात से
2 वजे 4 रात तक (11)
2 वजे 4 रात से
3 वजे 24 रात तक (12)

26 मई पूर्णिमा रविवार
9 वजे दिन से
11 वजे 24 दिन तक (4)
11 वजे 24 दिन से
1 वजे 45 दिन तक (5)
1 वजे 45 दिन से
4 वजे 6 दिन तक (6)
10 वजे 52 रात से
12 वजे 31 रात तक (10)
12 वजे 31 रात से
1 वजे 56 रात तक (11)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

27 मई प्रतिपदि सोमवार
1 वजे 53 रात से
3 वजे 12 रात तक (12)

30 मई चतुर्थी गुरुवार
2 वजे 28 रात से
3 वजे रात तक (12)

31 मई पंचमी शुक्रवार
8 वजे 40 दिन से
11 वजे 4 दिन तक (4)
11 वजे 4 दिन से
1 वजे 26 दिन तक (5)
1 वजे 26 दिन से
3 वजे 46 दिन तक (6)
12 वजे 12 रात से
1 वजे 37 रात तक (11)
1 वजे 37 रात से
2 वजे 56 रात तक (12)

1 जून षष्ठी शनिवार
8 वजे 36 दिन से
11 वजे दिन तक (4)

11 वजे दिन से
1 वजे 22 दिन तक (5)
1 वजे 22 दिन से
3 वजे 42 दिन तक (6)
10 वजे 29 रात से
12 वजे 8 रात तक (10)
1 वजे 33 रात से
2 वजे 52 रात तक (12)

5 जून दशमी बुधवार
8 वजे 21 दिन से
10 वजे 44 दिन तक (4)
10 वजे 44 दिन से
1 वजे 6 दिन तक (5)
1 वजे 6 दिन से
3 वजे 26 दिन तक (6)
10 वजे 13 रात से
11 वजे 52 रात तक (10)
11 वजे 52 रात से
1 वजे 17 रात तक (11)

6 जून एकादशी गुरुवार
8 वजे 17 दिन से
10 वजे 41 दिन तक (4)
10 वजे 41 दिन से
1 वजे 2 दिन तक (5)
1 वजे 2 दिन से
3 वजे 23 दिन तक (6)
10 वजे 9 रात से
11 वजे 48 रात तक (9)
11 वजे 48 रात से
1 वजे 13 रात तक (11)

7 जून द्वादशी शुक्रवार
8 वजे 13 दिन से
10 वजे 36 दिन तक (4)
10 वजे 36 दिन से
12 वजे 58 दिन तक (5)
12 वजे 58 दिन से
3 वजे 19 दिन तक (6)

9 जून चतुर्दशी रविवार
11 वजे 36 रात से
1 वजे 1 रात तक (11)
1 वजे रात से
2 वजे 21 रात तक (12)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

16 जून षष्ठीं रविवार
7 वजे 37 प्रातः से
10 वजे 1 दिन तक (4)
12 वजे 23 दिन से
2 वजे 43 दिन तक (6)

17 जून सप्तमी सोमवार
9 वजे 26 रात से
11 वजे 5 रात तक (10)
11 वजे 5 रात से
12 वजे 30 रात तक (11)
12 वजे 30 रात से
1 वजे 49 रात तक (12)

19 जून नवमी बुधवार
7 वजे 46 प्रातः से
9 वजे 49 दिन तक (4)
9 वजे 49 दिन से
12 वजे 11 दिन तक (5)
9 वजे 18 रात से
10 वजे 57 रात तक (10)
10 वजे 57 रात से
12 वजे 22 रात तक (11)
12 वजे 22 रात से
1 वजे 42 रात तक (12)

20 जून दशमी गुरुवार
7 वजे 22 प्रातः से
9 वजे 45 दिन तक (4)
9 वजे 45 दिन से
12 वजे 7 दिन तक (5)
12 वजे 7 दिन से
2 वजे 27 दिन तक (6)
9 वजे 14 रात से
10 वजे 53 रात तक (10)

10 वजे 53 रात से
12 वजे 18 रात तक (11)
12 वजे 18 रात से
1 वजे 38 रात तक (12)
21 जून एकादशी शुक्रवार
7 वजे 18 प्रातः से
9 वजे 41 दिन तक (4)
9 वजे 41 दिन से
12 वजे 3 दिन तक (5)
22 जून द्वादशी शनिवार
12 वजे 26 दिन से
2 वजे 20 दिन तक (6)
2 वजे 20 दिन से
4 वजे 43 दिन तक (7)
9 वजे 6 रात से
10 वजे 45 रात तक (10)
10 वजे 45 रात से
12 वजे 10 रात तक (11)
12 वजे 10 रात से

1 वजे 30 रात तक (12)
आषाढ़ कृष्ण पक्ष
27 जून तृतीया गुरुवार
11 वजे 39 दिन से
2 वजे दिन तक (6)
2 वजे दिन से
4 वजे 23 दिन तक (7)
10 वजे 25 रात से
11 वजे 51 रात तक (11)
11 वजे 51 रात से
1 वजे 10 रात तक (12)
1 वजे 10 रात से
2 वजे 41 रात तक (1)
28 जून चतुर्थी शुक्रवार
6 वजे 50 प्रातः से
9 वजे 14 दिन तक (4)
9 वजे 14 दिन से
11 वजे 35 दिन तक (5)
11 वजे 35 दिन से

1 वजे 56 दिन तक (6)
1 वजे 56 दिन से
4 वजे 19 दिन तक (7)
10 वजे 21 रात से
11 वजे 47 रात तक (11)
11 वजे 47 रात से
1 वजे 6 रात तक (12)
1 वजे 6 रात से
2 वजे 37 रात तक (1)
29 जून पंचमी शनिवार
6 वजे 46 प्रातः से
9 वजे 10 दिन तक (4)
9 वजे 10 दिन से
11 वजे 32 दिन तक (5)
11 वजे 32 दिन से
1 वजे 52 दिन तक (6)
1 जुलाई षष्ठी सोमवार
8 वजे 31 रात से
10 वजे 10 रात तक (10)

10 वजे 10 रात से
11 वजे 35 रात तक (11)
12 वजे 54 रात से
2 वजे 26 रात तक (1)
3 जुलाई अष्टमी बुधवार
6 वजे 30 प्रातः से
8 वजे 54 दिन तक (4)
8 वजे 54 दिन से
11 वजे 16 दिन तक (5)
11 वजे 16 दिन से
1 वजे 36 दिन तक (6)
1 वजे 36 दिन से
4 वजे दिन तक (7)
8 वजे 23 रात से
10 वजे 2 रात तक (10)
10 वजे 2 रात से
11 वजे 27 रात तक (11)
4 जुलाई नवमी गुरुवार
6 वजे 27 प्रातः से

8 वजे 50 दिन तक (4)
8 वजे 50 दिन से
11 वजे 12 दिन तक (5)
11, वजे 12 दिन से
1 वजे 32 दिन तक (6)
1 वजे 32 दिन से
3 वजे 56 दिन तक (7)
8 वजे 19 रात से
9 वजे 58 रात तक (10)
9 वजे 58 रात से
11 वजे 23 रात तक (11)
11 वजे 23 रात से
12 वजे 43 रात तक (12)
7 जुलाई द्वादशी शुक्रवार
9 वजे 38 दिन से
11 वजे दिन तक (5)
11 वजे दिन से
1 वजे 21 दिन तक (6)
1 वजे 21 दिन से
3 वजे 44 दिन तक (7)

9 वजे 46 रात से
11 वजे 11 रात तक (11)
11 वजे 11 रात से
12 वजे 31 रात तक (12)
12 वजे 31 रात से
2 वजे 2 रात तक (1)

9 जुलाई से
1 अगस्त तक
बृहस्पति अस्त

श्रावण शुक्ल पक्ष

9 अगस्त प्रतिपदि शुक्रवार
7 वजे 36 शां से
9 वजे 1 रात तक (11)
9 वजे 1 रात से
10 वजे 21 रात तक (12)
10 वजे 21 रात से
11 वजे 52 रात तक (1)
10 अगस्त द्वितीया शनिवार
8 वजे 46 दिन से
11 वजे 7 दिन तक (6)
11 अगस्त तृतीया रविवार
8 वजे 42 दिन से
11 वजे 3 दिन तक (6)
11 वजे 3 दिन से
1 वजे 26 दिन तक (7)
7 वजे 28 शां से
8 वजे 54 रात तक (11)
8 वजे 54 रात से
10 वजे 13 रात तक (12)
10 वजे 13 रात से
11 वजे 44 रात तक (1)
12 अगस्त चतुर्थी सोमवार
6 वजे 17 प्रातः से
8 वजे 38 दिन तक (5)
10 वजे 59 दिन से
1 वजे 22 दिन तक (7)
7 वजे 24 शां से
8 वजे 50 रात तक (11)
8 वजे 50 रात से

10 वजे 9 रात तक (12)
10 वजे 9 रात से
11 वजे 40 रात तक (1)
14 अगस्त षष्ठी बुधवार
6 वजे 9 प्रातः से
8 वजे 31 दिन तक (5)
8 वजे 31 दिन से
10 वजे 51 दिन तक (6)
7 वजे 17 शां से
8 वजे 42 रात तक (11)
8 वजे 42 रात से
10 वजे 1 रात तक (12)
10 वजे 1 रात से
11 वजे 33 रात तक (1)

16 अगस्त से
16 सितम्बर तक
सयंघ-सिंह में सूर्य

भाद्र शुक्ल पक्ष

19 सितम्बर त्रयोदशी गुरुवार

8 वजे 30 दिन से
10 वजे 53 दिन तक (7)

22 सितम्बर से
6 अक्टूबर तक
श्राद्ध-पितृ पक्षे

आश्विन शुक्ल पक्ष

9 अक्टूबर चतुर्थी बुधवार
6 वजे 21 रात से
7 वजे 52 रात तक (1)
12 वजे 1 रात से
2 वजे 25 रात तक (4)

10 अक्टूबर पंचमी गुरुवार
7 वजे 7 प्रातः से
9 वजे 30 दिन तक (7)

11 अक्टूबर षष्ठी शुक्रवार
1 वजे 50 दिन से
3 वजे 28 दिन तक (10)
6 वजे 13 शां से
7 वजे 44 शां तक (1)
11 वजे 53 रात से
2 वजे 17 रात तक (4)

12 अक्टूबर सप्तमी शनिवार
6 वजे 59 प्रातः से
9 वजे 22 दिन तक (7)

14 अक्टूबर नवमी सोमवार
1 वजे 38 दिन से
3 वजे 17 दिन तक (10)
6 वजे 1 शां से
7 वजे 33 शां तक (1)
11 वजे 41 रात से
2 वजे 5 रात तक (4)

18 अक्टूबर त्रयोदशी शुक्रवार
11 वजे 26 रात से
1 वजे 49 रात तक (4)
1 वजे 49 रात से
4 वजे 11 रात तक (5)

19 अक्टूबर त्रयोदशी शनिवार
1 वजे 18 दिन से
2 वजे 57 दिन तक (10)
2 वजे 57 दिन से
4 वजे 22 दिन तक (11)
11 वजे 22 रात से
1 वजे 45 रात तक (4)
1 वजे 45 रात से
4 वजे 7 रात तक (5)

22 अक्टूबर से
6 नवम्बर तक शुक्रास्त

कार्तिक शुक्ल पक्ष

10 नवम्बर षष्ठी रविवार
9 वजे 55 रात से
12 वजे 19 रात तक (4)
12 वजे 19 रात से
2 वजे 41 रात तक (5)

11 नवम्बर सप्तमी सोमवार
11 वजे 48 दिन से
1 वजे 27 दिन तक (10)
1 वजे 27 दिन से
2 वजे 52 दिन तक (11)
9 वजे 51 रात से
12 वजे 15 रात तक (4)
12 वजे 15 रात से
2 वजे 37 रात तक (5)

17 नवम्बर त्रयोदशी रविवार
11 वजे 24 दिन से
1 वजे 3 दिन तक (10)
1 वजे 3 दिन से
2 वजे 28 दिन तक (11)
2 वजे 28 दिन से
3 वजे 48 दिन तक (12)
9 वजे 28 रात से
11 वजे 51 रात तक (4)
11 वजे 51 रात से
2 वजे 13 रात तक (5)

18 नवम्बर चतुर्दशी सोमवार
11 वजे 20 दिन से
12 वजे 59 दिन तक (10)
12 वजे 59 दिन से
2 वजे 24 दिन तक (11)

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर सप्तमी बुधवार
10 वजे 45 दिन से
12 वजे 24 दिन तक (10)
12 वजे 24 दिन से
1 वजे 49 दिन तक (11)
1 वजे 49 दिन से
3 वजे 8 दिन तक (12)
8 वजे 48 रात से
11 वजे 12 रात तक (4)
28 नवम्बर अष्टमी गुरुवार
1 वजे 30 रात से
3 वजे 50 रात तक (6)
29 नवम्बर दशमी शुक्रवार
10 वजे 37 दिन से
12 वजे 16 दिन तक (10)
12 वजे 16 दिन से
1 वजे 41 दिन तक (11)
1 वजे 41 दिन से
3 वजे दिन तक (12)
8 वजे 40 रात से
11 वजे 4 रात तक (4)
11 वजे 4 रात से
1 वजे 26 रात तक (5)
30 नवम्बर एकादशी शनिवार
10 वजे 33 दिन से
12 वजे 12 दिन तक (10)
12 वजे 12 दिन से
1 वजे 37 दिन तक (11)
1 वजे 37 दिन से
2 वजे 56 दिन तक (12)
8 वजे 37 रात से
11 वजे रात तक (4)
11 वजे रात से
1 वजे 22 रात तक (5)
1 दिसम्बर द्वादशी रविवार
10 वजे 29 दिन से
12 वजे 8 दिन तक (10)
12 वजे 8 दिन से
1 वजे 33 दिन तक (11)
1 वजे 33 दिन से
2 वजे 53 दिन तक (12)

मार्ग शुक्ल पक्ष

5 दिसम्बर प्रतिपदि गुरुवार
10 वजे 13 दिन से
11 वजे 52 दिन तक (10)
11 वजे 52 दिन से
1 वजे 17 दिन तक (11)
1 वजे 17 दिन से
2 वजे 37 दिन तक (12)
8 वजे 17 रात से
10 वजे 41 रात तक (4)
10 वजे 41 रात से
1 वजे 2 रात तक (5)
8 दिसम्बर पंचमी रविवार
11 वजे 40 दिन से
1 वजे 6 दिन तक (11)
1 वजे 6 दिन से
2 वजे 25 दिन तक (12)
8 वजे 5 रात से
10 वजे 29 रात तक (4)
10 वजे 29 रात से
12 वजे 50 रात तक (5)
12 वजे 50 रात से
3 वजे 11 रात तक (6)
9 दिसम्बर षष्ठी सोमवार
11 वजे 36 दिन से
1 वजे 2 दिन तक (11)
1 वजे 2 दिन से
2 वजे 21 दिन तक (12)
8 वजे 1 रात से

10 वजे 25 रात तक (4)
10 वजे 25 रात से
12 वजे 46 रात तक (5)
12 वजे 46 रात से
3 वजे 7 रात तक (6)
12 दिसम्बर अष्टमी गुरुवार
12 वजे 50 दिन से
2 वजे 9 दिन तक (12)
7 वजे 49 रात से
10 वजे 13 रात तक (4)
10 वजे 13 रात से
12 वजे 35 रात तक (5)
12 वजे 35 रात से
2 वजे 55 रात तक (6)
13 दिसम्बर नवमी शुक्रवार
9 वजे 42 दिन से
11 वजे 21 दिन तक (10)
11 वजे 21 दिन से
12 वजे 46 दिन तक (11)

7 वजे 45 शां सं
10 वजे 9 रात तक (4)
10 वजे 9 रात से
12 वजे 31 रात तक (5)
12 वजे 31 रात से
2 वजे 51 रात तक (6)

15 दिसम्बर से 14 जनवरी 2003 तक पौष)

माघ कृष्ण पक्ष

20 जनवरी द्वितीया सोमवार
10 वजे 16 दिन से
11 वजे 36 दिन तक (12)
11 वजे 36 दिन से
1 वजे 7 दिन तक (1)
10 वजे 1 रात से
12 वजे 22 रात तक (6)
12 वजे 22 रात से

2 वजे 45 रात तक (7)
22 जनवरी चतुर्थी बुधवार
10 वजे 9 दिन से
11 वजे 28 दिन तक (12)
11 वजे 28 दिन से
12 वजे 59 दिन तक (1)
9 वजे 53 रात से
12 वजे 14 रात तक (6)
12 वजे 14 रात से
2 वजे 37 रात तक (7)
23 जनवरी षष्ठी गुरुवार
8 वजे 39 दिन से
10 वजे 5 दिन तक (11)
10 वजे 5 दिन से
11 वजे 24 दिन तक (12)
11 वजे 24 दिन से
12 वजे 55 दिन तक (1)
7 वजे 28 शां से
9 वजे 49 रात तक (5)

12 वजे 10 रात से
2 वजे 33 रात तक (7)
24 जनवरी सप्तमी शुक्रवार
8 वजे 35 दिन से
10 वजे 1 दिन तक (11)
10 वजे 1 दिन से
11 वजे 20 दिन तक (12)
11 वजे 20 दिन से
12 वजे 51 दिन तक (1)
7 वजे 24 रात से
9 वजे 46 रात तक (5)
9 वजे 46 रात से
12 वजे 6 रात तक (6)

माघ शुक्ल पक्ष

2 फ़रवरी प्रतिपदि रविवार
8 वजे दिन से
9 वजे 25 दिन तक (11)
9 वजे 25 दिन से

10 वजे 45 दिन तक (12)
10 वजे 45 दिन से
12 वजे 16 दिन तक (1)
6 वजे 48 शां से
9 वजे 10 रात तक (5)
9 वजे 10 रात से
11 वजे 31 रात तक (6)
11 वजे 31 रात से
1 वजे 54 रात तक (7)

5 फरवरी चतुर्थी बुधवार
7 वजे 48 प्रातः से
9 वजे 13 दिन तक (11)
10 वजे 33 दिन से
12 वजे 4 दिन तक (1)
6 वजे 37 शां से
8 वजे 58 रात तक (5)
8 वजे 58 रात से
11 वजे 19 रात तक (6)
11 वजे 19 रात से
1 वजे 42 रात तक (7)

6 फरवरी पंचमी गुरुवार
7 वजे 44 प्रातः से
9 वजे 10 दिन तक (11)
10 वजे 29 दिन से
12 वजे दिन तक (1)
6 वजे 33 शां से
8 वजे 54 रात तक (5)
8 वजे 54 रात से
11 वजे 15 रात तक (6)
11 वजे 15 रात से
1 वजे 38 रात तक (7)

7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार
7 वजे 40 प्रातः से
9 वजे 6 दिन तक (11)
10 वजे 25 दिन से
11 वजे 6 दिन तक (1)
6 वजे 29 शां से
8 वजे 51 रात तक (5)
8 वजे 51 रात से
11 वजे 11 रात तक (6)
11 वजे 11 रात से
1 वजे 34 रात तक (7)

8 फरवरी सप्तमी शनिवार
7 वजे 36 प्रातः से
9 वजे 2 दिन तक (11)
9 वजे 2 दिन से
10 वजे 21 दिन तक (12)
10 वजे 21 दिन से
11 वजे 52 दिन तक (1)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

19 फरवरी तृतीया बुधवार
8 वजे 18 दिन से
9 वजे 38 दिन तक (12)
9 वजे 38 दिन से
11 वजे 9 दिन तक (1)

20 फरवरी चतुर्थी गुरुवार
12 वजे 59 दिन से
3 वजे 14 दिन तक (3)
3 वजे 14 दिन से
5 वजे 38 दिन तक (4)
7 वजे 59 शां से
10 वजे 20 रात तक (6)
10 वजे 20 रात से
12 वजे 43 रात तक (7)
3 वजे 8 रात से
5 वजे 10 रात तक (9)

21 फरवरी पंचमी शुक्रवार
8 वजे 11 दिन से
9 वजे 50 दिन तक (12)
9 वजे 50 दिन से
11 वजे 1 दिन तक (1)

23 फरवरी सप्तमी रविवार
2 वजे 52 रात से
4 वजे 55 रात तक (9)

24 फरवरी अष्टमी सोमवार

7 वजे 59 प्रातः से
8 वजे 31 दिन तक (12)
28 फरवरी त्रयोदशी शुक्रवार
7 वजे 43 प्रातः से
9 वजे 2 दिन तक (12)
9 वजे 2 दिन से
10 वजे 34 दिन तक (1)
7 वजे 28 शां से
9 वजे 48 रात तक (6)
9 वजे 48 रात से
12 वजे 12 रात तक (7)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

5 मार्च द्वितीया बुधवार
8 वजे 43 दिन से
10 वजे 14 दिन तक (1)
12 वजे 7 दिन से
2 वजे 23 दिन तक (3)
7 वजे 8 शां से
9 वजे 29 रात तक (6)
9 वजे 29 रात से
11 वजे 52 रात तक (7)
2 वजे 13 रात से
4 वजे 15 रात तक (9)
6 मार्च तृतीया गुरुवार
8 वजे 39 दिन से
10 वजे 10 दिन तक (1)
12 वजे 4 दिन से
2 वजे 19 दिन तक (3)
7 वजे 4 शां से
9 वजे 25 रात तक (6)
9 वजे 25 रात से
11 वजे 48 रात तक (7)
2 वजे 9 रात से
4 वजे 11 रात तक (9)
7 मार्च चतुर्थी शुक्रवार
7 वजे 15 प्रातः से
8 वजे 35 दिन तक (12)
12 वजे दिन से
2 वजे 15 दिन तक (3)
7 वजे शां से
9 वजे 21 रात.तक (6)

शंकु प्रतिष्ठा मुहूर्त

(स्यंघ शंकु प्रतिष्ठा के लिये निषेध नहीं है)

चैत्र शुक्ल पक्ष

17 अप्रैल चतुर्थी बुधवार
9 वजे 18 दिन से
11 वजे 33 दिन तक (3)
18 अप्रैल पंचमी गुरुवार
9 वजे 14 दिन से
11 वजे 29 दिन तक (3)

वैशाख कृष्ण पक्ष

29 अप्रैल तृतीया सोमवार
8 वजे 31 दिन से
10 वजे 46 दिन तक (3)
2 मई षष्ठी गुरुवार
4 वजे 16 दिन से
5 वजे 40 दिन तक (6)
3 मई सप्तमी शुक्रवार
8 वजे 15 दिन से
10 वजे 30 दिन तक (3)
3 वजे 16 दिन से
5 वजे 36 दिन तक (6)

वैशाख शुक्ल पक्ष

18 मई षष्ठी शनिवार
7 वजे 16 प्रातः से
9 वजे 31 दिन तक (3)
2 वजे 17 दिन से
4 वजे 37 दिन तक (6)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

31 मई पंचमी शुक्रवार

1 वजे 26 दिन से
3 वजे 46 दिन तक (6)

श्रावण शुक्ल पक्ष

12 अगस्त चतुर्थी सोमवार
3 वजे 43 दिन से
5 वजे 46 दिन तक (9)

14 अगस्त षष्ठी बुधवार
3 वजे 35 दिन से
5 वजे 38 दिन तक (9)

22 अगस्त पूर्णिमा गुरुवार
3 वजे 4 दिन से
5 वजे 6 दिन तक (9)

भाद्र शुक्ल पक्ष

9 सितम्बर तृतीया सोमवार
1 वजे 53 दिन से
3 वजे 55 दिन तक (9)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

11 नवम्बर सप्तमी सोमवार
1 वजे 27 दिन से
2 वजे 52 दिन तक (11)

मार्ग कृष्ण पक्ष

21 नवम्बर प्रतिपदि गुरुवार
2 वजे 12 दिन से
3 वजे 32 दिन तक (12)
3 वजे 32 दिन से
5 वजे 3 दिन तक (1)

22 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
2 वजे 8 दिन से
3 वजे 28 दिन तक (12)

25 नवम्बर पंचमी सोमवार
1 वजे 57 दिन से
3 वजे 16 दिन तक (12)

माघ कृष्ण पक्ष

22 जनवरी चतुर्थी बुधवार
10 वजे 9 दिन से
11 वजे 28 दिन तक (12)
2 वजे 53 दिन से
5 वजे 8 दिन तक (3)

23 जनवरी षष्ठी गुरुवार
10 वजे 5 दिन से
11 वजे 24 दिन तक (12)
2 वजे 49 दिन से
5 वजे 4 दिन तक (3)

24 जनवरी सप्तमी शुक्रवार
10 वजे 1 दिन से
11 वजे 20 दिन तक (12)
2 वजे 45 दिन से
5 वजे दिन तक (3)

माघ शुक्ल पक्ष

3 फरवरी द्वितीया सोमवार
9 वजे 21 दिन से
10 वजे 41 दिन तक (12)
2 वजे 4 दिन से
4 वजे 21 दिन तक (3)

6 फ़रवरी पंचमी गुरुवार
1 वजे 54 दिन से
4 वजे 9 दिन तक (3)

7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार
7 वजे 49 प्रातः से
9 वजे 6 दिन तक (11)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

19 फरवरी तृतीया बुधवार
8 वजे 18 दिन से
9 वजे 38 दिन तक (12)
1 वजे 3 दिन से
3 वजे 18 दिन तक (3)

21 फरवरी पंचमी शुक्रवार
8 वजे 11 दिन से
9 वजे 30 दिन तक (12)
12 वजे 55 दिन से
3 वजे 10 दिन तक (3)

22 फरवरी षष्ठी शनिवार

8 वजे 7 दिन से
9 वजे 26 दिन तक (12)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

5 मार्च द्वितीया बुधवार
12 वजे 7 दिन से
2 वजे 23 दिन तक (3)
2 वजे 23 दिन से
4 वजे 47 दिन तक (4)

6 मार्च तृतीया गुरुवार
12 वजे 4 दिन से
2 वजे 19 दिन तक (3)

प्रवेश मुहूर्त

(नये मकान में दाखिल होने का मुहूर्त्त)

चैत्र शुक्ल पक्ष

24 अप्रैल द्वादशी बुधवार
8 वजे 50 दिन से
11 वजे 6 दिन तक (3)
1 वजे 29 दिन से
3 वजे 51 दिन तक (5)

25 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार
8 वजे 46 दिन से
11 वजे 2 दिन तक (3)
1 वजे 25 दिन से
3 वजे 47 दिन तक (5)

वैशाख कृष्ण पक्ष

29 अप्रैल तृतीया सोमवार
8 वजे 31 दिन से
10 वजे 46 दिन तक (3)
1 वजे 10 दिन से
3 वजे 31 दिन तक (5)

वैशाख शुक्ल पक्ष

18 मई षष्ठी शनिवार
7 वजे 16 प्रातः से
9 वजे 31 दिन तक (3)
11 वजे 55 दिन से
2 वजे 17 दिन तक (5)

22 मई दशमी बुधवार
12 वजे 14 दिन से
2 वजे 1 दिन तक (5)

23 मई द्वादशी गुरुवार
11 वजे 35 दिन से
1 वजे 14 दिन तक (5)

24 मई त्रयोदशी शुक्रवार
11 वजे 31 दिन से
1 वजे 53 दिन तक (5)
1 वजे 53 दिन से
4 वजे 14 दिन तक (6)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 जून दशमी गुरुवार
9 वजे 45 दिन से
12 वजे 7 दिन तक (5)
12 वजे 7 दिन से
2 वजे 27 दिन तक (6)

21 जून एकादशी शुक्रवार
9 वजे 41 दिन से
12 वजे 3 दिन तक (5)

22 जून द्वादशी शनिवार
12 वजे 26 दिन से
2 वजे 20 दिन तक (6)

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

29 जून पंचमी शनिवार
9 वजे 10 दिन से
11 वजे 32 दिन तक (5)
11 वजे 32 दिन से
1 वजे 52 दिन तक (6)

भाद्र शुक्ल पक्ष

18 सितम्बर द्वादशी बुधवार
1 वजे 18 दिन से
3 वजे 20 दिन तक (9)

19 सितम्बर त्रयोदशी गुरुवार
1 वजे 14 दिन से

3 वजे 16 दिन तक (9)

आश्विन शुक्ल पक्ष

7 अक्टूबर प्रतिपदि सोमवार

12 वजे 56 दिन से

2 वजे 5 दिन तक (9)

10. अक्टूबर पंचमी गुरुवार

11 बजे 51 दिन से

1 बजे 32 दिन तक (9)

मार्ग कृष्ण पक्ष

25 नवम्बर पंचमी सोमवार

8 बजे 50 दिन से

10 वजे 53 दिन तक (9)

मार्ग शुक्ल पक्ष

9 दिसम्बर षष्ठी सोमवार

7 बजे 55 प्रातः से

9 बजे 58 दिन तक (9)

माघ कृष्ण पक्ष

22 जनवरी चतुर्थी बुधवार

10 बजे 56 दिन से

11 बजे 32 दिन तक (12)

माघ शुक्ल पक्ष

6 फरवरी पंचमी गुरुवार

9 बजे 10 दिन से

10 बजे 29 दिन तक (12)

7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार

9 बजे 6 दिन से

10 बजे 25 दिन तक (12)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

19 फरवरी तृतीया बुधवार

8 बजे 18 दिन से

9 बजे 38 दिन तक (12)

1 बजे 3 दिन से

3 बजे 18 दिन तक (3)

21 फरवरी पंचमी शुक्रवार

8 बजे 11 दिन से

9 बजे 32 दिन तक (12)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

5 मार्च द्वितीया बुधवार

12 बजे 7 दिन से

2 बजे 23 दिन तक (3)

6 मार्च तृतीया गुरुवार

12 बजे 4 दिन से

1 बजे 34 दिन तक (3)

चूडाकर्ण मुहूर्त

(जरकासय)

चैत्र शुक्ल पक्ष

19 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार

1 बजे 2 दिन से

1 बजे 49 दिन तक (4)

1 बजे 49 दिन से

4 बजे 11 दिन तक (5)

25 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार

8 बजे 50 दिन से

11 बजे 2 दिन तक (3)

11 बजे 2 दिन से

1 बजे 26 दिन तक (4)

वैशाख कृष्ण पक्ष

29 अप्रैल तृतीया सोमवार

8 बजे 31 दिन से

10 बजे 46 दिन तक (3)

10 बजे 46 दिन से

1 बजे 10 दिन तक (4)

वैशाख शुक्ल पक्ष

17 मई पंचमी शुक्रवार

9 बजे 35 दिन से

11 बजे 59 दिन तक (4)

11 बजे 59 दिन से

2 बजे 21 दिन तक (5)

22 मई दशमी बुधवार

12 बजे 14 दिन से

2 बजे 5 दिन तक (5)

24 मई त्रयोदशी शुक्रवार

9 वजे 8 दिन से
11 वजे 31 दिन तक (4)
11 वजे 31 दिन से
1 वजे 53 दिन तक (5)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

27 मई प्रतिपदि सोमवार
3 वजे 21 दिन से
4 वजे 20 दिन तक (6)
31 मई पंचमी शुक्रवार
8 वजे 40 दिन से
11 वजे 4 दिन तक (4)
11 वजे 4 दिन से
1 वजे 26 दिन तक (5)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

13 जून तृतीया गुरुवार
7 वजे 49 प्रातः से
10 वजे 13 दिन तक (4)
10 वजे 13 दिन से
12 वजे 54 दिन तक (5)
19 जून नवमी बुधवार
2 वजे 31 दिन से
3 वजे 10 दिन तक (7)
20 जून दशमी गुरुवार
7 वजे 22 प्रातः से
9 वजे 45 दिन तक (4)
9 वजे 45 दिन से
12 वजे 7 दिन तक (5)
12 वजे 7 दिन से
2 वजे 27 दिन तक (6)
21 जून एकादशी शुक्रवार
7 वजे 18 प्रातः से
9 वजे 41 दिन तक (4)
9 वजे 41 दिन से
12 वजे 3 दिन तक (5)
12 वजे 3 दिन से
2 वजे 24 दिन तक (6)

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

27 जून तृतीया गुरुवार
6 वजे 54 प्रातः से
9 वजे 18 दिन तक (4)
9 वजे 18 दिन से
11 वजे 39 दिन तक (5)
11 वजे 39 दिन से
2 वजे दिन तक (6)

भाद्र शुक्ल पक्ष

19 सितम्बर त्रयोदशी गुरुवार
1 वजे 14 दिन से
3 वजे 16 दिन तक (9)

आश्विन शुक्ल पक्ष

7 अक्टूबर प्रतिपदि सोमवार
12 वजे 56 दिन से
1 वजे 58 दिन तक (9)
10 अक्टूबर पंचमी गुरुवार
11 वजे 51 दिन से
1 वजे 54 दिन तक (9)
1 वजे 54 दिन से
3 वजे 32 दिन तक (10)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

11 नवम्बर सप्तमी सोमवार
9 वज 45 दिन से
11 वजे 48 दिन तक (9)

मार्ग कृष्ण पक्ष

25 नवम्बर पंचमी सोमवार
8 वजे 50 दिन से
10 वजे 53 दिन तक (9)

मार्ग शुक्ल पक्ष

13 दिसम्बर नवमी शुक्रवार
2 वजे 5 दिन से
3 वजे 37 दिन तक (1)

माघ कृष्ण पक्ष

22 जनवरी चतुर्थी बुधवार
11 वजे 28 दिन से
12 वजे 59 दिन तक (1)

माघ शुक्ल पक्ष

6 फरवरी पंचमी गुरुवार

16

7 वजे 44 प्रातः से
9 वजे 10 दिन तक (11)
10 वजे 29 दिन से
12 वजे दिन तक (1)
14 फरवरी द्वादशी शुक्रवार
10 वजे 4 दिन से
11 वजे 29 दिन तक (1)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

19 फरवरी तृतीया बुधवार
9 वजे 42 दिन से
11 वजे 13 दिन तक (12)
21 फरवरी पंचमी शुक्रवार
8 वजे 11 दिन से
9 वजे 30 दिन तक (12)
9 वजे 30 दिन से
11 वजे 1 दिन तक (1)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

5 मार्च द्वितीया बुधवार
8 वजे 43 दिन से
10 वजे 14 दिन तक (1)
12 वजे 7 दिन से
2 वजे 23 दिन तक (3)
6 मार्च तृतीया गुरुवार
8 वजे 39 दिन से
10 वजे 10 दिन तक (1)
12 वजे 4 दिन से
1 वजे 34 दिन तक (3)

जातकर्ण मुहूर्त

(काहनेथर)

चैत्र शुक्ल पक्ष

17 अप्रैल चतुर्थी बुधवार
18 अप्रैल पंचमी गुरुवार
12 वजे 32 दिन तक
19 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
1 वजे 2 दिन से
24 अप्रैल द्वादशी बुधवार
25 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

29 अप्रैल तृतीया सोमवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

15 मई तृतीया बुधवार
17 मई पंचमी शुक्रवार
22 मई दशमी बुधवार
23 मई द्वादशी गुरुवार
24 मई त्रयोदशी शुक्रवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

30 मई चतुर्थी गुरुवार
12 वजे 56 दिन से
31 मई पंचमी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

13 जून तृतीया गुरुवार
19 जून नवमी बुधवार
2 वजे 28 दिन से
20 जून दशमी गुरुवार

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

26 जून द्वितीया बुधवार
10 वजे 37 दिन से
27 जून तृतीया गुरुवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

11 अगस्त तृतीया रविवार
3 वजे 19 दिन तक
12 अगस्त चतुर्थी सोमवार
12 वजे 10 दिन से
14 अगस्त षष्ठी बुधवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

18 सितम्बर द्वादशी बुधवार
19 सितम्बर त्रयोदशी गुरुवार
3 वजे 20 दिन तक

आश्विन शुक्ल पक्ष

7 अक्टूबर प्रतिपदि सोमवार
12 वजे 56 दिन से

10 अक्टूबर पंचमी गुरुवार
1 वजे 32 दिन तक
कार्तिक शुक्ल पक्ष
10 नवम्बर षष्ठी रविवार
11 नवम्बर सप्तमी सोमवार
1 वजे 53 दिन तक
13 नवम्बर नवमी बुधवार
4 वजे 47 दिन से
15 नवम्बर एकादशी शुक्रवार
मार्ग कृष्ण पक्ष
21 नवम्बर प्रतिपदि गुरुवार
22 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
24 नवम्बर चतुर्थी रविवार
11 वजे 37 दिन से
25 नवम्बर पंचमी सोमवार
मार्ग शुक्ल पक्ष
8 दिसम्बर पंचमी रविवार
9 दिसम्बर षष्ठी सोमवार

11 दिसम्बर सप्तमी बुधवार
10 वजे 21 दिन तक
13 दिसम्बर नवमी शुक्रवार
12 वजे 51 दिन से
पौष शुक्ल पक्ष
15 जनवरी द्वादशी बुधवार
16 जनवरी त्रयोदशी गुरुवार
2 वजे 29 दिन तक
माघ कृष्ण पक्ष
19 जनवरी प्रतिपदि रविवार
12 वजे 3 दिन से
22 जनवरी चतुर्थी बुधवार
10 वजे 56 दिन से
माघ शुक्ल पक्ष
2 फरवरी प्रतिपदि रविवार
4 वजे 22 दिन से
3 फरवरी द्वितीया सोमवार
6 फरवरी पंचमी गुरुवार
7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार

14 फरवरी द्वादशी शुक्रवार
फाल्गुन कृष्ण पक्ष
19 फरवरी तृतीया बुधवार
21 फरवरी पंचमी शुक्रवार
फाल्गुन शुक्ल पक्ष
5 मार्च द्वितीया बुधवार
6 मार्च तृतीया गुरुवार
1 वजे 34 दिन तक
10 मार्च सप्तमी सोमवार

वाग्दान मुहूर्त

(गण्डन साथ)

चैत्र शुक्ल पक्ष
15 अप्रैल तृतीया सोमवार
17 अप्रैल चतुर्थी बुधवार
18 अप्रैल पंचमी गुरुवार
12 वजे 32 दिन तक
22 अप्रैल दशमी सोमवार

10 वजे 52 दिन से
24 अप्रैल द्वादशी बुधवार
25 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार
वैशाख कृष्ण पक्ष
29 अप्रैल तृतीया सोमवार
1 मई पंचमी बुधवार
2 मई षष्ठी गुरुवार
3 मई सप्तमी शुक्रवार
8 मई एकादशी बुधवार
9 मई द्वादशी गुरुवार
10 मई त्रयोदशी शुक्रवार
वैशाख शुक्ल पक्ष
22 मई दशमी बुधवार
23 मई द्वादशी गुरुवार
24 मई त्रयोदशी शुक्रवार
26 मई पूर्णिमा रविवार
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
29 मई तृतीया बुधवार

1 वजे 4 दिन तक
30 मई चतुर्थी गुरुवार
12 वजे 56 दिन से
31 मई पंचमी शुक्रवार
5 जून दशमी बुधवार
6 जून एकादशी गुरुवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

16 जून षष्ठी रविवार
17 जून सप्तमी सोमवार
19 जून नवमी बुधवार
2 वजे 28 दिन से
21 जून एकादशी शुक्रवार
24 जून पूर्णिमा सोमवार

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

26 जून द्वितीया बुधवार
27 जून तृतीया गुरुवार
1 जुलाई षष्ठी सोमवार
7 जुलाई द्वादशी रविवार
8 जुलाई त्रयोदशी सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

4 अगस्त दशमी रविवार
5 अगस्त एकादशी सोमवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

11 अगस्त तृतीया रविवार
12 अगस्त चतुर्थी सोमवार
12 वजे 10 दिन से
14 अगस्त षष्ठी बुधवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

18 सितम्बर द्वादशी बुधवार
19 सितम्बर त्रयोदशी गुरुवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

10 अक्टूबर पंचमी गुरुवार
1 वजे 32 दिन तक
11 अक्टूबर षष्ठी शुक्रवार
12 वजे 29 दिन से
18 अक्टूबर त्रयोदशी शुक्रवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

8 नवम्बर चतुर्थी शुक्रवार
3 वजे 3 दिन से
10 नवम्बर षष्ठी रविवार
11 नवम्बर सप्तमी सोमवार
14 नवम्बर दशमी गुरुवार
15 नवम्बर एकादशी शुक्रवार
20 नवम्बर पूर्णिमा बुधवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

21 नवम्बर प्रतिपदि गुरुवार
22 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
27 नवम्बर सप्तमी बुधवार
10 वजे दिन तक
29 नवम्बर दशमी शुक्रवार
2 दिसम्बर त्रयोदशी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

5 दिसम्बर प्रतिपदि गुरुवार
10 वजे 31 दिन से
6 दिसम्बर द्वितीया शुक्रवार
8 दिसम्बर पंचमी रविवार
9 दिसम्बर षष्ठी सोमवार
13 दिसम्बर नवमी शुक्रवार
12 वजे 51 दिन से

पौष शुक्ल पक्ष

15 जनवरी द्वादशी बुधवार
16 जनवरी त्रयोदशी गुरुवार

माघ कृष्ण पक्ष

20 जनवरी द्वितीया सोमवार
1 वजे 35 दिन से
22 जनवरी चतुर्थी बुधवार
23 जनवरी षष्ठी गुरुवार
24 जनवरी सप्तमी शुक्रवार
27 जनवरी दशमी सोमवार
29 जनवरी द्वादशी बुधवार
30 जनवरी त्रयोदशी गुरुवार

माघ शुक्ल पक्ष
2 फरवरी प्रतिपदि रविवार
6 फरवरी पंचमी गुरुवार
7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार
11 वजे 6 दिन तक
फाल्गुन कृष्ण पक्ष
17 फरवरी प्रतिपदि सोमवार
19 फरवरी तृतीया बुधवार
21 फरवरी पंचमी शुक्रवार
12 वजे 35 दिन से
26 फरवरी दशमी बुधवार
27 फरवरी द्वादशी गुरुवार
28 फरवरी त्रयोदशी शुक्रवार
फाल्गुन शुक्ल पक्ष
5 मार्च द्वितीया बुधवार
6 मार्च तृतीया गुरुवार
1 वजे 34 दिन तक
10 मार्च सप्तमी सोमवार

विद्यारम्भ मुहूर्त

(स्कूल में दाखिला करना अथवा पढ़ाई आरम्भ करना)

चैत्र शुक्ल पक्ष
17 अप्रैल चतुर्थी बुधवार
11 वजे 29 दिन से
18 अप्रैल पंचमी गुरुवार
19 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
वैशाख कृष्ण पक्ष
1 मई पंचमी बुधवार
वैशाख शुक्ल पक्ष
17 मई पंचमी शुक्रवार
22 मई दशमी बुधवार
12 वजे 14 दिन से
23 मई द्वादशी गुरुवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
29 मई तृतीया बुधवार
1 वजे 4 दिन तक
31 मई पंचमी शुक्रवार
1 वजे 31 दिन तक
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
12 जून द्वितीया बुधवार
13 जून तृतीया गुरुवार
19 जून नवमी बुधवार
2 वजे 28 दिन से
20 जून दशमी गुरुवार
21 जून एकादशी शुक्रवार
आषाढ़ कृष्ण पक्ष
26 जून द्वितीया बुधवार
10 वजे 37 दिन तक
27 जून तृतीया गुरुवार
11 वजे 23 दिन से

भाद्र शुक्ल पक्ष
18 सितम्बर द्वादशी बुधवार
आश्विन शुक्ल पक्ष
11 अक्टूबर षष्ठी शुक्रवार
12 वजे 29 दिन से
कार्तिक शुक्ल पक्ष
8 नवम्बर चतुर्थी शुक्रवार
3 वजे 3 दिन से
13 नवम्बर नवमी बुधवार
4 वजे 47 दिन से
14 नवम्बर दशमी गुरुवार
मार्ग कृष्ण पक्ष
22 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
24 नवम्बर चतुर्थी रविवार
11 वजे 37 दिन से
मार्ग शुक्ल पक्ष
6 दिसम्बर तृतीया शुक्रवार

8 दिसम्बर पंचमी रविवार

माघ कृष्ण पक्ष

19 जनवरी प्रतिपदि रविवार

12 वजे 3 दिन से

22 जनवरी चतुर्थी बुधवार

10 वजे 56 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

2 फरवरी प्रतिपदि रविवार

4 वजे 22 दिन से

7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार

11 वजे 6 दिन से

14 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

19 फरवरी तृतीया बुधवार

4 वजे 41 दिन से

21 फरवरी पंचमी शुक्रवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

7 मार्च चतुर्थी शुक्रवार

4 वजे 8 दिन से

लड़की को दूध देने का मुहूर्त

दुध साथ

चैत्र शुक्ल पक्ष

18 अप्रैल पंचमी गुरुवार

7 वजे 33 प्रातः तक

25 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार

3 वजे 28 दिन तक

वैशाख शुक्ल पक्ष

22 मई दशमी बुधवार

12 वजे 14 दिन से

26 मई पूर्णिमा रविवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

28 मई द्वितीया भौमवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

13 जून तृतीया गुरुवार

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

25 जून प्रतिपदि भौमवार

10 वजे 25 दिन से

27 जून तृतीया गुरुवार

11 वजे 23 दिन तक

आश्विन शुक्ल पक्ष

10 अक्टूबर पंचमी गुरुवार

1 वजे 32 दिन तक

15 अक्टूबर दशमी भौमवार

3 वजे 30 दिन तक

मार्ग कृष्ण पक्ष

24 नवम्बर चतुर्थी रविवार

11 वजे 37 दिन से

मार्ग शुक्ल पक्ष

5 दिसम्बर प्रतिपदि गुरुवार

8 दिसम्बर पंचमी रविवार

माघ कृष्ण पक्ष

19 जनवरी प्रतिपदि रविवार

2 वजे 32 दिन तक

दिवचक्षीर मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

25 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार

3 वजे 28 दिन तक

26 अप्रैल चतुर्दशी शुक्रवार

11 वजे 55 दिन से

वैशाख कृष्ण पक्ष

28 अप्रैल द्वितीया रविवार

29 अप्रैल तृतीया सोमवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

22 मई दशमी बुधवार

12 वजे 14 दिन से

23 मई द्वादशी गुरुवार

24 मई त्रयोदशी शुक्रवार

26 मई पूर्णिमा रविवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
19 जून नवमी बुधवार
2 वजे 28 दिन तक
20 जून दशमी गुरुवार
21 जून एकादशी शुक्रवार
श्रावण शुक्ल पक्ष
12 अगस्त चतुर्थी सोमवार
12 वजे 10 दिन से
14 अगस्त षष्ठी बुधवार
22 अगस्त पूर्णिमा गुरुवार
भाद्र शुक्ल पक्ष
18 सितम्बर द्वादशी बुधवार
9 वजे 43 दिन से
19 सितम्बर त्रयोदशी गुरुवार
11 वजे 54 दिन तक
आश्विन शुक्ल पक्ष
7 अक्टूबर प्रतिपदि सोमवार
10 अक्टूबर पंचमी गुरुवार
1 वजे 32 दिन तक
13 अक्टूबर अष्टमी रविवार
14 अक्टूबर नवमी सोमवार
21 अक्टूबर पूर्णिमा सोमवार
मार्ग शुक्ल पक्ष
9 दिसम्बर षष्ठी सोमवार
13 दिसम्बर नवमी शुक्रवार
3 वजे 48 दिन से
माघ शुक्ल पक्ष
2 फरवरी प्रतिपदि रविवार
6 फरवरी पंचमी गुरुवार
7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार
फाल्गुन कृष्ण पक्ष
19 फरवरी तृतीया बुधवार
4 वजे 41 दिन से
21 फरवरी पंचमी शुक्रवार
फाल्गुन शुक्ल पक्ष
5 मार्च द्वितीया बुधवार
3 वजे 57 दिन से
6 मार्च तृतीया गुरुवार
1 वजे 34 दिन तक
7 मार्च चतुर्थी शुक्रवार
4 वजे 8 दिन से

लेन्टर, छत इत्यादि डालने का मुहूर्त

लैन्टर या पश दिनुक साथ
चैत्र शुक्ल पक्ष
18 अप्रैल पंचमी गुरुवार
12 वजे 32 दिन से
19 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
24 अप्रैल द्वादशी बुधवार
वैशाख कृष्ण पक्ष
2 मई षष्ठी गुरुवार
4 वजे 16 दिन से
3 मई सप्तमी शुक्रवार
वैशाख शुक्ल पक्ष
16 मई चतुर्थी गुरुवार
5 वजे 41 दिन से
17 मई पंचमी शुक्रवार
22 मई दशमी बुधवार
12 वजे 14 दिन तक
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
30 मई चतुर्थी गुरुवार
12 वजे 56 दिन से
31 मई पंचमी शुक्रवार
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
12 जून द्वितीया बुधवार
13 जुन तृतीया गुरुवार
आषाढ कृष्ण पक्ष
26 जून द्वितीया बुधवार
10 वजे 37 दिन से
27 जून तृतीया गुरुवार
श्रावण कृष्ण पक्ष
5 अगस्त एकादशी सोमवार
6 वजे 32 शां से
श्रावण शुक्ल पक्ष
11 अगस्त तृतीयां रविवार

8 वजे 50 दिन से
भाद्र शुक्ल पक्ष
18 सितम्बर द्वादशी बुधवार
आश्विन शुक्ल पक्ष
13 अक्टूवर अष्टमी रविवार
12 वजे 37 दिन से
कार्तिक शुक्ल पक्ष
10 नवम्बर षष्ठी रविवार
11 नवम्बर सप्तमी सोमवार
मार्ग कृष्ण पक्ष
24 नवम्बर चतुर्थी रविवार
11 वजे 37 दिन से
25 नवम्बर पंचमी सोमवार
29 नवम्बर दशमी शुक्रवार
मार्ग शुक्ल पक्ष
8 दिसम्बर पंचमी रविवार
9 दिसम्बर षष्ठी सोमवार
पौष शुक्ल पक्ष
16 जनवरी त्रयोदशी गुरुवार

2 वजे 29 दिन तक
माघ कृष्ण पक्ष
19 जनवरी प्रतिपदि रविवार
12 वजे 3 दिन से
22 जनवरी चतुर्थी बुधवार
10 वजे 56 दिन से
23 जनवरी षष्ठी गुरुवार
9 वजे 27 दिन तक
माघ शुक्ल पक्ष
14 फरवरी द्वादशी शुक्रवार
फाल्गुन कृष्ण पक्ष
19 फरवरी तृतीया बुधवार
27 फरवरी द्वादशी गुरुवार
28 फरवरी त्रयोदशी शुक्रवार

नये मकान में चुल्हा, गैस इत्यादि जलाने का मुहूर्त

(नविस मकानस मंज दान या गैस जालनुक साथ)

चैत्र शुक्ल पक्ष
17 अप्रैल चतुर्थी बुधवार
11 वजे 29 दिन से
18 अप्रैल पंचमी गुरुवार
19 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
1 वजे 2 दिन से
25 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार
वैशाख कृष्ण पक्ष
29 अप्रैल तृतीया सोमवार
2 मई षष्ठी गुरुवार
3 मई सप्तमी शुक्रवार
10 मई त्रयोदशी शुक्रवार
9 वजे 53 दिन से
वैशाख शुक्ल पक्ष
17 मई पंचमी शुक्रवार

22 मई दशमी बुधवार
12 वजे 14 दिन से
23 मई द्वादशी गुरुवार
10 वजे 10 दिन तक
24 मई त्रयोदशी शुक्रवार
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
27 मई प्रतिपदि सोमवार
3 वजे 21 दिन से
30 मई चतुर्थी गुरुवार
12 वजे 56 दिन से
31 मई पंचमी शुक्रवार
6 जून एकादशी गुरुवार
5 वजे 26 दिन से
7 जून द्वादशी शुक्रवार
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
13 जून तृतीया गुरुवार
17 जून सप्तमी सोमवार
19 जून नवमी बुधवार

2 वजे 28 दिन से
20 जून दशमी गुरुवार
3 वजे 8 दिन से
21 जून एकादशी शुक्रवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

26 जून द्वितीया बुधवार
10 वजे 37 दिन से
27 जून तृतीया गुरुवार
4 जुलाई नवमी गुरुवार
2 वजे 11 दिन से
8 जुलाई त्रयोदशी सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

5 अगस्त एकादशी सोमवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

12 अगस्त चतुर्थी सोमवार
12 वजे दिन से
14 अगस्त षष्ठी बुधवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

18 सितम्बर द्वादशी बुधवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

10 अक्टूबर पंचमी गुरुवार
11 अक्टूबर षष्ठी शुक्रवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

7 नवम्बर तृतीया गुरुवार
4 वजे 58 दिन तक
11 नवम्बर सप्तमी सोमवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

22 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
25 नवम्बर पंचमी सोमवार
2 दिसम्बर त्रयोदशी सोम.

पौष शुक्ल पक्ष

16 जनवरी त्रयोदशी गुरुवार

माघ कृष्ण पक्ष

23 जनवरी षष्ठी गुरुवार
9 वजे 27 दिन से
24 जनवरी सप्तमी शुक्रवार
8 वजे दिन तक
27 जनवरी दशमी सोमवार

माघ शुक्ल पक्ष

7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार
11 वजे 6 दिन से
14 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

19 फरवरी तृतीया बुधवार
4 वजे 41 दिन से
21 फरवरी पंचमी शुक्रवार
12 वजे 55 दिन से
27 फरवरी द्वादशी गुरुवार
3 वजे 40 दिन से
28 फरवरी त्रयोदशी शुक्रवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

7 मार्च चतुर्थी शुक्रवार
4 वजे 8 दिन से

दीपदान मुहूर्त

(तील दिनुक साथ)

आश्विन शुक्ल पक्ष

7 अक्टूबर प्रतिपदि सोमवार
12 वजे 56 दिन से
11 अक्टूबर षष्ठी शुक्रवार
21 अक्टूबर पूर्णिमा सोमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

8 नवम्बर चतुर्थी शुक्रवार
3 वजे 3 दिन से

माघ कृष्ण पक्ष

20 जनवरी द्वितीया सोमवार
22 जनवरी चतुर्थी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार

11 वजे 6 दिन से

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

19 फरवरी तृतीया बुधवार

4 वजे 43 दिन से

21 फरवरी पंचमी शुक्रवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

7 मार्च चतुर्थी शुक्रवार

4 वजे 8 दिन से

10 मार्च सप्तमी सोमवार

पन्न मुहूर्त

नोटः चतुर्थी को मंगलवार होने पर भी शुद्ध मुहूर्त है।

भाद्र शुक्ल पक्ष

8 सितम्वर द्वितीया रविवार

3 वजे 36 दिन से

10 सितम्वर चतुर्थी भौमवार

11 सितम्वर पंचमी बुधवार

12 सितम्वर षष्ठी गुरुवार

18 सितम्वर द्वादशी बुधवार

9 वजे 43 दिन से

19 सितम्वर त्रयोदशी गुरुवार

11 वजे 54 दिन तक

20 सितम्वर चतुर्दशी शुक्रवार

शिशर मुहूर्त

(शिशुर लाग्नुक साथ)

मार्ग कृष्ण पक्ष

21 नवम्वर प्रतिपदि गुरुवार

24 नवम्वर चतुर्थी रविवार

11 वजे 37 दिन से

25 नवम्वर पंचमी सोमवार

29 नवम्वर दशमी शुक्रवार

1 दिसम्वर द्वादशी रविवार

2 दिसम्वर त्रयोदशी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

9 दिसम्वर षष्ठी सोमवार

पौष कृष्ण पक्ष

22 दिसम्वर तृतीया रविवार

27 दिसम्वर अष्टमी शुक्रवार

5 वजे शां तक

29 दिसम्वर दशमी रविवार

30 दिसम्वर एकादशी सोमवार

पौष शुक्ल पक्ष

5 जनवरी तृतीया रविवार

4 वजे 38 दिन से

वस्त्र धारण मुहूर्त

(केवल पुरुषों के लिए पलव छुननुक साथ)

चैत्र शुक्ल पक्ष

17 अप्रैल चतुर्थी बुधवार

19 अप्रैल षष्ठी गुरुवार

1 वजे 2 दिन से

21 अप्रैल नवमी रविवार

24 अप्रैल द्वादशी बुधवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

2 मई षष्ठी गुरुवार

4 वजे 16 दिन से

3 मई सप्तमी शुक्रवार

8 मई एकादशी बुधवार

9 मई द्वादशी गुरुवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

17 मई पंचमी शुक्रवार

6 वजे 26 शां से

22 मई दशमी बुधवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

30 मई चतुर्थी गुरुवार

5 जून दशमी बुधवार

2 वजे 40 दिन से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
13 जून तृतीया गुरुवार
आषाढ कृष्ण पक्ष
26 जून द्वितीया बुधवार
10 वजे 37 दिन से
27 जून तृतीया गुरुवार
7 जुलाई द्वादशी रविवार
आषाढ शुक्ल पक्ष
11 जुलाई प्रतिपदि गुरुवार
12 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
24 जुलाई पूर्णिमा बुधवार
श्रावण कृष्ण पक्ष
4 अगस्त दशमी रविवार
श्रावण शुक्ल पक्ष
11 अगस्त तृतीया रविवार
8 वजे 50 दिन से
भाद्र कृष्ण पक्ष
25 अगस्त द्वितीया रविवार
10 वजे 43 दिन से
4 सितम्बर द्वादशी बुधवार
भाद्र शुक्ल पक्ष
8 सितम्बर द्वितीया रविवार
आश्विन कृष्ण पक्ष
22 सितम्बर प्रतिपदि रविवार
27 सितम्बर पंचमी शुक्रवार
2 अक्टूबर दशमी बुधवार
आश्विन शुक्ल पक्ष
13 अक्टूबर अष्टमी रविवार
12 वजे 37 दिन से
कार्तिक कृष्ण पक्ष
24 अक्टूबर तृतीया गुरुवार
1 वजे 32 दिन से
25 अक्टूबर चतुर्थी शुक्रवार
1 नवम्बर एकादशी शुक्रवार
3 वजे 41 दिन से
कार्तिक शुक्ल पक्ष
10 नवम्बर षष्ठी रविवार
मार्ग कृष्ण पक्ष
21 नवम्बर प्रतिपदि गुरुवार
24 नवम्बर चतुर्थी रविवार
29 नवम्बर दशमी शुक्रवार
पौष कृष्ण पक्ष
22 दिसम्बर तृतीया रविवार
26 दिसम्बर सप्तमी गुरुवार
पौष शुक्ल पक्ष
3 जनवरी प्रतिपदि शुक्रवार
4 वजे 46 दिन से
9 जनवरी सप्तमी गुरुवार
15 जनवरी द्वादशी बुधवार
17 जनवरी चतुर्दशी शुक्रवार
3 वजे 5 दिन से
माघ कृष्ण पक्ष
19 जनवरी प्रतिपदि रविवार
22 जनवरी चतुर्थी बुधवार
23 जनवरी षष्ठी गुरुवार
माघ शुक्ल पक्ष
6 फरवरी पंचमी गुरुवार
8 वजे 14 दिन तक
14 फरवरी द्वादशी शुक्रवार
फाल्गुन कृष्ण पक्ष
19 फरवरी तृतीया बुधवार
27 फरवरी द्वादशी गुरुवार
28 फरवरी त्रयोदशी शुक्रवार
फाल्गुन शुक्ल पक्ष
5 मार्च द्वितीया बुधवार
3 वजे 57 दिन तक
चैत्र कृष्ण पक्ष
27 मार्च दशमी गुरुवार

वस्त्र धारण मुहूर्त

(दोनों स्त्री पुरुषों के लिए)

चैत्र शुक्ल पक्ष
25 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार

26 अप्रैल चतुर्दशी शुक्रवार
11 वजे 55 दिन से

वैशाख कृष्ण पक्ष

28 अप्रैल द्वितीया रविवार
5 मई नवमी रविवार
9 मई द्वादशी गुरुवार
10 मई त्रयोदशी शुक्रवार
9 वजे 53 दिन से

वैशाख शुक्ल पक्ष

22 मई दशमी बुधवार
23 मई द्वादशी गुरुवार
24 मई त्रयोदशी शुक्रवार
26 मई पूर्णिमा रविवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

2 जून सप्तमी रविवार
6 वजे 13 दिन तक
5 जून दशमी बुधवार
2 वजे 40 दिन से
6 जून एकादशी गुरुवार
5 वजे 26 शां से
7 जून द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

19 जून नवमी बुधवार
20 जून दशमी गुरुवार
21 जून एकादशी शुक्रवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

3 जुलाई अष्टमी बुधवार
4 जुलाई नवमी गुरुवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

17 जुलाई अष्टमी बुधवार
18 जुलाई नवमी गुरुवार
19 जुलाई दशमी शुक्रवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

26 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
31 जुलाई सप्तमी बुधवार
1 अगस्त अष्टमी गुरुवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

14 अगस्त षष्ठी बुधवार
22 अगस्त पूर्णिमा गुरुवार

भाद्र कृष्ण पक्ष

28 अगस्त पंचमी बुधवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

8 सितम्बर द्वितीया रविवार
3 वजे 36 दिन से
11 सितम्बर पंचमी बुधवार
12 सितम्बर षष्ठी गुरुवार
18 सितम्बर द्वादशी बुधवार
9 वजे 43 दिन से
19 सितम्बर त्रयोदशी गुरुवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

9 अक्टूबर चतुर्थी बुधवार
10 अक्टूबर पंचमी गुरुवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

6 नवम्बर द्वितीया बुधवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

1 दिसम्बर द्वादशी रविवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

13 दिसम्बर नवमी शुक्रवार
3 वजे 48 दिन से

पौष कृष्ण पक्ष

27 दिसम्बर अष्टमी शुक्रवार
29 दिसम्बर दशमी रविवार

पौष शुक्ल पक्ष

5 जनवरी तृतीया रविवार
4 वजे 38 दिन से
10 जनवरी अष्टमी शुक्रवार

माघ कृष्ण पक्ष

24 जनवरी सप्तमी शुक्रवार
26 जनवरी नवमी रविवार

माघ शुक्ल पक्ष

2 फरवरी प्रतिपदि रविवार
7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

20 फरवरी चतुर्थी गुरुवार
21 फरवरी पंचमी शुक्रवार
23 फरवरी सप्तमी रविवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

6 मार्च तृतीया गुरुवार
7 मार्च चतुर्थी शुक्रवार

चैत्र कृष्ण पक्ष

19 मार्च प्रतिपदि बुधवार
20 मार्च द्वितीया गुरुवार
21 मार्च चतुर्थी शुक्रवार
23 मार्च षष्ठी रविवार
28 मार्च एकादशी शुक्रवार
2 वजे 34 दिन से

स्कूटर-कार आदि खरीदने का मुहूर्त

(कार-स्कूटर अनुनुक साथ)

चैत्र शुक्ल पक्ष

17 अप्रैल चतुर्थी बुधवार
11 वजे 29 दिन से
18 अप्रैल पंचमी गुरुवार
12 वजे 32 दिन से
19 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
1 वजे 2 दिन से
25 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार
3 वजे 28 दिन तक

वैशाख शुक्ल पक्ष

17 मई पंचमी शुक्रवार
22 मई दशमी बुधवार
24 मई त्रयोदशी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

13 जून तृतीया गुरुवार
17 जून सप्तमी सोमवार
19 जून नवमी बुधवार
2 वजे 28 दिन से
20 जून दशमी गुरुवार
21 जून एकादशी शुक्रवार
1 वजे 42 दिन तक

श्रावण शुक्ल पक्ष

12 अगस्त चतुर्थी सोमवार
12 वजे 10 दिन से
14 अगस्त षष्ठी बुधवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

7 अक्टूबर प्रतिपदा सोमवार
12 वजे 56 दिन से
10 अक्टूबर पंचमी गुरुवार
1 वजे 32 दिन तक
21 अक्टूबर पूर्णिमा सोमवार
12 वजे 50 दिन तक

पौष शुक्ल पक्ष

15 जनवरी द्वादशी बुधवार
1 वजे दिन से
16 जनवरी त्रयोदशी गुरुवार
2 वजे 29 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार
11 वजे 6 दिन से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

7 मार्च चतुर्थी शुक्रवार
4 वजे 8 दिन से

भूमि या मकान खरीदने का मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

18 अप्रैल पंचमी गुरुवार
12 वजे 32 दिन तक
23 अप्रैल एकादशी भौमवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

17 मई पंचमी शुक्रवार
21 मई नवमी मंगलवार
9 वजे 47 दिन से

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
28 मई द्वितीया मंगलवार
1 वजे 53 दिन तक
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
20 जून दशमी गुरुवार
3 वजे 8 दिन से
21 जून एकादशी शुक्रवार
9 वजे 54 दिन तक
आश्विन शुक्ल पक्ष
10 अक्टूबर पंचमी गुरुवार
1 वजे 32 दिन तक
11 अक्टूबर षष्ठी शुक्रवार
कार्तिक शुक्ल पक्ष
8 नवम्बर चतुर्थी शुक्रवार
3 वजे 3 दिन से
मार्ग कृष्ण पक्ष
22 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

मार्ग शुक्ल पक्ष
5 दिसम्बर प्रतिपदि गुरुवार
10 वजे 31 दिन से
6 दिसम्बर द्वितीया शुक्रवार
8 वजे 26 दिन तक
फाल्गुन कृष्ण पक्ष
18 फरवरी द्वितीया मंगलवार
21 फरवरी पंचमी शुक्रवार
12 वजे 35 दिन से

नयी दुकान या कारखाना खोलने का मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष
17 अप्रैल चतुर्थी बुधवार
18 अप्रैल पंचमी गुरुवार
12 वजे 32 दिन तक

25 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार
3 वजे 28 दिन तक
वैशाख शुक्ल पक्ष
18 मई षष्ठी शनिवार
22 मई दशमी बुधवार
24 मई त्रदादशी शुक्रवार
8 वजे 3 दिन तक
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
19 जून नवमी बुधवार
2 वजे 28 दिन से
20 जून दशमी गुरुवार
श्रावण शुक्ल पक्ष
12 अगस्त चतुर्थी सोमवार
12 वजे 10 दिन से
आश्विन शुक्ल पक्ष
7 अक्टूबर प्रतिपदा सोमवार
10 अक्टूबर पंचमी गुरुवार
1 वजे 32 दिन तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष
8 नवम्बर चतुर्थी शुक्रवार
3 वजे 3 दिन से
11 नवम्बर सप्तमी सोमवार
1 वजे 53 दिन तक
मार्ग शुक्ल पक्ष
5 दिसम्बर प्रतिपदा गुरुवार
10 वजे 31 दिन तक
पौष शुक्ल पक्ष
15 जनवरी द्वादशी बुधवार
4 वजे 22 दिन से
16 जनवरी त्रयोदशी गुरुवार
2 वजे 29 दिन तक
माघ शुक्ल पक्ष
7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार
11 वजे 6 दिन से
8 फरवरी सप्तमी शनिवार
2 वजे 11 दिन तक

15 फरवरी त्रयोदशी शनिवार
9 वजे 9 दिन तक

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

7 मार्च चतुर्थी शुक्रवार
4 वजे 8 दिन से
10 मार्च सप्तमी सोमवार

अन्न प्राशन मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

17 अप्रैल चतुर्थी बुधवार
18 अप्रैल पंचमी गुरुवार
7 वजे 31 प्रातः तक
19 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
1 वजे 2 दिन से

वैशाख कृष्ण पक्ष

29 अप्रैल तृतीया सोमवार
3 मई सप्तमी शुक्रवार
6 मई दशमी सोमवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

16 मई चतुर्थी गुरुवार
6 वजे 28 शां से
17 मई पंचमी शुक्रवार
22 मई दशमी बुधवार
7 वजे 9 प्रातः तक

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

30 मई चतुर्थी गुरुवार
12 वजे 56 दिन से
31 मई पंचमी शुक्रवार
1 वजे 31 दिन तक
5 जून दशमी बुधवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

13 जून तृतीया गुरुवार
19 जून नवमी बुधवार
2 वजे 28 दिन से
20 जून दशमी गुरुवार
12 वजे 9 दिन तक

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

26 जून द्वितीया बुधवार
10 वजे 37 दिन से
27 जून तृतीया गुरुवार
4 जुलाई नवमी गुरुवार
2 वजे 11 दिन से

श्रावन शुक्ल पक्ष

12 अगस्त चतुर्थी सोमवार
12 वजे 10 दिन से
14 अगस्त षष्ठी बुधवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

7 अक्टूबर प्रतिपदि सोमवार
12 वजे 56 दिन से
10 अक्टूबर पंचमी गुरुवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

11 नवम्बर सप्तमी सोमवार
1 वजे 53 दिन से
13 नवम्बर नवमी बुधवार
4 वजे 47 दिन से

मार्ग कृष्ण पक्ष

21 नवम्बर प्रतिपदि गुरुवार
22 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
25 नवम्बर पंचमी सोमवार
11 वजे 36 दिन तक
29 नवम्बर दशमी शुक्रवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

11 दिसम्बर सप्तमी बुधवार
8 वजे 21 दिन तक
13 दिसम्बर नवमी शुक्रवार
12 वजे 51 दिन से

माघ कृष्ण पक्ष

22 जनवरी चतुर्थी बुधवार
10 वजे 56 दिन से
24 जनवरी सप्तमी शुक्रवार
27 जनवरी दशमी सोमवार

माघ शुक्ल पक्ष

3 फरवरी द्वितीया सोमवार
6 फरवरी पंचमी गुरुवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

19 फरवरी तृतीया बुधवार
20 फरवरी चतुर्थी गुरुवार
6 वजे 13 शां से
21 फरवरी पंचमी शुक्रवार
3 वजे 34 दिन से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

5 मार्च द्वितीया बुधवार
6 मार्च तृतीया गुरुवार
1 वजे 34 दिन से
7 मार्च चतुर्थी शुक्रवार
4 वजे 8 दिन से
10 मार्च सप्तमी सोमवार

सर्वार्थ सिद्धि योग

(कोई भी सर्वसाधारण शुभ कार्य अर्थात् किसी अफसर से मिलना, दरखास्त देना खरीद फरोखत करना, हिसाब खोलना, छोटी-मोटी यात्रा को जाना इत्यादि)

चैत्र शुक्ल पक्ष

17 अप्रैल चतुर्थी बुधवार
19 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
1 वजे 2 दिन से
21 अप्रैल नवमी रविवार
12 वजे 12 दिन तक
27 अप्रैल पूर्णिमा शनिवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

29 अप्रैल तृतीया सोमवार
4 वजे 33 दिन तक
3 मई सप्तमी शुक्रवार
5 वजे 43 शां से
4 मई अष्टमी शनिवार
9 मई द्वादशी गुरुवार
10 मई त्रयोदशी शुक्रवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

16 मई चतुर्थी गुरुवार
17 मई पंचमी शुक्रवार
22 मई दशमी बुधवार
25 मई चतुर्दशी शनिवार
6 वजे प्रातः तक

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

31 मई पंचमी शुक्रवार
4 जून नवमी मंगलवार
11 वजे 44 दिन से
6 जून एकादशी गुरुवार
7 जून द्वादशी शुक्रवार
10 जून अमावमी सोमवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

13 जून तृतीया गुरुवार
19 जून नवमी बुधवार
4 वजे 40 दिन तक

आषाढ कृष्ण पक्ष

28 जून चतुर्थी शुक्रवार
12 वजे 42 दिन तक
2 जुलाई सप्तमी मंगलवार
4 जुलाई नवमी गुरुवार
8 जुलाई त्रयोदशी सोमवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

11 जुलाई प्रतिपदि गुरुवार
21 जुलाई द्वादशी रविवार
5 वजे 55 शां से

श्रावण कृष्ण पक्ष

1 अगस्त अष्टमी गुरुवार
12 वजे 18 दिन तक
3 अगस्त नवमी शनिवार
4 वजे 47 दिन से
5 अगस्त एकादशी सोमवार
8 अगस्त अमावसी गुरुवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

11 अगस्त तृतीया रविवार
8 वजे 50 दिन से
18 अगस्त एकादशी रविवार

भाद्र कृष्ण पक्ष

25 अगस्त द्वितीया रविवार
10 वजे 43 दिन से
27 अगस्त चतुर्थी भौमवार
4 वजे 38 दिन से
31 अगस्त अष्टमी शनिवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

8 सिप्तम्वर द्वितीया रविवार
12 सितम्वर षष्ठी गुरुवार

आश्विन कृष्ण पक्ष

22 सितम्वर प्रतिपदि रविवार
24 सितम्वर तृतीया मंगलवार
28 सितम्वर षष्ठी शनिवार
9 वजे 56 दिन तक
2 अक्टूवर दशमी बुधवार
11 वजे 49 दिन से
4 अक्टूवर त्रयोदशी शुक्रवार
6 अक्टूवर अमावसी रविवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

9 अक्टूवर चतुर्थी बुधवार
3 वजे 16 दिन से
10 अक्टूवर पंचमी गुरुवार
1 वजे 32 दिन तक
13 अक्टूवर अष्टमी रविवार
12 वजे 37 दिन से
14 अक्टूवर नवमी सोमवार
1 वजे 46 दिन से

कार्तिक कृष्ण पक्ष

22 अक्टूवर प्रतिपदि मंगलवार
8 वजे 3 प्रातः तक
23 अक्टूवर द्वितीयस्यां बुधवार
10 वजे 54 दिन से
30 अक्टूवर नवमी बुधवार
1 नवम्वर एकादशी शुक्रवार
3 वजे 41 दिन तक
3 नवम्वर त्रयोदशी रविवार
10 वजे 27 दिन तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष

6 नवम्वर द्वितीया बुधवार
10 नवम्वर षष्ठी रविवार
11 नवम्वर सप्तमी सोमवार
17 नवम्वर त्रयोदशी रविवार
11 वजे 32 दिन से
20 नवम्वर पूर्णिमा बुधवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

25 नवम्वर पंचमी सोमवार
26 नवम्वर षष्ठी मंगलवार
4 दिसम्वर अमायां बुधवार
10 वजे 45 दिन तक

मार्ग शुक्ल पक्ष

13 दिसम्वर नवम्यां शुक्रवार
3 वजे 48 दिन से
15 दिसम्वर एकादश्यां रविवार
17 दिसम्वर त्रयोदश्यां मंगल.
18 दिसम्वर चतुर्दशी बुधवार

पौष कृष्ण पक्ष

22 दिसम्वर तृतीया रविवार

पौष शुक्ल पक्ष

4 जनवरी द्वितीया शनिवार
4 वजे 24 दिन से
10 जनवरी अष्टमी शुक्रवार
15 जनवरी द्वादशी बुधवार
1 वजे 13 दिन से

माघ कृष्ण पक्ष

19 जनवरी प्रतिपदि रविवार
2 वजे 32 दिन तक
25 जनवरी अष्टमी शनिवार
27 जनवरी दशमी सोमवार

17

1 फरवरी अमावसी शनिवार

माघ शुक्ल पक्ष

6 फरवरी पंचमी गुरुवार

7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार

14 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

19 फरवरी तृतीया बुधवार

4 वजे 41 दिन से

22 फरवरी षष्ठी शनिवार

10 वजे 53 दिन तक

24 फरवरी अष्टमी सोमवार

8 वजे 31 दिन तक

28 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

1 मार्च त्रयोदशी शनिवार

8 वजे 51 दिन तक

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

4 मार्च प्रतिपदि मंगलवार

1 वजे 33 दिन से

6 मार्च तृतीयस्या गुरुवार

7 मार्च चतुर्थी शुक्रवार

10 मार्च सप्तमी सोमवार

चैत्र कृष्ण पक्ष

19 मार्च प्रतिपदि बुधवार

28 मार्च एकादशी शुक्रवार

2 वजे 34 दिन तक

1 अप्रैल अमावसी मंगलवार

यात्रा मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

13 अप्रैल पूर्वविना

17 अप्रैल उत्तर विना

18 अप्रैल पूर्व पश्चिम

12 वजे 32 दिन तक

19 अप्रैल पशिचम विना

1 वजे 2 दिन से

20 अप्रैल पूर्व विना

23 अप्रैल पूर्व दक्षिण

9 वजे दिन से

24 अप्रैल उत्तर विना यात्रा

25 अप्रैल पूर्व पश्चिम

वैशाख कृष्ण पक्ष

28 अप्रैल पूर्वोत्तर

6 वजे 4 शां से

29 अप्रैल पूर्व विना यात्रा

30 अप्रैल पूर्व-दक्षिण

1 मई उत्तर विना

2 मई पूर्व पश्चिम

3 मई पश्चिम विना

4 मई पूर्व विना

5 मई पूर्वोत्तर

6 मई पश्चिमोत्तर

7 मई पूर्व यात्रा

8 मई पूर्व पश्चिम

9 मई पूर्व पश्चिम

10 मई पूर्वोत्तर

11 मई पूर्व विना

12 वजे 18 दिन तक

वैशाख शुक्ल पक्ष

16 मई पूर्व पश्चिम

6 वजे 28 शां से

17 मई पश्चिम विना

18 मई पूर्व विना

5 वजे 57 शां तक

20 मई पूर्व विना

3 वजे 46 दिन से

21 मई पूर्व दक्षिण

22 मई उत्तर विना

23 मई पूर्व पश्चिम

10 वजे 10 दिन तक

26 मई पूर्वोत्तर

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

27 मई पूर्व विना

28 मई पूर्व दक्षिण

29 मई उत्तर विना
30 मई पूर्व पश्चिम
31 मई पश्चिम विना
1 जून पश्चिमोत्तर
2 जून पूर्वोत्तर
3 जून पश्चिमोत्तर
4 जून पूर्व यात्रा
5 जून पूर्व पश्चिम
6 जून पूर्व पश्चिम
7 जून पश्चिम विना
10 जून पूर्व विना

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

11 जून पूर्व दक्षिण
13 जून पूर्व पश्चिम
17 जून पूर्व विना
18 जून पूर्व दक्षिण
19 जून उत्तर विना
4 वजे 40 दिन तक
22 जून पूर्व विना
12 वजे 26 दिन से
24 जून पूर्व विना

आषाढ कृष्ण पक्ष

25 जून पूर्व दक्षिण
26 जून उत्तर विना
27 जून पूर्व पश्चिम
28 जून पश्चिम विना
29 जून पश्चिमोत्तर
30 जून पूर्वोत्तर
1 जुलाई पश्चिमोत्तर
2 जुलाई पूर्व यात्रा
3 जुलाई पूर्व पश्चिम
4 जुलाई पूर्व पश्चिम
7 जुलाई पूर्वात्तर
8 जुलाई पूर्व विना
9 जुलाई पूर्व दक्षिण
9 वजे 6 दिन तक
10 जुलाई उत्तर विना

आषाढ शुक्ल पक्ष

11 जुलाई पूर्व पश्चिम
12 जुलाई पश्चिम विना
19 जुलाई पश्चिम विना
6 वजे 40 शगं से
20 जुलाई पूर्व विना
21 जुलाई पूर्वोत्तर
22 जुलाई पूर्व विना
23 जुलाई पूर्व दक्षिण
24 जुलाई उत्तर विना

श्रावण कृष्ण पक्ष

25 जुलाई पूर्व पश्चिम
26 जुलाई पूर्वोत्तर
27 जुलाई पश्चिमोत्तर
28 जुलाई पूर्वोत्तर
29 जुलाई पश्चिमोत्तर
30 जुलाई पूर्व यात्रा
31 जुलाई उत्तर विना
1 अगस्त पूर्व पश्चिम
12 वजे 18 दिन तक
3 अगस्त पूर्व विना
4 वजे 47 दिन से
4 अगस्त पूर्वोत्तर
5 अगस्त पूर्व विना
7 अगस्त उत्तर विना
8 अगस्त पूर्व पश्चिम
3 वजे 39 दिन तक

श्रावण शुक्ल पक्ष

10 अगस्त पूर्व विना
11 वजे 16 दिन से
11 अगस्त पूर्वोत्तर
12 अगस्त पूर्व विना
18 अगस्त पूर्वात्तर
19 अगस्त पूर्व विना
20 अगस्त पूर्व दक्षिण
21 अगस्त उत्तर विना
22 अगस्त पूर्व पश्चिम

भाद्र कृष्ण पक्ष

23 अगस्त पूर्वोत्तर

24 अगस्त पश्चिमोत्तर

25 अगस्त पूर्वोत्तर

26 अगस्त पश्चिमोत्तर

27 अगस्त पूर्व यात्रा

28 अगस्त उत्तर विना

31 अगस्त पूर्व विना

1 सितम्बर पूर्वोत्तर

3 सितम्बर पूर्व दक्षिण

4 सिप्तम्बर उत्तर विना

भाद्र शुक्ल पक्ष

8 सितम्बर पूर्वोतर

9 सितम्बर पूर्व विना

12 वजे 46 दिन तक

12 सितम्बर पूर्व पश्चिम

13 सितम्बर पश्चिम विना

14 सितम्बर पूर्व विना

18 सितम्बर उत्तर विना

19 सितम्बर पूर्व पश्चिम

20 सितम्बर पूर्वोत्तर

21 सितम्बर पश्चिमोत्तर

आश्विन कृष्ण पक्ष

22 सितम्बर पूर्वोत्तर

23 सितम्बर पश्चिमोत्तर

24 सितम्बर पूर्व दक्षिण

27 सितम्बर पश्चिम विना

28 सितम्बर पूर्व विना

29 सितम्बर पूर्वोत्तर

11 वजे 35 दिन तक

30 सितम्बर पूर्व विना

12 वजे 29 दिन से

1 अक्टूबर पूर्व दक्षिण

2 अक्टूबर उत्तर विना

11 वजे 49 दिन तक

4 अक्टूबर पश्चिम विना

5 अक्टूबर पूर्व विना

6 अक्टूबर पूर्व उत्तर

आश्विन शुक्ल पक्ष

9 अक्टूबर उत्तर विना

3 वजे 16 दिन से

10 अक्टूबर पूर्व पश्चिम

11 अक्टूबर पश्चिम विना

12 अक्टूबर पूर्व विना

13 अक्टूबर पूर्वोत्तर

14 अक्टूबर पूर्व विना

15 अक्टूबर पूर्व यात्रा

18 अक्टूबर पूर्वोत्तर

19 अक्टूबर पश्चिमोत्तर

20 अक्टूबर पूर्वोत्तर

21 अक्टूबर पूर्व विना

कार्तिक कृष्ण पक्ष

22 अक्टूबर पूर्व दक्षिण

8 वजे 3 प्रातः तक

24 अक्टूबर पूर्व पश्चिम

1 वजे 32 दिन से

25 अक्टूबर पश्चिम विना

26 अक्टूबर पूर्व विना

28 अक्टूबर पूर्व विना

29 अक्टूबर पूर्व दक्षिण

1 नवम्बर पश्चिम विना

2 नवम्बर पूर्व विना

3 नवम्बर पूर्वोत्तर

10 वजे 27 दिन तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष

6 नवम्बर उत्तर विना

7 नवम्बर पूर्व पश्चिम

8 नवम्बर पश्चिम विना

9 नवम्बर पूर्व विना

10 नवम्बर पूर्वोत्तर

11 नवम्बर पूर्व विना

12 नवम्बर पूर्व यात्रा

13 नवम्बर पूर्व पश्चिम

14 नवम्बर पूर्व पश्चिम

17 नवम्बर पूर्वोत्तर

18 नवम्बर पूर्व विना

2 वजे 28 दिन तक

मार्ग कृष्ण पक्ष

21 नवम्बर पूर्व पश्चिम

22 नवम्बर पश्चिम विना

24 नवम्बर पूर्वोत्तर

25 नवम्बर पूर्व विना

28 नवम्बर पूर्व पश्चिम

29 नवम्बर पश्चिम विना

30 नवम्बर पूर्व विना

3 दिसम्बर पूर्व दक्षिण

12 वजे 57 दिन से

4 दिसम्बर उत्तर विना

मार्ग शुक्ल पक्ष

5 दिसम्बर पूर्व पश्चिम

6 दिसम्बर पश्चिम विना

7 दिसम्बर पूर्व विना

8 दिसम्बर पूर्वोत्तर

9 दिसम्बर पूर्व विना

10 दिसम्बर पूर्व यात्रा

11 दिसम्बर पूर्व पश्चिम

12 दिसम्बर पूर्व पश्चिम

13 दिसम्बर पूर्वोत्तर

18 दिसम्बर उत्तर विना

19 दिसम्बर पूर्व पश्चिम

पौष कृष्ण पक्ष

21 दिसम्बर पूर्व विना

22 दिसम्बर पूर्वोत्तर

25 दिसम्बर उत्तर विना

26 दिसम्बर पूर्व पश्चिम

27 दिसम्बर पश्चिम विना

1 जनवरी उत्तर विना

2 जनवरी पूर्व पश्चिम

पौष शुक्ल पक्ष

3 जनवरी पश्चिम विना

4 जनवरी पूर्व विना

5 जनवरी पूर्वोत्तर

6 जनवरी पश्चिमोत्तर

7 जनवरी पूर्व यात्रा

8 जनवरी पूर्व पश्चिम

9 जनवरी पूर्व पश्चिम

10 जनवरी पूर्वोत्तर

11 जनवरी पूर्व विना

14 जनवरी पूर्व दक्षिण

11 वजे 19 दिन से

15 जनवरी उत्तर विना

16 जनवरी पूर्व पश्चिम

2 वजे 29 दिन तक

17 जनवरी पश्चिम विना

3 वजे 5 दिन से

18 जनवरी पूर्व विना

माघ कृष्ण पक्ष

19 जनवरी पूर्वोत्तर

2 वजे 32 दिन तक

21 जनवरी पूर्व दक्षिण

12 वजे 21 दिन से

22 जनवरी उत्तर विना

23 जनवरी पूर्व पश्चिम

24 जनवरी पश्चिम विना

8 वजे प्रातः तक

27 जनवरी पूर्व विना

28 जनवरी पूर्व दक्षिण

29 जनवरी उत्तर विना

30 जनवरी पूर्व पश्चिम

31 जनवरी पश्चिम विना

1 फरवरी पूर्व विना

माघ शुक्ल पक्ष

2 फरवरी पूर्वोत्तर

3 फरवरी पश्चिमोत्तर

4 फरवरी पूर्व यात्रा

5 फरवरी पूर्व पश्चिम

6 फरवरी पूर्व पश्चिम
7 फरवरी पश्चिम विना
8 फरवरी पूर्व विना
14 फरवरी पश्चिम विना
15 फरवरी पूर्व विना

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

18 फरवरी पूर्व दक्षिण
19 फरवरी उत्तर विना
20 फरवरी पूर्व पश्चिम
2 वजे 33 दिन तक
23 फरवरी पूर्वोत्तर
9 वजे 31 दिन से
24 फरवरी पूर्व विना
25 फरवरी पूर्व दक्षिण
26 फरवरी उत्तर विना
27 फरवरी पूर्वपश्चिम
28 फरवरी पश्चिम विना
1 मार्च पूर्व विना
2 मार्च पूर्वोत्तर
3 मार्च पश्चिमोत्तर

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

4 मार्च पूर्व यात्रा
5 मार्च पूर्व पश्चिम
6 मार्च पूर्व पश्चिम
7 मार्च पश्चिम विना
10 मार्च पूर्व विना
11 मार्च पूर्व दक्षिण
12 मार्च उत्तर विना
8 वजे 47 प्रातः तक
17 मार्च पूर्व विना
18 मार्च पूर्व दक्षिण

चैत्र कृष्ण पक्ष

19 मार्च उत्तर विना
22 मार्च पूर्व विना
4 वजे 27 दिन से
23 मार्च पूर्वोत्तर
24 मार्च पूर्व विना
25 मार्च पूर्व दक्षिण
26 मार्च उत्तर विना
27 मार्च पूर्व पश्चिम
28 मार्च पश्चिम विना
29 मार्च पश्चिमोत्तर
30 मार्च पूर्वोत्तर
31 मार्च पश्चिमोत्तर
1 अप्रैल पूर्व यात्रा

राशि के अनुसार यज्ञोपवीत मुहूर्त

मेष **सिंह** **धनु**

चैत्र शुक्ल पक्ष

19 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार
24 अप्रैल द्वादशी बुधवार
25 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

29 अप्रैल तृतीया सोमवार (चं)

वैशाख शुक्ल पक्ष

17 मई पंचमी शुक्रवार (चं)
22 मई दशमी बुधवार
23 मई द्वादशी गुरुवार
24 मई त्रयोदशी शुक्रवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

27 मई प्रतिपदा सोमवार (चं)
31 मई पंचमी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

13 जून तृतीया गुरुवार

19 जून नवमी बुधवार

20 जून दशमी गुरुवार

21 जून एकादशी शुक्रवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

27 जून तृतीया गुरुवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

19 सित. त्रयोदशी गुरु. (गु)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

11 नवम्बर सप्तमी सोम. (गु)

माघ कृष्ण पक्ष

22 जनवरी चतुर्थी बुध. (गु)

माघ शुक्ल पक्ष

14 फरवरी द्वादशी शुक्र. (गु)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

19 फरवरी तृतीया बुध. (गु)

21 फरवरी पंचमी शुक्र. (गु)

वृष **कन्या** **मकर**

चैत्र शुक्ल पक्ष

19 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार (सू)

24 अप्रैल द्वादशी बुधवार (सू)

25 अप्रैल त्रयोदशी गुरु. (सू)

वैशाख कृष्ण पक्ष

29 अप्रैल तृतीया सोमवार (सू)

वैशाख शुक्ल पक्ष

22 मई दशमी बुधवार

23 मई द्वादशी गुरुवार

24 मई त्रयोदशी शुक्रवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

27 मई प्रतिपदा सोमवार

31 मई पंचमी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

13 जून तृतीया गुरुवार

19 जून नवमी बुधवार

20 जून दशमी गुरुवार

21 जून एकादशी शुक्रवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

27 जून तृतीया गुरुवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

19 सिप्तम्बर त्रयोदशी गुरुवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

10 अक्टूबर पंचमी गुरुवार

11 अक्टूबर षष्ठी शुक्रवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

11 नवम्बर सप्तमी सोमवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

24 नवम्बर चतुर्थी रविवार

25 नवम्बर पंचमी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

13 दिसम्बर नवमी शुक्रवार

माघ कृष्ण पक्ष

22 जनवरी चतुर्थी बुध. (चं)

माघ शुक्ल पक्ष

6 फरवरी पंचमी गुरुवार

7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार

14 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

19 फरवरी तृतीया बुधवार

21 फरवरी पंचमी शुक्रवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

5 मार्च द्वितीया बुधवार

6 मार्च तृतीया गुरुवार

मिथुन **तुला** **कुम्भ**

चैत्र शुक्ल पक्ष

19 अप्रैल षष्ठी शुक्रवार

24 अप्रैल द्वादशी बुधवार (चं)

वैशाख कृष्ण पक्ष

29 अप्रैल तृतीया सोमवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

24 मई त्रयोदशी शुक्रवार (सू)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

27 मई प्रतिपदा सोमवार (सू)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

13 जून तृतीया गुरुवार (सू)

19 जून नवमी बुधवार (चं)

20 जून दशमी गुरुवार

21 जून एकादशी शुक्रवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

27 जून तृतीया गुरुवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

19 सितम्बर त्रयोदशी गुरु. (सू)

आश्विन शुक्ल पक्ष

10 अक्टूबर पंचमी गुरु. (सू)

11 अक्टूबर षष्ठी शुक्र. (सू)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

11 नवम्बर सप्तमी सोम. (च)

मार्ग कृष्ण पक्ष

24 नवम्बर चतुर्थी रविवार

25 नवम्बर पंचमी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

9 दिसम्बर पंचमी सोम. (चं)

13 दिसम्बर नवमी शुक्रवार

माघ कृष्ण पक्ष

22 जनवरी चतुर्थी बुध. (सू)

माघ शुक्ल पक्ष

6 फरवरी पंचमी गुरु. (सू)

7 फरवरी षष्ठी शुक्र. (सू)

14 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

19 फरवरी तृतीया बुधवार

21 फरवरी पंचमी शुक्रवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

5 मार्च द्वितीया बुधवार

6 मार्च तृतीया गुरुवार

कर्क वृश्चिक मीन

चैत्र शुक्ल पक्ष

24 अप्रैल द्वादशी बुधवार (गु)

25 अप्रैल त्रयोदशी गुरु. (गु)

वैशाख कृष्ण पक्ष

29 अप्रैल तृतीया सोम. (गु)

वैशाख शुक्ल पक्ष

17 मई पंचमी शुक्रवार (गु)

22 मई दशमी बुधवार (गु)

23 मई द्वादशी गुरुवार (गु)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

27 मई प्रतिपदा सोमवार (गु)

31 मई पंचमी शुक्रवार (गु)

भाद्र शुक्ल पक्ष

19 सित. त्रयोदशी गुरु. (च)

आश्विन शुक्ल पक्ष

10 अक्टूबर पंचमी गुरुवार

11 अक्टूबर षष्ठी शुक्रवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

11 नवम्बर सप्तमी सोम. (सू)

मार्ग कृष्ण पक्ष

24 नवम्बर चतुर्थी रवि. (चं)

25 नवम्बर पंचमी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

9 दिसम्बर पंचमी सोमवार

13 दिसम्बर नवमी शुक्रवार

माघ कृष्ण पक्ष

22 जनवरी चतुर्थी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

6 फरवरी पंचमी गुरुवार

7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार
14 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

19 फरवरी तृतीया बुध. (सू)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

5 मार्च द्वितीया बुधवार (सू)
6 मार्च तृतीया गुरुवार (सू)

राशि के अनुसार विवाह मुहूर्त

मेष सिंह धनु

चैत्र शुक्ल पक्ष

22 अप्रैल दशमी सोमवार
24 अप्रैल द्वादशी बुधवार
25 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार
26 अप्रैल चतुर्दशी शुक्रवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

1 मई पंचमी बुधवार
3 मई सप्तमी शुक्रवार
4 मई अष्टमी शनिवार
5 मई नवमी रविवार
8 मई एकादशी बुधवार (चं)
9 मई द्वादशी गुरुवार (चं)
10 मई त्रयोदशी शुक्रवार
11 मई चतुर्दशी शनिवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

19 मई सप्तमी रविवार
22 मई दशमी बुधवार
23 मई द्वादशी गुरुवार
24 मई त्रयोदशी शुक्रवार
26 मई पूर्णिमा रविवार (चं)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

30 मई चतुर्थी गुरुवार
31 मई पंचमी शुक्रवार
1 जून षष्ठी शनिवार
5 जून दशमी बुधवार
6 जून एकादशी गुरुवार
(दिन के लग्न में चन्द्र पूजा)
7 जून द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

16 जून षष्ठी रविवार
19 जून नवमी बुधवार
20 जून दशमी गुरुवार
21 जून एकादशी शुक्रवार
22 जून द्वादशी शनिवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

27 जून तृतीया गुरुवार
28 जून चतुर्थी शुक्रवार
29 जून पंचमी शनिवार
1 जुलाई षष्ठी सोमवार (चं)
3 जुलाई अष्टमी बुधवार
(दिन के लग्नों में चन्द्र पूजा)
4 जुलाई नवमी गुरुवार
7 जुलाई द्वादशी रविवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

19 सिप्त. त्रयोदशी गुरु. (गु)

आश्विन शुक्ल पक्ष

11 अक्टूबर षष्ठी शुक्र. (गु)
12 अक्टूबर सप्तमी शनिवार
14 अक्टूबर नवमी सोम. (गु)
18 अक्टू. त्रयोदशी शुक्र. (गु)
19 अक्टू. त्रयोदशी शनि. (गु)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

10 नवम्बर षष्ठी रविवार (गु)
11 नवम्बर सप्तमी सोम. (गु)

माघ कृष्ण पक्ष

20 जनवरी द्वितीया सोम. (गु)
22 जनवरी चतुर्थी बुध. (गु)
23 जनवरी पंचमी गुरु. (गु)
24 जनवरी सप्तमी शुक्र. (गु)

माघ शुक्ल पक्ष

2 फरवरी प्रतिपदि रवि. (गु)
7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार (गु)
(रात के लग्नों में गुरु पूजा दिन के लग्न निषेध)
8 फरवरी सप्तमी शनि. (गु)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

19 फरवरी तृतीया बुध. (गु)
20 फरवरी चतुर्थी गुरु. (गु)
21 फरवरी पंचमी शुक्र. (गु)
28 फरवरी द्वादशी शुक्र. (गु)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

6 मार्च तृतीया गुरुवार
(रात के लग्नों में गुरु पूजा दिन के लग्न निषेध)
7 मार्च चतुर्थी शुक्रवार (गु)

वृष कन्या मकर

चैत्र शुक्ल पक्ष

24 अप्रैल द्वादशी बुधवार (सू)
25 अप्रैल त्रयोदशी गुरु. (सू)
26 अप्रैल चतुर्दशी शुक्र. (सू)

वैशाख कृष्ण पक्ष

3 मई सप्तमी शुक्रवार (सू)
4 मई अष्टमी शनिवार (सू)
5 मई नवमी रविवार (सू)
8 मई एकादशी बुधवार (सू)
9 मई द्वादशी गुरुवार (सू)

वैशाख शुक्ल पक्ष

19 मई सप्तमी रविवार (चं)
22 मई दशमी बुधवार
23 मई द्वादशी गुरुवार
24 मई त्रयोदशी शुक्रवार
26 मई पूर्णिमा रविवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

27 मई प्रतिपदा सोम. (चं)
30 मई चतुर्थी गुरुवार
31 मई पंचमी शुक्रवार
1 जून षष्ठी शनिवार
5 जून दशमी बुधवार
6 जून एकादशी गुरुवार
(रात के लग्न में चन्द्र पूजा)
7 जून द्वादशी शुक्रवार (चं)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

16 जून षष्ठी रविवार (चं)
17 जून सप्तमी सोमवार (चं)
20 जून दशमी गुरुवार
21 जून एकादशी शुक्रवार
22 जून द्वादशी शनिवार (चं)

आषाढ कृष्ण पक्ष

27 जून तृतीया गुरुवार
28 जून चतुर्थी शुक्रवार
29 जून पंचमी शनिवार
1 जुलाई षष्ठी सोमवार
3 जुलाई अष्टमी बुधवार
(रात के लग्नों में चन्द्र पूजा)
4 जुलाई नवमी गुरुवार
7 जुलाई द्वादशी रविवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

9 अग. प्रतिपदि शुक्र. (च.)
10 अगस्त द्वितीया शनि. (चं)
11 अगस्त तृतीया रविवार
(दिन के लग्नों में चन्द्र पूजा)
12 अगस्त चतुर्थी सोमवार
14 अगस्त षष्ठी बुधवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

19 सिप्तम्बर त्रयोदशी गुरुवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

9 अक्टूबर चतुर्थी बुधवार
10 अक्टूबर पंचमी गुरुवार
11 अक्टूवर षष्ठी शुक्र. (चं)
12 अक्टू. सप्तमी शनि. (चं)
14 अक्टूवर नवमी सोमवार
18 अक्टूबर त्रयोदशी शुक्रवार
19 अक्टूबर त्रयोदशी शनिवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

11 नवम्बर सप्तमी सोमवार
18 नव. चतुर्दशी सोम. (चं)

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर सप्तमी बुध. (चं)
28 नवम्बर अष्टमी गुरु. (चं)
29 नवम्बर दशमी शुक्रवार
30 नवम्बर एकादशी शनिवार
1 दिसम्बर द्वादशी रविवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

5 दिसम्बर प्रतिपदि गुरु. (चं)
8 दिसम्बर पंचमी रविवार
9 दिसम्बर षष्ठी सोमवार
12 दिसम्बर अष्टमी गुरुवार
13 दिसम्बर नवमी शुक्रवार

माघ कृष्ण पक्ष

20 जनवरी द्वितीया सोम. (चं)
22 जनवरी चतुर्थी बुधवार
(दिन के लग्नों में चन्द्र पूजा)
23 जनवरी षष्ठी गुरुवार
24 जनवरी सप्तमी शुक्रवार

माघ शुक्ल पक्ष

2 फरवरी प्रतिपदि रविवार
5 फरवरी चतुर्थी बुधवार
6 फरवरी पंचमी गुरुवार
7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार
(रात के लग्नों में चन्द्र)
8 फरवरी सप्तमी शनि. (चं)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

19 फरवरी तृतीया बुधवार
20 फरवरी चतुर्थी गुरुवार
21 फरवरी पंचमी शुक्रवार
24 फरवरी अष्टमी सोमवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

5 मार्च द्वितीया बुधवार
6 मार्च तृतीया गुरुवार
(रात के लग्नों में चन्द्र पूजा)
7 मार्च चतुर्थी शुक्रवार (चं)

मिथुन **तुला** **कुम्भ**

चैत्र शुक्ल पक्ष

22 अप्रैल दशमी सोमवार
24 अप्रैल द्वादशी बुधवार
(रात के लग्नों में चन्द्र पूजा)
25 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार
26 अप्रैल चतुर्दशी शुक्रवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

1 मई पंचमी बुधवार
3 मई सप्तमी शुक्रवार
4 मई अष्टमी शनिवार
5 मई नवमी रविवार
8 मई एकादशी बुधवार
9 मई द्वादशी गुरुवार
10 मई त्रयोदशी शुक्रवार
11 मई चतुर्दशी शनिवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

19 मई सप्तमी रविवार
23 मई द्वादशी गुरुवार
(रात के लग्नों में सूर्य पूजा
दिन के लग्न निषेध)
24 मई त्रयोदशी शुक्रवार (सू)
26 मई पूर्णिमा रविवार (सू)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

27 मई प्रतिपदा सोमवार (सू)
1 जून षष्ठी शनिवार
(रात के लग्नों में सूर्य पूजा दिन के लग्न निषेध)
5 जून दशमी बुधवार (सू)
6 जून एकादशी गुरुवार (सू)
7 जून द्वादशी शुक्रवार (सू)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

16 जून षष्ठी रविवार
17 जून सप्तमी सोमवार
19 जून नवमी बुधवार (चं)
20 जून दशमी गुरुवार
21 जून एकादशी शुक्रवार
22 जून द्वादशी शनिवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

27 जून तृतीया गुरुवार (चं)
28 जून चतुर्थी शुक्रवार (चं)
29 जून पंचमी शनिवार
1 जुलाई षष्ठी सोमवार
3 जुलाई अष्टमी बुधवार
4 जुलाई नवमी गुरुवार
7 जुलाई द्वादशी रवि. (चं)

श्रावण शुक्ल पक्ष

9 अगस्त प्रतिपदा शुक्रवार
10 अगस्त द्वितीया शनिवार
11 अगस्त तृतीया रविवार
(रात के लग्नों में चन्द्र पूजा)
12 अगस्त चतुर्थी सोम. (चं)
14 अगस्त षष्ठी बुधवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

19 सित. त्रयोदशी गुरु. (सू)

आश्विन शुक्ल पक्ष

9 अक्टूबर चतुर्थी बुध. (सू)
10 अक्टूबर पंचमी गुरु. (सू)
11 अक्टूबर षष्ठी शुक्र. (सू)
12 अक्टूबर सप्तमी शनि. (सू)
18 अक्टूबर त्रयोदशी शुक्रवार
19 अक्टूबर त्रयोदशी शनिवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

11 नवम्बर सप्तमी सोम. (चं)
18 नवम्बर चतुर्दशी सोमवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर सप्तमी बुधवार
28 नवम्बर अष्टमी गुरुवार
29 नवम्बर दशमी शुक्र. (चं)
30 नवम्बर एकादशी शनि. (चं)
1 दिसम्बर द्वादशी रविवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

5 दिसम्बर प्रतिपदि गुरुवार
8 दिसम्बर पंचमी रवि. (चं)
9 दिसम्बर षष्ठी सोमवार
(दिन के लग्नों में चन्द्र पूजा)
12 दिसम्बर अष्टमी गुरुवार
13 दिसम्बर नवमी शुक्रवार

माघ कृष्ण पक्ष

20 जनवरी द्वितीया सोम. (सू)
22 जनवरी चतुर्थी बुधवार
(दिन के लग्नों में सूर्य पूजा रात के लग्न निषेध)
24 जनवरी सप्तमी शुक्रवार
(रात के लग्नों में सूर्य पूजा दिन के लग्न निषेध)

माघ शुक्ल पक्ष

5 फरवरी चतुर्थी बुध. (सू)
6 फरवरी पंचमी गुरु. (सू)
7 फरवरी षष्ठी शुक्र. (सू)
8 फरवरी सप्तमी शनि. (सू)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

19 फरवरी तृतीया बुध. (चं)
20 फरवरी चतुर्थी गुरु. (चं)

21 फरवरी पंचमी शुक्रवार
24 फरवरी अष्टमी सोमवार
28 फरवरी त्रयोदशी शुक्र. (चं)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

5 मार्च द्वितीया बुधवार
6 मार्च तृतीया गुरुवार
7 मार्च चतुर्थी शुक्रवार

कर्क वृश्चिक मीन

चैत्र शुक्ल पक्ष

22 अप्रैल दशमी सोमवार (गु)
24 अप्रैल द्वादशी बुधवार (गु)
25 अप्रैल त्रयोदशी गुरु. (गु)
26 अप्रैल चतुर्दशी शुक्र. (गु)

वैशाख कृष्ण पक्ष

1 मई पंचमी बुधवार (गु)
3 मई सप्तमी शुक्रवार (गु)
4 मई अष्टमी शनिवार (गु)
8 मई एकादशी बुधवार (गु)
9 मई द्वादशी गुरुवार (गु)
10 मई त्रयोदशी शुक्रवार (गु)
11 मई चतुर्दशी शनिवार (गु)

वैशाख शुक्ल पक्ष

19 मई सप्तमी रविवार (गु)
22 मई दशमी बुधवार (गु)
23 मई द्वादशी गुरुवार (गु)
26 मई पूर्णिमा रविवार (गु)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

30 मई चतुर्थी गुरुवार (गु)
31 मई पंचमी शुक्रवार (गु)
1 जून षष्ठी शनिवार (गु)
5 जून दशमी बुधवार (गु)
6 जून एकादशी गुरुवार (गु)
7 जून द्वादशी शुक्रवार (गु)

आषाढ कृष्ण पक्ष

4 जुलाई नवमी गुरुवार (गु)
7 जुलाई द्वादशी रवि. (सू)

श्रावण शुक्ल पक्ष

9 अगस्त प्रतिपदा शुक्रवार
10 अगस्त द्वितीया शनिवार
11 अगस्त तृती[illegible] रविवार
12 अगस्त चतुर्थी सोमवार
14 अगस्त षष्ठी बुधवार (चं)

भाद्र शुक्ल पक्ष

19 सित. त्रयोदशी गुरु. (चं)

आश्विन शुक्ल पक्ष

9 अक्टूबर चतुर्थी बुधवार
10 अक्टूबर पंचमी गुरुवार
11 अक्टूबर षष्ठी शुक्रवार
12 अक्टूबर सप्तमी शनिवार
14 अक्टूबर नवमी सोमवार
18 अक्टू. त्रयोदशी शुक्र. (सू)
19 अक्टू. त्रयोदर्शी शनि. (सू)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

11 नवम्बर सप्तमी सोम. (सू)
18 नवम्बर चतुर्दशी सोमवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

27 नवम्बर सप्तमी बुधवार
28 नवम्बर अष्टमी गुरुवार
29 नवम्बर दशमी शुक्रवार
30 नवम्बर एकादशी शनिवार
1 दिसम्बर द्वादशी रविवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

5 दिसम्बर प्रतिपदि गुरुवार
8 दिसम्बर पंचमी रविवार
9 दिसम्बर षष्ठी सोमवार
12 दिसम्बर अष्टमी गुरुवार
13 दिसम्बर नवमी शुक्रवार

माघ कृष्ण पक्ष

20 जनवरी द्वितीया सोमवार
22 जनवरी चतुर्थी बुधवार
23 जनवरी पंचमी गुरुवार
24 जनवरी सप्तमी शुक्रवार

(रात के लग्नों में चन्द्र पूजा)

माघ शुक्ल पक्ष
2 फरवरी प्रतिपदि रविवार
(रात के लग्नों में चन्द्र पूजा)
5 फरवरी चतुर्थी बुधवार
6 फरवरी पंचमी गुरुवार
7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार
8 फरवरी सप्तमी शनिवार
फाल्गुन कृष्ण पक्ष
19 फरवरी तृतीया बुधवार (सू)
20 फरवरी चतुर्थी गुरुवार (सू)
28 फरवरी द्वादशी शुक्र. (सू)
फाल्गुन शुक्ल पक्ष
5 मार्च द्वितीया बुधवार (सू)
6 मार्च तृतीया गुरुवार (सू)
7 मार्च चतुर्थी शुक्रवार (सू)

संस्कृत पढिये

बुनियाद मकान मुहूर्त राशि के अनुसार

मेष सिंह धनु

चैत्र शुक्ल पक्ष
17 अप्रैल चतुर्थी बुधवार
18 अप्रैल पंचमी गुरुवार
वैशाख कृष्ण पक्ष
2 मई षष्ठी गुरुवार
3 मई सप्तमी शुक्रवार
श्रावण शुक्ल पक्ष
12 अगस्त चतुर्थी सोमवार
14 अगस्त षष्ठी बुधवार
22 अगस्त पूर्णिमा गुरुवार
कार्तिक शुक्ल पक्ष
11 नवम्बर सप्तमी सोमवार
मार्ग कृष्ण पक्ष
21 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार
22 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
माघ कृष्ण पक्ष
22 जनवरी चतुर्थी बुधवार
23 जनवरी षष्ठी गुरुवार
24 जनवरी सप्तमी शुक्रवार
माघ शुक्ल पक्ष
3 फरवरी द्वितीया सोमवार
फाल्गुन कृष्ण पक्ष
19 फरवरी तृतीया बुधवार
21 फरवरी पंचमी शुक्रवार

वृष कन्या मकर

चैत्र शुक्ल पक्ष
17 अप्रैल चतुर्थी बुधवार
18 अप्रैल पंचमी गुरुवार
वैशाख कृष्ण पक्ष
29 अप्रैल तृतीया सोमवार
3 मई सप्तमी शुक्रवार
वैशाख शुक्ल पक्ष
18 मई षष्ठी शनिवार
श्रावण शुक्ल पक्ष
12 अगस्त चतुर्थी सोमवार
14 अगस्त षष्ठी बुधवार
22 अगस्त पूर्णिमा गुरुवार
भाद्र शुक्ल पक्ष
9 सितम्बर तृतीया सोमवार
मार्ग कृष्ण पक्ष
21 नवम्बर प्रतिपदा गुरुवार
22 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
माघ कृष्ण पक्ष
23 जनवरी षष्ठी गुरुवार
24 जनवरी सप्तमी शुक्रवार

माघ शुक्ल पक्ष
3 फरवरी द्वितीया सोमवार
6 फरवरी पंचमी गुरुवार
7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार
फाल्गुन कृष्ण पक्ष
19 फरवरी तृतीया बुधवार
21 फरवरी पंचमी शुक्रवार
22 फरवरी षष्ठी शनिवार
फाल्गुन शुक्ल पक्ष
5 मार्च द्वितीया बुधवार
6 मार्च तृतीया गुरुवार

मिथुन तुला कुम्भ

चैत्र शुक्ल पक्ष
18 अप्रैल पंचमी गुरुवार
वैशाख कृष्ण पक्ष
29 अप्रैल तृतीया सोमवार
2 मई षष्ठी गुरुवार
वैशाख शुक्ल पक्ष
18 मई षष्ठी शनिवार
श्रावण शुक्ल पक्ष
14 अगस्त षष्ठी बुधवार
मार्ग कृष्ण पक्ष
22 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
माघ कृष्ण पक्ष
22 जनवरी चतुर्थी बुधवार
माघ शुक्ल पक्ष
3 फरवरी द्वितीया सोमवार
6 फरवरी पंचमी गुरुवार
7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार
फाल्गुन कृष्ण पक्ष
21 फरवरी पंचमी शुक्रवार
फाल्गुन शुक्ल पक्ष
5 मार्च द्वितीया बुधवार

कर्क वृश्चिक मीन

चैत्र शुक्ल पक्ष
17 अप्रैल चतुर्थी बुधवार
वैशाख कृष्ण पक्ष
29 अप्रैल तृतीया सोमवार
2 मई षष्ठी गुरुवार
3 मई सप्तमी शुक्रवार
वैशाख शुक्ल पक्ष
18 मई षष्ठी शनिवार
श्रावण शुक्ल पक्ष
12 अगस्त चतुर्थी सोमवार
22 अगस्त पूर्णिमा गुरुवार
भाद्र शुक्ल पक्ष
9 सितम्बर तृतीया सोमवार
माघ कृष्ण पक्ष
22 जनवरी चतुर्थी बुधवार
23 जनवरी षष्ठी गुरुवार
24 जनवरी सप्तमी शुक्रवार
माघ शुक्ल पक्ष
6 फरवरी पंचमी गुरुवार
7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार
फाल्गुन कृष्ण पक्ष
19 फरवरी तृतीया बुधवार
21 फरवरी पंचमी शुक्रवार
फाल्गुन शुक्ल पक्ष
5 मार्च द्वितीया बुधवार
6 मार्च तृतीया गुरुवार

प्रवेश मुहूर्त राशि के अनुसार

मेष सिंह धनु

चैत्र शुक्ल पक्ष
24 अप्रैल द्वादशी बुधवार
25 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार
वैशाख शुक्ल पक्ष
22 मई दशमी बुधवार
23 मई द्वादशी गुरुवार

24 मई त्रयोदशी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 जून दशमी गुरुवार

21 जून एकादशी शुक्रवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

29 जून पंचमी शनिवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

18 सितम्बर द्वादशी बुधवार

19 सितम्बर त्रयोदशी गुरुवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

7 अक्टूबर प्रतिपदि सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

9 दिसम्बर षष्ठी सोमवार

माघ कृष्ण पक्ष

22 जनवरी चतुर्थी बुधवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

19 फरवरी तृतीया बुधवार

21 फरवरी पंचमी शुक्रवार

वृष कन्या मकर

चैत्र शुक्ल पक्ष

24 अप्रैल द्वादशी बुधवार

25 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

29 अप्रैल तृतीया सोमवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

18 मई षष्ठी शनिवार

22 मई दशमी बुधवार

23 मई द्वादशी गुरुवार

24 मई त्रयोदशी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 जून दशमी गुरुवार

21 जून एकादशी शुक्रवार

22 जून द्वादशी शनिवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

29 जून पंचमी शनिवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

18 सितम्बर द्वादशी बुधवार

19 सितम्बर त्रयोदशी गुरुवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

7 अक्टूबर प्रतिपदा सोमवार

10 अक्टूबर पंचमी गुरुवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

25 नवम्बर पंचमी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

9 दिसम्बर षष्ठी सोमवार

माघ शुक्ल पक्ष

6 फरवरी पंचमी गुरुवार

7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

19 फरवरी तृतीया बुधवार

21 फरवरी पंचमी शुक्रवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

5 मार्च द्वितीया बुधवार

6 मार्च तृतीया गुरुवार

मिथुन तुला कुम्भ

चैत्र शुक्ल पक्ष

24 अप्रैल द्वादशी बुधवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

29 अप्रैल तृतीया सोमवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

18 मई षष्ठी शनिवार

24 मई त्रयोदशी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

20 जून दशमी गुरुवार

21 जून एकादशी शुक्रवार

22 जून द्वादशी शनिवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

29 जून पंचमी शनिवार

भाद्र शुक्ल पक्ष
19 सितम्बर त्रयोदशी गुरुवार
आश्विन शुक्ल पक्ष
7 अक्टूबर प्रतिपदि सोमवार
10 अक्टूबर पंचमी गुरुवार
मार्ग कृष्ण पक्ष
25 नवम्बर पंचमी सोमवार
मार्ग शुक्ल पक्ष
9 दिसम्बर षष्ठी सोमवार
माघ कृष्ण पक्ष
22 जनवरी चतुर्थी बुधवार
माघ शुक्ल पक्ष
6 फरवरी पंचमी गुरुवार
7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार
फाल्गुन कृष्ण पक्ष
21 फरवरी पंचमी शुक्रवार
फाल्गुन शुक्ल पक्ष
5 मार्च द्वितीया बुधवार
6 मार्च तृतीया गुरुवार

कर्क **वृश्चिक** **मीन**

चैत्र शुक्ल पक्ष
24 अप्रैल द्वादशी बुधवार
25 अप्रैल त्रयोदशी गुरुवार
वैशाख कृष्ण पक्ष
29 अप्रैल तृतीया सोमवार
वैशाख शुक्ल पक्ष
18 मई षष्ठी शनिवार
22 मई दशमी बुधवार
23 मई द्वादशी गुरुवार
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
22 जून द्वादशी शनिवार
भाद्र शुक्ल पक्ष
18 सितम्बर द्वादशी बुधवार
आश्विन शुक्ल पक्ष
10 अक्टूबर पंचमी गुरुवार
मार्ग कृष्ण पक्ष
25 नवम्बर पंचमी सोमवार
मार्ग शुक्ल पक्ष
9 दिसम्बर षष्ठी सोमवार
माघ शुक्ल पक्ष
6 फरवरी पंचमी गुरुवार
7 फरवरी षष्ठी शुक्रवार
फाल्गुन कृष्ण पक्ष
19 फरवरी तृतीया बुधवार
फाल्गुन शुक्ल पक्ष
5 मार्च द्वितीया बुधवार
6 मार्च तृतीया गुरुवार

संस्कृत पढ़िये

यदि आप कर्मकाण्ड को जीवित रखना चाहते हैं तो संस्कृत भाषा पढ़िये क्योंकि कर्मकाण्ड की सभी पुस्तकें संस्कृत भाषा में है मेरे ओर से सभी छोटी-बड़ी संस्थाओं से प्रार्थना है कि संस्कृत पढ़ने तथा पढ़ाने के लिये हर मोहल्ले में केन्द्र खोलें तभी हम अपनी मर्यादा तथा कर्मकाण्ड को जीवित रख सकते हैं।

18

मेष राशि का वर्ष फल (Aries)

नक्षत्र	अश्विनी				भरणी				कृतिका
चरण	1	2	3	4	1	2	3	4	1
नामाक्षर	चु	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	आ

वर्ष के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति को वेध अष्टक वर्ग तथा दृष्टि की कसौटी पर परखने से मालूम होता है कि यह वर्ष मेष राशि वालों के लिये हर प्रकार से लाभप्रद ही होगा आप जो भी काम करते है

आप उसमें लाभ की ही आशा रखें तथा काम में जुट जायें, सभी ग्रहों का वारवें, पहले, दूसरे तथा तीसरे भाव में होना एक शुभ योग का सूचक है, बारहवां सूर्य यद्यपि शरीर सुख के लिये मध्यम है परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति को देखते हुये किसी प्रकार के भय का कोई योग नहीं है शनि देव दूसरे भाव में बैठ कर आप के चौथे, आठवें तथा ग्यारहवें भाव को देख रहा है शनि की दृष्टि को फलित शास्त्र में मनहूस माना जाता है इस कारण यदि आप को ज़मीन जायदाद इत्यादि का कोई मसला है ऐसे मसले को लटकाने से ही आप लाभ में रहेंगे यदि आप किसी प्रकार की प्रार्पटी, जमीन इत्यादि खरीदना चाहते हैं तो उस में किसी प्रकार की देरी न करें परन्तु यदि इस प्रकार की कोई चीज़ वेचनी हो तो उसमें हानि में रहेंगे इसलिए बेचने से दूर ही रहें। शनि कभी-कभी आप की आमदनी पर भी प्रभाव डालेगा जिस के कारण कभी-कभी तंगदस्ती भी होगी परन्तु सामूहिक तौर से आप की आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक ही रहेगी, घर पर कोई विशेष समारोह का प्रोग्राम बनेगा जिस में धन खर्च करने का योग वनता है लग्न में शुक्र का होना गृहस्थ सुख का सूचक है यदि आप शादी करने की सोच रहे हैं तो यह मसला इस वर्ष अवश्य हल होगा, यदि आप नौकरी करते हैं तो पदोन्नति का अवसर मिलेगा, यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो इस प्रकार का मसला भी इस वर्ष हल होगा। घर पर कोई धार्मिक उत्सव मनाने का प्रोग्राम बनेगा जिस में सभी मित्र तथा सम्वन्धित सम्मिलित होंगे, यदि आप कारोवार करते हैं तो कारोवार में उतार-चढाव के कारण आप की स्थिति एक जैसी नहीं रहेगी परन्तु हानि का कोई योग नहीं वनता है। विद्या स्थान का स्वामी सूर्य होने से

विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का ही वर्ष, परिश्रम करने पर ही सफलता की आशा का योग परन्तु यदि किसी ट्रेनिंग इत्यादि के लिये जाने का प्रोग्राम है तो उस में आशा से अधिक सफलता का योग। शरीर को स्वस्थ रखने के लिये आप इस मन्त्र का उच्चारण रोज करें।

रोगान्-अशेषान्-अपंहसि तुष्टा, रुष्टा तु कामान् सकलान्-भीष्टान।
त्वाम् आश्रितानां न विपन्नराणां, त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।

मेष राशि का मासिक फल

अप्रैलः मास के आरम्भ पर दो ग्रहों का शुभ होना तथा तीन ग्रहों को वेध में होना शुभ योग का सूचक है आप जो भी काम करते है उसमें सफलता तथा लाभ, नौकरी पेशा होने पर दरबार में आदर, मान का योग, कारोबारी होने पर वहुत देर से वाहर फंसा हुआ पैसा वापिस आने का योग, विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

मईः- मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का दूसरे भाव में होना शुभ फल का संकेत है पहले भाव का मेष राशि का सूर्य होना धन नाश, व्यक्ति के मान सम्मान में कमी, शरीर अस्वस्थ तथा प्रत्येक कार्य विलम्व से सम्पन्न होता है आप की आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक रहेगी, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का उत्तम योग, विद्या प्राप्ति का उत्तम योग।

जूनः- मास के आरम्भ पर सभी ग्रह दूसरे तथा तीसरे भाव में ठहरे है तथा सभी ग्रह राहु तथा केतु के वीच में है जो कि फलित ज्योतिष में शुभ फल का सूचक है इस शुभ योग के प्रभाव से आप की सामाजिक, आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार होगा, अच्छे अच्छे लोगों के साथ मिलने का शुभ अवसर मिलेगा, विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता देने वाला महीना।

जुलाईः- इस मास के ग्रहों की स्थिति गत मास जैसी ही है इस कारण यह मास भी हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहौल में गुजरेगा आप जो भी काम करते हैं आप लाभ में ही रहेंगे गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का उत्तम योग, यदि सन्तान पक्ष से किसी प्रकार की चिन्ता है वह अवश्य दूर हो जायेगी।

अगस्तः- मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति को देखने

से मालूम होता है कि यह मास संघर्ष का होते हुये भी अन्ततः लाभदायक ही रहेगा चौथा सूर्य तथा भौम शरीर सुख के लिये मध्यम ही है, शनि विद्या स्थान को देख रहा है इस कारण यह विद्या स्थान को प्रभावित करेगा, विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

सितम्बरः- मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का अशुभ स्थिति में होना शुभ फल का सूचक नहीं है प्रायः मानसिक चिन्ता, शारीरिक तथा मानसिक शक्ति में कमी, जमीन, जायदाद सम्बन्धित कई समस्यायें राज्याधिकारियों से वाद-विवाद, धन हानि का योग, विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

अक्टूबरः- इस मास की ग्रह स्थिति को वेधाष्टक वर्ग पर परखने से मालूम होता है कि यह महीना शान्ति के माहौल में गुजरेगा, यदि आप गृहस्थी है तो घर पर किसी वृद्ध पुरुष के शरीर की चिन्ता का योग, पांचवें भाव में भौम होने से सन्तान पक्ष की ओर से चिन्ता।

नवम्बरः- मास के आरम्भ पर शुभाशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने के कारण यह महीना सर्वसाधारण रूप से गुजरेगा आप जो भी कार्य करते हैं आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, गृहस्थी होने पर घर का माहौल भी आपके अनुकूल रहेगा।

दिसम्बरः- आठवें भाव का सूर्य, बुध तथा सातवें भाव का भौम आप के शरीर को अवश्य प्रभावित करेगा अतः आप शरीर के विषय में सावधान रहें आप नित्य गौ माता को आटे का पिंड खिलाया करें, यदि आप को ज़मीन, जायदाद का कोई मसला है तो थोड़ा सा ध्यान देने से वह मसला हल हो जायेगा, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

जनवरीः- नये वर्ष के पहले मास के ग्रहों को देखने से मालूम होता है कि यह मास सर्वसाधारण रूप से गुजरेगा आप की आमदनी तथा खर्च एक जैसा रहेगा सातवां भौम गृहस्थ की परेशानी का सूचक है कारोबारी होने पर भावों के उतार चढाव से मानसिक चिन्ता परन्तु किसी प्रकार की हानि का कोई योग नहीं है, नौकरी पेशा होने पर दफ्तर का माहौल आप के अनुकूल रहेगा।

फरवरीः- मास के आरम्भ पर आठवां भौम आप के शरीर को प्रभावित करेगा विशेषतौर से चोट का भय अथवा रक्त विकार परन्तु किसी प्रकार की हानि का कोई योग नहीं

है आप की आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक रहेगी, घर पर मेहमानों का आना जाना जोरो पर रहेगा, यदि आप सन्तान पक्ष से चिन्तित है तो उस का हल अवश्य देखने में आयेगा।

मार्च:- मास के आरम्भ पर आठवां भौम होने पर भी शरीर सुख का उत्तम योग शेष ग्रहों की स्थिति को देखने से विदित होता है कि यह महीना हर प्रकार से लाभदायक रहेगा आप जो भी काम हाथ में लेंगे उस में आशा से अधिक सफलता का योग, विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता का योग.।

वृष राशि का वर्ष फल (Taurus)

नक्षत्र	कृतिका			रोहिणी				मृगशिरा	
चरण	2	3	4	1	2	3	4	1	2
नामाक्षर	ई	उ	ए	ओ	वा	वी	वू	वे	वो

ग्यारहवां सूर्य, बारहवां शुक्र पहला राहु तथा दूसरा बृहस्पति होने से हर प्रकार से लाभ धन प्राप्ति, नये पद की प्राप्ति, बड़ों के अनुग्रह की प्राप्ति, स्वस्थ शरीर आध्यात्मिक एवं मांगलिक कार्य, पदोन्नति का योग, धन का आगमन, विवाह अथवा पुत्र जन्म का योग, शत्रुओं के साथ सन्धि का योग, परोपकार तथा दानादि की ओर प्रवृति, चल

सम्पत्ति तथा कैश सार्टिफिकेट्स आदि में वृद्धि इत्यादि फल गोचर शास्त्र में लिखा हुआ है वर्ष के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ होना तथा चार ग्रहों का वेध में होना शुभ फल ही ओर इशारा है सभी ग्रहों का ग्यारहवें, बारहवें, पहले तथा दूसरे भाव में होन फलित ज्योतिष में शुभ माना जाता है इस शुभ योग के प्रभाव से यह वर्ष वृष राशि वालों के लिए हर प्रकार से शुभ फल देने वाला है। दूसरा बृहस्पति आप की आर्थिक स्थिति में विशेष वृद्धि करेगा, आर्थिक वृद्धि के साथ-साथ खर्च के बड़े-बड़े प्रोग्राम बनते रहेंगे, नौकरी पेशा होने पर पदोन्नति का योग; यदि आप कारोबार करते है तो आप लाभ में रहेंगे परन्तु कपड़े के कारोबार करने वाले हानि में रहेंगे। यदि आप के पास किसी प्रकार की इन्डस्ट्रीज इत्यादि है तो उसमें आशा से अधिक लाभ होगा यदि आप

अपने कारोबार को वढ़ाना चाहते हैं तो समय ज़ाया मत कीजिये सफलता आप को अवश्य मिलेगी, यदि आप किसी सामाजिक संस्था से अथवा राजनैतिक संगठन से सम्बन्ध रखते हैं तो यह समय आप की सफलता के लिये शुभ है आप को अच्छे-अच्छे लोगों के साथ मिलने का मौका मिलेगा, पहले भाव का भौम तथा शनि आप के गृहस्थ को प्रभावित करेगा, गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष की ओर से चिन्ता, यदि आप की स्त्री शरीर से अस्वस्थ है तो उस के शरीर की ओर ध्यान दे नहीं तो यह आप के लिये परेशानी का कारण बनेगा यदि आप अविवाहित है तो यह मसला इस वर्ष हल होने का कोई योग दिखता नहीं है विद्या स्थान का स्वामी बुध होना उच्च विद्या प्राप्ति का सूचक है यदि आप ने किसी परीक्षा इत्यादि में सम्मिलित होना है तो सफलता अवश्य मिलेगी, शरीर को स्वस्थ रखने के लिये हर रोज़ यह मन्त्र पढ़ें:-

सर्वा बाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवम्-एव-त्वया-कार्यम्-अस्मत्-वैरि-विनाशिनम्।।

वृष राशि का मासिक फल

अप्रैल:- मास के आरम्भ पर तीन क्रूर ग्रहों का लग्न में होना किसी शुभ फल का सूचक नहीं है यह तीन ग्रह आप के शरीर को प्रभावित कर सकते है दूसरा बृहस्पति होने से आप की आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक रहेगी खर्च भी शुभ कामों पर होगा। गृहस्थी होने पर स्त्री की ओर से चिन्ता क्योंकि पहला भौम, शनि तथा राहु आप के सातवें भाव को प्रभावित कर रहे हैं।

मई:- मास के आरम्भ पर पहले भाव में पांच ग्रहों का एक साथ होना शुभफल की ओर इशारा है बारहवां सूर्य फजूल खर्ची का सूचक है परन्तु आप की आमदनी आशा से अधिक होगी नौकरी पेशा होने पर पदोन्नति का योग, यदि आप नौकरी की तलाश में है तो इस महीने कुछ आशा की किरण दिखती है।

जून:- शुभाशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होना तथा दो ग्रहों का वैध में होना हर प्रकार से लाभदायक तथा शुभफलदायक माना जाता है इस कारण यह महीना हर

प्रकार से शान्ति के माहौल में ही गुज़रेगा। यदि आप को सन्तान पक्ष से किसी प्रकार की चिन्ता है सम्भव है इस महीने में उस का समाधान हो जाए।

जुलाईः- ग्रहों की स्थिति से विदित होता है कि यह मास कुछ अशान्ति के माहौल में गुज़रेगा यदि आप शरीर से अस्वस्थ हैं तो किसी अच्छे डाक्टर से अपना इलाज करायें, नौकरी पेशा होने पर दफ्तर का माहौल आप के अनुकूल नहीं रहेगा अपने अफसर लोगों के साथ अनवन का माहौल वनता रहेगा।

अगस्तः- पांच ग्रहों का शुभ स्थिति में होना गोचर फलित से शुभफल की ओर संकेत है इस शुभ योग के प्रभाव से आप का प्रत्येक काम विना किसी रुकावट के हल होगा, आप की आमदनी तथा खर्च एक जैसा होगा, कारोवारी होने पर आप के कारोवार में एक वदलाव जैसा आयेगा, जो कि आप के लिये लाभदायक होगा।

सितम्बरः- मास के आरम्भ पर केवल दो ग्रहों का शुभ होना संघर्ष का सूचक है इस कारण यह महीना हर प्रकार से संघर्ष में ही गुज़रेगा आप की आमदनी भी प्रभावित होगी जो कि आप के लिये परेशानी का कारण वनेगा, गृहस्थी होने पर सन्तान पक्ष से परेशानी, विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

अक्टूबरः- मास के आरम्भ पर ग्रहों की डांवाडोल स्थिति को देखते हुये मालूम होता है कि यह मास संघर्ष के माहौल में ही गुजरेगा, परन्तु संघर्ष का होते हुये भी किसी प्रकार के हानि का कोई योग नहीं है चौथे भाव का भौम आप के शरीर को अवश्य प्रभावित करेगा, वाहरवें भाव का स्वामी भौम होने से फजूल खर्च का योग, विद्या प्राप्ति के लिये भी मध्यम।

नवम्बरः- मास के आरम्भ पर केवल दो ग्रहों का शुभ होना कोई चमत्कारिक योग नहीं है परन्तु वेध में गये हुये तीन ग्रहों का होना खराव स्थिति को थोड़ा वहुत सुधार कर सकते है जिस के प्रभाव से यह महीना कुछ शान्ति के माहौल में ही गुजरेगा, घर पर कोई उत्सव मनाने का प्रोग्राम वनेगा जिस में सभी सगे-सम्वन्धी भाग लेंगे।

दिसम्बरः- गोचर चक्र के ग्रहों की स्थिति को देखने से

मालूम होता है कि यह मास सर्व साधारण रूप में गुजरेगा आप जो भी काम करते है आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा आप की आमदनी तथा खर्च का पलडा एक जैसा रहेगा, विद्यार्थियों के लिये लाभदायक मास रहेगा।

जनवरी:- नये वर्ष के पहले मास के ग्रहों की स्थिति को देखने से मालूम होता है कि यह मास सुख शान्ति का समाचार लेकर ही आया है आप नौकरी करते है या कारोबार तो आप का क़ाम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा तथा आप की आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा, विद्यार्थियों के लिये भी लाभदायक मास।

फरवरी:- वृष राशि वालों के लिये यह महीना हर प्रकार से सुख और शान्तिदायक है नौकरी पेशा होने पर पदोन्नति का योग यदि आप कारोवार करते हैं तो आप का कारोबार वृद्धि की ओर अग्रसर होगा, यदि आप को दफ्तर में किसी प्रकार से कोई मसला है तो वह इस महीने में हल हो सकता है अथवा हल होने के असार दिखाई देंगे।

मार्च:- शुभाशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने के कारण यह मास वृष राशि वालों के लिये हर प्रकार से शुभफलदायक है सातवां भौम आप के गृहस्थ जीवन को प्रभावित कर सकता है, आप की आर्थिक स्थिति भी सन्तोषजनक रहेगी, घर का माहौल भी आप के अनुकूल रहेगा।

मिथुन राशि का वर्ष फल

नक्षत्र	मृगशिरा		आर्द्रा				पुनर्वसु		
चरण	3	4	1	2	3	4	1	2	3
नामाक्षर	का	की	कू	घ	ङ	छ	के	को	हा

मिथुन राशि वालों के लिये वर्ष के आरम्भ पर पांच ग्रहों सूर्य, चन्द्रमा, बुध, शुक्र तथा शनि के शुभ होने से धन प्राप्ति, स्वस्थ शरीर, राज्याधिकारियों तथा प्रतिष्ठित लोगों के साथ मित्रता, प्रत्येक कार्य में सफलता, पदोन्नति का योग, आय में वृद्धि, व्यापार में लाभ, गृहस्थ की ओर से मासिक शान्ति मित्रों तथा पारिवारिक सदस्यों के साथ मेल-मिलाप, सन्तान पक्ष का योग, अच्छे कार्यों की और

प्रवृति इत्यादि इस के साथ ही बारहवां राहु, भौम पहला वृहस्पति होने से धन का फजूल खर्च, घर से बाहर रहने का योग, आंखों में पीड़ा, भाईयों के साथ अनबन, मान हानि का योग, रोजगार तथा व्यवसाय में विघ्न तथा रुकावटें, राजभय तथा मानसिक व्यथा, कार्यों का बहुत विलम्ब से पूरा होना, यात्रा में कष्ट, भारी व्यय के कारण आर्थिक स्थिति डांवाडोल इत्यादि फल गोचर फलित में दर्ज है गोचर शास्त्रों द्वारा ऊपर लिखित फल के अनुसार ग्रहों की स्थिति पर विचार करने से मालूम होता है कि यह वर्ष मिथुन राशि वालों के हर प्रकार से ठीक ही है पहले भाव का वृहस्पति तथा बारहवां भौम और राहु यद्यपि शरीर सुख के लिये मध्यम माना गया है परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति के कारण किसी प्रकार के हानि का कोई योग नहीं है खर्च के बड़े-बड़े प्रौग्राम बनते रहेंगे परन्तु खर्च सार्थक ही होंगे, यदि आप को किसी प्रकार जमीन जायदाद खरीदने का कोई प्रौग्राम है तो उस को अमली रूप दीजिये, दफ्तर में यदि कोई पदोन्नति रुकी हुई है तो वह पदोन्नति मिलने का पूरा योग है यदि आप किसी प्रकार का कारोबार करते हैं और अपने कारोबार को बढाना चाहते हैं तो आप यह कदम सोच समझ कर उठाये ऐसा न हो कि आप को लेने के देने पर्डे आप के लिये यही ठीक है कि आप अपने कारोबार को सीमित ही रखें, आप उसी में लाभ में रहेंगे, यदि आप शियर इत्यादि के साथ सम्बन्ध रखते है तो थोड़ा बहुत सावधानी बरतें नहीं तो हानि का योग। गोचर चक्र में बृहस्पति ठीक न होने के कारण यह वर्ष विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का ही वर्ष है यदि जन्मचक्र में बृहस्पति की स्थिति अच्छी है तो सफलता आशानुरूप होगी यदि आप उच्च विद्या के लिये बाहर जाना चाहते है तो परिश्रम कीजिये सफलता अवश्य होगी। क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण रोज प्रातः करें।

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी।
शुभानि भद्राणि अभिहन्तु चापदः।।

मिथुन राशि का मासिक फल

अप्रैल:- वारहवां भौम तथा राहु आप के शरीर को अवश्य प्रभावित करेगा अतः आप शरीर के विषय में सावधान रहे, वारहवां शनि फजूल खर्च करने का सूचक है, कारोबारी होने पर हानि का योग भी बनता है परन्तु ग्यारहवें भाव में तीन ग्रहों का एक साथ होना आमदनी के लिये शुभ माना जाता है, विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

मई:- मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का एक साथ वारहवें भाव में होना शुभ योग का सूचक नहीं है परन्तु इन में से तीन ग्रहों का वेध में होना शुभफल का सूचक है क्योंकि वेध में गया हुआ अशुभ ग्रह भी शुभफल को देता है, इस कारण यह मास संघर्ष का होते हुये भी शान्ति पूर्वक से गुजरेगा।

जून:- मास के आरम्भ पर सात ग्रहों का वारहवें तथा पहले भाव में होना छत्र योग को दर्शाता है इस शुभ योग के प्रभाव से यह महीना हर प्रकार से सुख ओर शान्ति में गुजरेगा आप की आमदनी भी आशा के अनुरूप रहेगी, दफ्तर में आदर व मान का योग, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

जुलाई:- इस मास की ग्रह स्थिति भी गत मास की तरह ही है इस कारण यह मास भी शान्ति के माहौल में गुजरेगा आप की आर्थिक स्थिति भी सन्तोषजनक ही रहेगी नौकरी पेशा होने पर दफ्तर का माहौल आप के अनुकूल रहेगा तथा पदोन्नति का योग भी दिखता है, कारोबारी होने पर बाजार के भावों की वेढंगी चाल से मानसिक अशान्ति का योग।

अगस्त:- मास के आरम्भ पर तीन ग्रहों का शुभ होना तथा दो ग्रहों का वेध में होना शुभ फल की ओर इशारा है, गोचर चक्र में वृहस्पति की स्थिति अच्छी होना शुभ योग का सूचक है इस शुभ योग से वहुत देर से लटके हुये मसले हल हो जायेंगे, गृहस्थी होने पर पुत्र जन्म का योग, यदि आप शेयरों से सम्बन्ध रखते हैं तो उस में आशा से अधिक लाभ।

सितम्बर:- मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ होना तथा दो ग्रहों का वेध में होना शुभ फल को दर्शाता हैं इस शुभ योग के प्रभाव से आप का प्रत्येक कार्य विना किसी

रुकावट के हल होगा, घर पर कोई उत्सव मनाने का प्रौग्राम बनेगा जिस में सगे-सम्बन्धी मित्र सम्मिलित होंगे।

अक्टूबरः- मास के आरम्भ पर सभी ग्रहों का राहु तथा केतु के बीच में होना शुभ योग को दर्शाता है जिस के फलस्वरूप यह महीना हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहौल में गुजरेगा आप की आमदनी भी आशा से अधिक होगी परन्तु खर्च के ऐसे प्रौग्राम बनते रहेंगे जिसमें आशा से अधिक धन खर्च करना पड़ेगा।

नवम्बरः- शुभाशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने के कारण यह महीना संघर्ष का होते हुये भी अन्ततः शान्ति के माहोल में ही गुजरेगा, आप की आमदनी तथा खर्च एक जैसा रहेगा गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष से चिन्ता अथवा सन्तान पक्ष से अशान्ति परन्तु किसी भय का योग नहीं है।

दिसम्बरः- ग्रहों की डांवाडोल स्थिति के कारण यह महीना दौड़-धूप के माहोल में ही गुजरेगा आप का कोई भी कार्य विना किसी अडचन के सिद्ध होगा नहीं, नौकरी पेशा होने पर दफ्तर का माहोल आप के प्रतिकूल ही रहेगा, कारोवारी होने पर लोगों के पास पैसा फंस जाने का योग।

जनवरीः- नये वर्ष का पहला महीना कोई विशेष सन्देश लेकर नहीं आया है ग्रहों की स्थिति को देखने से मालूम होता है कि यह महीना सर्वसाधारण रूप से गुजरेगा आप की आमदनी तथा खर्च एक जैसा रहेगा, आदर, मान व प्रतिष्ठा की दृष्टि से यह महीना उत्तम है, विद्यार्थियों के लिये भी सफलता देने वाला महीना।

फरवरीः- मास के आरम्भ पर आठवां सूर्य, चन्द्रमा आप के शरीर को अवश्य प्रभावित करेगा यदि आप शरीर से पहले से ही अस्वस्थ हैं तो किसी अच्छे डाक्टर से इलाज करवाये, नहीं तो शारीरिक समस्या आप के लिये चिन्ता का कारण बनेगी, आर्थिक दृष्टि से यह महीना आप के लिये ठीक ही है, दफ्तर में अफसर लोगों के साथ बनती रहेगी।

मार्चः- वारहवें भाव का शनि तथा राहु फजूल खर्च का सूचक है यदि जन्म चक्र में शनि की स्थिति अच्छी होगी तो यह खर्च अच्छे कार्यो पर होगा, आठवां चन्द्रमा, बुध तथा शुक्र आप के शरीर को प्रभावित करेगा अतः आप शरीर के

विषय में सावधान रहें, विद्या प्राप्ति के लिये लाभदायक महीना, यदि आप ने ट्रेनिंग इत्यादि के लिये जाना हो तो कोशिश कीजिये सफलता आप को अवश्य मिलेगी।

कर्क राशि का वर्ष फल

नक्षत्र	पुनर्वसु	तिष्य				आश्लेषा			
चरण	4	1	2	3	4	1	2	3	4
नामाक्षर	ही	हु	हे	हो	डा	डी	डू	डे	डो

गोचर चक्र के ग्यारहवां भौम, दसवां चन्द्रमा तथा बुध होने से अरोग्य, धन धान्य की प्राप्ति, आमदनी में आशातीत वृद्धि, भूमि लाभ, कार्यों में सफलता, अभीष्ट की सिद्धि, सभी कार्यों का सफलतापूर्वक सिद्ध होना, स्वस्थ शरीर, राज्य की ओर से धन तथा सम्मान की प्राप्ति, नौकरी में पदोन्नति का योग तथा गृहस्थ सुख, किसी नये पद की प्राप्ति, शत्रुओं पर विजय, कारोबार में वृद्धि, मानसिक सुख शान्ति के साथ-साथ उत्तम गृहस्थ सुख की प्राप्ति, मान में वृद्धि तथा हर प्रकार से सफलता तथा सामाजिक कार्यों की ओर प्रवृति इत्यादि गोचर फलित के आधार से। तीन शुभ ग्रहों के साथ दो ग्रह सूर्य तथा वृहस्पति वेध में होने से शुभ फल के सूचक है क्योंकि वेध में गया हुआ अशुभ ग्रह शुभफल को देता है तीन शुभ ग्रहों दो अशुभ ग्रहों को जो वेध में हैं पर विचार करने से विधित होता है कर्क राशि वालों के लिये यह वर्ष हर प्रकार से सुख शान्ति तथा लाभ देने वाला वर्ष होगा, सभी ग्रहों का नवें, दसवें, ग्याहरवें तथा वारहवें भाव में होना शुभ योग को दर्शाता है इस शुभ योग के फलस्वरूप आप की आर्थिक स्थिति में आशा से अधिक वृद्धि होगी परन्तु आर्थिक वृद्धि के साथ-साथ खर्च के वड़े-वड़े प्रोग्राम बनेगे जिन की आप वहुत समय से प्रतीक्षा कर रहे थे यदि आप को घर में किसी प्रकार की कोई समस्या है चाहे वह नौकरी से सम्वन्धित है अथवा किसी बच्चे के विवाह सम्वन्धित इस प्रकार की हर समस्या हल हो जायेगी, नौकरी पेशा होने पर पदोन्नति का योग यदि आप कारोबार करते हैं तो आप के कारोबार में चार चान्द लग जायेंगे, यदि आप अपने कारोबार को बढ़ाना चाहते हैं तो आप समय जाया

मत कीजिये सफलता आप को अवश्य होगी, यदि आप ठेकेदारी अथवा ड्राईफूटों से सम्बन्धित कारोवार करते हैं तो आप को सावधान रहने की जरूरत हैं नहीं तो हानी का मुंह देखना पडेगा यदि आप किसी सामाजिक संगठन से सम्बन्धित हैं तो उसमें आदर मान व प्रतिष्ठा का योग, यदि आप विद्यार्थी हैं और उच्च विद्या के लिये कहीं जाने का प्रौग्राम बना रहे हैं तो आप को अवश्य सफलता होगी यदि आप विदेश जाने की सोच रहे हैं तो आप केवल सोचे ही नहीं उसको आमली रूप दीजिये यह समय आप के लिये हर प्रकार से लाभदायक है यदि आप किसी टयकनिलकल ट्रैनिंग के लिये जाना चाहते हैं तो इस प्रकार का कदम सोच समझ कर उठाये नहीं तो असफलता का योग। इस मन्त्र का उच्चारण रोज करें।

एतत्ते वदनं सौम्यं लोचन-त्रय-भूषितम्।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तुते।।

कर्क राशि का मासिक फल

अप्रैलः- मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति पर विचार करने से मालूम होता है कि यह मास हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुजरेगा, ग्यारहवां शनि, राहु तथा मंगल आप की आर्थिक स्थिति को सुदृढ बनायेगा, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का उत्तम योग, यदि आप अविवाहित है तो इस मास में इस प्रकार की वात चल सकती है तथा कुछ सफलता भी हो सकती है।

मईः- मास के आरम्भ पर ग्यारहवें भाव में पांच ग्रहों का होना यद्यपि शुभ माना जाता है परन्तु यह तभी शुभ होगा जवकि जन्म चक्र में भी ग्यारहवें भाव की स्थिति शुभ होगी, आप नौकरी करते है या कारोवार आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, विद्यार्थी होने पर सफलता का योग।

जूनः- मास के आरम्भ पर सभी ग्रहों का ग्यारहवें तथा वारहवें भाव में होना शुभ फल की ओर इशारा है इस कारण यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुजरेगा आप कारोवार करते है या नौकरी आप की आर्थिक दृष्टि सन्तोषजनक रहेगी, वारहवां भौम तथा वृहस्पति आप के शरीर को प्रभावित करेगा, विद्या प्राप्ति के लिये हर प्रकार से शुभ फलदायक महीना।

जुलाईः- आठवां चन्द्रमा, बारहवां भौम, सूर्य, बुध, बृहस्पति आप के शरीर सुख के लिये मध्यम, यदि आप पहले से शरीर से अस्वस्थ हैं तो आप को शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिये यदि आप शरीर से स्वस्थ हैं तो घर के किसी सदस्य के शरीर सम्बन्धित स्थिति आप के लिये परेशानी का कारण बनेगी विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

अगस्तः- मास के आरम्भ पर पहले भाव का बृहस्पति, सूर्य ओर भौम शुभ फल को दर्शाता है इस मिले-जुले योग के अनुसार यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में ही गुजरेगा आर्थिक दृष्टि से यद्यपि यह महीना नरम ही है परन्तु किसी से मांगने की नौबत नहीं आयेगी।

सितम्बरः- शुभाशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने के कारण यह महीना सर्वसाधारण रूप से ही गुजरेगा आप जो भी काम करते हैं आप का काम चलता रहेगा, आपके काम में किसी प्रकार की रुकावट नहीं आयेगी, शरीर भी स्वस्थ रहेगा, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग।

अक्टूबरः- इस मास के शुभाशुभ ग्रहों से विदित होता है कि यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुजरेगा मास के आरम्भ पर सभी ग्रहों को! राहु तथा केतु ने अपने घेरे में लिया हैं जो कि शुभ फल का सूचक है यह शुभ योग आप की आर्थिक स्थिति को सुदृढ करेगा, घर पर कोई मांगलिक कार्य करने का प्रौग्राम बनेगा।

नवम्बरः- यह महीना आमतौर पर शान्त ही रहेगा नौकरी पेशा होने पर दफ्तर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा अपने अफसर लोगों के साथ बनती रहेगी जो कि आपके भविष्य के लिये लाभदायक रहेगा सन्तान पक्ष से कुछ मानसिक अशान्ति अपने मित्रों तथा सगे-सम्बन्धियों के साथ कुछ अनबन विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

दिसम्बरः- केवल तीन ग्रहों का शुभ होना कोई चमत्कारिक योग नहीं है इस मिले-जुले शुभाशुभ ग्रहों के फलस्वरूप संघर्ष का महीना होते हुये भी किसी प्रकार की हानि का सूचक नहीं है आप की आमदनी में यद्यपि किसी प्रकार का बढावा नहीं होगा परन्तु किसी प्रकार की तंगदस्ती भी नहीं होगी, आप जो भी काम करते हैं आप का काम सामान्य रूप

से चलता रहेगा।

जनवरी:- नये वर्ष का पहला मास कर्क राशि वालों के लिये शुभ समाचार लेकर ही आया है विशेषतौर से आपकी आर्थिक स्थिति में आशा से अधिक वृद्धि होगी क्योंकि आठ जनवरी को शनि आपके ग्यारहवें भाव में आ रहा है यदि आप अपने कारोवार को वढ़ाना चाहते हैं इस समय का आप लाभ उठाये और इस को अमली जामा पहनाये।

फरवरी:- मास के आरम्भ पर सातवें भाव का चन्द्रमा तथा छठे भाव का वुध शुभ स्थिति में है शेष सभी ग्रह अशुभ स्थिति में है इस कारण यह महीना हर दृष्टि से संघर्षपूर्ण ही रहेगा परन्तु किसी प्रकार की हानि की कोई सम्भावना नहीं है खर्च के वड़े-वड़े प्रौग्राम वनते रहेंगे, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

मार्च:- आठवें भाव का सूर्य होने से शत्रुओं से झगड़ा, राज्य भय, स्त्री कष्ट, अपमान का भय तथा शरीर अस्वस्थ रहने का योग, आप की आमदनी स्थिर रहेगी, तथा आप जो भी काम करते हैं, आप का काम विना किसी रुकावट के चलता रहेगा, नौकरी पेशा होने पर दफ्तर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा।

सिंह राशि का वर्ष फल

नक्षत्र	मघा				पूर्वा फाल्गुनी				उत्तरा फाल्गुनी
चरण	1	2	3	4	1	2	3	4	1
नामाक्षर	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे

वर्ष के आरम्भ पर ग्यारहवां बृहस्पति, दसवां राहु तथा नवां शुक्र शुभ स्थिति में है शेष सभी ग्रहों की स्थिति डांवाडोल ही है इस कारण वर्ष का आरम्भ संघर्ष के माहोल में ही होगा

संघर्ष का वर्ष होते हुये भी किसी प्रकार की चिन्ता अथवा हानी का योग नहीं है क्योंकि तीन शुभ ग्रहों के साथ चार अशुभ ग्रह वेध में होने से शुभ फल को दर्शाते हैं इस कारण सिंह राशि वालों को संघर्ष का वर्ष होने पर भी किसी प्रकार से चिन्ता का कोई योग नहीं है, आप जो भी काम करते हैं

आप का काम हर प्रकार से चलता रहेगा, नौकरी पेशा होने पर दफ्तर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा यदि आप को दफ्तर में पदोन्नति का कोई प्रौग्राम है तो इस प्रकार के अवसर इस वर्ष कम ही है हो सकता है कि कुछ जोर लगाने पर कुछ सफलता हाथ आये, यदि आप कारोबार करते हैं तो अपने कारोबार को सीमित ही रखें यदि आप अपने कारोबार को बढाना चाहते हैं तो इस प्रकार के प्रौग्राम को इस वर्ष तभी अमली जामा पहनाये जब जन्मकुण्डली से ग्रहों की स्थिति और दशा अच्छी हो नहीं तो लेने के देने पड़ेंगे। ग्यारहवां बृहस्पति होने से धन तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति, शत्रुओं पर विजय, सभी कार्यों में सफलता, विवाह तथा पुत्र जन्म का योग, व्यापार में वृद्धि सन्तान अथवा राज्याधिकारियों से सुख, शुभ कार्यों में धन का खर्च, नवां शुक्र होने से अच्छे वस्त्रों तथा आभूषणों की प्राप्ति, शरीर स्वस्थ, आशा से अधिक लाभ, घर में कोई मांगलिक अथवा धार्मिक उत्सव मनाने का प्रोग्राम, मित्रों से लाभ, आप की आर्थिक स्थिति हर प्रकार से सन्तोषजनक हुये भी ठीक ही रहेगी खर्च का योग आमदनी से ज्यादा होगा, आप को यदि जमीन, जायदाद का कोई मसला है तो इस प्रकार के मसले इस वर्ष लटकते ही रहेंगे यदि आप वाहन इत्यादि कुछ खरीदना चाहते हैं तो इस प्रकार के प्रोग्रामों को अमली जामा पहनाने का प्रयत्न करें नहीं तो पछताना ही पडेगा, विद्या स्थान का स्वामी वृहस्पति ग्यारहवें भाव में बैठ कर विद्या स्थान को देख रहा है जिस के प्रभाव से विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता देने वाला वर्ष रहेगा यदि आप को कहीं उच्च शिक्षा के लिये अथवा ट्रैनिंग के लिये जाने का प्रौग्राम है तो अवश्य जायें सफलता आप को आशा से अधिक होगी इस मन्त्र का उच्चारण रोज करें।

सर्व मंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते।।

सिंह राशि का मासिक फल

अप्रैल:- मास के आरम्भ पर केवल दो ग्रहों का शुभ होना तथा शेष ग्रहों का अशुभ स्थिति में होना संघर्ष का ही सूचक है आप जो भी काम करते हैं बिना रुकावट के सिद्ध होगा नहीं, दफ्तर का माहोल आप के विरुद्ध ही रहेगा, कारोबारी होने पर भावों के उतार-चढ़ाव से मानसिक अशान्ति का

योग।

मई:- शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति एक जैसी होने के कारण यह महीना सर्वसाधारण रूप से गुजरेगा आप की आमदनी तथा खर्च एक जैसा रहेगा, गृहस्थी होने पर नवजात शिशु के आगमन का योग अथवा इस से सम्बन्धित कोई शुभ सन्देश सुनने को मिले, अविवाहित होने पर विवाह सम्बन्धित कोई शुभ सन्देश सुनने का योग।

जून:- मास के प्रारम्भ पर सभी ग्रहों का दसवें तथा ग्यारहवें भाव में होना शुभ योग का सूचक है इस शुभ योग के प्रभाव से यह महीना शान्ति तथा लाभ देने वाला महीना है आप की आमदनी में आशा से अधिक वृद्धि होगी, अच्छे-अच्छे महापुरुषों के साथ मिलने का मौका मिलेगा जो कि आप के भविष्य के लिगे अच्छा रहेगा।

जुलाई:- मास के आरम्भ पर ग्रहों में कोई अन्तर न होने के कारण यह महीना भी गत मास की तरह ही शान्ति के माहोल में गुजरेगा, आप का काम विना किसी अड़चन के चलता रहेगा, नौकरी पेशा होने पर अफसर लोग आप के काम से सन्तुष्ट होंगे आप को पदोन्नति का योग भी है।

अगस्त:- मास के आरम्भ पर बारहवां सूर्य, भौम तथा बृहस्पति आप के शरीर को अवश्य प्रभावित करेंगे इस कारण आप शरीर के विषय में सावधान रहें, फजूल खर्च करने का योग भी प्रबल है परन्तु आमदनी भी सन्तोषजनक ही रहेगी। विद्यार्थियों के लिये यह महीना संघर्ष का ही रहेगा।

सितम्बर:- सूर्य तथा मंगल का पहले भाव में होना तथा बारहवें भाव में बृहस्पति का होना शुभ फल का सूचक नहीं है आमतौर पर यह आप के स्वास्थ्य पर अपना बुरा प्रभाव डालेंगे आप का स्वभाव भी कुछ चिड़चिड़ेपन वाला बनेगा, शनि आप के सातवें भाव को देख रहा है इस कारण गृहस्थ की ओर से चिन्ता।

अक्टूबर:- मास के आरम्भ पर सभी ग्रहों का राहु तथा केतु के बीच में होना यद्यपि कालसर्प का सूचक है परन्तु इस योग का प्रभाव तभी होगा जव आप की जन्मकुण्डली में भी ग्रहों की स्थिति अच्छी होगी तव यह सोने पर सुहागा होगा, घर पर कोई मांगलिक अथवा धार्मिक कार्यक्रम होगा जिस में

मित्र, सगे-सम्वन्धी सम्मिलित होंगे।

नवम्बरः- गत मास के ग्रहों की स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन न होने के कारण यह मास भी गत मास की तरह ही गुजरेगा खर्च का योग प्रवल होगा परन्तु फजूल खर्च का योग नहीं है, यदि आप किसी सामाजिक संगठन से सम्बन्ध रखते है तो समाज में आदर व मान का योग, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

दिसम्बरः- मास के आरम्भ पर शुभाशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने के कारण यह महीना शान्ति के माहोल में गुजरेगा आप का काम विना किसी अड़चन के चलता रहेगा आप की आमदनी भी ठीक ही रहेगी, गृहस्थी होने पर गृहस्थ की ओर से मानसिक शान्ति का योग, विद्यार्थियों के लिये दौड़-धूप का ही महीना।

जनवरीः- नये वर्ष का पहला महीना सिंह राशि वालों के लिये शुभ सन्देश लेकर आया है इस शुभ योग के प्रभाव से आप की आमदनी विशेष रूप से प्रभावित होगी परन्तु खर्च के वड़े-वड़े प्रौग्राम बनते रहेंगे, कारोवारी होने पर आप के कारोवार में वढ़ावा मिलेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये हर प्रकार से सफलता का महीना।

फरवरीः- चौथा भौम तथा वारहवां बृहस्पति आप के शरीर को अवश्य प्रभावित करेगा अतः आप शरीर के विषय में सावधान रहें यदि आप शरीर से स्वस्थ हैं तो परिवार के किसी सदस्य की शरीर सम्वन्धित चिन्ता का योग, दसवां शनि आप के दरवार के लिये शुभ फल का सूचक है।

मार्चः- गोचर चक्र के ग्रहों पर विचार करने से प्रतीत होता है है यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुजरेगा आप कारोवार करते हैं या नौकरी आप का काम विना किसी रूकावट के चलता रहेगा, आप की आर्थिक स्थिति स्थिर रहेगी, विद्या प्राप्ति के लिये यह महीना उत्तम रहेगा।

कन्या राशि का वर्ष फल

आठवां बुध, शुक्र, तथा नवां राहु वर्ष के आरम्भ पर शुभ स्थिति में है तथा भौम, शनि और चन्द्रमा अशुभ स्थिति में होते हुये वेध में गये हैं तथा दसवां बृहस्पति, सातवां सूर्य

नक्षत्र	उत्तराफाल्गुनी			हस्त				चित्रा	
चरण	2	3	4	1	2	3	4	1	2
नामाक्षर	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो

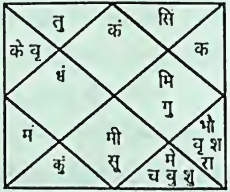

और तीसरा केतु अशुभ स्थिति में है ऊपर लिखित ग्रहों की स्थिति को वेधाष्टक वर्ग की कसौटी पर परंखने से मालूम होता है कि कन्या राशि वालों के लिये यह वर्ष दौड़-धूप तथा संघर्ष का होते हुये भी अन्ततः शुभ फल, सफलता तथा लाभदायक ही रहेगा, नौकरी पेशा होने पर दफ्तर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा परन्तु शत्रु पक्ष आप पर हावी होने की कोशिश करेगा जो कि आप के लिये परेशानी का कारण वनेगा परन्तु कोशिश करने पर भी शत्रु पक्ष आप को किसी प्रकार की हानि पहुंचा नहीं सकता है यदि आप कारोवार करते हैं तो आप नेक नियती से अपने काम में जुट जायें तो लाभ आप को अवश्य मिलेगा ऐसा न करने पर आप को असलजर से ही हाथ धोना पड़ेगा यदि आप के पास किसी प्रकार की इण्डस्ट्री है तो यह वर्ष आप के लिये हर प्रकार से लाभदायक रहेगा यदि आप अपनी इन्डस्ट्रीज को बढाना चाहते है तो समय जाया मत कीजिये यदि आप अभी नई इन्डस्ट्रीज खोलना चाहते हैं तो देर मत कीजिये आप अवश्य इस काम में सफल रहेंगे, यदि आप किसी सामाजिक अथवा सियासी संगठन के साथ सम्वन्ध रखते हैं तो उसमें हर प्रकार से आदर व मान का योग, अच्छे-अच्छे महान पुरुषों के साथ सम्वन्ध बढने का योग, यदि आप शेयर इत्यादि के साथ सम्वन्ध रखते हैं सामूहिक रूप से आप उसमें घाटे में ही रहेंगे, यदि आप को लोगों के पास कुछ पैसा फसा हुआ है तो अभी उसकी वापसी की आशा न रखें, यदि घर पर किसी जायदाद सम्वन्धित उलझन में फसे हैं तो इस वर्ष उसके समाधान की आशा रखें, सातवां सूर्य गृहस्थ अथवा स्त्री पक्ष की ओर से परेशानी का सूचक है यदि आप अविवाहित है तो परिश्रम करने पर ही इस प्रकार का मसला हल हो सकता है विद्या स्थान का स्वामी शनि जो कि नवें भाव में बैठा हुआ अशुभ स्थिति में है उसके कारण विद्या प्राप्ति में रुकावट आने का योग, अतः आप कटिवद्ध होकर पढाई में जुट जाये तभी सफलता की कुछ आशा रखें। इस मन्त्र का उच्चारण रोज करें।

प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वर्तिहारिणि।
त्रैलोक्य वासिनाम्-ईडये लोकानां वरदा भव।।

कन्या राशि का मासिक फल

अप्रैल:- तीन ग्रहों का शुभ होना तथा शेष ग्रहों का अशुभ होना दौड़-धूप का ही सूचक है नौकरी पेशा होने पर अपने अफसर लोगों के साथ तू तू-में में होने का योग परन्तु किसी आर्थिक दृष्टि से आप को किसी प्रकार की हानि का योग नहीं है कारोबारी होने पर आप का काम साधारण रूप से चलता रहेगा, गृहस्थ की ओर से कोई शुभ सन्देश सुनने का योग।

मई:- मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का भाग्य स्थान में होना यद्यपि कोई चमत्कारिक योग नहीं है परन्तु किसी अनिष्ट का सूचक भी नहीं है आप की आमदनी में यद्यपि वृद्धि होगी नहीं परन्तु आप की आमदनी कम भी नहीं होगी, खर्च भी साधारण रूप से चलता रहेगा, नौकरी पेशा होने पर अपने अफसर लोगों के साथ बनती रहेगीं।

जून:- मास के आरम्भ पर सभी ग्रहों का नवें तथा दसवें भाव में होना शुभ फल का ही सूचक है इस शुभ योग के प्रभाव से आप का काम विना किसी रुकावट के चलता रहेगा, आप की आर्थिक स्थिति भी सन्तोषजनक रहेगी, घर पर कोई उत्सव मनाने का प्रौग्राम बनेगा, गृहस्थी होने पर किसी नवजात शिशु के आगमन का योग।

जुलाई:- दसवां सूर्य, बुध नवां राहु, ग्यारहवां शुक्र गोचर चक्र में शुभ स्थिति में हैं शेष सभी पांच ग्रह अशुभ स्थिति में हैं ग्रहों की इस डांवाडोल स्थिति को देखने से विदित होता है कि यह मास दौड़-धूप का ही मास हैं दौड़-धूप करके ही आप अपने कार्य में अथवा कारोबार में सफल रह सकते हैं, विद्यार्थियों के लिये भी दौड़-धूप का महीना।

अगस्त:- पहले भाव का शुक्र ग्यारहवां बृहस्पति, सूर्य, भौम तथा नवां राहु होने से सुख और धन की प्राप्ति, शत्रु का नाश और सन्तान सुख का योग, हर प्रकार से वैभव विलास की प्राप्ति, व्यापार में वृद्धि राज्याधिकारियों से सुख, शुभ कार्यों में धन का खर्च, विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता का महीना।

सितम्बरः- बारहवां सूर्य तथा मंगल आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है अतः आप शरीर के विषय में सावधान रहें, आप नियम पूर्वक महीना भर गौमाता को आटे का पिण्ड खिलाया करें तथा वैष्णव रहें, यदि आप किसी तामसिक पदार्थ का सेवन करते हैं तो उसे दूर रहने का प्रयत्न करें, विद्यार्थियों के लिये दौड़-धूप का महीना।

अक्टूबरः- मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति गत मास की तरह ही है इस कारण यह महीना भी शरीर के लिये ढीला ही रहेगा, ग्यारहवां वृहस्पति आप की आमदनी के लिये विशेष लाभदायक रहेगा, आप जिस प्रकार का काम कर रहे हैं आप का काम चलता रहेगा, विद्या प्राप्ति के लिये हर प्रकार से लाभदायक।

नवम्बरः- मास के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ होना तथा दो ग्रहों का वेध में होना शुभ फल का सूचक है इस शुभ योग के प्रभाव से आप का काम हर प्रकार से सफलता पूर्वक चलता रहेगा, नौकरी पेशा होने पर पदोन्नति का योग कारोबारी होने पर कारोबार में आशा से अधिक लाभ। विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

दिसम्बरः- शुभाशुभ ग्रहों को वेधाष्टक वर्ग की कसोटी पर परखने से मालूम होता है कि यह महीना हर प्रकार से शान्तिदायक तथा लाभ देने वाला है घर पर कोई मांगलिक कार्य करने का प्रौग्राम बनेगा जिस में मित्र तथा सगे-सम्बन्धियों का समागम रहेगा, घर पर देर से लटका हुआ कोई मसला हो तो उस का समाधान इस महीने में अवश्य होगा।

जनवरीः- मांस के ग्रहों पर विचार करने पर प्रतीत होता है कि कन्या राशि वालों के लिये नये वर्ष का पहला महीना सर्वसाधारण रूप से गुजरेगा गोचर चक्र में ग्यारहवें भाव का वृहस्पति होना हर प्रकार से शुभ लाभ का सूचक है गृहस्थी होने पर गृहस्थ सुख का योग, विद्या प्राप्ति के लिये हर प्रकार से सफलता देने वाला।

फरवरीः- गत मास में शनि नवें भाव में वक्री होकर आ गया नवें में आकर शनि आप के ग्यारहवें भाव को देख रहा है अर्थात् वह आप की आमदनी को प्रभावित करता है इस कारण तंगदस्ती का योग भी बनता है यानि आप के आठवें

भाव को भी प्रभावित करेगा जो आप के शरीर के लिये ठीक नहीं है।

मार्च:- मास के आरम्भ पर चार ग्रह शुभ स्थिति में तथा शेष अशुभ स्थिति में है इन शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति को देखते हुये यह महीना दौड़-धूप का होते हुये भी अन्ततः लाभदायक ही रहेगा, यद्यपि आप की आमदनी मध्यम ही रहेगी परन्तु किसी प्रकार की तंगदस्ती का योग नहीं है, अपितु खर्च के बड़े-बड़े प्लान बनते रहेंगे।

तुला राशि का वर्ष फल

नक्षत्र	चित्रा		स्वाति				विशाखा		
चरण	3	4	1	2	3	4	1	2	7
नामाक्षर	रा	री	रु	रे	रो	ता	ति	तु	ते

गोचर चक्र में छठः सूर्य, सातवां चन्द्रमा, आठवां राहु तथा नवां बृहस्पति होने से कार्य सिद्धि, सुख की प्राप्ति अस्त्र-वस्त्र आदि का लाभ, शत्रुओं पर विजय, रोगों का नाश, राज्याधिकारियों से लाभ, शरीर स्वस्थ, धन लाभ, यश तथा आनन्द की प्राप्ति, खर्च की अधिकता, रोगों का नाश, पुत्र जन्म का योग, राज्य में मान तथा पदोन्नति का योग, हर कार्य में सफलता, धर्म के कार्यो में रुचि

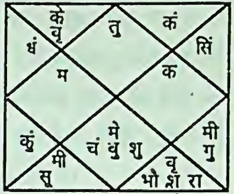

इत्यादि गोचर फलित में शुभ ग्रहों का यह फल दर्ज है शेष सभी अशुभ ग्रहों का वेध में होना भी शुभ फल की ओर इशारा है क्योंकि वेध में गया हुआ अशुभ ग्रह शुभ फल को देता है इस प्रकार गोचर चक्र के ग्रहों पर विचार करने से मालूम होता है कि यह वर्ष तुला राशि वालों के लिये हर प्रकार से सुख और लाभ देने वाला है आप जो भी काम करते हैं आप का काम बिना किसी रुकावट के चलता रहेगा यदि आप किसी काम की तलाश में हैं तो थोड़ा सा परिश्रम करने से आप का यह मसला हल होगा, यदि आप किसी सामाजिक संगठन अथवा किसी राजनैतिक संगठन से सम्वन्ध रखते है उसमें हर प्रकार से आदर, मान व प्रतिष्ठा का योग, यदि आप को घर में किसी प्रकार का कोई मसला है चाहे वह लड़की अथवा लड़के के विवाह सम्वन्धित हो

अथवा नौकरी सम्बन्धित तो इस की ओर थोड़ा सा ध्यान देने से इस प्रकार की समस्या का समाधान अवश्य होगा, कारोवारी होने पर यदि आप अपने कारोवार को बढावा देना चाहते है तो इस वर्ष में इस को अमली जामा पहनाये यदि आप कोई नई इन्डस्ट्रीज के विषय में सोचते है या कोई नया प्लान वनाते हैं तो आप विश्वास रखें कि उस में आप पूर्ण रूप से सफल होंगे, गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष की ओर से मानसिक शान्ति घर में किसी नवजात शिशु के आगमन का योग। आठवां भौम तथा राहु आप के शरीर को अवश्य प्रभावित करेगा विशेषतौर से रक्त विकार अथवा चोट का भय परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति को देखते हुये किसी भय का कोई योग नहीं है। विद्या स्थान का स्वामी शनि होने से विद्या प्राप्ति का योग मध्यम परन्तु यदि आप कहीं ट्रैनिंग इत्यादि के लिये जाना चाहते हैं तो उसमें आप सफल रहेंगे विशेषतौर से टेक्निकल लाईन में आप की सफलता निश्चित है, शरीर को स्वस्थ रखने के लिये इस मन्त्र का उच्चारण नित्य प्रातः किया करें।

रोगान्-अशेषान्-अपहंसि तुष्टा।
रुष्टा तु कामान् सकलान्-अभीष्टान्।।

त्वाम्-आश्रितानां न विपत्-नराणां।
त्वाम्-आश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।

तुला राशि का मासिक फल

अप्रैलः- मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ होना तथा दो अशुभ ग्रहों का वेध में होना शुभ फल का सूचक है आप जो भी काम करते है आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा आप की आर्थिक स्थिति भी सन्तोषजनक रहेगी, गृहस्थी होने पर कोई मांगलिक कार्य का प्रौग्राम बनेगा जिस की आप वहुत समय से प्रतीक्षा कर रहे थे। त्रिकोण में वृहस्पति का होना विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम।

मईः- शुभाशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने के कारण यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुजरेगा नौकरी पेशा होने पर दफ्तर में अफसर लोगों के साथ वनती रहेगी, यदि आप को पदोन्नति का कोई प्रोग्राम है तो उसमें किसी प्रकार की रुकावट नहीं आयेगी यदि आप शेयर के साथ सम्वन्ध रखते है तो वाजार के वेढंगी चालों से आप चिन्तित

रहेंगे।

जून:- मास के आरम्भ पर आठवें भाव का सूर्य तथा चौथा चन्द्रमा आप के शरीर को अवश्य प्रभावित करेगा आप शरीर के विषय में सावधान रहें तथा नियम पूर्वक प्रातः स्नान करते समय सूर्य भगवान् को अर्ध्य दें, नवां बृहस्पति आप की आर्थिक स्थिति तथा दरवार में आदर, मान व प्रतिष्ठा को हर समय स्थिर रखेगा, गृहस्थी होने पर सन्तान पक्ष की ओर से कोई शुभ सन्देश मिलने का योग।

जुलाई:- केवल दो ग्रहों का शुभ होना फलित शास्त्र में शुभ फल का सूचक नहीं है परन्तु सभी ग्रहों का आठवें, नवें तथा दसवें भाव में होना शुभ फल का ही सूचक है इस मिले-जुले शुभाशुभ योग के कारण यह महीना दौड़-धूप का होते हुये भी अन्ततः शुभ फलदायक ही है आप अपने काम में ईमानदारी से जुट जायें तो आप को लाभ अवश्य होगा तथा सफलता भी होगी, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

अगस्त:- इस मास के आरम्भ पर ग्रहों की डांवाडोल स्थिति को देखने पर मालूम होता है कि यह मास दौड़-धूप का ही मास होगा आप का कोई भी काम विना रुकावट के हल होगा नहीं, परन्तु आप की आमदनी में किसी प्रकार की रुकावट नहीं आयेगी, सातवें भाव का चन्द्रमा गृहस्थ सुख का सूचक है यदि आप अभी अविवाहित है तो इस मास में इस से सम्वन्धित वात वन सकती हैं।

सितम्बर:- मास के आरम्भ पर पहला शुक्र, तथा ग्यारहवां सूर्य और भौम होने से सुख और धन की प्राप्ति, शत्रु का नाश, विवाह और सन्तान जन्म का योग, विद्या में सफलता, हर प्रकार से वैभव विलास की प्राप्ति, पदोन्नति का योग, स्वस्थ शरीर, घर पर अध्यात्मिक एवं मांगलिक कार्यों का आयोजन, धन धान्य की प्राप्ति, आमदनी में आशा से अधिक लाभ।

अक्तूबर:- बारहवां सूर्य तथा बुध आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है यदि जन्म चक्र में आठवें तथा बारहवें भाव की स्थिति ठीक है तो किसी प्रकार के तकलीफ का कोई योग नहीं है यदि जन्म चक्र में भी आठवां तथा बारहवां भाव कमजोर है तो आप को शरीर के विषय में सावधान रहना

चाहिये आप नित्य प्रातः **गौमाता को आटे का पिण्ड** खिलाया करें, शेष आप की आमदनी में किसी प्रकार की रुकावट का कोई योग नहीं है।

नवम्बरः- ग्रहों की बेढंगी चाल को देखने से मालूम होता है कि यह मास संघर्ष का ही होगा पहले भाव का सूर्य, बुध तथा बारहवां भौम आप को शान्ति का सांस लेने नहीं देगा आप का प्रत्येक कार्य अड़चनों से भरा होगा परन्तु इतनी भाग दौड़ होने पर भी किसी प्रकार की हानि का कोई योग नहीं है विशेषतौर से आप की आमदनी पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं होगा, विद्यार्थियों के लिये भी संघर्ष का ही महीना।

दिसम्बरः- वर्ष के आखरी मास के ग्रहों को ज्योतिष फलित की कसौटी पर परखने से मालूम होता है यह मास भी दौड़-धूप में ही गुजरेगा, शरीर अस्वस्थ रहने का योग, इस मास में आप की आमदनी भी प्रभावित होगी परन्तु किसी विशेष भय का कोई योग नहीं है, सन्तान पक्ष की ओर से चिन्ता, विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

जनवरीः- नये वर्ष का पहला मास कोई शुभ सन्देश लेकर नहीं आया है पहले भाव का भौम आठवां शनि होने से शरीर अस्वस्थ, प्रायः रक्त विकार का योग, अथवा चोट का भय, यदि आप नौकरी करते हैं तो दफ्तर का माहोल आप के अनुकूल रहते हुये भी मानसिक चिन्ता का योग।

फरवरीः- इस मास के आरम्भ पर ग्रहों में कुछ सुधार हुआ है इस कारण यह मास शान्ति के ही माहोल में गुजरेगा, आप जो भी काम करते है आप का काम विना किसी रुकावट के चलता रहेगा, गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष अथवा सन्तान पक्ष से शुभ समाचार का योग।

मार्चः- ग्रहों की स्थिति को देखने से मालूम होता है कि यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुजरेगा आप की आमदनी में आशा से अधिक वृद्धि होगी, नौकरी पेशा होने पर दफ्तर में आदर व मान का योग, कारोबारी होने पर कारोबार में वृद्धि।

वृश्चिक राशि का वर्ष फल

नक्षत्र	विशाखा	अनुराधा				ज्येष्ठा			
चरण	4	1	2	3	4	1	2	3	4
नामाक्षर	तो	न	नु	ने	नी	यो	या	यी	यु

वर्षारम्भ पर छठे भाव में चन्द्रमा तथा बुध होने से धन लाभ, स्वस्थ शरीर, यश तथा आनन्द की प्राप्ति, अपने घर में सुख पूर्वक रहने का अवसर, खर्च की अधिकता, अच्छे तथा मनोरंजक पुस्तकें पढ़ने की ओर प्रवृति शत्रुओं पर विजय, शारीरिक तथा मानसिक सुख का योग, लेखन तथा वाद्य कला में ख्याति का योग, इसी प्रकार छठा शुक्र, सातवां भौम, शनि, राहु तथा आठवां बृहस्पति होने से स्वजनों को मानसिक तथा शारीरिक कष्ट, भाईयों से विवाद, शत्रुओं की वृध्दि, साझेदारों से व्यापार सम्बन्धी झगड़ा, घर से दूर रहने का योग, स्त्री को शारीरिक कष्ट, मानसिक चिन्ता, दुर्घटना की सम्भावना, मान हानि, नौकरी अथवा कारोबार छूट जाने की नौबत भी आ सकती है इत्यादि गोचर फलित में लिखा है। वृश्चिक राशि वालों को वर्ष के आरम्भ पर केवल दो ग्रह शुभ स्थिति में है तथा पांच ग्रह अशुभ स्थिति में होकर वेध में हैं गोचर फलित के अनुसार वेध में गया हुआ ग्रह भी शुभ फल को देता है इस कारण शुभाशुभ ग्रहों को देखते हुये वृश्चिक राशि वालों के लिये यह वर्ष संघर्ष से परिपूर्ण होगा यदि जन्म चक्र के अनुसार भी अच्छे ग्रह की दशा चल रही है तो गोचर के अशुभ ग्रहों को कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा परन्तु यदि जन्म चक्र से भी कोई विशेष दशा नहीं होगी तो आप अशुभ फल भोगने के लिये तैयार रहें, आप की आमदनी भी अशुभ ग्रहों के प्रभाव से प्रभावित होगी तथा खर्च के बड़े-बड़े प्रौग्राम बनेगे जो कि आप के लिये परेशानी का कारण होगा, पांचवें भाव का स्वामी बृहस्पति होने से विद्यार्थियों के लिये सफलता देने वाला वर्ष। अशुभ ग्रहों को शान्त करने के लिये इस मन्त्र का उच्चारण रोज करें।

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी-शुभानि
भद्राणि-अभिहन्तु चापदः।

वृश्चिक राशि का मासिक फल

अप्रैलः- सभी ग्रहों का पांचवे, छठे, सातवें तथा आठवें भाव में होना कोई चमत्कारिक योग नहीं है इस कारण यह मास दौड़-धूप के वातावरण में ही गुजरेगा, आप जो भी काम करते हैं नौकरी या कारोबार उस में अड़चन का योग,

आप की आमदनी भी डगमगायेगी जो कि आप के लिये परेशानी का कारण बनेगा।

मई:- ग्रहों की स्थिति को देखने से प्रतीत होता है यह महीना भी संघर्ष के माहोल में गुजरेगा, परन्तु संघर्ष का होते हुये भी किसी हानि का सूचक नहीं है सातवां भौम तथा राहु और आठवां बृहस्पति आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है, सातवें भाव में पांच ग्रहों का एक होना गृहस्थ सुख का सूचक नहीं है।

जून:- मास के आरम्भ पर आठवां भौम तथा बृहस्पति होने से शरीर अस्वस्थ, अशुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होने के कारण यह महीना भी अस्त व्यस्त हालात में गुजरेगा कभी धन की अधिकता कभी धन की कमी, यहां तक कि मांगने की नौबत भी आ सकती है, विद्यार्थियों के लिये भी परेशानी का महीना।

जुलाई:- मास के आरम्भ पर केवल दो ग्रहों का शुभ होना कोई विशेष शुभ फलदायक योग नहीं है परन्तु साथ ही तीन ग्रहों का वेध में होना फलित ज्योतिष से शुभ ही माना जाता है इस मिले-जुले योग के अनुसार यह महीना कुछ शान्ति के माहोल में ही गुजरेगा, गृहस्थी होने पर स्त्री के शरीर की चिन्ता।

अगस्त:- मास के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ होना शुभ फल की ओर इशारा है इस कारण यह महीना हर प्रकार से कुछ शान्ति के माहोल में ही गुजरेगा विशेषतौर से आप की आमदनी में आशा से अधिक वृद्धि होगी, सातवां राहु आप को गृहस्थ की ओर से चिन्तित रखेगा।

सितम्बर:- शुभाशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने के कारण वृश्चिक राशि वालों के लिये यह महीना हर प्रकार से शान्ति तथा लाभदायक रहेगा आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, आप की आमदनी भी सन्तोषजनक रहेगी, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

अक्टूबर:- पांच ग्रहों का शुभ होना तथा दो अशुभ ग्रहों का वेध में होना भी शुभ फल की ओर इशारा है इस कारण यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुजरेगा, नौकरी पेशा होने पर पदोन्नति का योग तथा दरबार में आदर मान व प्रतिष्ठा का योग, कारोवारी होने पर कारोवार में आशा से अधिक लाभ।

नवम्बरः- मास के आरम्भ पर बारहवां सूर्य आप के शरीर को प्रभावित करेगा इस कारण शरीर अस्वस्थ रहने का योग आप की आमदनी तथा खर्च का पलड़ा एक जैसा रहेगा, घर पर कोई मांगलिक कार्य करने का प्रौग्राम बनेगा जिस की आप बहुत देर से प्रतीक्षा कर रहे थे।

दिसम्बरः- ग्रहों की दशा को देखने से मालूम होता है कि यह महीना दौड़-धूप का होते हुये भी अन्ततः शुभ फलदायक ही है आप जो भी काम करते हैं आप का काम चलता रहेगा परन्तु लाभ की प्राप्ति आशा से कम ही होगी, गृहस्थी होने पर स्त्री के शरीर की चिन्ता।

जनवरीः- नये वर्ष का पहला महीना वृश्चिक राशि वालों के लिये यद्यपि कोई चमत्कार लेकर नहीं आया है परन्तु किसी अनिष्ठ का सूचक भी नहीं है शुभाशुभ ग्रहों के अनुसार यह महीना यद्यपि लाभ की दृष्टि से मध्यम है परन्तु आदर मान व प्रतिष्ठा के लिये उत्तम है विद्यार्थियों के लिये सफलता देने वाला महीना।

फरवरीः- दूसरा बुध, शुक्र तथा तीसरा सूर्य और चन्द्रमा होने से रोगों से मुक्ति, अच्छे सज्जनों तथा उच्च राज्याधिकारियों से मेल मिलाप, धन प्राप्ति तथा मान प्रतिष्ठा का योग, मित्रों, सगे-सम्बन्धियों के साथ अच्छे सम्वन्ध का योग।

मार्चः- गोचर चक्र के शुभाशुभ ग्रहों पर विचार करने से मालूम होता है कि यह महीना हर प्रकार से सुख, शान्ति तथा लाभदायक रहेगा, यदि आप को जमीन, जायदाद का कोई मसला है तो इस महीने में हल होने की आशा है यदि हल होगा नहीं परन्तु हल होने के आसार दिखाई देंगे। विद्या प्राप्ति के लिये हर प्रकार से उत्तम महीना।

धनु राशि का वर्ष फल

नक्षत्र	मूला				पूर्वाषाढा				उत्तराषाढा
चरण	1	2	3	4	1	2	3	4	1
नामाक्षर	ये	या	भा	भि	भु	फ	ढ	भ	भे

गोचर चक्र में चौथा सूर्य तथा सातवां बृहस्पति होने से मानसिक तथा शारीरिक व्यथा, घरेलू झगड़ों के कारण सुखों में कमी, जमीन जायदाद सम्बन्धी अनेक प्रकार की समस्यायें,

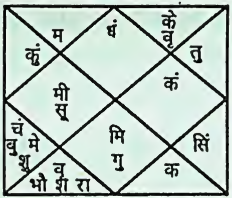

विवाहित जीन में अड़चन तथा मान हानि की सम्भावना, चिन्ता, चोट आदि का भय, राज्याधिकारियों से अनबन तथा उन से भय धन रहते हुये भी धन की कमी का अनुभव धन की गति रुक जाती है इत्यादि, इस प्रकार पांचवां शुक्र छठा भौम तथा शनि होने से अन्न, धन की प्राप्ति, शत्रुओं पर विजय, यश में वृद्धि, (डिपार्टमेन्टल) विभागीय परीक्षा में सफलता, भूमि, जायदाद इत्यादि की प्राप्ति का योग। इस प्रकार गोचर फलित में लिखा हुआ है गोचर चक्र में वर्षारम्भ पर केवल तीन ग्रह शुक्र, भौम तथा शनि अच्छी स्थिति में है इसके अतिरिक्त अशुभ ग्रहों में से चन्द्रमा तथा बुध वेध में हैं इस प्रकार पांच शुभ ग्रहों का योग बनता है जो कि अच्छे फल की ओर इशारा है यदि जन्म कुण्डली में बृहस्पति की स्थिति सुदृढ है तो धनु राशि वालों के लिये यह वर्ष एक यादगार रूप में रहेगा यदि वहां पर बृहस्पति कमजोर होगा तो दौड़-धूप ज्यादा लाभ कम परन्तु हानि का कोई योग नहीं है यदि आप गृहस्थी हैं तो स्त्री पक्ष की ओर से चिन्ता का योग यदि आप अविवाहित हैं तो हो सकता है इस वर्ष भी यह मसला लटकता ही रहेगा या बहुत जोर लगाने पर ही यह मसला हल हो सकता है, बृहस्पति के कमजोर होने से विद्यार्थियों को भी आशा के अनुरूप सफलता नहीं मिलेगी क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये वैष्णव रहें तथा इस मन्त्र का उच्चारण रोज करें।

सर्वा बाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्या-खिले-श्वरि।
एवम्-एव त्वया कार्यम्-अस्मत्-वैरि-विनाशनम्।।

धनु राशि का मासिक फल

अप्रैल:- मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होना दौड़-धूप की ओर इशारा है दौड़-धूप का मास होते हुये भी किसी हानि का सूचक नहीं है आप की आमदनी सीमित रहने पर भी खर्च का योग अधिक है, सातवां बृहस्पति होने से गृहस्थ की ओर से परेशानी।

मई:- चार ग्रहों का शुभ होना तथा दो ग्रहों का वेध

में होना शुभफल का द्योतक है इस कारण यह मास सुख और शान्ति के माहोल में गुजरेगा नौकरी पेशा होने पर दफ्तर में आदर व मान का योग, दफ्तर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, कारोबारी होने पर आशा से अधिक लाभ।

जून:- शुभाशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने के कारण यह महीना धनु राशि वालों के लिये लाभदायक ही रहेगा आमदनी भी खर्च के अनुसार ही रहेगी, घर के किसी वृद्ध पुरुष के शरीर सम्बन्धित परेशानी का योग, विद्यार्थी वर्ग को परिश्रम करने पर ही सफलता की आशा रखनी चाहिये।

जुलाई:- केवल दो ग्रहों का शुभ होना संघर्ष का ही सूचक है सातवें भाव में चार ग्रहों का एक साथ होना गृहस्थ सुख का सूचक नहीं है स्त्री पक्ष से परेशानी का योग नौकरी पेशा होने पर स्थान परिवर्तन का योग जो कि आप के लिये लाभदायक नहीं रहेगा। विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

अगस्त:- मास के आरम्भ पर सभी ग्रह अस्त-व्यस्त स्थिति में है विशेषतौर से आठवां सूर्य, भौम तथा बृहस्पति अप के शरीर को प्रभावित करेंगे अतः आप शरीर के विषय में सावधान रहें आप की आमदनी भी कुछ सन्तोषजनक नहीं रहेगी, खर्च के बड़े-बड़े प्लान बनते रहेंगे।

सितम्बर:- छठे भाव का चन्द्रमा, दसवां बुध, ग्यारहवां शुक्र होने से धन लाभ, स्वस्थ शरीर, यश तथा आनन्द की प्राप्ति, खर्च की अधिकता किसी नये पद की प्राप्ति, शत्रुओं पर विजय, काराबार में वृध्दि, नौकरी पेशा होने पर दफ्तर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, घर पर कोई मांगलिक कार्य करने का प्रौग्राम बनेगा, विद्या प्राप्ति के लिये उत्तम महीना।

अक्टूबर:- दसवां सूर्य, बुध तथा ग्यारहवां शुक्र मास के आरम्भ पर शुभ स्थिति में हैं परन्तु शेष छः ग्रह अशुभ स्थिति में होने से यह महीना दौड़-धूप तथा संघर्ष से परिपूर्ण रहेगा कोई भी कार्य विना रुकावट के सिद्ध होगा नहीं, विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

नवम्बर:- ग्यारहवें भाव में तीन ग्रहों का एक साथ होना आप की आमदनी के लिये लाभदायक ही है आप जो भी काम करते हैं उसमें आशा से अधिक लाभ होगा, परन्तु खर्च का योग भी आमदनी के अनुसार रहेगा, सातवां शनि आप

के गृहस्थ पक्ष को प्रभावित करेगा।

दिसम्बरः- बारहवां सूर्य, बुध तथा राहु आप के शरीर को प्रभावित करेगा यदि आप पहले से ही शरीर से अस्वस्थ हैं तो किसी अच्छे डाक्टर से इलाज करायें यदि आप शरीर से स्वस्थ है तो घर के किसी वृद्ध पुरुष के शरीर सम्वन्धित समस्या आप को घेरे रखेगी।

जनवरीः- नये वर्ष का पहला महीना आप के लिये कोई विशेष शुभ समाचार लेकर नहीं आया है क्योंकि ग्रहों की स्थिति को देख कर मालूम होता है कि यह महीना दौड़-धूप में ही गजरेगा, आप का शरीर भी अस्वस्थ रहेगा तथा आप की आमदनी भी प्रभावित होगी।

फरवरीः- इस मास की ग्रह स्थिति में बहुत सुधार होने के कारण यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुजरेगा, आप की आर्थिक स्थिति भी दृढ होगी नौकरी पेशा होने पर बहुत देर से रुके हुये काम सुधर जाने का योग, गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष से मानसिक शान्ति।

मार्चः- शुभाशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने के कारण यह महीना भी हर प्रकार से शान्ति के ही माहोल में गुजरेगा, आप कारोबार करते हैं या नौकरी दोनों सूरतों में आप को लाभ होगा, बारहवां भौम होने से रक्त विकार अथवा चोट का भय, विद्यार्थियों के लिये सफलता का ही महीना।

मकर राशि का वर्ष फल

नक्षत्र	उत्तरषाढा			श्रवण				घनिष्ठा	
चरण	2	3	4	1	2	3	4	1	2
नामाक्षर	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी

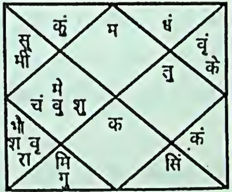

मकर राशि वालों के लिये यह वर्ष हर प्रकार से सुख शान्ति तथा लाभ से परिपूर्ण होगा क्योंकि वर्ष के आरम्भ पर चार ग्रह शुभ स्थिति में तथा तीन अशुभ ग्रह वेध में होने से शुभ फल के ही सूचक है इस कारण सात ग्रहों का शुभ होना हर प्रकार से मंगलकारी है आप नौकरी करते है या कारोबार तो आप का काम अच्छी प्रकार से चलेगा, नौकरी पेशा होने पर दफ्तर के काम में नेक नियती से जुट जाओ तो आप को आशा से अधिक लाभ होगा, नहीं तो

जेब का ही देना पडेगा, दफ्तर में बहुत देर से रुकी हुई पदोन्नति भी आप को अवश्य मिलेगी यदि आप किसी प्रकार वाहन लाने का प्रौग्राम बना रहे हैं तो उसको अमली रूप दे दो, अथवा यदि आप जमीन, जायदाद, मकान कुछ खरीदना चाहते हैं तो इस प्रकार के काम आप के लिये लाभदायक रहेंगे, यदि कारोबार करते हैं सीमेंट, लोहे से सम्बन्धित तो आप को आशा से अधिक लाभ होगा यदि आप जनरल स्टोर इत्यादि का काम करते हो तो अपने काम में सावधानी बरतो लोगों के पास पैसा फंसने का योग है यदि आप अनाज से सम्बन्धित काम करते है तो बाजारी रुख के उतार-चढाव के कारण आप हर समय परेशान रहेंगे, बृहस्पति की स्थिति अशुभ होने के कारण विद्यार्थियों को कटिबद्ध होकर परिश्रम करना पडेगा तभी कुछ सफलता की आशा रखें, क्रूर ग्रहों को शान्त करने क लिये रोज इस मन्त्र का उच्चारण करें:-

सर्व मङ्गल मङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते।।

मकर राशि का मासिक फल

अप्रैल:- ग्रहों की स्थिति को देखने से प्रतीत होता है कि यह मास मकर राशि वालों के लिये हर प्रकार से शुभलाभदायक है विशेषतौर से आप की आमदनी में आशा से अधिक वृद्धि होगी, कारोबारी होने पर आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा।

मई:- शुभाशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने के कारण यह महीना हर प्रकार से शान्तिदायक ही रहेगा। आप जो भी काम करते हैं आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, गृहस्थी होने पर गृहस्थ का सुख तथा सन्तान पक्ष से शुभ समाचार का योग।

जून:- ग्रहों की शुभाशुभ स्थिति पर विचार करने से मालूम होता है यह मास हर प्रकार से लाभदायक ही रहेगा, नौकरी पेशा होने पर पदोन्नति का योग, दफ्तर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, अफसर लोग भी आप के काम से खुश रहेंगे।

जुलाई:- इस मास के ग्रहों की स्थिति अच्छी न होने पर

भी यह मास सर्व साधारण रूप से गुजरेगा, आप की आर्थिक स्थिति कमजोर होने पर भी किसी प्रकार के हानि का योग नहीं है, घर पर खर्च के बड़े-बड़े प्रौग्राम बनते रहेंगे।

अगस्तः- मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होने पर यह मास संघर्ष के माहोल में ही गुजरेगा चलते हुये काम में रुकावट का योग नौकरी पेशा होने पर दफ्तर का माहोल आप के उलट ही चलेगा जो कि आप के लिये चिन्ता का कारण बनेगा।

सितम्बरः- मास के आरम्भ पर ग्रहों की अस्त व्यस्त स्थिति होने के कारण यह महीना दौड़-धूप के माहोल में ही गुजरेगा प्रत्येक कार्य में संघर्ष के वाद भी आशानुकूल सफलता नहीं मिलेगी, आप की आर्थिक स्थिति भी ढीली हो जायेगी।

अक्टूबरः- ग्रहों की स्थिति गत मास की अपेक्षा और भी कमजोर होने के कारण यह पूरा महीना संघर्ष तथा दौड़-धूप में ही गुजरेगा कोई भी काम बिना रुकावट के हल होगा नहीं, गृहस्थी होने पर स्त्री के शरीर की चिन्ता, विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

नवम्बरः- मास के आरम्भ पर ग्रहों में कुछ सुधार होने के कारण यह महीना कुछ-कुछ शान्ति के माहोल में गुजरेगा, आप की आमदनी तथा खर्च एक जैसा रहेगा खर्च का योग अधिक होते हुये भी किसे से मांगने की नौबत नहीं आयेगी।

दिसम्बरः- वर्ष का अन्तिम महीना मकर राशि वालों के लिये शुभ फलदायक ही है आप जो भी काम करते है आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा गृहस्थी होने पर घर में कोई मांगलिक कार्य करने का प्रौग्राम बनता रहेगा।

जनवरीः- नये वर्ष का पहला महीना मकर राशि वालों के लिये शुभ फलदायक ही रहेगा विशेषतौर से ग्यारहवां चन्द्रमा तथा शुक्र आप की आमदनी पर एक अच्छा प्रभाव डालेगा, परन्तु 8 जनवरी को शनि वक्री होकर आपके पांचवें भाव में आया है जिस के कारण शत्रु पक्ष आप पर हावी हो सकता है।

फरवरीः- इस मास के ग्रहों की स्थिति से विदित होता है कि यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुजरेगा 20
आप की आमदनी तथा खर्च एक जैसा रहेगा कारोबारी होने

पर आप अपने कारोवार को वढा सकते हैं, घर में किसी नवजात शिशु के आने का योग।

मार्च :- मास के आरम्भ पर शुभाशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने के कारण यह महीना संघर्ष का होते हुये भी अन्ततः आप के लिये लाभदायक ही रहेगा, बारहवें भाव में सूर्य होने से शारीरिक कष्ट, फजूल खर्च का योग, अपमान का भय, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

कुम्भ राशि का वर्ष फल

नक्षत्र	घनिष्ठा		शर्ताभषजि				पूर्वा भाद्रपदा		
चरण	3	4	1	2	3	4	1	2	3
नामाक्षर	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा

वर्षारम्भ पर केवल तीन ग्रह चन्द्रमा शुक्र और पांचवां वृहस्पति शुभ होने से धन प्राप्ति, वस्त्रादि का सुख, स्वस्थ शरीर, शत्रुओं पर विजय, बन्धुजनों से लाभ, जनता से प्रेम, भाग्य में वृद्धि, भाग्योदय बहिन-भाईयों का सुख तथा धार्मिक प्रवृति, सुख और आनन्द की प्राप्ति, हर कार्य में सफलता, पद की प्राप्ति, व्यवसाय में उन्नति, कोई स्थिर लाभ, घर में कोई मांगलिक उत्सव, आया पुत्र जन्म का योग इत्यादि गोचर फलित में दर्ज है शेष अशुभ ग्रहों पर विचार करने से मालूम होता है कि इन में से चार ग्रह वेध में गये हुये है जो कि शुभ फल की ओर इशारा है इस मिले-जुले शुभाशुभ ग्रहों के संगठन को वेध अष्टक वर्ग की कसौटी पर परखने से मालूम होता है कि कुम्भ राशि वालों के लिये यह वर्ष दौड़-धूप का ही रहेगा कोई भी कार्य विना किसी अड़चन के सिद्ध होगा नहीं यदि आप कारोबार करते हैं तो आप अपने काम में ईमानदारी से जुट जायें तो आप को किसी प्रकार के हानि का कोई योग नहीं है यदि आप नौकरी करते हैं तो दफ्तर का माहोल आप के उलट ही रहेगा क्योंकि तीन क्रूर ग्रह भौम, शनि तथा राहु आप के दरबार को देख रहे हैं यह तीनों ग्रह आप के दरबार को प्रभावित कर सकते हैं जो कि आप के लिये परेशानी का कारण बनेगा, पांचवें भाव में वृहस्पति का होना उच्च विद्या प्राप्ति को दिखाता है इस

कारण विद्या प्राप्ति का योग ठीक है, गृहस्थी होने पर सन्तान पक्ष से कोई शुभ सन्देश सुनने का योग।

क्रूर ग्रहों को शान्त करने के लिये इस मन्त्र का उच्चारण करें:-

सर्ववाधा प्रशमनं त्रैलाक्यस्याखिले श्वरि।
एवमेव त्वया कार्य मस्मद्वैरि विनाशनम्।।

कुम्भ राशि का मासिक फल

अप्रैलः- मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होने से यह मास दौड़-धूप के माहोल में ही गुजरेगा, आप जो भी काम करते है आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, परन्तु लाभ की दृष्टि से यह महीना नरम ही रहेगा, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

मईः- चौथा भौम तथा राहु आप के शरीर को प्रभावित करेगा यदि आप पहले से ही शरीर से अस्वस्थ है तो आप को शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिये यद्यपि आप की आमदनी कम ही रहेगी परन्तु खर्च के बड़े-बड़े प्रौग्राम वनते रहेंगे गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष से शुभ सन्देश।

जूनः- मास के आरम्भ पर पांचवां बृहस्पति तथा शुक्र होने से आनन्द की प्राप्ति, हर कार्य में सफलता, कारोवार में वृद्धि, नौकरी पेशा होने पर विभागीय परीक्षाओं में सफलता तथा अपने अफसर लोगों के साथ उठने बैठने का अवसर मिलेगा जो कि आप के लिये लाभदायक रहेगा।

जुलाईः- ग्रहों की दुर्वल स्थिति को देखने से मालूम होता है कि यह मास कुम्भ राशि वालों के लिये दौड़-धूप का ही होगा कभी धन की अधिकता, कभी धन की कमी, शरीर अस्वस्थ रहने का योग, गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष की ओर से चिन्ता।

अगस्तः- मास के आरम्भ पर ग्रहों में कुछ सुधार आने के कारण यह मास कुछ शान्ति के माहोल में ही गुजरेगा आप अपने काम में ईमानदारी से जुट जायें तो आप को सफलता अवश्य मिलेगी, घर पर सगे-सम्बन्धियों का आना जाना जोरों पर रहेगा।

सितम्बरः- शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति को देखने से मालूम

होता है कि यह महीना शान्ति के माहोल में ही गजरेगा आप की आमदनी भी सन्तोषजनक रहेगी, घर पर कोई मांगलिक कार्य करने का प्रौग्राम वनेगा जिस की प्रतीक्षा आप वहुत समय से कर रहे थे।

अक्टूबरः- शुभ ग्रहों का पलड़ा कमजोर होने के कारण यह महीना संघर्ष के वातावरण में ही गुजरेगा, वने वनाये काम विगड़ जायेंगे, चलते हुये कार्यों में रुकावट का योग, आमदनी तथा खर्च का योग सीमित ही रहेगा, विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

नवम्बरः- आठवां भौम आप को शारीरिक रूप से तंग कर सकता है अचानक चोट का भय अथवा चीर-फाड़ का योग यदि जन्म चक्र में भौम की स्थिति अच्छी होगी तो किसी विशेष भय का कोई योग नहीं है। गृहस्थी होने पर स्त्री के शरीर की चिन्ता का योग।

दिसम्बरः- इस मास के ग्रहों की स्थिति को देखने से मालूम होता है कि यह महीना कुम्भ राशि वालों के लिये कुछ राहत का सांस लेने देगा, आप जो भी काम करते हैं आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, आमदनी कम होने पर भी खर्च का योग अधिक।

जनवरीः- नये वर्ष का पहला मास कुम्भ राशि वालों के लिये धन प्राप्ति, स्वस्थ शरीर, राज्याधिकारियों तथा प्रतिष्ठित लोगों के साथ मित्रता, पदोन्नति का सन्देश लेकर आया है, गृहस्थी होने पर स्त्री सुख का योग, विद्यार्थियों के लिये संघर्ष का महीना।

फरवरीः- वारहवां सूर्य तथा चन्द्रमा आप के शरीर को प्रभावित करके ही दम लेगा अतः आप को सावधान रहने की जरूरत है ग्यारहवां वुध तथा शुक्र होने से यश और धन की प्राप्ति मित्रों तथा पारिवारिक सदस्यों के साथ मेल-मिलाप, सन्तान प्राप्ति का योग, सभी कार्यों में सफलता।

मार्चः- इस मास के शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति को देखने से मालूम होता है कि यह मास शान्ति के माहोल में ही गुजरेगा आप की आर्थिक स्थिति भी ठीक ही रहेगी, दफ्तर का माहोल भी आप के अनुकूल रहेगा, सन्तान पक्ष की ओर से कोई शुभ सन्देश सुनने का योग।

मीन राशि का वर्ष फल

नक्षत्र	पूर्वाभाद्रपदा	उत्तरा भाद्रपदा				रेवती			
चरण	4	1	2	3	4	1	2	3	4
नामाक्षर	दी	दू	थ	झ	ञ	दे	दो	च	ची

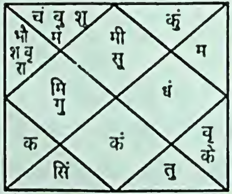

गोचर चक्र में दूसरा बुध, शुक्र तीसरा भौम, शनि तथा राहु शुभ स्थिति में होने से आनन्द की वृद्धि, धन आभूषण की प्राप्ति, अपने सगे-सम्बन्धियों के साथ अच्छे सम्बन्ध, गायन वादन में रुचि, शत्रुओं का नाश, विद्या प्राप्ति का योग, आरोग्य, पराक्रम तथा सुख में वृद्धि, हर कार्य में सफलता, धन तथा नौकरी की प्राप्ति, भूमि लाभ तथा भूमि खरीदने का अवसर, राज्य कर्मचारियों की ओर से लाभ, तर्क शक्ति में बढोत्तरी इत्यादि गोचर फलित में दर्ज हैं। पांच ग्रहों का शुभ होना तथा दो अशुभ ग्रहों का वेध में होना मीन राशि वालों के लिये शुभफल का ही सूचक है इस शुभ योग के प्रभाव से आप का यह वर्ष हर प्रकार से शान्तिदायक तथा लाभदायक रहेगा आप कारोबार करते हैं या नौकरी दोनों सूरतों में आप को आशा से अधिक लाभ मिलेगा यदि आप अपने कारोवार अथवा इन्डस्ट्रीज को वढाना चाहते है तो आप समय जाया मत कीजिये अपने कारोवार को वढावा दीजिये आप को सफलता अवश्य मिलेगी यदि आप को शेयर इत्यादि के साथ सम्वन्ध है तो वाजारी रुख के उतार चढाव के कारण वह आप के लिये परेशानी का कारण वनेगा यदि आप किसी सामाजिक अथवा सियासी संगठन के साथ सम्वन्ध रखते है तो सामाजिक क्षेत्र में आदर व मान का योग, यदि आप को जमीन, जायदाद का कोई मसला कुछ समय से लटका हुआ है तो उस के समाधान के आसार आपको दिखाई देंगे अथवा इस प्रकार के मसलों का हल हो जायेगा। विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार से सफलता का वर्ष।

मीन राशि का मासिक फल

अप्रैलः- मास के आरम्भ पर छः ग्रहों का शुभ स्थिति में होना हर प्रकार से शुभ फल का सूचक है आप की आमदनी भी सन्तोषजनक रहेगी, जमीन, जायदाद से लाभ, नौकरी

पेशा होने पर दफ्तर में स्थान परिवर्तन के साथ पदोन्नति का योग, गृहस्थी न होने पर विवाह का योग भी बनता हैं।

मईः- यह मास भी गत मास की तरह शान्ति के माहोल में गुजरेगा आप की आर्थिक स्थिति भी ठीक ही रहेगी आप जो भी काम करते हैं आप का काम अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, तथा लाभ भी आशा से अधिक मिलेगा, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

जूनः- शुभाशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने के कारण संघर्ष का ही महीना परन्तु किसी हानि का कोई योग नहीं है आप का काम कारोबार या नौकरी अच्छी प्रकार से चलता रहेगा, घर पर सगे-सम्बन्धियों का आना जाना जोरों पर रहेगा, विद्यार्थियों के लिये सफलता का योग।

जुलाईः- मास के आरम्भ पर केवल चार ग्रह शुभ स्थिति में हैं जो कि दौड़-धूप के ही सूचक हैं आप जो भी काम करते हैं अडचन आने का योग परन्तु किसी प्रकार की हानि का योग नहीं है कारोबारी होने पर अपने कारोबार को सीमित ही रखें नहीं तो हानि का योग दिखता है।

अगस्तः- केवल तीन ग्रहों का शुभ होना कोई चमत्कारिक योग नहीं है अतः आप जो भी काम करते हें उस में ईमानदारी से जुट जाये तभी कुछ सफलता तथा लाभ की आशा रखें नहीं तो लेने के देने पड़ेंगे, विद्यार्थियों को आशा से अधिक सफलता, सन्तान पक्ष की ओर से कोई शुभ सन्देश मिलने का योग।

सितम्बरः- मास के आरम्भ पर ग्रहों में बहुत बदलाव आया है तथा छः ग्रह शुभ स्थिति में हैं जो कि शुभ फल की ओर इशारा है, बिगड़े हुये अथवा रुके हुये सभी काम बन जायेंगे, घर पर कोई मांगलिक कार्य का प्रोग्राम बनेगा जिस में सभी मित्र, सगे-सम्बन्धि सम्मिलित होंगे।

अक्टूबरः- केवल चार ग्रहों का शुभ होना ठीक ही है आप का काम बिना किसी अड़चन के चलता रहेगा यद्यपि आप की आमदनी सीमित ही रहेगी परन्तु किसी से मांगने की नौबत नहीं आयेगी, खर्च के बड़े-बड़े तथा लम्बे प्रोग्राम बनते रहेंगे, विद्यार्थियों के लिये सफलता देने वाला महीना।

नवम्बरः- इस मास की ग्रह स्थिति भी गत मांस की तरह ही है इस कारण यह मास भी दौड़-धूप का होते हुये भी अन्ततः सफलता देने वाला ही है किसी प्रकार की हानि का

कोई योग नहीं है आठवां सूर्य तथा सातवां भौम आप के शरीर को प्रभावित कर सकता है तथा स्त्री पक्ष से भी मानसिक अशान्ति का योग।

दिसम्बरः- सातवां चन्द्रमा तथा आठवां शुक्र होने से धन लाभ, स्वस्थ शरीर यश तथा आनन्द की प्राप्ति, खर्च की अधिकता, सुखों में वृद्धि विलास की सामग्री में वृद्धि का योग, पूरा महीना विलासता के माहोल में ही गुजरेगा, अविवाहित होने पर विवाह का योग अथवा विवाह सम्बन्धित कुछ बात चलने का योग।

जनवरीः- नये वर्ष का पहला महीना मीन राशि वालों के लिये शुभ सन्देश लेकर ही आया है आरम्भ में पांच ग्रह शुभ स्थिति में है तथा 8 जनवरी को शनि भी वक्री होकर तीसरे स्थान में आकर शुभ फल देने वाला बन जाता है इस कारण यह महीना हर प्रकार से सुख और शान्ति देने वाला है लाभ की दृष्टि से भी यह महीना उत्तम है।

फरवरीः- मास के ग्रहों को फलित ज्योतिष की कसौटी पर परखने से मालूम होता है यह महीना हर दृष्टि से लाभ तथा शान्ति देने वाला है दफ्तर में पदोन्नति का अवसर भी मिल सकता है, घर पर कोई मांगलिक कार्य करने का प्रौग्राम वनेगा, घर में किसी नवजात शिशु के आगमन का योग जिस की प्रतीक्षा आप बहुत समय से कर रहे हैं।

मार्चः- मास के आरम्भ पर छः ग्रह शुभ स्थिति में हैं जिसके कारण यह महीना हर दृष्टि से लाभदायक रहेगा आप का प्रत्येक कार्य बिना किसी रुकावट के हल होगा, चाहें वह घर का काम हो या दफ्तर का, आप नौकरी करते है या कारोवार आप का काम अच्छी तरह से चलता रहेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये हर प्रकार से सफलता देने वाला महीना।

शनि देव और साढ-सत्ती

साढ-सत्ती कव होती है? किस को होती है?

शनि देवता जिस राशि में होता है साढ-सत्ती उस राशि को तथा उससे पहली वाली राशि को और उस के वाद वाली राशि को होती है जिस का समय साढ़े सात वर्ष का है जैसे आजकल शनिदेव वृष राशि में है तो साढ-सत्ती मेष, तथा मिथुन राशि वालों को चलेगी जव ही शनि राशि वदलेगा तो

साढ सत्ती भी बदलेगी। शनि के प्रकोप से बचने के लिये इस मन्त्र का जाप अवश्य करें:-

"ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये
शं य्योरभिस्रवन्तु नः"।।

मेष **वृष** **मिथुन**

मेषः- राशि वालों की साढ-सत्ती 2003 - 7 अप्रैल को समाप्त होगी, यह बात सब मानते हैं कि शनि देव जिस घर में बैठता है उस का बढावा करता है शनि देव आपके दूसरे भाव में बैठा हैं तथा आप की आर्थिक स्थिति को दृढ़ करता हैं दूसरी ओर शनि देव आप के ग्यारहवें भाव को देख रहा है जिस से यह आप की आमदनी को प्रभावित कर सकता है यह आप के शरीर को भी प्रभावित कर सकता है अतः आप ऊपर लिखित मन्त्र का उच्चारण रोज किया करें।

वृषः- राशि वालों की साढ-सत्ती 2004, 5 सितम्बर को समाप्त होगी, शनि देव आप के लग्न में बैठा है लग्न का प्रभुत्व प्रत्येक भाव पर होता है इस कारण शनि का प्रभत्व पूरी कुण्डली पर है शनि का लग्न में होना शुभ फल का सूचक है यदि आप की जन्म कुण्डली में शनि की स्थिति सुदृढ़ है तो साढ-सत्ती का होना आप के लिये हर प्रकार से लाभदायक रहेगा यदि ऐसा नहीं है तो दरबार की ओर से परेशानी का योग, शनि देव आप के गृहस्थ जीवन को प्रभावित कर सकता है, भाई, बन्धओं, रिश्तेदारों के साथ भी अनबन होने का योग, आप नित्य उपर लिखित मन्त्र का उच्चारण करें तथा वैष्णव रहने का मन बनाये।

मिथुनः- शनि आप के भाग्य स्थान को देख रहा है जो कि शुभ फल का संकेत नहीं है जिस के प्रभाव से अचानक बने बनाये काम बिगड़ सकते हैं अथवा चलते काम में किसी प्रकार की रुकावट आ सकती है यदि आप को जमीन, जायदाद सम्बन्धित कोई मसला है तो इस वर्ष में इस प्रकार का मसला हल हो सकता है यदि आप मकान इत्यादि बनाना चाहते हैं तो आप इस प्रकार के प्रौग्राम को अमली जामा पहनायें उसमें सफलता अवश्य होगी यदि आप को घर पर सन्तान पक्ष की ओर से कुछ चिन्ता है चाहे वह विवाह से सम्बन्धित है अथवा नौकरी से सम्बन्धित तो थोड़ा सा परिश्रम करने से यह मसला हल हो सकता है शनि देव के

कुप्रभाव को कम करने के लिये ऊपर लिखित मन्त्र का उच्चारण करें।

ढय्या

तुला - - - - - - कुम्भ

तुलाः- शनि देव आप के दरवर, धन तथा पांचवें भाव को प्रभावित करता है यदि आप नौकरी करते हैं तो दफ्तर का माहोल आप के अनुकूल नहीं रहेगा, अफसर लोगों के साथ अनवन तथा स्थान परिवर्तन का योग जो आप के लिये परेशानी का कारण वनेगा आप की आर्थिक स्थिति भी डांवाडोल ही रहेगी, विद्यार्थी होने पर विद्या प्राप्ति में अड़चन का योग।

कुम्भः- शनि देव आप के शत्रु पक्ष को दवाने में हर समय सफल रहेगा परन्तु आप के शरीर को अवश्य प्रभावित करेगा अतः आप अपने शरीर के विषय में सावधान रहे यदि आप शरीर से स्वस्थ है तो घर पर किसी वृद्ध पुरुष के शरीर की समस्या आप को घेरे रखेगी, शनि आप के चौथे भाव में ठहरा है चौथे भाव में शनि का होना हर प्रकार से लाभदायक माना जाता है यदि आप मकान इत्यादि वनाने की कुछ सोच रहें हैं तो समय जाया मत कीजिये, इस प्रकार के काम को हाथ में लीजिये।

विजयेश्वर कैसट्स

''प्रेम नाथ शास्त्री'' के *ज़बान से*

(1) गीता प्रवचन (11 कैसटों में), (2) लल्ल वाक्य (7 कैसटों में), (3) महिम्नापार (3 कैसटों में), (4) जगद्धमट्ट के विलाप, (5) कर्म भूमिकाय दिजि धर्मुक बल, (6) राम गीता, (7) अन्तिम संस्कार विधि, (8) शिव रात्रि पूजा, (9) भवानी सहस्रनाम, (10) नित्य नियम विधि, (11) पंचस्तवी, (12) भगवत् गीता (पाठ रूप में), (13) दूर्गा सप्तशती, (14) पोष पूजा तथा लग्न संस्कार। इसके अतिरिक्त दसवां, ग्यारहवां दिन, मेखला संस्कार इत्यादि अभी बन रहे हैं।

दैनिक लग्न सारिणी वैशाख मास (13 अप्रेल से 13 मई) तक के लिये -- भ.स्टै., समयानुसार

वैशा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	लग्न
अंग्रेज़ी	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	मई	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	
प्रात: तक	7 40	7 36	7 32	7 29	7 25	7 21	7 17	7 13	7 9	7 5	7 1	6 57	6 53	6 49	6 45	6 41	6 37	6 33	6 30	6 26	6 22	6 18	6 14	6 10	6 6	6 2	5 58	5 54	5 50	5 46	5 42	मे
दिन तक	9 34	9 30	9 26	9 22	9 18	9 14	9 10	9 6	9 2	8 58	8 54	8 50	8 46	8 43	8 32	8 35	8 31	8 27	8 23	8 19	8 15	8 11	8 7	8 3	7 59	7 55	7 51	7 47	7 44	7 40	7 36	वृ
दिन तक	11 49	11 45	11 41	11 37	11 33	11 29	11 25	11 22	11 18	11 14	11 10	11 6	11 2	10 58	10 54	10 50	10 46	10 42	10 38	10 34	10 30	10 26	10 23	10 19	10 15	10 11	10 7	10 3	9 59	9 55	9 51	मि
दिन तक	2 13	2 9	2 5	2 1	1 57	1 53	1 49	1 45	1 41	1 37	1 33	1 29	1 26	1 22	1 18	1 14	1 10	1 6	1 2	12 58	12 54	12 50	12 46	12 42	12 38	12 34	12 30	12 27	12 23	12 19	12 15	क
दिन तक	4 34	4 30	4 27	4 23	4 19	4 15	4 11	4 7	4 3	3 59	3 55	3 51	3 47	3 43	3 39	3 35	3 31	3 28	3 24	3 20	3 16	3 12	3 8	3 4	3 0	2 56	2 52	2 48	2 44	2 40	2 36	सिं
शां तक	6 55	6 51	6 47	6 43	6 39	6 35	6 31	6 27	6 23	6 20	6 16	6 12	6 8	6 4	6 0	5 56	5 52	5 48	5 44	5 40	5 36	5 32	5 28	5 24	5 21	5 17	5 13	5 9	5 5	5 1	4 57	कं
रात तक	9 18	9 14	9 10	9 7	9 3	8 59	8 55	8 51	8 47	8 43	8 39	8 35	8 31	8 27	8 23	8 19	8 15	8 11	8 8	8 4	8 0	7 56	7 52	7 48	7 44	7 40	7 36	7 32	7 28	7 24	7 20	तु
रात तक	11 39	11 35	11 31	11 27	11 23	11 19	11 16	11 12	11 8	11 4	11 0	11 56	11 52	10 48	10 44	10 40	10 36	10 32	10 28	10 24	10 20	10 17	10 13	10 9	10 5	10 1	10 57	9 53	9 49	9 45	9 41	वृं
रात तक	1 42	1 38	1 34	1 30	1 26	1 22	1 18	1 14	1 10	1 6	1 2	12 58	12 54	12 50	12 46	12 43	12 39	12 35	12 31	12 27	12 23	12 19	12 15	12 11	12 7	12 3	11 59	11 55	11 51	11 47	11 44	धं
रात तक	3 20	3 16	3 13	3 9	3 5	3 1	2 57	2 53	2 49	2 45	2 41	2 37	2 33	2 29	2 25	2 21	2 17	2 14	2 10	2 6	2 2	1 58	1 54	1 50	1 46	1 42	1 38	1 34	1 30	1 26	1 22	म
रात तक	4 46	4 42	4 38	4 34	4 30	4 26	4 22	4 18	4 14	4 10	4 6	4 2	3 58	3 54	3 51	3 47	3 43	3 39	3 35	3 31	3 27	3 23	3 19	3 15	3 11	3 7	3 3	2 59	2 55	2 52	2 48	कुं
रात तक	6 5	6 1	5 57	5 53	5 49	5 45	5 41	5 38	5 34	5 30	5 26	5 22	5 18	5 14	5 10	5 6	5 2	4 58	4 54	4 50	4 46	4 32	4 39	4 35	4 31	4 27	4 23	4 19	4 15	4 11	4 7	मी

दैनिक लग्न सारिणी ज्येष्ठ मास (14 मई से 13 जून तक) के लिये -- भ.स्टै, समयानुसार

ज्येष्ठ	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	
अंग्रेजी	14	15	16	17	19	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	जून	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	
प्रातः	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	वृ
तक	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	46	42	38	34	
दिन	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	मि
तक	47	43	39	35	31	27	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	
दिन-	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	क
तक	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	29	25	21	17	13	
दिन	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	सिं
तक	32	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	
दिन	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	कं
तक	53	49	45	41	37	33	29	25	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	23	19	15	11	7	3	59	55	
शां	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	तु
तक	16	12	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	22	18	
रात	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	वृं
तक	37	33	26	25	21	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	22	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	
रात	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	धं
तक	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	46	42	
रात	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	म
तक	18	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	20	
रात	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	कुं
तक	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	54	50	46	
रात	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	मी
तक	3	59	55	51	47	43	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	
रात	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	मे
तक	39	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	

दैनिक लग्न सारिणी आषाढ मास (14 जून से 15 जुलाई तक) के लिये -- भ.स्टै. समयानुसार

आषाढ	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	
अंग्रेजी	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	जुला.	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	
प्रातः	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	मि
तक	45	41	37	33	29	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	
दिन	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	क
तक	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	31	27	23	19	15	11	7	
दिन	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	सिं
तक	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	33	29	
दिन	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	कं
तक	51	47	43	39	35	31	27	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	
दिन	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	[illegible]	3	3	3	3	3	तु
तक	14	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	20	16	13	
शाम	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	वृं
तक	35	31	27	23	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	
रात	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	ध
तक	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	48	44	40	36	
रात	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	म
तक	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	22	19	15	
रात	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	कुं
तक	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	56	52	48	44	40	
रात	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	मी
तक	1	57	53	49	45	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	
रात	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	मे
तक	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	33	49	45	41	37	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	35	31	
रात	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	वृ
तक	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	48	44	40	36	32	28	24	

दैनिक लग्न सारिणी श्रावणमास (16 जुलाई से 15 अगस्त) तक के लिये -- भ.रैट, समयानुसार

श्रावण	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	
अंग्रेजी	16	17	19	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	अगस्त	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	
प्रात:	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	क
तक	3	59	55	51	47	43	39	35	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	33	29	25	21	17	13	9	5	
दिन	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	सिं
तक	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	35	31	27	
दिन	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	कं
तक	45	41	37	33	29	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	
दिन	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	तु
तक	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	22	18	15	11	
दिन	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	वृं
तक	29	25	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	
शां	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	धं
तक	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	50	46	42	38	34	
रात	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	म
तक	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	21	17	13	
रात	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	कुं
तक	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	57	53	49	45	41	38	33	29	25	21	17	13	9	5	1	58	54	50	46	42	38	
रात	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	मी
तक	55	51	47	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	
रात	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	मे
तक	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	37	33	29	
रात	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	वृ
तक	20	16	12	8	4	0	56	52	54	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	50	46	42	38	34	30	26	22	
रात	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	मि
तक	35	31	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	

दैनिक लग्न सारिणी भाद्रमास के लिये (16 अगस्त से 15 सितम्बर) तक -- भ.रैट, समयानुसार

भाद	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	
अंग्रेजी	16	17	19	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	सित	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	
प्रातः	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	सिं
तक	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	36	32	28	24	20	16	12	8	6	0	56	52	48	44	40	37	33	29	25	
दिन	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	कं
तक	43	39	35	31	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	29	25	21	17	13	9	58	0	57	53	49	45	
दिन	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	तु
तक	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	20	17	13	9	
दिन	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	वृं
तक	27	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	
दिन	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	धं
तक	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	52	48	44	40	36	32	
शां	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	म
तक	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	23	19	15	11	
रात	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	77	7	7	7	6	6	6	6	6	6	कुं
तक	34	30	26	22	18	14	10	6	2	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	0	56	52	48	44	40	38	
रात	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	मी
तक	53	49	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	
रात	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	मे
तक	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	38	35	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	39	35	31	27	
रात	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	वृ
तक	18	14	10	6	2	58	54	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	52	48	44	40	36	32	28	24	20	
रात	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	मि
तक	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	
रात	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	क
तक	57	53	49	45	41	37	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	

दैनिक लग्न सारिणी आश्विन मास (16 सितम्बर से 15 अक्तुबर तक) के लिये -- भ.सैट, समयानुसार																															
आश्वि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	
अंग्रेजी	16	17	19	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	अक्तू	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	
प्रातः	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	
तक	41	37	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	कं
दिन	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	
तक	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	22	19	15	11	तु
दिन	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	
तक	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	वृं
दिन	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	
तक	28	24	20	16	12	8	4	0	56	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	54	50	46	42	38	34	धं
दिन	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	
तक	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	25	21	17	13	म
दिन	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	
तक	32	28	24	20	16	12	8	4	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	2	58	53	49	45	41	37	कुं
रात	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	
तक	51	49	45	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	मी
रात	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	
तक	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	41	37	33	29	मे
रात	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	
तक	16	12	8	4	0	56	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	54	50	46	42	35	34	30	26	22	वृ
रात	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	
तक	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	मि
रात	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	
तक	55	51	46	43	39	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	क
रात	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	
तक	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	39	35	31	27	23	सिं

दैनिक लग्न सारिणी कार्तिक मास (16 अक्टूबर से 14 नवंबर तक) के लिये -- भ.स्टै, समयानुसार

कार्तिक	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	
अंग्रेजी	16	17	19	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	नव	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	
प्रातः	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	तु
तक	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	21	17	13	
दिन	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	वृ
तक	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	
दिन	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	धं
तक	30	26	22	18	14	10	6	2	58	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	1	59	56	52	48	44	40	36	
दिन	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	म
तक	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	27	23	19	15	
दिन	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	कुं
तक	34	30	26	22	18	14	10	6	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	4	0	56	52	48	44	40	
दिन	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	मी
तक	53	50	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	
शा	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	मे
तक	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	39	35	31	
रात	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	वृ
तक	18	14	10	6	2	58	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	56	52	48	44	40	36	32	28	24	
रात	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	मि
तक	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	
रात	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	क
तक	57	53	49	45	41	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	
रात	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	सिं
तक	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	41	37	33	29	25	
रात	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	कं
तक	39	35	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	33	29	22	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	

दैनिक लग्न सारिणी मार्ग मास (15 नवम्बर से 14 दिसंबर तक) के लिये -- भ.स्टै. समयानुसार

मार्ग	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	
अंग्रेजी	15	16	17	19	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	दिसं	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	
प्रातः	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	वृं
तक	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	
दिन	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	धं
तक	32	28	24	20	16	12	8	4	0	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	58	54	50	46	42	38	
दिन	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	म
तक	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	29	25	21	17	
दिन	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	कु
तक	36	32	28	24	20	16	12	8	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	6	2	58	54	50	46	42	
दिन	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	मी
तक	55	52	48	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	
दिन	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	मे
तक	27	23	19	15	11	7	3	0	55	51	47	43	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	45	41	37	33	
शां	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	वृ
तक	20	16	12	8	4	0	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	58	54	50	46	42	38	34	30	26	
रात	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	मि
तक	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	
रात	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	क
तक	59	55	51	47	43	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	
रात	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	सिं
तक	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	39	35	31	27	
रात	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	कं
तक	41	37	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	
रात	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	तु
तक	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	23	19	15	11	

21

दैनिक लग्न सारिणी पौषमास (15 दिसम्बर से 12 जनवरी) तक के लिये -- भ.स्टै. समयानुसार																															
पौष	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29		
अंग्रेजी	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	जन.	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12		
प्रात:	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	धं	
तक	34	30	26	22	18	14	10	6	2	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	0	56	52	48	44		
दिन	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	म	
तक	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	31	27	23		
दिन	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	कुं	
तक	38	34	30	26	22	18	14	10	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	8	4	0	56	52	48		
दिन	1	1	1	1	1	1	[illegible]	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	मी	
तक	57	54	50	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7		
दिन	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	मे	
तक	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	42	38	34	30	25	22	18	14	10	6	2	58	54	50	47	43	39		
दिन	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	वृ	
तक	22	18	14	10	6	2	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	0	56	52	48	44	40	36	32		
शां	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	मि	
तक	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47		
रात	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	क	
तक	1	57	53	49	45	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	39	35	31	27	23	19	15	11		
रात	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	सिं	
तक	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	45	41	37	33		
रात	2	2	2	2	2	2	2	2	2	22	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	कं	
तक	43	39	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53		\
रात	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	तु	
तक	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	25	21	17		
रात	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	वृं	
तक	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37		

दैनिक लग्न सारिणी माघमास (13 जनवरी से 11 फर्वरी) तक के लिये -- भा.स्टै.समयानुसार																														
माघ	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	
अंग्रेजी	13	14	15	16	17	19	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	फर्वरी	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	
प्रातः	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	म
तक	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	33	29	25	
दिन	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	कुं
तक	44	40	36	32	28	24	20	16	12	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	10	6	2	58	54	50	
दिन	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	मी
तक	3	59	56	52	48	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	
दिन	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	मे
तक	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	48	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	49	45	41	
दिन	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	वृ
तक	28	24	20	16	12	8	4	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	4	2	58	54	50	46	42	38	34	
दिन	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	मि
तक	43	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	
शां	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	क
तक	7	3	59	55	51	47	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	45	41	37	33	29	25	21	17	13	
रात	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	सिं
तक	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	51	47	43	39	35	
रात	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	कं
तक	49	45	41	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	
रात	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	तु
तक	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	27	23	19	
रात	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	वृं
तक	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	
रात	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	धं
तक	36	32	28	24	20	16	12	8	4	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	2	58	54	50	46	42	

दैनिक लग्न सारिणी फाल्गुन मास (12 फर्वरी से 13 मार्च तक) के लिये -- भ.रैट, समयानुसार

फाल्गुन	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	
अंग्रेजी	12	13	14	15	16	17	19	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	मार्च	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	
प्रातः	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	कुं
तक	46	42	38	34	30	26	22	18	14	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	12	8	4	0	56	52	
दिन	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	मी
तक	5	1	58	54	50	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	
दिन	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	मे
तक	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	50	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	51	47	43	
दिन	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	वृ
तक	30	26	22	18	14	10	6	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	4	0	56	52	48	44	40	36	
दिन	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	मि
तक	45	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	
दिन	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	क
तक	9	5	1	57	53	49	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	47	43	39	35	31	27	23	19	15	
शां	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	सिं
तक	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	48	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	49	45	41	37	
रात	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	कं
तक	51	47	43	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	
रात	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	तु
तक	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	29	25	21	
रात	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	वृं
तक	36	32	8	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	
रात	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	धं
तक	38	34	30	26	22	18	14	10	6	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	4	0	56	52	48	44	
रात	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	10	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	म
तक	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	35	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	25	31	27	

दैनिक लग्न सारिणी चैत्र मास (14 मार्च से 12 अप्रैल तक) के लिये - भ.रैट, समयानुसार

चैत्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	
अंग्रेजी	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	अप्रैल	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
प्रात:	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	मी
तक	7	3	0	56	52	48	45	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	
दिन	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	मे
तक	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	52	48	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	53	49	45	
दिन	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	वृ
तक	32	28	24	20	16	12	8	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	6	2	58	54	50	46	42	38	
दिन	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	मि
तक	47	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	
दिन	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	क
तक	11	7	3	59	55	51	48	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	49	45	41	37	33	29	25	21	17	
दिन	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	सिं
तक	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	50	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	47	43	39	
सां	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	कं
तक	53	49	45	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	
रात	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	तु
तक	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	31	27	23	
रात	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	वृ
तक	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	
रात	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	धं
तक	40	36	32	28	24	20	16	12	8	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	6	2	58	54	50	46	
रात	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	म
तक	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	37	33	29	
रात	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	कु
तक	48	44	40	36	32	28	24	20	16	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	14	10	6	2	58	54	

हमारे प्रकाशन

(1) ***कर्म काण्डदीपक*** (हिन्दी तथा उर्दू में) (जिस में धूप–दीप, विष्णु पूजन, प्रेप्युन, शिव पूजा, दिवचखीर पूजा, यक्षामावसी पूजा, जन्म दिन पूजा, बुनियाद मकान पूजा, गृह प्रवेश पूजा, दीपमाला पूजा, श्राद्ध संकल्प विधि, रुद्र–मंत्र, चमानु वाक्य, पत्र कथा तथा पत्र पूजा, शिवरात्रि पूजा, शिवमहिम्नस्तोत्र)

(2) ***पंचस्तवी*** (हिन्दी तथा उर्दू में) अर्थ तथा व्याख्या सहित।

(3) ***भवानी सहस्रनाम,*** महिम्नस्तोत्र, बहुरूप गर्भ, इन्द्राक्षी (उर्दू तथा हिन्दी में)।

(4) ***शिवरात्रि पूजा*** (हिन्दी तथा उर्दू में)

(5) ***सन्ध्या*** (हिन्दी तथा उर्दू में)

(6) ***सहस्तनामावली*** (पुष्पाचर्न) शिव, विष्णु, गणेश, सूर्य, भवानी शारिका, ज्वाला, महाराज्ञी।

(7) ***राम गीता*** (हिन्दी तथा उर्दू में)

(8) ***श्रीमत् भगवत् गीता*** (उर्दू में)

(9) ***अन्तिम संस्कार विधि***

(10) ***शारदा प्राईमर।***

विजयेश्वर कैसट्स

''प्रेम नाथ शास्त्री'' के ज़बान से

(1) गीता प्रवचन (11 कैसटों में), (2) लल्ल वाक्य (7 कैसटों में), (3) महिम्नापार (3 कैसटों में), (4) जगद्धमट्ट के विलाप, (5) कर्म भूमिकाय दिजि घर्मुक बल, (6) राम गीता, (7) अन्तिम संस्कार विधि, (8) शिव रात्रि पूजा, (9) भवानी सहस्रनाम, (10) नित्य नियम विधि, (11) पंचस्तवी, (12) भगवत् गीता (पाठ रूप में), (13) दूर्गा सप्तशती, (14) पोष पूजा तथा लग्न संस्कार। इसके अतिरिक्त दसवां, ग्यारहवां दिन, मेखला संस्कार इत्यादि अभी बन रहे हैं।

नोट :- असली कैसट् खरीदते समय कैसट् पर भगवान् कृष्ण का फोटो ट्रेड मार्क के रूप में अवश्य देखें।

Our Publications From

KASHMIRI PANDITS ASSOCIATION
Bawani Nagar, Marol Morshi Road, Andheri, East Mumbai. Phone :

KASHMIRI SAMITI
Kashmir Bhawan Marg, Amar Colony, Lajpat Nagar-IV, New Delhi, Phone : 6433399, 6465280

TANEJA ELECTRICALS & TENT HOUSE
4, Raghunath Mandir, Amar Colony, Lajpat Nagar, New Delhi Phone : 6429046

BRAHAM PUTRA COMPLEX
Shop No. 45, Sector-29, NOIDA Ph. : 8539338

SANJAY ELECTRONICS
Shop NO. 9, Kashmiri Market, I.N.A. New Delhi-23 Ph. : 4643029

D. P. B. PUBLICATIONS
110, Chowk Barshahbulla, Chawri Bazar, Delhi-6 Phone : 3273220

UNIQUE VARIETY HOUSE
Sector 35, Noida, U.P. Ph.: 4570651, 4579751

JAMMU :-

VIJAYASHWAR DHARMIK PUSTAK BHANDAR
Talab-Tilo, Jammu, Phone : 555763

J. K. BOOK SHOP
Talab-Tilo, Jammu, Phone : 554522, 504103

GUPTA STATIONERY STORE
City Chowk, Jammu

NAND LAL & SONS
Pacca Danga, Jammu

TRINITY STATIONERS
Pacca Danga, Jammu

UNIVERSAL NEWS AGENCIES
Mukherjee Bazar, Udhampur

- जरा सुनिये -

1. यदि आप को विजयेश्वर पंचांग के विषय में कुछ पूछना हो
2. यदि आप को ज्योतिष, धर्म शास्त्र, कर्मकाण्ड अथवा किसी प्रकार की कोई समस्या हो
3. यदि आप सम्पादक से मिलना चाहते हो
4. यदि आप शुद्ध तथा सही जन्मपत्री बनवाना चाहते हो

स्वरदूत – 555607

पर सम्पर्क करें।

(हम आपकी सेवा के लिये हर समय उपलब्ध हैं)

विजयेश्वर

पंचांग कार्यालय (रजि॰)

अजीत कॉलोनी (एक्स.)
गोल गुजराल, जम्मू

Email: vijayshwar_panchang@rediff.com
Visit us at : www.vijayashwar.homestead.com

ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन

मेलापक-सम्बन्धी प्रत्येक समस्या का परिपूर्ण समाधान करने वाला अद्वितीय प्रकाशन

लेखकःप्रियव्रत शर्मा एम.ए., सिद्धांत ज्योतिषाचार्य, साहित्याचार्य (सम्पादक- 'मार्तण्ड पंचांग')

पुस्तक छः अध्यायों में विभाजित है- प्रथम अध्याय में अष्टकूट का विस्तृत विवेचन, द्वितीय में कुज (मंगली) दोष पर विस्तृत विमर्श, तृतीय में विवाहमूहूर्त्त साधन की सुबोध प्रक्रिया दी गई है । चतुर्थ अध्याय में अनेक मौलिक कोष्ठक दिए गए हैं, जिनसे १९७१ से २००० ई. तक पैदा हुए वर-कन्याओं का जन्मलग्न, जन्मनक्षत्र, जन्मनवांश और जन्मकुण्डली बिना पुराने पंचांगों की सहायता के १०-१५ मिनटोंमें बनाई जा सकती है। पंचम और छठे अध्याय में शोधपूर्ण मौलिक निबन्ध हैं,जो ज्योतिष के चौंका देने वाले रहस्य उद्घाटित करते हैं।

इस पुस्तक में दिए अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों में से इन कुछ विषयों पर दृष्टिपात कीजिए:-

(१) वर-कन्या के नक्षत्र-चरणों के आधार पर बनाई गई विस्तृत गुणमिलान-सारणी ३६ पृष्ठों पर फैली है, जिसमें अष्टकूटों के गुण और दोष तथा उनके परिहार एक ही दृष्टि में तुरन्त देखे जा सकते हैं।

(२) कुज दोष की मात्रा के सूक्ष्मतापूर्वक यथार्थ निर्णय के लिए सात 'कुजदोष कोष्ठक' दिए गए हैं, जिनकी सहायता से कोई भी दैवज्ञ मौखिक गणित द्वारा ही वर-कन्या के कुजदोष की मात्राओं के आंकिकमान (**Numerical Values**)२०-२५ मिनटोंमेंही ज्ञात कर उनकी तुलना द्वारा वह वर-कन्या के विवाहसम्बन्ध की शक्याशक्यता का निर्णय प्रामाणिक रूप में कर सकता है।

(३) 'नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्' आदि बीसों विवादास्पद वाक्यों का विश्लेषण विस्तारपूर्वक किया गया है। प्रतिपाद्य विषयों के खण्डन-मण्डन के समर्थन में 90 मूल ग्रन्थों में से सैंकड़ों प्रमाणवाक्य (श्लोक) पदे-पदे उद्धृत किए गए हैं।

पुस्तक का डाकव्यय सहित पूरा मूल्य 375 रुपयेM.O. द्वारा नीचे लिखे पते पर भेजिए। वी.पी. नहीं की जाएगी।

मूल्य 350 रु.+ डाक व्यय 25 रु. *पृष्ठ संख्या 272* *साईज 24×18 सें.मी.* *बहुमूल्य पेपर पर मुद्रित*

श्रीमती वीना चतुर्वेदी,

59/6(अभिजित्),P.O. पंचकूला- 134109(हरियाणा)

ॐ

SAINT-POETESS LALLESHWARI - LAL-DED
PORTRAIT AS

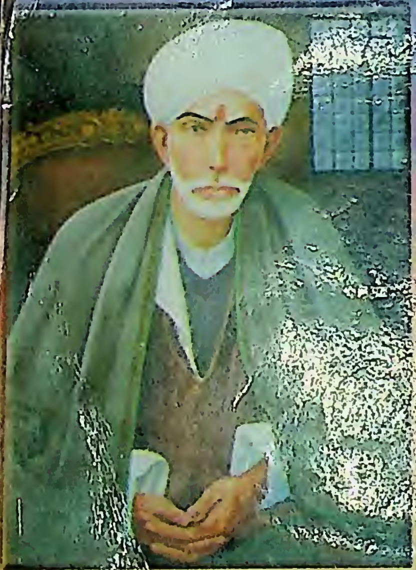

ज्यो॰ आफ़ताब शर्मा

यत्-चावहा-सार्थम्-असत्कृतोसि
विहारशय्यासन- भोजनेषु।
एकोऽथवा-प्यच्युत तत्समक्षं
तत्-क्षामये-त्वाम्-अहम्-अप्रमेयम्।।

भावार्थ : हे गुरुदेव! विहार शय्या आसन भोजनादि में [illegible] अथवा [illegible] के [illegible] यदि [illegible] भूल [illegible] भी मेरे [illegible] अपमानित [illegible] होंगे [illegible] अपराध के लिये [illegible] हूँ।

ज्यो॰ प्रेम नाथ शास्त्री

विजयेश्वर पञ्चाङ्ग कार्यालय (रजि॰)

अजीत कालोनी (एक्स)
गोलगुजराल जम्मू
स्वरदूत : 555607